रांची एवं डालटनगंज (मेदिनीनगर) से एक साथ प्रकाशित | ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष 14, संवत 2081 | रांची, बुधवार, 05 जून 2024, वर्ष-25, अंक-123, पृष्ठ-24 | ₹3.00 | रजिस्ट्रेशन नं: BIHHIN/1999/155 | www.rastriyanaveenmail.com

ईश्वर में हमारा विश्वास

राष्ट्रीय नवीन मेल

सत्यमेव जयते

लोकसभा चुनाव 2024 के परिणाम

लोकसभा के रण का परिणाम आ चुका है। केंद्र में एनडीए की सरकार बनती दिख रही है लेकिन भाजपा की ताकत कम हुई है। झारखंड में भी भाजपा को आठ, आजसू को एक स्थान पर जीत मिली। वहीं इंडी गठबंधन के कांग्रेस को दो व झामुमो को तीन सीट पर जीत मिली है। गत चुनाव के मुकाबले भाजपा के चार सांसद कम हो गए हैं।

लोकसभा चुनाव विशेषांक 14 पेज

1

2

3

4

5

6

2024 का रण

संजय सेठ ने मारी बाजी

नवीन मेल संवाददाता

रांची। रांची लोकसभा क्षेत्र से भाजपा प्रत्याशी संजय सेठ भारी मतों से विजयी हुए है। पहले रांउड से लेकर 20 राउंड तक भाजपा प्रत्याशी संजय सेठ ने बढ़त बनाये रखी। उन्हें कुल 6,58,975 वोट मिले है। संजय सेठ ने कांग्रेस प्रत्याशी को 1,21,329 वोट से हराया। वहीं कांग्रेस प्रत्याशी यशस्विनी सहाय को कुल 5,37,646 वोट लाकर दूसरे स्थान पर रहीं।

रांची के निवार्ची पदाधिकारी राहुल कुमार सिन्हा की ओर से पंडरा स्थित मतगणना स्थल पर भाजपा के विजयी प्रत्याशी संजय सेठ को मंगलवार देर रात प्रमाण पत्र दिया गया। रांची के सांसद संजय सेठ ने अपनी जीत पर रांची की जनता को बधाई देते हुए कहा कि यह जीत हमारी नहीं यह रांची की जनता की जीत है। जो स्नेह और प्यार रांची लोकसभा की जनता ने दिया है। इसके लिए सभी को हृदय से धन्यवाद है। उन्होंने कहा कि रांची के जो भी अधूरे कार्य हैं उसे पूर्ण करना है। रांची को नंबर वन बनाना है। रांची लोक सभा क्षेत्र में जो भी विकास के कार्य अधूरे हैं । उसे पूर्ण करेंगे । यहां के जनता के आकांक्षाओं पर खरा उतरने का पूरा प्रयास करेंगे। रांची की जनता के हर सुख दुख में साथ खड़े रहेंगे। रांची लोकसभा के सभी भाजपा के कार्यकर्ता, सभी प्रदेश के पदाधिकारी और मंडल के पदाधिकारी को भी धन्यवाद दिया। साथ ही सभी सामाजिक धार्मिक संगठन सभी लोग जिन्होंने सहयोग किया उन्हें दिल की गहराइयों से बहुत आभार। इस नई जिम्मेवारी के साथ और अधिक ऊर्जा के साथ रांची की जनता के लिए काम करेंगे।

> **2024 में लगातार दूसरी बार रांची से भाजपा प्रत्याशी संजय सेठ हुए विजयी, दूसरे स्थान पर रहीं कांग्रेस प्रत्याशी यशस्विनी सहाय**

प्रत्याशियों की जीत और हार

क्षेत्र	विजेता	दल	मत	पराजित	मत	दल
रांची	संजय सेठ	भाजपा	658975	यशस्विनी सहाय	537646	कांग्रेस
कोडरमा	अन्नपूर्णा देवी	भाजपा	650836	विनोद सिंह	352216	भाकपा माले
जमशेदपुर	विद्युतवरण महतो	भाजपा	681880	समीर मोहंती	393028	जेएमएम
धनबाद	ढुलू महतो	भाजपा	639016	अनुपमा सिंह	387306	कांग्रेस
गोड्डा	निशिकांत दुबे	भाजपा	688879	प्रदीप यादव	586104	कांग्रेस
हजारीबाग	मनीष जायसवाल	भाजपा	622973	जय प्रकाश पटेल	358552	कांग्रेस
चतरा	कालीचरण सिंह	भाजपा	488233	के एन त्रिपाठी	341164	कांग्रेस
पलामू	वीडी राम	भाजपा	770362	ममता भुईयां	481555	राजद
गिरिडीह	चंद्र प्रकाश चौधरी	आजसू	451139	मथुरा महतो	370259	जेएमएम
खूंटी	कालीचरण मुंडा	कांग्रेस	511647	अर्जुन मुंडा	361972	भाजपा
लोहरदगा	सुखदेव भगत	कांग्रेस	8888	समीर उरांव	8888	भाजपा
सिंहभूम	जोबा मांझी	जेएमएम	513391	गीता कोड़ा	343107	भाजपा
राजमहल	विजय हांसदा	जेएमएम	514308	ताला मरांडी	383950	भाजपा
दुमका	नलिन सोरेन	जेएमएम	503876	सीता सोरेन	481117	भाजपा

धूमकेतु बन उभरीं कल्पना सोरेन

नवीन मेल संवाददाता

गिरिडीह। झारखंड की राजनीति में कल्पना सोरेन के रूप में एक नये धूमकेतु के उभरने से इंडी गठबंधन में ऊर्जा का संचार हुआ है। कल्पना सोरेन ने गांडेय विधानसभा चुनाव में मंगलवार को शानदार जीत के साथ अपने विधायी राजनीतिक जीवन का आगाज कर दिया है। अपने पहले चुनाव में उन्होंने भारतीय जनता पार्टी के दिलीप वर्मा को 26 हजार 490 मतों से पराजित किया। मालूम हो कि गांडेय विस सीट पर उपचुनाव में 25 मई को मतदान हुआ था। इसमें झारखंड मुक्ति मोर्चा की प्रत्याशी कल्पना सोरेन को 01 लाख 08 हजार 975 वोट प्राप्त हुए जबकि भाजपा के दिलीप वर्मा को 82 हजार 490 मत हासिल हुए। जीत के बाद कल्पना सोरेन ने कार्यकर्ताओं को बधाई दी और अपनी सास रूपी सोरेन का चरण स्पर्श कर आशीर्वाद लिया। ओड़िशा में पली-बढ़ी सोरेन परिवार की बहू ने झामुमो सुप्रीमो शिबू सोरेन की अस्वस्था और पति हेमंत सोरेन के जेल जाने के बाद पार्टी की कमान थामी और राजग पर आक्रमक हमला बोल यह उपलब्धि हासिल की है। इतना ही नहीं उन्होंने चुनाव प्रचार के दौरान पार्टी समर्थकों को अपने नेता हेमंत सोरेन की कमी भी खलने नहीं दिया। कल्पना ने इस चुनाव में अनुभवी वक्ता की तरह मोदी सरकार पर तीखे हमले किये, जिससे उनकी रैलियों में भारी भीड़ जुटती रही।

इंडिया

सुनील बादल

चर्चा आम है कि लोगों को मोदी सरकार की संतुष्टिकरण वाली नीतियां तो पसंद हैं, लेकिन कतिपय राजनीतिक व प्रशासनिक मामलों में उनकी मनमानी नापसंद भी है।

सरकार बदलने या मजबूत विपक्ष के लिए चुनाव परिणाम?

एग्जिट पोल के चंद हजार सैंपल सर्वे पर आधारित अनुमानों को नकार कर चुनाव परिणाम से इवीएम के माध्यम से चुनाव आयोग ने अपनी विश्वसनीयता बनाए रखी और एंडी एलायंस के अतिआत्मविश्वास को तोड़कर इंडी एलायंस ने मजबूत विपक्ष का संदेश दिया । मोटे तौर पर यह खरगोश और कछुए की दौड़ की कहानी है जिसमें चुनाव पूर्व से ही विशेष रूप से भाजपा के नेताओं के अतिआत्मविश्वास भरे बयानों को विपक्ष को एकजुट किया और रणनीति बनाकर उन्होंने अपने सर्वाधिक मताधिकार का प्रयोग किया जबकि भाजपा बूथ मैनेजमेंट के इस पुराने फामूर्ले पर ध्यान केंद्रित नहीं कर पाई सूत्रों के अनुसार यूपी में अनेक भाजपा समर्थक वोट डालने में उतने तत्पर नहीं थे जितना विपक्ष था ।एक बड़ी चूक भाजपा से टिकट बंटवारे को लेकर हुई सबका साथ सबका विकास के नारे के विपरीत अनेक समूहों और समर्पित कार्यकताओं की उपेक्षा हुई । यह विवरण आने के बाद स्पष्ट होगा पर ठाकुर और अल्पसंख्यक टिकट बंटवारे से नाराज थे जिसे दूसरे दलों ने अनेक राज्यों में भुनाया ।जनता ने सत्ता परिवर्तन के लिए नहीं, बल्कि मजबूत विपक्ष के लिए जनादेश दिया है, जो एक नई बात है। क्योंकि चाहे

2014 का जनादेश हो या 2019 का, लोगों ने मुख्य विपक्षी पार्टी कांग्रेस को लोकसभा की कुल सीटों में से 10 प्रतिशत सीटों का भी जनादेश नहीं दिया था, जिससे दोनों लोकसभा में उसका कोई वैधानिक नेता प्रतिपक्ष तक नहीं बन पाया। क्योंकि नेता प्रतिपक्ष बनने के लिए लोकसभा की कुल सीटों में से 10 प्रतिशत सीटें जीतना अनिवार्य होता है। हालांकि, इस बार प्रतीत हो रहा है कि जनता विपक्ष पर भी मेहरबान है और उसे मजबूत बनाने के संकेत दे दिए हैं, ताकि वह मजबूती पूर्वक सरकार की पहरेदारी कर सके।

चर्चा आम है कि लोगों को मोदी सरकार की संतुष्टिकरण वाली नीतियां तो पसंद हैं, लेकिन कतिपय राजनीतिक व प्रशासनिक मामलों में उनकी मनमानी नापसंद भी है। इसलिए उन्हें थोड़ा कमजोर करते हुए उनके सामने एक मजबूत विपक्ष देने की कोशिश की है, ताकि दूरगामी व्यापक जनहित की रक्षा की जा सके। स्पष्ट कहें तो जनता को यह कतई पसंद नहीं है कि उनके वोट से बनने वाली सरकार सुधार के नाम पर सेना,सरकारी नौकरी और पेंशन योजना पर रोक लगाए। चुनाव के नतीजे कांग्रेस और भाजपा दोनों को यह स्पष्ट संदेश दे रहे हैं कि भारतीय राजनीति में उन्हें यदि प्रासंगिक बने रहना है तो अपनी नीति रीति में व्यापक बदलाव करने होंगे, अन्यथा लोग क्षेत्रीय दलों को आगे बढ़ाएंगे जो कि उनके अरमानों के सच्चे और अच्छे प्रतिबिंब होते हैं। यही वजह है कि पिछले दो लोकसभा चुनावों में मृतप्राय हो चले क्षेत्रीय दल इस बार के लोकसभा चुनाव में पूरी मजबूती के साथ उभरे हैं और जहां-जहां पर वो कांग्रेस या भाजपा के साथ रहे, वहां पर उन्होंने उन्हें लाभांवित भी किया है। यह बात एनडीए से ज्यादा इंडिया गठबंधन पर लागू होती है।

मोदी का करिश्मा है कि इतने संगठित विरोध के बावजूद वाजपेयी सरकार के साइनिंग इंडिया की तरह उन्हें नकारा नहीं गया बल्कि सीख दी गई । भारत को ऐतिहासिक ऊंचाई पर पहुंचाने वाले मोदी ने बंगाल और दक्षिण भारत में कमल खिलाने का इतिहास रचा है। अभी अविश्वसनीय नीतीश कुमार को इंडी गठबंधन डिप्टी पीएम का ऑफर दे चुका है जिसके बाद तेलगु देशम के पाले में गेंद जा सकती है पर नरेंद्र मोदी की सरकार के लगातार तीसरी बार सत्तारूढ़ होते ही वो देश के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू के लगातार तीसरी बार सरकार बनाने के रिकॉर्ड की बराबरी करके इतिहास रच देंगे। कांग्रेस के बाद भाजपा के लिए भी यह बहुत बड़ी उपलब्धि होगी ।यदि इंडी गठबंधन सरकार बनाती है तो उन्हें अपने कठिन चुनावी वायदों को पूरा करने की होगी ।अब देखना शेष है कि पांचवीं बड़ी अर्थव्यवस्था को तीसरी बड़ी अर्थव्यवस्था बनाने के लिए कड़े आर्थिक सुधार जारी रहेंगे या आगामी विधानसभा चुनाव को ध्यान में रखकर मुफ्त पास,मुफ्त अनाज,मुफ्त बिजली जैसी रेवड़ियां पहले की तरह बांटी जाती रहेंगी।

7

9

10

11

12

13

14

15

16

एक नजर

गुमला विधायक भूषण तिर्की सहित छह आरोपितों के खिलाफ आरोप गठन 12 को

रांची। एमपी-एमएलए के विशेष न्यायाधीश सार्थक शर्मा की अदालत में मारपीट करने और सरकारी कार्य में बाधा डालने से जुड़े मामले में मंगलवार को सुनवाई हुई। इस मामले में गुमला विधायक भूषण तिर्की सहित छह आरोपितों की मुश्किलें बढ़ेगी। आरोपितों में फ्लोरा मिंज, शीला टोप्पो, शांति मारग्रेट बाड़ा, पुष्पा किस्पोट्टा, रंजीत सरदार शामिल है। मामले में अदालत ने 12 जून को अगली सुनवाई की तिथि निर्धारित की है। 12 जून को अदालत भूषण तिर्की सहित छह आरोपितों के खिलाफ आरोप गठन करेगी। यह मामला मारपीट करने और सरकारी कार्य में बाधा डालने से जुड़ा है। पूर्व में एमपी - एमएलए कोर्ट ने भूषण तिर्की सहित अन्य आरोपितों की डिस्चार्ज याचिका खारिज कर दी थी।

नीट 2024 में डीपीएस के छात्रों का शानदार प्रदर्शन

रांची। दिल्ली पब्लिक स्कूल के विद्यार्थियों ने अपनी मेधा शक्ति और अनवरत परिश्रम के बल पर नेशनल एलिजिबिलिटी एंट्रेंस टेस्ट (नीट) 2024 में शानदार प्रदर्शन किया है। आयुष कुमार 690 स्कोर के साथ ऑल इंडिया रैंक 4768 हासिल कर विद्यालय टॉपर बने। नीट की प्रतिष्ठित परीक्षा में विद्यालय के 14 से ज्यादा छात्रों ने क्वालीफाई किया है। विद्यार्थियों के उत्कृष्ट प्रदर्शन से प्रधानाचार्य डॉ राम सिंह अत्यंत हर्षित एवं अभिभूत दिखे। उन्होंने छात्रों के साथ इस बेशकीमती पल को साझा किया। प्राचार्य ने विद्यार्थियों के सराहनीय प्रदर्शन के लिए उनके माता-पिता और शिक्षकों को बधाई दी।

अब रिम्स में होगी सभी तरह की पैथोलॉजिकल, बायोकेमिकल व रेडियोलॉजिकल जांच

रांची। वर्षों से रिम्स में जांच के नाम पर मरीज परेशान होते रहे हैं। लेकिन, अब रिम्स में ऐसा नही होगा। रिम्स में मरीजों को जल्द ही विभिन्न तरह की पैथोलॉजिकल, बायोकेमिकल, रेडियोलॉजिकल एवं अन्य सभी तरह की जांच के लिए इधर-उधर भागने की जरूरत नहीं पड़ेगी। इसके लिए अस्पताल क्षेत्र में केंद्रीकृत डॉयग्नोस्टिक हब का निर्माण किया जाएगा, जिसके लिए जगह चिह्नित कर ली गई है। ओपीडी क्षेत्र के पास ही पैथोलॉजिकल, लैब मेडिसिन और रेडियोलॉजिकल जांचों के लिए लगभग 6-8 काउंटर बनाए जाएंगे। यहीं से केंद्रीकृत नमूना संग्रह और रिपोर्ट वितरण होगा। रिम्स निदेशक प्रो (डॉ) राज कुमार ने मंगलवार को इस संबंध में परिसर का निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान चिकित्सको की टीम ने यह निर्णय लेते हुए इसे जल्द से जल्दी अमल पर लाने की बात कही है। इस दौरान डीन प्रो (डॉ) विद्यापति, चिकित्सा अधीक्षक प्रो (डॉ) हीरेंद्र बिरुआ, उपाधीक्षक डॉ शैलेश त्रिपाठी, रेडियोलोजी विभागाध्यक्ष डॉ सुरेश टोप्पो, लैब मेडिसिन विभागाध्यक्ष डॉ अमित कुमार, बायोकेमिस्ट्री विभाग से एडिशनल प्रोफेसर डॉ अनूप प्रसाद मौजूद थे।

केंद्रीय पड़हा जतरा में बतौर मुख्य अतिथि शामिल हुए परमेश्वर भगत, कहा

पुरखौती परंपरागत पड़हा व्यवस्था आदिवासी स्वशासन का अभिन्न अंग है

नवीन मेल संवाददाता। बेड़ो

केंद्रीय पाड़हा संचालन समिति बारीडीह बेड़ो के द्वारा आयोजित जतरा में बतौर विशिष्ट अतिथि शामिल हुए पूर्व डीडीसी सह समाजसेवी डॉ. परमेश्वर भगत। इस अवसर पर श्री भगत ने अपने संबोधन में पाड़हा जतरा के लोगों को एकजुट करने के महत्व पर जोर दिया। डॉ. भगत ने कहा कि हमारी संस्कृति और परंपराएं हमें हमारे मूल्यों और भावनाओं को महसूस कराती हैं और इसे जीवन में उतारना आवश्यक है। उन्होंने स्थानीय प्रतिभाओं को प्रोत्साहित किया और उन्हें समाज में सक्रिय भागीदार बनने को कहा। समारोह में लोग परंपरागत गानों और नृत्यों का आनंद लेते रहे, जिससे समृद्ध संस्कृति का माहौल महसूस होता रहा। इसके साथ ही प्रस्तुति के दौरान डॉ. भगत ने जनसमूह को समाज के नैतिकता, सामाजिक समरसता और एकता के महत्व पर जोर दिया। डॉ परमेश्वर भगत ने अपने संबोधन के दौरान शिक्षा, चिकित्सा, रोजगार, कृषि, नशा मुक्ति एवं सामाजिक समानता जैसे विषयों पर विस्तार से लोगों को बताये।

इन्होंने कहा की हमें संघर्ष करते हुए शिक्षित बनना है और संगठित रहना है तभी एक बेहतर समाज का कल्पना कर सकते हैं। जरूरत पड़े तो दो रोटी कम खाए परंतु अपने बच्चों को अवश्य शिक्षित बनाए। हमे नशा मुक्त समाज बनाना होगा। आज कल के बच्चे दिन ब दिन नशे जैसी बुरी आदतों में सुमार होते जा रहे है जिससे उनका मस्तिष्क पर असर पड़ रहा है। डॉ परमेश्वर भगत ने पाड़हा व्यवस्था के इतिहास के बारे में लोगों को बताया कि जैसे हो समुदाय में ढोकलो सोहोर, संथाल में मांझी परगाना महाल और मुंडा में मानकी व्यवस्था कायम हैं, इसी तरह उरांव समाज में पाड़हा व्यवस्था। आजादी के सैंकड़ों साल पहले से ही ये परंपरागत व्यवस्था संचालित होती आ रही है। जिससे उरांव समाज संचालित होता रहा है। पाड़हा व्यवस्था के तहत ही कार्यपालिका, विधायका और न्यायपालिका से संबधित कार्य का निष्पादन होता रहा है। पाड़हा जतरा हमें हमारे परंपरागत पाड़हा व्यवस्था को जीवंत रखने का संदेश देता है। पुरखौती परंपरागत पाड़हा व्यवस्था आदिवासी स्वशासन का अभिन्न अंग है। इसे संजोकर आने वाली पीढ़ी को और मजबूत अवस्था में सुपुर्द करना हम सभी का कर्तव्य है। डॉ परमेश्वर भगत ने समूह के सभी सदस्यों को धन्यवाद दिया और उन्हें समृद्धि और समानता की कामना की। इस अद्भुत उत्सव के माध्यम से पाड़हा जतरा में समृद्ध सांस्कृतिक विरासत एवं लोगों के बीच एक मेलजोल के साथ सामूहिकता की भावना को महसूस किया गया। अंत में इन्होंने कहा की हमे अपनी भाषा संस्कृति, रीति रिवाज, रुढ़ी परम्परा को जीवंत रखने एवं मूल धर्म से अन्यत्र नही भटकने और सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक एवं राजनितिक रूप से जागरूक रहने का आह्वान किया ।

डॉ. भगत ने जनसमूह को समाज के नैतिकता, सामाजिक समरसता और एकता के महत्व पर जोर दिया

आंधी व तूफान ने बरपाया कहर, कई घरों के छप्पर को उड़ाया

बेड़ो। बेड़ो प्रखंड के अन्तर्गत मंगलवार को मुरतो पंचायत के चचकोपी में लगभग 4:00 बजे के आसपास बारिश के बीच भीषण आंधी के कारण रंथु उरांव का घर का छप्पर क्षतिग्रस्त हो गया। उसके घर के एस्बेस्टस को हवा उड़ा कर ले गया। आंधी के थमने के बाद स्थानीय मुखिया सुनीता एवं सुरेंद्र ने प्राकृतिक आपदा से हुई क्षतिग्रस्त घर का जायजा लिया। इस मौके पर उन्होंने आश्वासन दिया कि आपदा प्रबंधन के द्वारा मुआवजा राशि दिलवाया जाएगा। वहीं दूसरी ओर बेड़ो प्रखंड के नरकोपी थाना क्षेत्र के चान्हो में तेज आंधी एवं वर्षा की चपेट में आकर मदरसा ए कदरिया कनजुल इमान के भवन का एस्बेस्टस हवा में उड़ गया। आंधी इतनी विकराल थी कि एक ही भयावह आंधी के झोंके ने मदरसा के भवन का एस्बेस्टस हवा में उड़कर बिखर गया। मदरसे में 60 बच्चे (तलाबी इल्म) एवं उन्हें कुरान सहित अन्य धार्मिक शिक्षा देने वाले मोदररिस नाजिम कारी, अफरोज आलम 'बरकती' हाफिज अनवर हुसैन तथा हाफिज मोजाहिद रजा, मौलाना मकतब अमजदी सहित मास्टर कैसर खान रहते हैं।

भाजपा की जीत पर खलारी में मना जश्न, बंटीं मिठाईयां, फूटे पटाखे

नवीन मेल संवाददाता। खलारी

लोकसभा चुनाव 2024 के परिणाम में पूरे देश में भारतीय जनता पार्टी द्वारा सबसे अधिक सीटें जीतने व स्थानीय भाजपा उम्मीदवार संजय सेठ के जीत पर कार्यकर्ताओं ने खलारी के हिन्दूगढ़ी चौक पर जमकर जश्न मनाया गया। पटाखे फोड़े गए। समर्थकों व राहगीरों के बीच लड्डू बांटा गया। भाजपा कार्यकर्ता व समर्थक हाथों में पार्टी का झंडा लिए और पट्टा लगाए जिन्दाबाद के नारे लगाते रहे। महावीरनगर के कार्यकर्ताओं संग आए ताशा पार्टी द्वारा बजाए धुन ने जश्न में चार चांद लगा दिया। ताशा पार्टी की टीम के साथ एक नन्हा बालक भी जश्न में शामिल दिखा। देर तक चले जश्न में आने जाने वाले लोग भी शामिल होते रहे। खलारी के अन्य जगहों पर भी जीत की मिठाई बांटी गई। सुशील अग्रवाल ने कहा कि देश में लगातार तीसरी बार नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में

एनडीए की सरकार बनने जा रही है। यह काफी हर्ष का विषय है। भाजपा के जीत का जश्न मनाने वालों में सुशील अग्रवाल, दिलीप पासवान, भरत रजक, रामसेवक यादव, मुकेश सिंह, साबा प्रमाणिक, रवीन्द्र सिंह, अमरभूषण सिंह, मिथिलेश सिंह, उदयभान सिंह, जगरनाथ गुप्ता, धर्मेन्द्रकुमार सिंह, रामकिशोर सिंह, उदय सिंह, विजय सोनी, लक्ष्मण साह, डीएन शर्मा, अमित विश्वास, बाबूलाल मिस्त्री, नवीन ठाकुर, शंकरप्रसाद गुप्ता, पंकज मिश्रा, दीपक सोनी, राकेश कुमार, संजय साहू, शिव प्रसाद, सुनील श्रीवास्तव, जीतेन्द्र तिवारी, सुरेन्द्र सिंह, विजयप्रसाद गुप्ता, हरेन्द्र सिंह सहित काफी संख्या में कार्यकर्ता व समर्थक शामिल थे।

समर्थकों व राहगीरों के बीच लड्डू बांटा गया, भाजपा कार्यकर्ता व समर्थक हाथों में पार्टी का झंडा लिए और पट्टा लगाए जिंदाबाद के नारे लगाते रहे

नौ दिवसीय रूद्र महायज्ञ के पांचवें दिन भक्तों का उमड़ा जनसैलाब

सिल्ली/मुरी। उत्तरी सिल्ली लोदमु आम बगान में आयोजित नौ दिवसीय रूद्र महायज्ञ के पंचम दिवस पर काशी से पधारे आचार्य पंकज शास्त्री एवं वैदिक विद्वानों के द्वारा आवाहित देवता ओं का पुजन, हवन, पाठ आदि का कार्य किया गया। यज्ञ की परिक्रमा पुजन में भक्तजन की भारी भीड़ उमड़ रही है। यह आयोजन जगदगुरु वनांचलधर्मपीठाधीश्वर स्वामी दीनदयालजी महाराज के सानिध्य में किया जा रहा है। इस महायज्ञ में नौ दिनों तक अखंड भण्डारे का भी आयोजन किया जा रहा है। जिसमें प्रतिदिन हजारों भक्तगण भंडारे का आनंद उठा रहे हैं।सायंकालीन सत्र में जगद्गुरु वनांचलधर्मपीठाधीश्वर स्वामी दीनदयालजी महाराज ने कहा कि समस्त सृष्टि परमात्मा के बनाये सृष्टि के नियमो के अनुसार चलती है। सुर्य, नक्षत्र, तारा, अग्नि, वरुण,इन्द्र आदि देवता इसका उल्लंघन नहीं करते क्योंकि उन्हें परमात्मा का भय है, डर है। अगर उनके बनायें नियमानुसार नहीं चलेंगे तो उनके द्वारा दण्डित होना

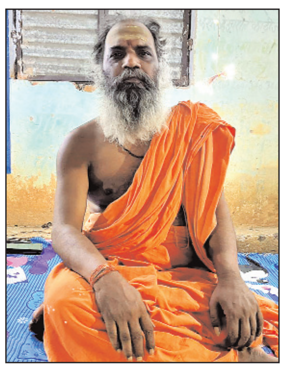

पड़ेगा। किन्तु आज मनुष्यों का भय समाप्त हो गया है, इसी कारण समाज में अनाचार, अत्याचार, दुराचारादि बढ़ रहा है। अतः परमात्मा से भय करना चाहिए। अगर यह भय रहेगा तो आप बुरे कर्मो से बचेंगे। यज्ञ में राजस्थान से पधारे हुये समाधी बाबा ने कहा कि माता -पिता- गुरु की सेवा से बढ़कर कोई सेवा नहीं। भगवान राम प्रातःकाल उठकर माता पिता गुरु को उठकर चरण वंदना करते हैं। माता पिता से बढ़कर कोई देवता नहीं। राम जी ने जीवन जीने की कला सिखाई। उसके अनुसार जीवन जीना चाहिए।

डॉ कृष्णा कुमार ने अपनी लिखी पुस्तक मारवाड़ी कॉलेज को भेंट की

नवीन मेल संवाददाता। रांची

मारवाड़ी कॉलेज के पूर्व प्रोफेसर इंचार्ज डॉ कृष्णा कुमार ने अपनी लिखी पुस्तक 'दी मेकिंग ऑफ जॉन वैन' (ए स्टडी ऑफ दी मैन एंड हिस आर्ट) की कई कॉपियां मारवाड़ी कॉलेज के दोनों इकाइयों से रीडिंग लाइब्रेरी के लिए भेट की। उन्होंने कहा के यह पुस्तक यूजी, पीजी के विद्यार्थियों और रिसर्च स्कॉलर के लिए काफी लाभदायक पुस्तक होगी। इस अवसर पर प्राचार्य डॉ मनोज कुमार ने प्रो कृष्णा कुमार का आभार व्यक्त करते हुए कहा डॉ कुमार के इस अनोखे पहल से हमारे गरीब विद्यार्थी लाभान्वित होंगे। ऐसे रचनात्मक किताबों को पढ़ने से न केवल उनका आत्मबल विकसित होगा, बल्कि उनके सृजनात्मक एवं रचनात्मक शक्तियों का भी विकास होगा। इस अवसर पर प्रोफेसर इंचार्ज डॉ आरआर शर्मा, डॉ एसपी महतो, डीएसडब्ल्यू डॉ तरुण चक्रवर्ती, प्रो महामणि कुमारी, बरसर डॉ रोनाल्ड खलखो, अभिषेक आदि मौजूद थे।

पर्यावरण ही हमारे जीने का मुख्य आधार है : डॉ ब्रजेश

नवीन मेल संवाददाता। रांची

रांची विश्वविद्यालय की राष्ट्रीय सेवा योजना (एनएसएस) इकाई के तत्वावधान में विश्व पर्यावरण दिवस की पूर्व संध्या पर मंगलवार को चित्रकला, भाषण एवं निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। रांची विश्वविद्यालय के आर्यभट्ट सभागार में एनएसएस के कार्यक्रम समन्वयक डॉ ब्रजेश कुमार की अध्यक्षता में कार्यक्रम का आयोजन हुआ। इस अवसर पर एनएसएस के कार्यक्रम समन्वयक डॉ ब्रजेश कुमार ने कहा कि पर्यावरण हमारे जीने का मुख्य आधार है एवं इसका संरक्षण हम सभी का परम कर्तव्य है। आज के कार्यक्रम में निर्णायक मंडल में एनएसएस के कार्यक्रम पदाधिकारी डॉ हर्षिता सिन्हा, डॉ कुमारी भारती सिंह, डॉ किशोर सुरीन, आनंद कुमार भगत, संदीप कुमार एवं जयनारायण महतो शामिल थे। आज के कार्यक्रम में रांची विवि के 18 विश्वविद्यालय विभागों एवं महाविद्यालयों के 225 एनएसएस के विद्यार्थी शामिल हुए। चित्रकला प्रतियोगिता में रिकेष, अमन, निशा, नैना, समृद्धि, प्रगति, पिंकी, रिया, स्मृति, प्रीति, प्रिंस, सचिन, खुशबू, अंजली, निकिता, प्रियंका, नेहा, अयान, अलीशा, खुशी, प्रियंका, एमल, मेघा, रुचिता, अंजली, प्रीति, लक्ष्मी, अलमता, रोहित, बिनीत, अंजली, मनीष, अलबेला, सतीश, राहुल आदि शामिल हुए। निबंध प्रतियोगिता में एंजेल, स्मिता, नरेश, प्रेरणा, निवेदिता, रश्मि, प्रतीक, अनीश, बिबियाना, सरिता, शोभा, अंजली, रमणी, जुली, लक्ष्मी, क्षणिका, नाजिया, राजकुमार, अंकित, दीपक, फरहत , प्रीति, कृति, करिश्मा, जीवन्ति, रितु, कृति, नंदिनी, लक्ष्मी, शिवम, अंकिता, कुसुम, लक्ष्मी, रोशनी,आकाश, अनु, रोशनी, अशिष्टा, नीलम, मिनहाज, कोमल, सनाउल्लाह, अमीषा, ज्योति, दिव्या, क्षितिज, सुप्रिया, आशीष, श्रेया आदि शामिल थे। भाषण प्रतियोगिता में फारूकी, कार्तिक, फैजाह, वैशाली, सोनाली, रचना, सलोनी, जितेंद्र, सोनल, रौनक, अमरनाथ आदि ने भाग लिया।

संगोष्ठी एवं पुरस्कार वितरण समारोह आज

एनएसएस के कार्यक्रम समन्वयक डॉ ब्रजेश कुमार ने बताया कि बुधवार (5 जून) को दिन में 11:00 बजे से रांची विश्वविद्यालय के आर्यभट्ट सभागार में विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर संगोष्ठी एवं पुरस्कार वितरण समारोह विवि के कुलपति डॉ अजीत कुमार सिन्हा की अध्यक्षता में आयोजित होगा। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि के रूप में झारखंड वन विभाग से अवकाश प्राप्त पीसीसीएफ प्रदीप कुमार एवं प्रियेश कुमार वर्मा उपस्थित रहेंगे।

पंचभूतों का सम्मान करें, पर्यावरण बचाएं

पर्यावरण दिवस पर विशेष

प्रकृति स्वयं अपना कायाकल्प कर लेगी

श्री रवि शंकर

पर्यावरण हमारा पहला शरीर है, जहां से हमें भोजन मिलता है। हमारी पांचों इंद्रियों का भोजन हमें हमारे वातावरण से मिलता है। हमारा पूरा जीवन भोजन, स्वच्छ जल, शुद्ध हवा और अग्नि पर निर्भर है। ये सभी हमें पृथ्वी तत्व, जल तत्व, वायु तत्व और अग्नि तत्व से मिलते हैं। ये सभी चार तत्व आकाश तत्व में रहते हैं। इसलिए हमें इन पांचों भूतों का सम्मान करना चाहिए और इन्हें शुद्ध रखना चाहिए । तभी हम जीवन में सुखी रह सकते हैं और तभी यह दुनिया टिक सकती है। हम सभी को अपने पर्यावरण के बचाव के लिए काम करना चाहिए। प्रकृति स्वयं अपना कायाकल्प कर लेगी, लेकिन उसके लिए हमें कुछ बातों का ध्यान रखना चाहिए। भूमि में कीटनाशक और हानिकारक रसायनिक उर्वरक डालकर भूमि को प्रदूषित नहीं करें। बहुत से लोगों को यह भ्रम है कि प्राकृतिक खेती से उनको फायदा नहीं होगा, इसीलिए वे आज भी रासायनिक खेती करते हैं। लेकिन ऐसा नहीं है । प्राकृतिक खेती द्वारा हमारे किसान आज आर्थिक रूप से बेहतर स्थिति में हैं। इसीलिए यह आवश्यक है कि जमीन में कोई भी ऐसी चीज न डालें जिससे जमीन खराब हो । आपको अधिक से अधिक जैविक चीजों का उपयोग करना चाहिए। आज आप दुकानों में जो देखते हैं, कल जब आप उन्हें खाएंगे, तो वही आपके शरीर का अंश बन जाएगा। आज हम देखते हैं कि पिछले कई दशकों से कई तरह की रासायनिक खाद डाल कर हम अपनी जमीन को खराब कर दे रहे हैं। प्राकृतिक खेती से न केवल किसानों का जीवन स्तर ऊपर उठा है, बल्कि रासायनिक खेती से जमीन को होने वाले नुकसान में भी कमी आई है । ऐसे ही पानी में प्रदूषण करने वाली चीजें और रसायनिक पदार्थ डालकर पानी को दूषित न करें। जमीन में पानी का स्तर बढ़ाना है, तो पेड़ लगाएं और इसके साथ-साथ जल के स्रोत की सफाई पर भी ध्यान दें। यदि हमें नदियों और तालाबों को बचाना है तो उन्हें साफ रखना बहुत जरूरी है। जो नदियां और तालाब सूख गए हैं, उनको पुनर्जीवित करना भी बहुत आवश्यक है। पेड़ धरती के फेफड़े हैं। इसीलिए हमें और अधिक पेड़ लगाने चाहिए। प्राचीन वैदिक दर्शन में ऐसा कहा गया है कि यदि आप एक पेड़ काटने जा रहे हैं, तो आपको उससे आज्ञा लेनी पड़ेगी और उसे ये वचन देना पड़ेगा कि आप उसके जैसे ही पांच और पेड़ लगाएंगे। इसीलिए पहले के समय में लोग पेड़ काटने से पहले इन सभी मान्यताओं का पालन करते थे। जब कभी आप किसी भी जंगल में जाएंगे, तो देखेंगे कि वहां बहुत से जानवर रहते हैं, लेकिन वे धरती को गंदा नहीं करते। लेकिन, मनुष्य जहां रहते हैं, वहीं पर्यावरण को दूषित करते रहते हैं। इसमें तुरंत सुधार होना चाहिए।

प्राचीन भारत में पर्यावरण की ईश्वर के रूप में पूजा की जाती थी। दुनिया की सभी प्राचीन सभ्यताओं ने पहाड़ों की, धरती की, नदियों और पेड़ों की पूजा की। उन्होंने इन सभी को बहुत पवित्र माना। हमें इस विचार को वापस लाना है कि यह धरती बहुत पवित्र है और हमें इसका आदर करना चाहिए। **(लेखक आध्यात्मिक नेता एवं मानवतावादी धर्मगुरु हैं। वे आर्ट ऑफ लिविंग फाउंडेशन के संस्थापक हैं)**

अबुआ आवास स्वीकृत होने वाले लाभार्थी शांति देवी को तीन माह बाद मिला इंसाफ

बेड़ो। बेड़ो प्रखंड के प्रखंड मुख्यालय स्थित बेड़ो बस्ती में अबुआ आवास स्वीकृत होने वाले लाभुक शांति देवी पति जटु महली को अन्ततः तीन महीने के इंतजार के बाद बिजली विभाग से इंसाफ मिला। शांति देवी अबुआ आवास के स्वीकृति के बाद जल्द घर बनने की आशा में तीन महीने पहले ही अपने पुराने कच्चे घर को तोड़ दिया और दूसरे के घर में आश्रय लिया। लेकिन घर तो तब बनता जब उसके घर के पास गडा.हुआ बिजली का खंभा वहां से हटाया जाता। उसके घर के पास बिजली का खंभा उसके लिए नासूर बन गया था। उसने कई बार बिजली विभाग तथा प्रखंड विकास पदाधिकारी को पत्र लिखकर घर के पास से बिजली का खंभा हटाने की मांग कर रहा था। लेकिन कोई उनकी बात को नहीं सुन रहा था जिसके कारण भीषण गर्मी और प्रचंड धूप एवं बीच-बीच में बारिश के बावजूद फुटपाथ में रहने के लिए विवश हो गया।

न्यूज बॉक्स

डॉ राम सिंह, प्राचार्य, डीपीएस रांची एवं प्रेसिडेंट, डॉ एस राधाकृष्णन सहोदया स्कूल कांप्लेक्स, रांची और डॉ अशोक कुमार, प्राचार्य, डीएवी आलोक पब्लिक स्कूल और प्रभारी, मीडिया, डॉ एस राधाकृष्णन सहोदया स्कूल कांप्लेक्स, रांची ने मंगलवार को झारखंड के राज्यपाल सीपी राधाकृष्णन से मुलाकात की।

रांची भाजपा कार्यालय में शॉर्ट सर्किट से लगी आग

रांची। प्रदेश भाजपा कार्यालय में शॉर्ट सर्किट से मंगलवार को आग लग गई। इससे थोड़ी देरी के लिए कार्यालय में अफरा-तफरी का माहौल बन गया। कार्यालय में मौजूद सभी लोग बाहर निकलने लगे। हालांकि, थोड़ी देर में ही आग पर काबू पा लिया गया। इस दौरान प्रदेश अध्यक्ष बाबूलाल मरांडी लोकसभा चुनाव के परिणाम पर मंथन कर रहे थे।

द्राक्ष यज्ञ के अवसर पर रुद्राभिषेक किया गया

सिल्ली/- मुरी। सिल्ली प्रखंड अंतर्गत लोदमू के आम बागान पूजा स्थल में रुद्राक्ष यज्ञ के पांचवें दिन शिव जी का रुद्राभिषेक किया गया। कार्यक्रम का आयोजन दक्षिणी छोटानागपुर से आए पीठाधीश्वर दीनदयाल महाराज की सानिध्य में संपन्न कराया गया। पुरोहित के द्वारा पूरे विधि विधान और मंत्र उच्चारण के साथ गंगाजल, घी, दूध, पान, सुपारी और नारियल शिवलिंग पर अर्पित कर किया गया। पुरोहित ने भक्तों को बताया कि रुद्राभिषेक से साधक में शिवत्व का उदय होता है तथा भगवान शिव का शुभ आशीर्वाद भक्तजनों को प्राप्त होता है। रुद्राभिषेक करने से मनुष्य की हर मनोकामनाएं पूर्ण होती है तथा अकाल मृत्यु का संकट भी दूर हो जाता है। रुद्राभिषेक में रामपुर के भक्त सुयोग साहू अपने पूरे परिवार के साथ प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी पूरे श्रद्धा के साथ शामिल हुए और विधिवत पूजा कर पूरे जनमानस के कल्याण हेतु भगवान शिव से प्रार्थना किया। इस उत्सव में हजारों की संख्या में भक्तगण उपस्थित रहे।

मांडर डीलर संघ ने की आर्थिक मदद

मांडर। प्रखंड डीलर संघ की ओर से मंगलवार को मालती गांव के महिला स्वयं सहायता समुह मलती की सचिव हमीदा खातून के आकस्मिक मृत्यु के उपरांत समुह को संघ परिवार की ओर से आर्थिक मदद के रूप में एक चेक सौंपा गया। संघ परिवार ने महिला समूह को आश्वस्त किया है कि वह नियमपूर्वक अपने कार्यों को निष्पादित करते हुए नए सचिव का चुनाव कर अपने दुकान को सुचारू रूप से चलावे। इस कार्य में पूरा संघ परिवार उनके साथ कदम से कदम मिलाकर चलने के लिए तैयार है। इसके पश्चात सभी संघ के पदाधिकारी एवं सदस्यों ने मृतक हमीदा खातून के परिवार से मुलाकात कर आगे भी हर तरह की सहायता के लिए तैयार रहने की बात से अवगत कराया। मौके पर अमिताभ कुमार पाठक, प्रखंड प्रमुख फिलीप सहाय एक्का मुजिबुल रहमान, मुन्ना साहू, सुनील कुमार सिंह, हरिनारायण समेत अन्य लोग मौजूद थे।

भाजपा के संजय सेठ की जीत पर सिल्ली में आजसू ने निकाला विजय जुलूस

सिल्ली। रांची लोकसभा सीट से भाजपा के संजय सेठ के जीत पर आजसू पार्टी नगर कार्यालय में मंगलवार की शाम विजय जुलूस निकाला। जीत की खुशी में जुलूस में शामिल आजसू और भाजपा के नेताओं और कार्यकर्ताओ ने मिठाईयां बांटी, पटाखे फोड़े व एक दूसरे को अबीर गुलाल लगाकर खुशी जाहिर की।आजसू के वरीय नेता राजा पुष्पेंद्र नाथ सिंह देव ने कहा कि देश की जनता का मन पहले ही था, हमने देश को विकसित भारत बनाने के लिए नरेंद्र मोदी को एक बार फिर प्रधानमंत्री बनाना है। इस मौके पर आजसू पार्टी सिल्ली नगर अध्यक्ष भरत देव साई प्रखंड अध्यक्ष रविंद्र करमाली, नरोत्तम गोराई,शशि सोनार, नेपाल साव, मनोज साव, संजित सिंह देव, सुरेश मुंडा,हेमंत नायक, दिपक दास गुप्ता, संजय कोइरी, रतन कोइरी, रविंद्र सिंह, संतोष राय, विपुल राय आदि उपस्थित थे।

श्री श्याम मंदिर हरमू रोड में सुंदरकांड एवं हनुमान चालीसा का हुआ संगीतमय पाठ

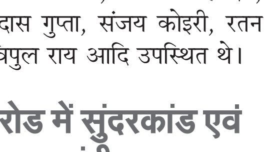

रांची। हरमू रोड के श्री श्याम मंदिर में मंगलवार को 104वां श्री सुंदरकांड एवं श्री हनुमान चालीसा का संगीतमय पाठ भक्तिमय माहौल में संपन्न हुआ। ज्ञात हो कि श्री श्याम मित्र मंडल यहां हर मंगलवार को श्री सुंदरकांड एवं श्री हनुमान चालीसा पाठ का आयोजन करता है। सुनील मोदी एवं आशा मोदी ने परिवार के संग हनुमान जी महाराज की दिव्य अखंड पावन ज्योति प्रज्जवलित करके केसरिया पेड़ा, गुड़, चना, फल का प्रसाद अर्पित कर परिवार की खुशहाली की प्रार्थना की। मंडल के उपमंत्री अनिल नारनोली ने पूजन अनुष्ठान विधिवत संपन्न करवाया। श्रवण ढानढनिया ने चना प्रसाद की सेवा, केसरिया पेड़ा सेवा पुष्पा देवी पोद्दार, फल प्रसाद सेवा राजेश जायसवाल एवं गिरिगोला सेवा मुकेश मित्तल ने निवेदित की। सुनील मोदी ने रामचरितमानस ग्रंथ व पाठ वाचकों का चंदन-वंदन किया। श्री गणेश वंदना कर हनुमान चालीसा का पाठ किया गया।

देश और राज्य में एनडीए की जीत के बाद भाजपा प्रदेश कार्यालय में जमकर आतिशबाजी की गई, महिला कार्यकर्ताओं ने भी खूब पटाखे फोड़े, वहीं लोगों के बीच मिठाइयां बांटी गईं।

भाजपा कार्यकर्ताओं ने जीत के जश्न में जय श्रीराम के भी खूब नारे लगाए।

एनडीए को बहुमत मिलने पर प्रदेश भाजपा कार्यालय में जश्न

तीसरी बार भी एनडीए सरकार बनने से नहीं रोक पाई इंडी गठबंधन : अमर बाउरी

ब्यूरो रिपोर्ट। रांची

रांची । 2024 लोकसभा चुनाव एनडीए को पूर्ण बहुमत मिले के बाद राजधानी में भाजपा के प्रदेश कार्यालय में जमकर जश्न मनाया गया। खूब पटाकें छोड़े गए, लोगों के बीच मिठाइयां बांटी गई। भाजपा कार्यकताओं ने जयश्री राम के नारे भी लगाए। एनडीए के लगातार तीसरी बार सत्ता में वासपी के बाद भाजपा के नेताओं और कार्यकताओं ने उसे दिल से स्वीकार करते हुए जनता के प्रति आभार व्यक्त किया । इसके पहले सुबह से भाजपा कार्यालय में सन्नाटा पसरा था, भाजपा बहुमत के आंकडे तक नहीं पहुंच,इसको लेकर भाजपा कार्यकताओं में मायूसी साफ झलक रही थी, लेकिन उसे बयान नहीं कर पा रहे थे। भाजपा कार्यालय में प्रदेश अध्यक्ष बाबूलाल मरांडी बैठे रहे ,लेकिन मीडिया से बात नहीं की। शाम जब एनडीए को पूर्ण बहुमत मिल गया, तब भाजपा के बड़े नेता कार्यालय के बाहर निकले और कार्यकताओं के साथ जश्न मनाया। भाजपा विधायक दल के नेता अमर बाउरी ने कहा कि विपक्ष ने एनडीए को तीसरी बार सरकार बनाने से रोकने के लिए सारे हथकंडे अपनाए, देश के लोगों को गुमराह किया, संविधान और लोकतंत्र को खतरे की झूठी अफवाह फैलाई, लेकिन जनता पर इसका कोई खास असर नहीं हुआ और देश में लगातार तीसरी बार गैर कांग्रेसी सरकार बन रही है। भाजपा नेता ने कहा कि देश की जनता ने वंशवाद, परिवारवाद, भ्रष्टाचार और तुष्टीकरण के खिलाफ जनादेश दिया है।

राज्यसभा सांसद आदित्य साहू ने कहा कि देश के पहले पीएम जवाहर लाल नेहरू के बाद नरेंद्र मोदी लगातार तीसरी बार देश के प्रधानमंत्री बनेंगे। देश के लोगों ने अपना समर्थन दिया है, देश पिछले दस साल में काफी मजबूत हुआ है और अगले पांच साल में देश की अर्थव्यवस्था और भी मजबूत होगी। भाजपा विधायक भानू प्रताप ने कहा कि दस साल के एंटी इंकैम्बेंसी के बावजूद अगर बहुमत मिल रहा है, तो बहुत बड़ी बात है। जनता ने फिर से एनडीए पर जो विश्वास जताया है, उस पर गठबंधन पूरा खरा उतरेगी और केंद्र में एक बार फिर से मजबूत सरकार देगी।

एनडीए की जीत जनता के विश्वास की जीत है : देव शरण भगत

रांची। आजसू पार्टी के केंद्रीय अध्यक्ष सुदेश कुमार महतो ने झारखंड समेत पूरे देश में एनडीए की प्रचंड जीत के लिए जनता का आभार जताया है। आजसू नेता ने कहा कि हमारी जीत जनता के विश्वास की जीत है उनका प्रेम, समर्थन और विश्वास ही हमारी सबसे बड़ी शक्ति है। जनता ने एक बार फिर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के विकास की गारंटी पर मोहर लगाते हुए लगातर तीसरी बार एनडीए को देश में पूर्ण बहुमत देने का काम किया है। सुदेश महतो ने कहा कि गिरिडीह पर एनडीए उम्मीदवार चंद्र प्रकाश चौधरी की जीत पर उन्होंने कहा कि गिरिडीह लोकसभा क्षेत्र की जनता के स्नेह, आशीर्वाद और विश्वास के कारण ही यह जीत संभव हो पाई है। गिरिडीहवासियों का यह प्यार और आशीर्वाद हमारी ताकत है। इसी ताकत के साथ हम गिरिडीह लोकसभा क्षेत्र का सर्वांगीण विकास के लिए पूरी प्रतिबद्धता के साथ काम करेंगे। इस ऐतिहासिक जीत के लिए परिश्रम करने वाले सभी कार्यकताओं का धन्यवाद।

देश और राज्य में इंडी गठबंधन की जीत पर कांग्रेस कार्यालय में जश्न

जनता के जनादेश को कम आंका, तो जनता ने कर दिया ध्वस्त : राजेश ठाकुर

नवीन मेल संवाददाता। रांची

इंडिया गठबंधन के झारखंड सहित पूरे देश में बेहतरीन प्रदर्शन पर झारखंड प्रदेश कांग्रेस मुख्यालय में कांग्रेस नेताओं एवं कार्यकताओं ने प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष राजेश ठाकुर के नेतृत्व में पटाखे जलाकर और मिठाइयां बाँटकर खुशियां मनाई। प्रदेश अध्यक्ष राजेश ठाकुर ने जनता का आभार जताते कहा कि एग्जिट पोल एग्जिट हो गया, जनता के जनादेश को जिस तरह से कम आंका गया, उसे जनता ने ध्वस्त कर दिया। राहुल गांधी ने भारत जोड़ो यात्रा और भारत जोड़ो न्याय यात्रा के दौरान देश के लाखों करोड़ों लोगों से मिलकर उनकी समस्याओं को जानकर संघर्ष की पृष्ठभूमि तैयार की गई और उनके समस्याओं के समाधान का रास्ता निकालकर हम इस चुनाव में जनता के बीच गए। इसी का परिणाम है कि जनता ने भाजपा के नेतृत्व को नकारते हुए हम पर भरोसा कर हमें भरपूर समर्थन दिया है। जनता ने संविधान बचाने की लड़ाई खुद सामने आकर लड़ी और हमें देश में समर्थन दिया है। भाजपा ने नैतिक रूप से जनता का समर्थन खो दिया है क्योंकि जिस मोदी की गारंटी पर भाजपा चुनाव लड़ रही थी उस भाजपा को जनता ने बहुमत से दूर कर दिया है।

उन्होंने कहा कि झारखंड की जनता ने केंद्र की तानाशाही सरकार के खिलाफ अपना रोष प्रकट किया है। झारखंड में महागठबंधन की सरकार बनते ही इसे गिराने का प्रयास किया जा रहा था परंतु वह इसमें सफल नहीं हो पा रहे थे। चुनाव के दौरान जिस तरह से महागठबंधन में शामिल दलो और परिवार को तोड़ने का प्रयास किया गया उसे भी जनता ने देखा और उसे कसौटी पर परखा जिसका परिणाम यह रहा कि बीजेपी झारखंड में दहाई अंक तक भी नहीं पहुंच पाई।

उन्होंने कहा कि झारखंड कांग्रेस प्रभारी गुलाम अहमद मीर के कुशल नेतृत्व में कांग्रेस कार्यकताओं ने अपना बेहतर प्रदर्शन किया। इंडिया गठबंधन की आपसी एकता और बेहतर समन्वय और चुनावी प्रबंधन के कारण हमने झारखंड में अच्छा प्रदर्शन किया है और इसमें इंडिया गठबंधन में शामिल दलों के नेता एवं कार्यकताओं का सराहनीय योगदान रहा है हम उनका भी आभार व्यक्त करते हैं।

देश की जनता ने अपना दायित्व निभाया : मीर

झारखंड प्रदेश कांग्रेस प्रभारी गुलाम अहमद मीर ने कहा कि संविधान और आरक्षण की रक्षा करने में देश की जनता ने अपना दायित्व बखूबी निभाया है और जिस भरोसे के साथ उन्होंने इंडिया गठबंधन को अपना समर्थन दिया है उस पर हम निश्चित रूप से खरे उतरेंगे। चुनाव के पहले और चुनाव के दौरान कांग्रेस को जिस तरह से केंद्र सरकार के इशारे पर विभिन्न एजेंसियों द्वारा प्रताड़ित किया गया और चुनाव को एकतरफा करने की कोशिश की गई। उसका जनता ने मुंह तोड़ जवाब दिया है। उन्होंने कहा कि झारखंड की जनता वैचारिक रूप से अपने अधिकारों के प्रति जागरुक है और अपने संवैधानिक अधिकारों की रक्षा के लिए उन्होंने सोच समझकर कदम उठाया है, जनता के फैसले का हम सम्मान करते हैं। जनता के हक और अधिकारों की रक्षा के लिए हम हमेशा खड़े रहेंगे। उन्होंने इस चुनाव परिणाम के लिए कांग्रेस सहित इंडिया गठबंधन मे शामिल दलो के नेताओं कार्यकताओं के प्रति आभार जताया।

जनता ने देश की तानाशाह व अहंकारी सरकार को दिया करारा जवाब : झामुमो

नवीन मेल संवाददाता। रांची

देश और राज्य में इंडी गठबंधन के जोरदार प्रदर्शन के साथ गांडेय विधानसभा उपचुनाव में कल्पना मुर्मू सोरेन और दुमका लोकसभा सीट से सीता सोरेन की हार पर झामुमो कार्यालय में भी जश्न मनाया गया। पार्टी कार्यालय में झामुमो नेताओं और कार्यकताओं ने एक-दूसरे को अबीर-गुलाल लगा कर जीत की बधाई दी और लड्डू बांटे इस दौरान कार्यकताओं ने शिबू सोरेन जिंदाबाद, हेमंत सोरेन जिंदाबाद, बंसत सोरेन जिंदाबाद और कल्पना सोरेन जिंदाबाद के जमकर नारे लगाए । जय झारखंड, जेल का ताला टूटेगा, हेमंत सोरेन छूटेगा के नारे लगाए गए। इस मौके पर पार्टी कार्यालय में महासचिव और प्रवक्ता सुप्रियो भट्टाचार्य ने कहा कि लोकसभा चुनाव 2024 का जनादेश एक तानाशाही और अंहकारी सरकार को जनता ने करारा जवाब दिया है। यह पीएम मोदी की करारी पराजय है। वाराणसी में भी पीएम मोदी की दस लाख वोट से जीत का दावा किया जा रहा था, लेकिन महज डेढ़ लाख से जीत का मतलब साफ है कि वाराणसी की जनता ने भी पीएम मोदी को नकार दिया है। देश की जनता ने संविधान और लोकतंत्र की रक्षा की है। झामुमो प्रवक्ता ने कहा कि एक युवा नेता और परिवार के सदस्य को जब जेल भेज दिया तो उनकी युवा पत्नी बहुत विपरित परिस्थिति में परिवार से निकलकर वे सार्वजनिक जीवन में आयीं। उसके दर्द को जनता ने महसूस किया है। उनकी जीत हेमंत सोरेन, गांडेय की जनता और पार्टी गठबंधन नेताओं की जीत है।

प्रतिक्रिया

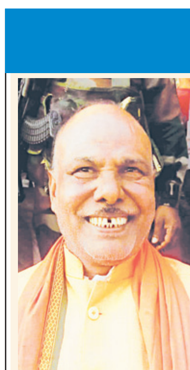

नवीन मेल संवाददाता। रांची

हार-जीत लगी रहती है। हम लोगों की हार पर अभी समीक्षा होनी है। समीक्षा के बाद हार का कारण क्या है स्पष्ट हो जाएगा। लेकिन, वोट के प्रतिशत में काफी बढ़ोतरी हुई है। पिछले लोकसभा चुनाव के मुकाबले इस बार कांके क्षेत्र में 40 से 45 हजार वोट का इजाफा कांग्रेस को हुआ है।

सुरेश बैठा, कांग्रेस नेता, कांके विधानसभा क्षेत्र।

इस बार के चुनाव में एक पॉलिटिकल आधार हम लोगों ने तैयार किया है। पूरे झारखंड में सवा लाख वोट प्राप्त करना एक बड़ी उपलब्धि है। अब ये वोटर हमारे अपने हैं, जिसका प्रभाव आगामी विधानसभा में देखने को मिलेगा।

सुमित कुमार महतो, केंद्रीय सचिव, झारखंडी भाषा खतियान संघर्ष समिति।

400 का आंकड़ा हम लोग का लक्ष्य था, जो नहीं पूरा हुआ। लेकिन, हम लोग चुनाव जीते हैं। जीत के लिए बड़ा आंकड़ा जरूरी नही है। एक वोट से भी जीत होने पर विजेता ही कहलाता है। वोट प्रतिशत रांची ही नहीं, पूरे देश में कम हुआ है। यह समीक्षा का विषय है।

समरी लाल, विधायक, कांके विधानसभा क्षेत्र।

मतगणना केंद्र पर गर्मी से परेशान रहे, पर रुझान के लिए डटे रहे लोग

नवीन मेल संवाददाता। रांची

पंडरा कृषि बाजार में रांची लोकसभा सीट के लिए मतगणना के दौरान भाजपा तथा कांग्रेस कार्यकर्ताओं की भीड़ सुबह से ही देखने को मिली। कुल 27 प्रत्याशियों के मतों की काउंटिंग हुई। सभी प्रत्याशी अपने-अपने कार्यकर्ताओं के साथ मौजूद रहे। इस दौरान पुलिस जवान की मुस्तैदी बनी रही। काउंटिंग सुबह 8:00 बजे शुरू हो गई थी। पहले राउंड का रुझान 9:00 बजे तक आ गया था। वहीं, दूसरा रुझान 9:40 तक आया। जैसे-जैसे रुझान आता गया, वहां का माहौल बदलता गया। इस दौरान गर्मी भी काफी अधिक थी। ऐसे में लोगों को गर्मी से परेशानी का सामना करना पड़ा। पंडरा बाजार के अंदर काउंटिंग एरिया में प्रवेश के लिए बनाए गए मुख्य द्वार पर हर किसी का प्रवेश संभव नहीं था। बड़ी संख्या में लोग गेट के बाहर बैठे रहे। एक ओर झारखंडी भाषा खतियान संघर्ष समिति तथा दूसरी ओर कांग्रेस के कई नेताओं की भीड़ रही। इसके अलावा, बड़ी संख्या में मतगणना केंद्र में शामिल कर्मी तथा मीडिया कर्मी मौजूद थे। वहीं, रोड के किनारे ठंडा पानी, शर्बत, चना सहित खाने पीने के लिए कई ठेला खोमचा लगे हुए थे। जीत का विश्वास कांग्रेस को पहले से था। इसे लेकर कांग्रेस की ओर से बैंड-बाजा, मिठाइयां तथा पटाखे सहित अन्य कई व्यवस्थाएं की गई थीं। लेकिन, रुझान जैसे-जैसे आता गया, वैसे-वैसे उनके मन में यही चल रहा था कि अभी तो शहर का वोट गिना जा रहा है, गांव की काउंटिंग बाकी है। वाकई में गांव क्षेत्र की काउंटिंग होने पर कांग्रेस को बढ़त मिलने लगी, लेकिन अंतिम राउंड आते-आते पासा पलट गया। हार के साथ ही सभी कांग्रेसी मायूस हो गए।

दोपहर बाद गर्मी से मिली राहत

मतगणना केंद्र में पंखा तथा कूलर होने के बाद भी लोगो के पसीने छूट रहे थे। लेकिन, दोपहर के बाद तीन बजते ही मौसम का मिजाज पलट गया। दोपहर में जहां तापमान 38 से 40 डिग्री के आसपास था, वहीं दोपहर के बाद अचानक तापमान में 30 डिग्री से कम हो गया। इस दौरान आसमान में बादल छाये रहे।

एक नजर

बरलंगा पुलिस ने हत्या के फरार आरोपी को दबोचा

गोला। बरलंगा थाना पुलिस ने पत्नी की हत्या कर पिछले तीन सप्ताह से फरार चल रहे आरोपी को गत सोमवार को गिरफ्तार कर न्यायिक हिरासत रामगढ़ जेल भेज दिया है। आरोपी उपेन महतो पिता रमेश महतो 32 वर्ष, उपरबरगा पंचायत के आसाड़ीबगान टोला का रहने वाला है। घरेलु विवाद में पिछले मई महिने में आरोपी ने अपनी पत्नी कविता देवी को आग से जलाकर उसकी हत्या कर दी थी। घटना के बाद गोला थाना क्षेत्र के कुम्हरदगा निवासी मृतक महिला के पिता गंगा राम महतो ने उपेन महतो के खिलाफ अपनी पुत्री की हत्या करने का आरोप लगाते हुए बरलंगा थाना में प्राथमिकी दर्ज कराई थी। इसके बाद से आरोपी फरार चल रहा था। उसकी गिरफ्तारी के लिए पुलिस अधीक्षक रामगढ़, डॉ बिमल कुमार ने थाना प्रभारी अनंत कुमार सिंह के नेतृत्व में एक विशेष टीम का गठन कर आरोपी को शिघ्र गिरफ्तार करने का आदेश दिया।

विहिप ने जघन्य हत्याकांड के आरोपियों के लिए फांसी की मांग की

रामगढ़। रामगढ़ शहर के विद्यानगर में बीते 30 मई हुए सुशीला देवी हत्याकांड का पुलिस ने 72 घंटे में खुलासा कर दिया है। इसके लिए विश्व हिन्दू परिषद् रामगढ़ पुलिस को धन्यवाद देती है। यह बात सोमवार को विहिप के जिला मंत्री छोटू वर्मा ने कही। उन्होंने कहा कि स्व. सुशीला देवी के हत्या की साजिश उनकी बहू की सगी बड़ी बहन स्नेहलता और उसके पति आरिफ नैय्यर ने रची थी। मामले में पुलिस ने अनुसंधान करते हुए रांची निवासी स्नेहलता, आरिफ नैय्यर और चितरपुर (रामगढ़) निवासी अफसर अली को गिरफ्तार किया है। जबकि, हत्याकांड में शामिल दो अन्य आरोपी फरार हैं। उनकी धर पकड़ रामगढ़ पुलिस अवश्य करेगी। उन्होंने कहा कि स्नेहलता का आरिफ नैयर के साथ यह दूसरी शादी है। दोनों आर्थिक तंगी से गुजर रहे थे।

गोला में विश्व पर्यावरण उत्सव पर वन विभाग ने चलाया जागरुकता अभियान

गोला। गोला वन क्षेत्र में वन विभाग की ओर से पर्यावरण सुरक्षा के लिए लगातार जागरूकता अभियान चलाया जा रहा है। लोगों को जागरुक करने के लिए वन विभाग विश्व पर्यावरण दिवस सप्ताह उत्सव मना रहा है। इस कार्यक्रम के तहत चोकाद पंचायत के उपरखाखरा गांव व ग्राम पंचायत उपरबरगा में सोमवार को कार्यक्रम का आयोजन कर पर्यावरण की सुरक्षा और संरक्षण के प्रति लोगों को जागरुक किया गया। इस दौरान ग्रामीणों के सहयोग से जल संरक्षण, मृदा अपरदन, पर्यावरण व बारी डैम बनाकर जागरुक किया गया। इस मौके पर रेंजर राकेश कुमार सिंह ने कहा कि जनसंख्या में बेतहाशा वृद्धि, शहरीकरण और औद्योगीकरण के चलते ऊर्जा की बढ़ती जरूरतों को पूरा करने के लिए पर्यावरणीय संसाधनों का ह्रास हुआ है।

चुनाव परिणाम जानने के लिए लोग दिनभर टीवी व मोबाइल से चिपके रहे

नवीन मेल संवाददाता। रामगढ़
लोकसभा चुनाव 2024 के लिए 4 जून की सुबह 8:00 बजे मतगणना आरंभ हुई। लोकसभा चुनाव का परिणाम जानने के लिए सोमवार को लोग दिनभर टीवी और मोबाइल से चिपके रहे । ताकि उन्हें चुनाव परिणाम की जानकारी मिल सके। साथ ही लोग चुनाव परिणाम को वाटसअप के माध्यम से एक दूसरे को साझा करते देखे गए।

सड़कों में पसरा सन्नाटा : इधर लोगों के चुनाव परिणाम जानने के लिए टीवी और मोबाइल से चिपके रहने के कारण जिले के सड़कों पर दिनभर सन्नाटा सपरा रहा। साथ ही बाजारों में चहल पहल कम दिखी। मतगणना के क्रम. में जिस दल प्रत्याशी आगे बढ़ते गये और जीत दर्ज किया उनके समर्थकों ने आतिशबाजी कर और मिठाई बांटकर खुशियां मनायी।

अन्नपूर्णा देवी की जीत पर कार्यकर्ताओं ने दी बधाई

सांसद प्रतिनिधि महेश अग्रवाल ने कहा यह जीत जनता की जीत है

नवीन मेल संवाददाता। टाटीझरिया
कोडरमा लोकसभा क्षेत्र भाजपा प्रत्यासी सह सांसद अन्नपूर्णा देवी की प्रचंड जीत से भाजपा कार्यकताओं में हर्ष है सांसद प्रतिनिधि महेश अग्रवाल ने कहा की जनता पुनः अपना मत देकर सांसद सह भाजपा प्रत्यासी अन्नपूर्णा देवी को भारी मतों से विजयी बनाने का काम किया है यह जीत उनकी नही बल्कि कोडरमा लोकसभा की जनता की है टाटीझरिया प्रखंड से तीन पंचायत खैरा , झरपो और भराजो में कुल लगभग 9,810 वोट पड़ा था जिसमे 7 ,722 वोट भाजपा के खाते में आया मैं भाजपा कार्यकर्ता और जनता को बधाई देते हूं ।भाजपा कार्यकर्ता रामप्रसाद कुशवाहा,उपेंद्र पांडेय, उमेश प्रसाद दशरथ नारायण सिंह अजय कुमार ,सुरेंद्र राणा प्रविल प्रसाद ,ज्योतिष पंडा संतोष कुमार, सुनील कुमार रामबिलास शर्मा,सुरेश प्रसाद दिलीप शर्मा, छोटन शर्मा, सुरेश मिश्रा, बद्री भुइयां, मिथलेश प्रसाद, दयाल प्रसाद, शानू पंडा मनीष यादव, शंकर प्रसाद राजकुमार सिंह, बद्री साव, अजय पांडेय जीतन महतो सहित ने जीत की हर्ष व्यक्त कर बधाई दी है।

मां काली की पांच दिवसीय वार्षिक यज्ञ का भंडारा के साथ समापन

गिद्दी। रेलीगढ़ा कोलियरी परियोजना स्थित काली मंदिर में मां काली की पांच दिवसीय वार्षिक यज्ञ का मंगलवार को हवन और भंडारा के साथ समापन किया गया। बतौर मुख्य अतिथि रेलीगढ़ा पीओ एएन सिंह ने यज्ञ के प्रसाद का वितरण करके भंडारा की शुरूआत किया। इसके बाद पीओ ने उपस्थित लोगों को संबोधित करते हुए यज्ञ की महता पर प्रकाश डाला। बतौर विशिष्ठ अतिथि रेलीगढ़ा कोलियरी मैनेजर कैलाश कुमार, रेलीगढ़ा पश्चिमी पंचायत के मुखिया गुंजन साव ने भी प्रसाद वितरण कार्य में योगदान किया। इसके पहले पंडित आरके मिश्रा, योगेंद्र मिश्रा, सुकेश दुबे ने मंत्रोच्चार कर हवन आदि का कार्य कराए। इस अवसर पर दीपा देवी, राजामराम सिंह, दिव्यंती देवी, संजय कुमार प्रेमचंद शर्मा, विकास सिंह, दिव्यानंद मिश्रा, कमल सिंह घटवार, अवधेश उपाध्याय, सुनील सिंह, एसके द्विवेदी, पिंटू साव, बबलू पांडेय, संजीव सिंह, ललन कुमार, सुभाष यादव, विनोद प्रसाद, दिलीप सिंह, अजय कुमार, जसपाल सिंह, कॉलोनी के लोग शामिल थे।

रामगढ़ के पंजाब रेजिमेंटल सेंटर में तीसरे अग्निवीर पासिंग आउट परेड का आयोजन

624 अग्निवीर जवान बने पंजाब रेजिमेंट का हिस्सा

नवीन मेल संवाददाता। रामगढ़। पंजाब रेजिमेंटल सेंटर के किलाहरी ग्राउंड में तीसरे बैच अग्निवीर रिक्रूटर्स का पासिंग आउट परेड का आयोजन किया गया. तीसरे अग्निवीर बैच के 624 अग्निवीर जवानों ने उनके 31 सप्ताह के कठिन शारीरिक और मानसिक प्रशिक्षण के समापन पर यह पासिंग आउट परेड का आयोजन किया गया. अब सभी नौजवान सैनिक राष्ट्र की सेवा के लिए पंजाब रेजिमेंट की विभिन्न यूनिटों में तैनात किए जाएंगे. पंजाब रेजिमेंटल सेंटर के कमांडेंट ब्रिगेडियर संजय चंद्र कांडपाल ने अग्नि वीरों को जानदार जोशीली परेड के लिए बधाई दी. उन्होंने कहा कि किलाहरी परेड ग्राउंड के प्रांगण में इस भीषण गर्मी के बावजूद आपकी शानदार और जानदार जोशीली ड्रिलिंग ने यह साबित किया है कि पंजाब रेजिमेंट के रिक्रूटर्स में काफी गर्मी है वे आग के शोले बनकर दुश्मन पर बरसने को तैयार हैं. मुझे आप सभी को मुबारक देते हुए काफी गर्व की अनुभूति हो रही है. कमांडेंट ब्रिगेडियर ने अग्निवीर जवानों से कहा कि आप आज के बाद बहुत ही पुरानी और सबसे भरोसेमंद बहादुर पंजाब रेजिमेंट का हिस्सा बनने जा रहे हैं. कमांडेंट ब्रिगेडियर संजय चंद्र कांडपाल ने कहा कि

देश में अलग-अलग स्थानों पर अग्निवीरों की होगी तैनाती

उन्होंने कहा कि फिर एक छोटा सा आयाम बनने जा रहा है. पहली बार किलाहरी ग्राउंड से इतने सारे रिक्रूटर्स इकट्ठे पास आउट हो रहे हैं और यह रिक्रूटर्स अंतिम पग के सफर को पार करेंगे. कमांडेंट ब्रिगेडियर ने कहा कि अंतिम पग का सफर तय करने के बाद आप में से काफी सारे रिक्रूटर्स कश्मीर की पहाड़ियों में, सियाचिन की ऊंचाइयों पर, अंडमान के टापू में, अरुणाचल की पहाड़ियों से लेकर रण ऑफ कच्छ तक मोर्चा संभालेंगे. कमांडेंट ब्रिगेडियर संजय चंद्र कांडपाल ने कहा हमेशा हमने जो आपको एक बात सिखाई है वह याद रखना है. सबसे बड़ा धर्म हमारे राष्ट्र का धर्म है. पिछले 31 हफ्तों का सफर काफी कठिन था. खासकर एक आम शहरी से एक सिपाही बनने का सफर. 31 सप्ताह की कड़ी मेहनत ने आपको एक हीरे की तरह तराश दिया है. हमेशा एक बात याद रखना है. नाम, नमक और निशान. यह तीन शब्द केवल फौजी की जिंदगी में ही नहीं पर आम और खास की जिंदगी में यह तीन शब्द काफी अहमियत रखते हैं. अंत में मैं यही कहूंगा तेरी हिम्मत सदा तेरे साथ रहे, विजय पताका तेरे हाथ रहे, बीहड़ में भटके राही को रास्ता दिखाता दिखाता चल. इस दौरान ब्रिगेडियर ने अग्निवीरों के माता-पिता के भी प्रशंसा की और देश के लिए उनके योगदान को स्वीकार किया. पंजाब रेजिमेंट सेंटर के किलाहरी ग्राउंड में (पीओपी) पासिंग आउट परेड में प्रशिक्षकों और अग्निवीरों के माता-पिता ने भाग लिया.

आजादी के बाद पंजाब रेजिमेंट का 77 साल का इतिहास बेमिसाल रहा है. पंजाब रेजिमेंट ने 11 युद्ध सम्मान हासिल किए हैं. महावीर चक्र, कीर्ति चक्र, दर्जनों शौर्य चक्र, वीर चक्र सहित कई सामानों से यह रेजिमेंट सुशोभित है. कई ओहदे अपने नाम पर लिखे हैं.

तेज बारिश और तूफान ने मचाई तबाही

दुकान पर गिरा पेड़ बाल-बाल बचे लोग, गर्मी से मिली राहत

नवीन मेल संवाददाता। बरही
मंगलवार को हुई लगभग एक घंटे की आंधी पानी से लोगों को गर्मी से राहत मिली है. वही आंधी और पानी से कई स्थानों पर तबाही भी देखने को मिला. अनुमंडलीय अस्पताल के चहारदीवारी के समीप एक पेड़ गिरने से मो जमशेद के दुकान का आंशिक हिस्सा क्षतिग्रस्त हो गया. गनीमत रही कि जिस समय पेड़ गिरा दुकान बंद था. जिससे जान माल की क्षति होने से बच गया. जिसे दुकानदार सहित स्थानीय लोगो ने काटकर हटाने का काम किया. बरही चौक स्थित गोलंबर में बनाए गए श्री राम के तस्वीर फ्रेम भी आंधी के कारण बिखर गए. तस्वीर का आंशिक हिस्सा उड़कर हजारीबाग सर्विस रोड में चला गया. वही हरीला, करसो, मलकोको आदि के जंगलों में वृक्षों के टहनियां टूट गए. जिसे लेने के लिए ग्रामीणों में आपधापी देखी गई. वर्षा के कारण गर्मी में नरमी आई है. लोग गर्मी से राहत महसूस कर रहे है.

चिकित्सकों की कमी का दंश झेल रहा है अनुमंडलीय अस्पताल

विशेषज्ञ चिकित्सकों की है आवश्यकता : डीएस

नवीन मेल संवाददाता। बरही
अनुमंडलीय अस्पताल बरही की स्वास्थ्य सेवा मुख्यतः तीन स्थाई मेडिकल ऑफिसर पर आश्रित है. डीएस डॉ प्रकाश ज्ञानी ने बताया कि अनुमंडलीय अस्पताल चिकत्सक की कमी से जूझ रहा है. वर्तमान में मुख्य रूप से डीएस के अलावा डॉ इंद्रजीत कुमार और एक महिला चिकित्सक बतौर स्थाई व डीएमएफटी मद से डॉ रामानुज कुमार और महिला चिकित्सक डॉ स्वीटी पदस्थापित है. इसके अलावा डॉ एजाज, डॉ मेराजुल और डॉ अमन तीन आयुष चिकित्सक सहित डॉ प्रवीण और डॉ अंकुर विहान दो डेंटिस्ट पदस्थापित है. जिनके द्वारा भीं ओपीडी और इमरजेंसी सेवाओ में सहयोग लिया जाता है. इसके साथ ही डीएमएफटी से पदस्थापित दो अन्य चिकत्सकों को दो दिन के लिए तथा ट्रॉमा सेंटर के लिए इचाक में पदस्थापित डॉ मृत्युंजय कुमार को तीन दिन के लिए प्रतिनियुक्ति की गई है. डीएस ने बताया कि तीन एनएच के संगम स्थली पर स्थित होने के कारण दुर्घनाग्रस्त मरीजों की भी संख्या ज्यादा होते है. ऐसे में स्थाई रूप से विशेषज्ञ चिकित्सकों की आवश्यता है. जो फिलहाल उपलब्ध नहीं है. इस संबंध में कई बार वरीय अधिकारियो को सूचित किया गया है. उन्होंने बताया कि वर्तमान में उनके पास लगभग सभी आवश्यक उपकरण एक्सरे, जांच केंद्र, पोस्टमार्टम हाउस आदि सहित दवाइयां उपलब्ध है. शीघ्र ही अल्ट्रा साउंड भी चालू किया जायेगा. चिकित्सको के कमी के बाबजूद भी लोगो को बेहतर सेवा उपलब्ध करवाने का हर संभव प्रयास किया जाता है.

न्यूज बॉक्स

हल्की तूफान में पेड़ की चपेट में आया बालक, गंभीर

बरकट्ठा। थाना क्षेत्र अंतर्गत पंचायत चेचकप्पी के ग्राम हेठली डेबो में आंधी तूफान चलने के दौरान पेड़ की शाखा गिर गया। जिसकी चपेट में 13 वर्षीय बालक आ गया। स्थानीय लोगों ने तत्कालीन सूचना मुखिया रीता देवी और समाजसेवी डेगलाल साव को दी। जिसके बाद उन्होंने निजी वाहन से सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र बरकट्ठा लाया। जहां चिकित्सकों। द्वारा प्राथमिक उपचार किया। इस कार्य के लिए प्रकाश सिंह, कपिल देव सिंह, ब्रह्मदेव सिंह, अशोक सिंह, अशोक सिंह, वार्ड सदस्य तिलक सिंह तथा कई ग्रामीणों ने मुखिया के प्रति आभार प्रकट किया।

आंधी-पानी ने बीके इंजीनियरिंग कार्यालय में मचाई तबाही, हजारों का हुआ नुकसान

बरही । मंगलवार को आए तूफान से हरीला तुरी टोला स्थित पोकलेन गैराज बी के इंजीनियरिंग के कार्यालय का कॉर्केट शीट पूरी तरह क्षति ग्रस्त हो गया. सामाजिक कार्यकर्ता सह संचालक बद्री यादव ने बताया कि तूफान की गति काफी तेज थी. अचानक आए तूफान से काफी नुकसान हुआ है. कार्यालय और गैराज के शीट पूरी तरह टूट गए हैं. शुक्र है कि गैराज में काम कर रहे मिस्त्री और मजदूर सभी सुरक्षित रहे. उन्होंने बताया कि इस तूफान से लगभग 50 से 60 हजार रुपए की आर्थिक नुकसान हुई है. उन्होंने लोगों से अपील किया है कि मौसम में परिवर्तन हो रहे हैं. तूफान आने के आसार बने हुए है. ऐसे में सबों को सतर्क रहने की आवश्यकता है. तूफान के दौरान कभी भी पेड़ो के नीचे नहीं रहना चाहिए. तूफान या वर्षा के दौरान वृक्षों के नीचे आश्रय लेना जानलेवा हो सकता है.

भाजपा प्रत्याशी मनीष जायसवाल ने हजारीबाग लोकसभा क्षेत्र से हुए विजयी

रामगढ़। भारतीय जनता पार्टी के प्रत्याशी मनीष जायसवाल ने लोकसभा चुनाव के लिए 4 जून को हुई मतगणना में लगभग 2 लाख मतों से जीत दर्ज किया है. उन्होंने इंडी गठबंधन प्रत्याशी जयप्रकाश भाई पटेल को पराजित किया. जीत दर्ज करने के बाद उन्होंने कहा कि मैं चुनाव में वोट देने और विजय बनाने के लिए हजारीबाग लोकसभा क्षेत्र के लोगों का आभार व्यक्त करता हूं. श्री जायसवाल ने कहा कि अब मेरा लक्ष्य है हजारीबाग लोकसभा क्षेत्र के लोगों के हर सुख दुःख में भागीदार बनना और लोकसभा क्षेत्र कि समस्याओं को दूर करना।

पूर्व विधायक ने गांडेय विधानसभा उपचुनाव में जीत पर कल्पना को दी बधाई

बरकट्ठा। पूर्व विधायक जानकी प्रसाद यादव ने गांडेय विधानसभा उपचुनाव में कल्पना मुर्मू सोरेन की 26483 मत से जीत दर्ज करने पर बधाई देने गिरिडीह पहुंचे। साथ ही पूर्व अध्यक्ष झारखंड राज्य आवास बोर्ड सह झामुमो नेता जानकी प्रसाद यादव ने गुलदस्ता देकर शुभकामनाएं दी। उन्होंने कहा कि गांडेय विधानसभा उपचुनाव में कल्पना सोरेन को यहां की जनता ने बहुमत देकर झारखंड सरकार को और मजबूती प्रदान किया है। झारखंड की सरकार गरीबों की सरकार है। आने वाले दिनों में भी राज्य में झामुमो इंडिया गठबंधन की ही सरकार बनेगी।

नाइट ब्लड सर्वे फाइलेरिया जांच टीम पहुंची नयाडीह

बरकट्ठा। प्रखंड के बरकट्ठा उत्तरी पंचायत के नयाडीह और साव टोला में नाइट ब्लड सर्वे हेतु फलेरिया जांच की टीम पहुंची। जांच टीम में एमपीडब्ल्यू अनिल कुमार, मनिंदर कुमार किशन, कुमार दीपेश कुमार वीरेंद्र कुमार, सुधीर कुमार, एलटी चंदन कुमार मोहम्मद, सेफ राजीव कुमार की उपस्थिति में जांच किया गया। इस कैंप में सहिया दीदी सायरा खातून, पार्वती देवी ने लाभार्थियों को बुलाकर जांच करवाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वही बीटीटी प्रकाश पंडित के अगुवाई में सभी लाभार्थियों को फलेरिया के बारे में जानकारी देते हुए जांच करने का आग्राह किया गया। मौके पर विशाल कुमार, संजय कुमार समेत दर्जनों ग्रामीण उपस्थित थे। वहीं 310 लाभार्थियों का सैंपल जांच के लिए लिया गया।

सफलता

खरगे व तेजस्वी भी नही हुए असरदार, भाजपा का गढ़ हजारीबाग रहा बरकरार

तीन विधायकों पर भारी पड़े मनीष जायसवाल

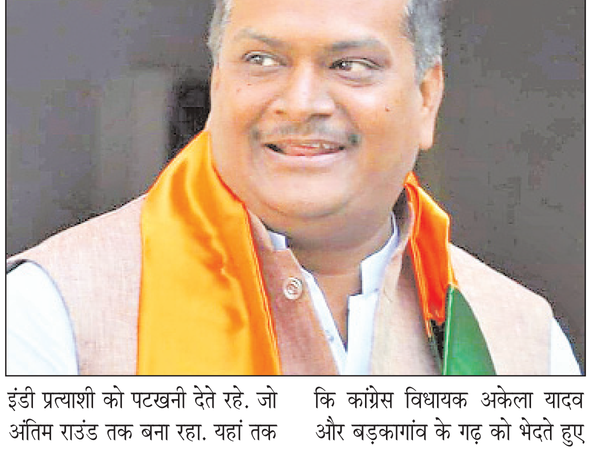

नवीन मेल संवाददाता। बरही
झारखंड के लिए इंडी गठबंधन के लिए प्रतिष्ठा के लिए बनी हजारीबाग सीट भाजपा का अभेद दुर्ग बना रहा. बीजेपी के किले को भेद करने में लगे हजारीबाग के पूर्व सांसद सह पूर्व वित्त व विदेश मंत्री यशवंत सिन्हा व उनकी टीम, कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष खड़गे, राजद नेता तेजस्वी यादव, बरही विधायक अकेला यादव, बड़का गांव विधायक अंबा प्रसाद और स्वयं इंडी प्रत्याशी सह मांडू विधायक जेपी पटेल के प्रयास भी भाजपा के चरम प्रयास असफल रहे. हजारीबाग संसदीय सीट की जनता ने एक बार फिर भाजपा पर विश्वास किया. पोस्टल बैलेट काउंटिंग से ही भाजपा प्रत्याशी श्री जायसवाल इंडी प्रत्याशी को पटखनी देते रहे. जो अंतिम राउंड तक बना रहा. यहां तक कि कांग्रेस विधायक अकेला यादव और बड़कागांव के गढ़ को भेदते हुए बीजेपी ने अपनी परंपरा सीट बचाने में कायम दिख रही है. 16वें राउंड तक श्री जायसवाल 2,15,156, मत से अपने निकटतम प्रतिद्वंदी इंडी गठबंधन के जेपी भाई पटेल से आगे चल रहे हैं. जो निर्णायक सफलता की ओर संकेत है. इस प्रकार हजारीबाग की जनता ने अपने प्रिय विधायक श्री जायसवाल को प्रोन्नति देते हुए हजारीबाग की समस्याओं को सांसद में उठाने की जिम्मेवारी सौपने के लिए बेताब है. इस चुनाव में हजारीबाग संसदीय सीट ने कई रिकॉर्ड कायम किया है. एक ही पार्टी के दो विधायक आपस में लड़ते रहे. बीजेपी विधायक श्री पटेल अपने ही पार्टी के आलाकमान की खिंचाई करते दिखे.

अंतरराष्ट्रीय ब्राह्मण महासंघ प्रदेश उपाध्यक्ष के अवतरण दिवस पर विप्र गणों ने दी बधाई

नवीन मेल संवाददाता। टाटीझरिया
अंतर्राष्ट्रीय ब्राह्मण महासंघ प्रदेश उपाध्यक्ष हजारीबाग नगवा निवासी आचार्य बिरेंद्र कुमार पांडेय के जन्मदिन सह अवतरण दिवस के अवसर पर जिले के कई विप्र बंधुओं ने संदेश दिया। आचार्य बिरेंद्र समाज सेवा में अपना निरंतर अहम योगदान देते रहते हैं। क्षेत्र वासियों से पूछे जाने पर कहते हैं कि आचार्य बिरेंद्र उर्फ बीरू सर विद्यालय में शिक्षक के पद पर हैं जो बच्चों को बहुत ही बेहतर ढंग से शिक्षा के प्रति निरंतर मार्ग दर्शन करवाते हैं तथा वे क्षेत्र में वैदिक कर्मकांड के शास्त्र पुराण के भी ज्ञाता हैं। उन्होंने अब तक कई गरीब वर्ग के छात्र छात्राओं को भी कम शुल्क में बेहतर शिक्षा देते हैं। वहीं बता दें कि ब्राह्मण समाज के प्रति निष्ठावान पूर्वक होकर वे समाज के प्रति अपनी सेवा देते रहते हैं। इनके समाज सेवा हित कार्यों को देखर अंतर्राष्ट्रीय ब्राह्मण महासंघ के प्रदेश अध्यक्ष सुनील कुमार पांडेय ,यूवा प्रकोष्ठ प्रदेश अध्यक्ष ओमकार नाथ शर्मा,आचार्य पुरेंद्र, सचिदानंद पांडेय समेत अन्य सैकड़ों विप्र गणों ने अवतरण दिवस की बधाई संदेश देते हुए उज्ज्वल भविष्य की कामनाए कीया ।

एक नजर

सड़क पर पानी बहने से लोग परेशान

कटकमदाग। प्रखंड के बानादाग दलित टोला में पिछले एक वर्ष से नाली का पानी सड़क पर बहने से लोग परेशान हैं। मार्ग से बड़े वाहनों के परिचालन होने से प्रदूषित पानी लोगों के घरों में प्रवेश कर जा रहा है। जल जमाव होने से मच्छरों का प्रकोप बढ़ा हुआ है। लोगों को पैदल चलना मुश्किल हो रहा है। बताया गया कि नाली वर्षों से सफाई नहीं होने के कारण जगह-जगह नाली जाम हो गया है। जिसके कारण नाली का पानी सड़क पर जमा हो जा रहा है। स्थानीय लोगों ने इसकी शिकायत पंचायत प्रतिनिधियों व जिले के पदाधिकारी से भी की। लेकिन इस पर कोई कार्रवाई नहीं की जा रही है। जिसके कारण स्थानीय लोगों में रोष बना हुआ है।

मनीष जायसवाल के जीत पर शहर में निकला विजय जुलूस

रामगढ़। बाजार समिति स्थित मतगणना हॉल से हजारीबाग संसदीय क्षेत्र से प्रचंड जीत पर मंगलवार की देर शाम को मनीष जायसवाल का विजयी जुलूस निकला। जुलूस का आगाज क्षेत्र के पंडितों के दल द्वारा शंख ध्वनि और घंटा ध्वनि के साथ किया गया। तत्पश्चात भाजपा के नवनिर्वाचित हजारीबाग सांसद मनीष जायसवाल फूलों से आकर्षक रुप में सजे खुले जीप पर सवार होकर लोगों का हाथ जोड़कर और हाथ हिलाकर आभार व्यक्त करते हुए और धन्यवाद जताते हुए विक्ट्री निशान दिखाते काफिले संग चल रहे थे। उनके काफिले में भाजपा कार्यकर्ता और उनके समर्थक हजारों की संख्या में डीजे की धुन और तासों की गड़गड़ाहट के साथ नाचते- झूमते खुशियां मनाते हुए चल रहे थे। उनके लिए एक साथ दीवाली और होली सा दृश्य था।

छह वर्षीय बच्ची से दुष्कर्म के प्रयास के आरोपी को 22 साल कारावास

कोडरमा। कोडरमा संवाददाता छह वर्षीय बच्ची के साथ दुष्कर्म करने वाले को कोर्ट ने 22 वर्ष की सजा सुनाई। अभियुक्त में आंबेडकर नगर तिलैया निवासी 24 वर्षीय विकास कुमार पिता कट्टू सिंह शामिल हैं। मामले में सोमवार को फैसला सुनाते हुए अपर जिला एवं सत्र न्यायाधीश प्रथम सह स्पेशल पोक्सो कोर्ट के न्यायाधीश गुलाम हैदर की कोर्ट ने दोषी पर 20 हजार रुपए जुमार्ना भी लगाया है। जुमार्ना की राशि नहीं देने पर एक साल अतिरिक्त सजा भुगतनी होगी। जबकि कोर्ट ने 363 भादवि के तहत दोषी पाते हुए सात साल कारावास की सजा सुनाई। साथ ही पांच हजार रुपए जुमार्ना लगाया। जुर्माना की राशि नहीं देने पर पांच माह अतिरिक्त सजा भुगतनी होगी। 354 भादवि के तहत चार साल की सजा सुनाई और तीन हजार जुमार्ना लगाया।

भारत सरकार के राष्ट्रीय प्रतिदर्श सर्वेक्षण कार्यालय, हजारीबाग में किया गया हिंदी कार्यशाला का आयोजन

हर भारतीय हिन्दी भाषा को करें आत्मसात : केके गुप्ता

नवीन मेल संवाददाता। हजारीबाग भारत सरकार के राष्ट्रीय प्रतिदर्श सर्वेक्षण कार्यालय (क्षे.सं. प्र.) , हजारीबाग ने अपने कार्यालय परिसर में प्रत्येक तिमाही के भांति इस तिमाही में भी हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया । कार्यक्रम की शुरूआत सांख्यिकी के जनक डॉ. (प्रो.) पी.सी. महालोनोबिस जी के चित्र को पुष्प अर्पित कर एवं दीप प्रज्ज्वलित कर किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में (डॉक्टर) केके गुप्ता, अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, विभावि हजारीबाग मुख्य रूप से उपस्थित रहे विशिष्ट अतिथि के रूप में डा. जितेंद्र झा, उप निदेशक, (प्रशिक्षण) दा.घा.नि. उपस्थित रहे। मुख्य अतिथि के के गुप्ता, अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, वि . भा. वि ने हिंदी के कई पहलुओं पर चर्चा की। श्री गुप्ता ने कहा कि वर्तमान दौर में हिन्दी भाषा को आत्मसात करना जरूरी है। यह भाषा हमारी संस्कृति है। इससे हमारे देश की पहचान है। उन्होंने बताया कि विदेशों में हिंदी भाषा उत्तरोत्तर बढ़ रही है एवं अधिकाधिक हिन्दी का प्रयोग करके ही हमें हिंदी का विकास करना होगा। राष्ट्रीय प्रतिदर्श सर्वेक्षण कार्यालय, हजारीबाग के वरिष्ठ सांख्यिकीय अधिकारी सह कार्यालय प्रभारी सूरज कुमार ने सभी अतिथिगणों को शॉल देकर सम्मानित किया। तत्पश्चात उन्होंने उद्बोधन भाषण में कार्यशाला में उपस्थित सभी अधिकारियों व कर्मचारियों का मुख्य अतिथि से परिचय करवाया। उन्होंने बताया कि कम्प्यूटर पर हिंदी में कार्य करना पहले की तुलना में अब बहुत आसान हो गया है। इसलिए सभी कार्य हिंदी में ही करें। डा. जितेंद्र झा, उप निदेशक, (प्रशिक्षण) दा.घा.नि. ने अपने संबोधन में उप क्षेत्रीय कार्यालय, हजारीबाग में प्रत्येक तिमाही में कार्यशाला होने पर सभी की सराहना की साथ ही उन्होंने सभी को सतत प्रयास करते रहने का सुझाव दिया। वरिष्ठ सांख्यिकीय अधिकारी कुमार विमलेंदु शेखर ने कार्यालय के शत प्रतिशत कार्य हिंदी में होने की बात कही। कार्यालय के सभी कनिष्ठ सांख्यिकीय अधिकारी, आशीष कुमार कंधवे, जानकी नाथ मिश्र, सतीश गुप्ता, सुधीर कुमार एवं सूरज कुमार ने हिंदी को आगे बढ़ाने में अपने विचार रखे। साथ ही कार्यालय के सर्वेक्षण पर्यवेक्षक अनुराग रंजन, सर्वेक्षण प्रगणक मिथलेश मोदी, आशीष रंजन, रंजीत कुमार गुप्ता, दिवाकर राज, शुभम सोनी, प्रशांत कुमार, सौरभ कुमार,राहुल रंजन , उमेश नाथ चौबे, हरेंद्र कुमार राय, एमटीएस श्रीकांत खां आदि ने भी हिंदी के महत्व पर प्रकाश डाला। जिसमें कुछ ने प्रभावशाली कविता के माध्यम से भी रोचक बातें कहीं। कार्यालय के सभी कर्मियों ने प्रण लिया कि हम जहां भी रहेगें हिंदी का अलख जगाते रहेगें और देश के विकास में अपना योगदान देते रहेगें और हिंदी को उसका उचित स्थान दिलाने के लिए हमेशा प्रयासरत रहेंगे। विदित हो कि उप क्षेत्रीय कार्यालय हजारीबाग अपने हिंदी के समर्पण के प्रति हमेशा से निष्ठावान रहा है। अभी जिस प्रकार अंग्रेजी पूरे भारतवर्ष में छाया हुआ है इस तरह हिंदी भी पूरे भारतवर्ष में अंग्रेजी से भी बेहतर छाई रहे ।कार्यक्रम को सफल बनाने में कार्यालय के सभी सदस्यों सहित आदेशपाल जयप्रकाश पासवान की भी अहम भूमिका रही।

वरिष्ठ सांख्यिकीय अधिकारी कुमार विमलेंदु शेखर ने कार्यालय के शत प्रतिशत कार्य हिंदी में होने की बात कही, किंतु अपने स्तर से हमेशा प्रयास करते रहने की बात कही

2,59, 608 मतों से मनीष ने जयप्रकाश की डुबाई नैया, खूब बंटी मिठाइयां

बरही । देर संध्या जिला निर्वाचन पदाधिकारी नैंसी सहाय ने हजारीबाग संसदीय सीट का अंतिम परिणाम जारी कर दिया. भाजपा प्रत्याशी मनीष जायसवाल ने अपने निकटतम प्रतिद्वंदी इंडी गठबंधन के कांग्रेस समर्थित उम्मीदवार जयप्रकाश भाई पटेल को 2,59, 608 मतों से पटखनी देते हुए इंडी गठबंधन की नैय्या डुबो दी. भाजपा एक बार फिर हजारीबाग के अभेद दुर्ग को विपक्षियों को भेदने से बचा लिया. जीत की सूचना मिलते ही भाजपा समर्थकों में खुशी की लहर फेल गई. मौके पर पहुंचे बरही के पूर्व विधायक सह बिहार के पूर्व मंत्री मनोज कुमार यादव का नवनिर्वाचित सांसद ने पैर छूकर व माला पहनाकर आशीर्वाद लिया. समर्थको में मिठाइयां बंटना शुरू हो गया. चौक चौराहे पर पटाखे फुंटने लगे. नवनिर्वाचित सांसद ने कहा कि यह जीत हजारीबाग संसदीय क्षेत्र की जनता का है, जिसके वह आजीवन आभारी रहेंगे.

न्यूज बॉक्स

कांग्रेस प्रत्याशी कालीचरण मुंडा की जीत पर बानो में निकाली गई विजयी जुलूस

बानो। लोकसभा चुनाव में कॉंग्रेस प्रत्याशी कालीचरण मुंडा के भारी भरकम मतों से हुई जीत पर बानो में इंडिया गठबंधन के दलों ने विजय जुलूस निकाला। जीत की सूचना मिलते ही समर्थकों ने बिरसा चौक में जमा होकर एक दूसरे को जीत की बधाई दी एवं पटाखे फोड़े,एक दूसरे को अबीर लगा जीत की शुभकामनाएं दी ।वहीं बानो स्थित भगवान बिरसा मुंडा के प्रतिमा पर माल्यार्पण कर नाच गाने के साथ जयपाल मैदान, बाजार ताड़,स्टेशन आदि जगहों पर खुशी जाहिर किया ।कॉंग्रेस प्रखंड अध्यक्ष जगदीश बागे के नेतृत्व में खूंटी से लौटे कार्यकर्तओं ने भी भगवान बिरसा मुंडा के प्रतिमा पर माल्यार्पण किया ।मौके पर खूंटी से लौटे कार्यकर्तओं को माला पहनाकर स्वागत किया गया ।मौके पर बानो प्रमुख सुधीर डांग,बिदेशिया बड़ाईक, मो आलम ,मो मजहर ,संदीप समद ,अमित ,आमुस कण्डुलन ,आनंद मसीह तोपनो ,सुधीर लुगुन ,मो मनीर ,अनिल बागे आदि लोग उपस्थित थे।

बोलबा प्रखंड में कालीचरन मुंडा की जीत की खुशी में मनाया गया जश्न

बोलबा। बोलबा प्रखण्ड मुख्यालय स्थित चौक पर खूंटी लोकसभा संसदीय क्षेत्र से कांग्रेस पार्टी के कर्मठ उम्मीदवार कालीचरण मुण्डा की भारी मत से जीत होने पर कांग्रेसी कार्यकताओं ने एक दूसरे को अबीर गुलाल लगाकर एवं मिठाई बांटकर खुशियाँ मनाई। इस जीत की खुशी में फटाखे भी फोड़े गए। कांग्रेस पार्टी के प्रखण्ड अध्यक्ष प्रेम दास ने बताया कि यह खूंटी लोकसभा से एक ऐतिहासिक जीत हुई है । हमलोग पहले से ही आश्वस्त से कि कांग्रेस पार्टी भारी मत से जीतेगी । इस जीत से बोलबा प्रखण्ड में खुशी का माहौल है ।इस मौके पर प्रेम दास, रोबर्ट सोरेंग, रंजीत शाह, नेलसन डुंग डुंग, बिमला देवी, यमुना प्रसाद एवं अन्य लोग मौजूद थे।

जीईएल चर्च क्रुसकेला में मना उरांव बपतिस्मा दिवस

सिमडेगा। प्रखंड के जीईएल चर्च क्रुसकेला में मंगलवार को उरांव बपतिस्मा दिवस मनाया गया। जहां पादरी रेभ अनुकरण लकड़ा और पादरी रेभ लोरेंग डुंगडुंग की अगुवाई में विशेष अराधना की गई। कार्यक्रम में झापा युवा जिलाध्यक्ष संदेश एक्का और महिला जिलाध्यक्ष आईरिन एक्का उपस्थित थी। संदेश एक्का ने कहा कि उरांव समाज द्वारा आयोजित बपतिस्मा दिवस समाज को संगठित करने में अहम भूमिका निभा रही है। ऐसे ही समाज लोगों को एकजूट रहना है। समाज को विकास के पथ पर आगे ले जाने के लिए आगे आएं। उनहोंने कहा कि समाज में आज भी कई बुराईयां है। जो समाज के विकास में रोड़ा बना हुआ है। इन बुराईयों को दूर करने के लिए कार्य करें। वहीं आईरिन एक्का ने कहा कि आज समाज में नशापान हावी है। इसे हर हाल में समाज से दूर करना है। बच्चों को शिक्षा से जोड़ें। महिलाओं को समाज में पुरा सम्मान दें। महिला उत्थान के बिना समाज के विकास की परिकल्पना लगभग असंभव है। इधर संदेश एंव आईरिन के कार्यक्रम स्थल पहुंचने पर उनका जोरदार तरीके से स्वागत किया गया। नृत्य मंडली ने नाचते गाते हुए उन्हें मंच तक लाया। इसके बाद बुके देकर उनका स्वागत किया। कार्यक्रम में अभय विश्वकर्मा, जोसेफ डुंगडुंग, अनुपा मिंज, रसाल खलखो, आशीष सिंह, सैहुन एक्का, अनूप एक्का, समीर तिर्की, ज्योति टोप्पो सहित काफी संख?या में मतावलंबी उपस्थित थे।

टैलेंट सर्च सीएससी ओलंपियाड परीक्षा के लिए जारी है पंजीकरण

ओलंपियाड बच्चों को प्रतियोगी बनने का देता है बेहतर प्लेटफॉर्म : डीएम

नवीन मेल संवाददाता। बरही ओलंपियाड परीक्षा के लिए ऑनलाइन पंजीकरण जारी है. यह एक ऐसा प्लेटफार्म है जो बच्चों / विद्यार्थियों को स्किल टेस्ट, वैचारिक ज्ञान और स्वयं की ग्रेडिंग जांच करने का अवसर देता है. यह परीक्षा राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर गठित इकाई द्वारा लिया जाता है. उक्त जानकारी सीएससी मैनेजर रौशन कुमार ने दी. उन्होंने बताया कि सीएससी के माध्यम से यह पंजीकरण करवाया जा रहा है. जिसमे प्रत्येक विद्यार्थी को पांच मॉक टेस्ट का भी मौका दिया जाता है. डीएम मो निजामुद्दीन ने बताया कि आज का युग कम्पटीशन का हैं. बच्चों को इस प्रकार के परीक्षा से एक मजबूत आधार मिलता है. अभी अभिभावकों को इस ओलंपियाड परिक्षा के लिए अपने बच्चो को पंजीकरण करवानी चाहिए. डिजिटल पंचायत डिस्ट्रिक्ट इंचार्ज मुकेश झा ने बताया कि बच्चो का दिमाग एक कच्ची माटी के सामान्य होता हैं. उन्हें जिस तरह ढालेंगे वो ढल जायेंगे. एक पका हुआ घड़ा को हम दुबारा नहीं ढाल सकते हैं. उन्होंने सभी अभिभावकों से अपने बच्चो के भविष्य संवारने के लिए ओलंपियाड जैसे परीक्षा में शामिल करवाने की अपील किया है. कोनरा पंचायत प्रज्ञा केंद्र संचालक जयदीप कुमार सिन्हा ने बताया कि उनके रामनारायण यादव मेमोरियल स्थित एसआरसी सेंटर और कोनरा पंचायत भवन स्थित प्रज्ञा केंद्र पर प्रतिदिन ओलंपियाड के लिए पंजीकरण करवाए जा रहे है. विशेष जानकारी के लिए अभिभावक उक्त केंद्र से संपर्क स्थापित कर सकते हैं.

गांडेय विधानसभा उपचुनाव में पूर्व सीएम की पत्नी बनी विजेता

झामुमो विस प्रभारी ने दी बधाई

नवीन मेल संवाददाता। बरही गांडेय विधानसभा उपचुनाव में पूर्व मुख्यमंत्री की पत्नी कल्पना सोरेन ने अप्रत्याशित जीत दर्ज किया है. इस अप्रत्याशित जीत के लिए झामुमो बरही विधानसभा प्रभारी सह केंद्रीय सदस्य बिनोद विश्वकर्मा ने श्रीमती सोरेन को बधाई दी है. उन्होंने बताया कि इस चुनाव में जनता ने एनडीए को उसकी करनी का सबक सिखाया है. अब जनता जाग चुकी है, सत्ता मोह में अनावश्यक आरोप लगाकर झारखंड की राजनीति में भूचाल लाने वाले बीजेपी के नेताओं को सबक लेने की आवश्यकता है. झारखंड की भोली भाली जनता अपने हक की लड़ाई के लिए सत्ता लोलूपों को सबक सिखाने का काम किया है. उन्हे पूर्ण विश्वास है कि श्रीमती सोरेन झारखंड में एक बार फिर शांति कायम करने में सफल होंगी. पूर्व सीएम हेमंत सोरेन को न्याय मिलेगा और शीघ्र जनता सेवा करने के लिए हमलोगों के बीच होंगे. जिस तरह से झारखंड में राजनीतिक की सरगर्मी बढ़ गई है इससे यह साबित होता है आग चलकर झारखंड में जेएमएम एक मजबूत पार्टी है।

खुंटी लोकसभा में मिली एकतरफा जीत पर विधायक भूषण बाड़ा ने जताया आभार

नवीन मेल संवाददाता। सिमडेगा विधायक भूषण बाड़ा ने खुंटी लोकसभा सीट में कांग्रेस उम्मीदवार को एकतरफा वोट देकर ऐतिहासिक जीत दिलाने के लिए आम जनता एवं इंडिया गठबंधन के कार्यकर्ताओं के प्रति आभार जताया है। उन्होंने कहा कि खुंटी लोकसभा के लिए आज बहुत ऐतिहासिक दिन है। यहां की जनता ने इंडिया गठबंधन प्रत्याशी कालीचरण मुंडा को एक तरफरा वोट देकर सांसद बनाने का काम किया है। कहा कि संगठन ने भी चुनाव अभियान को लगातार गति देने का काम किया और हरेक कार्यकर्ता की चिंता की। उनकी मेहनत का ही परिणाम आज हमें मिला है। मुझे भी संगठन ने जब जो जिम्मेदारी दी मैंने उसे पूरा करने का प्रयास किया। जीत पर आम जनता के अलावे इंडिया गठबंधन के प्रत्येक कार्यकर्ता का आभार। उन्होंने कहा कि पिछले दस साल में प्रधानमंत्री मोदी के सरकार से तबाह रहे जनता ने पूरी तरह से नकारने का काम किया। यह जीत जनता की जीत है। उन्होंने कहा कि हमारी जीत का यह सिलसिला अभी रुकने वाला नहीं है। आने वाले विधानसभा में भी हमारी जनता इंडिया गठबंधन के साथ है। आगामी चुनाव में भी हमें बड़े अंतर से जीत मिलेगी। जिप सदस्य जोसिमा खाखा ने भी जीत का श्रेय जनता एवं इंडिया गठबंधन के सभी कार्यकर्ताओं को दिया है।

तरकश में थे कई तीर पर अर्जुन मुंडा सही निशाना लगाने से चूक गए

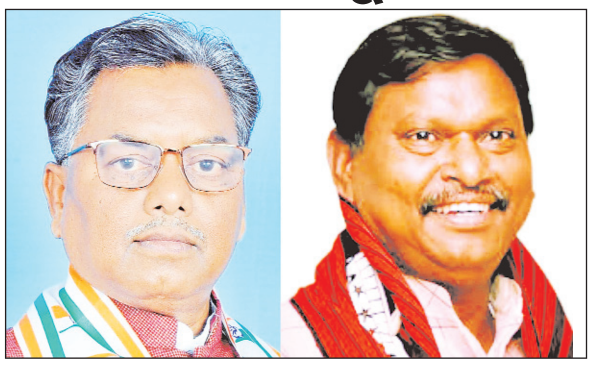

नवीन मेल संवाददाता। सिमडेगा आखिर वही हुआ। कांग्रेस ने खूंटी लोकसभा क्षेत्र से इतनी बड़ी अंतर से जीत हासिल की। अर्जुन का तीर कोई और चला रहा था। तस्कर में कई तीर थे पर अर्जुन वो तीर का सही निशाना लगाने में चूक गए। अर्जुन खुद निशाना लगाने में असमर्थ थे। लगातार कई दशक तक जीतती आ रही भारतीय जनता पार्टी को अहम सा हो गया था। खुद बीजेपी प्रत्याशी अर्जुन मुंडा ने किसी जाति, समाज, प्रखंड, गांव को उचित महत्व नहीं दिया। अर्जुन मुंडा के व्यवहार से तेली, रौतिया, मुंडा आदि जातियां नाराज चल रहे थे। चापलूसों के बीच रहकर उन्होंने इस कमियों को समझने की कोशिश नहीं किया। बस केंद्र के बड़े नामों के बीच चुनाव प्रचार करते रहे। बानो प्रखंड मुख्यालय के ग्राम सोय में लोकसभा चुनाव को लेकर जब बीजेपी का कार्यक्रम हुआ ।जब कार्यक्रम के लिये हेलीकॉप्टर से अकेले बाबूलाल मरांडी उतरे तो एक कट्टर समर्थक ने भविष्यवाणी करते हुए कहा बिना दुल्हा के बारात अर्जुन को आना चाहिए। वहीं एक ओर कॉंग्रेस पार्टी के द्वारा बिना दिखावा के घर घर जमीनी स्तर पर जा कर अपने नेता के समर्थक का चुनाव प्रचार किया। बीजेपी को पहले से पता था कि विपक्ष के पास कई बड़े मुद्दे हैं। जिसको चुनाव के पूर्व मिल बैठ कर हल किया जा सकता था। मणिपुर में हुई घटना को लेकर हुरदा से सिमडेगा तक लगभग 120 किलोमीटर जो मानव श्रृंखला बनाई गई थी उसे देख कर सचेत हो जाना चाहिए था ।दूसरी विभिन्न प्रखंडो में बीजेपी के प्रखंड कमिटी के बीच आपसी तालमेल नही होने के साथ विभिन्न प्रखंड, मंडल के अपनी अलग अलग समस्या थी ।ग्रामीणों के बुलावे के बावजूद ध्यान नही देना आज जी का जंजाल बन गया.. ! बीजेपी के पदाधिकारियों की अहम ,मोदी के नाम पर वोट मांगना पर अर्जुन मुंडा के नाम को गौंन कर देना हार का मुख्य कारण माना जा सकता है ।आज जगह जगह प्रधानमंत्री सड़क योजना कार्यक्रम चल रही पर क्षेत्र के गावों में चलने लायक सड़क नही बन पाया। कालीचरण मुंडा एक बार निखर कर लोगो के बीच आ रहे हैं ।कालीचरण मुंडा से लोकसभा के ग्रामीणों को कई आशा है।

जीत का जश्न

कांग्रेस और जेएमएम कार्यकर्ताओं ने मनाई जीत की खुशी

कालीचरण ने अर्जुन को लाखों वोटों के अंतर से दी शिकस्त

नवीन मेल संवाददाता। सिमडेगा खूंटी लोकसभा क्षेत्र से कुल सात प्रत्याशी लोकसभा 2024 के चुनाव में मैदान में अपनी भाग्य का फैसला आजमाने उतरे थे। जिसमें से भाजपा से केंद्रीय मंत्री अर्जुन मुंडा, कांग्रेस से कालीचरण मुंडा, बहुजन समाज पार्टी से सावित्री देवी, झापा से अर्पण हंस,भारत आदिवासी पार्टी से बबिता बड़ाइक वहीं निर्दलीय प्रत्याशी के रूप में बसंत लोंगा एवं पास्टर संजय कुमार तिर्की मैदान में थे। यहां मुकाबला मुख्यतः भाजपा एवं कांग्रेस के बीच ही बताया जा रहा था। भाजपा ने दिग्गज आदिवासी नेता और केंद्रीय मंत्री अर्जुन मुंडा को मैदान में उतारा था, जबकि कांग्रेस ने झारखंड के सबसे प्रभावशाली आदिवासी नेताओं में से एक मुचिराई मुंडा के बेटे काली चरण मुंडा को टिकट दिया था। दोनों के बीच जबरदस्त मुकाबला था। परंतु यहां कांग्रेस के कालीचरण मुंडा ने केंद्रीय मंत्री अर्जुन मुंडा को लाखों वोटों के अंतराल से शिकस्त देकर जीत अपने नाम दर्ज की। सबसे चर्चित लोकसभा सीटों की बात हो, तो झारखंड की खूंटी का जिक्र जरूर होगा। क्योंकि 1962 से 1984 तक खूंटी लोकसभा सीट पर कांग्रेस और झारखंड पार्टी का दबदबा रहा। लेकिन 1980 के दशक में बाजी पलट गई ।भाजपा ने इस सीट पर कब्जा जमाया और तब से अब तक सिर्फ एक चुनाव भाजपा यहां से हारी थी। वह है 2004 का चुनाव, जब कांग्रेस की सरकार बनी थी। 2024 के लोकसभा चुनाव में खूंटी लोकसभा अनुसूचित जनजाति के उम्मीदवारों के लिए आरक्षित था।

कार्यकर्ताओं ने बांटी मिठाईयां मनाई जीत की खुशी

इधर खूंटी लोकसभा क्षेत्र से इंडी गठबंधन के प्रत्याशी कालीचरण मुंडा रुझानों में पहले राउंड से ही अपनी बढ़त बनाए हुए थे ।पार्टी कार्यकर्ता शुरू से ही उनके जीत को लेकर आश्वस्त दिख रहे थे ।जैसे जैसे रुझानों में आंकड़ा बढ़ता गया पार्टी कार्यकर्ताओं ने खुशियां मनना शुरू कर दिया था।

एनडीए की जीत को लेकर कार्यकर्ताओं में खुशी की लहर

कटकमदाग। हजारीबाग लोकसभा सीट से एनडीए समर्थित प्रत्याशी मनीष जायसवाल की जीत को लेकर प्रखंड के भाजपा नेता व कार्यकताओं में खुशी की लहर है। मतगणना स्थल से जैसे से मनीष जायसवाल को 5-6 राउंड से ही बड़ी अंतर से बढ़त बनाने की खबर सोशल मीडिया पर वायरल होने लगा, तभी से नेता व कार्यकर्ता उत्साहित होने लगे। आगे भी जैसे-जैसे बढ़त बरकार रहा। उनके उत्साह और उमंग परवान चढ़ते गया। विधायक प्रतिनिधि अजय कुमार साहू के नेतृत्व में प्रखंड के नेता व कार्यकर्ता फूलमाला के साथ मतगणना केंद्र के बाहर मनीष जायसवाल के स्वागत में पहुंचे।

बारिश के पूर्व नाले व नालियों की सफाई में जुटा नगर परिषद, टीम का गठन

नवीन मेल संवाददाता। झुमरीत तिलैया बरसात के मौसम में जलजमाव की समस्या को देखते हुए झुमरीतिलैया नगर परिषद क्षेत्रांतर्गत बड़े नाले व नालियों की सफाई करा रही है। नगर प्रबंधक की निगरानी में तीन टीमें सभी बड़े नालों की सफाई कर गाद हटा रही है। प्रशासक हर्षवर्धन ने बताया कि बरसात के दिनों में कई जगहों पर जलजमाव की समस्या से लोगों को जूझना पड़ता है। ऐसे में सभी बड़े नालों की सफाई के लिए सफाई मित्रों व सफाई पर्यवेक्षक की टीम बनाई गई थी। ये टीमें बड़े नालों की सफाई का कार्य पूरा कर चुकी हैं। उन्होंने बताया कि कई नालों की सफाई चार-पांच वर्षों से नहीं हुई थी, जिसके कारण प्रायः मॉनसून व बरसात आने पर नाली का पानी रोड़ पर आ जाता है और जल जमाव की समस्या उत्पन्न हो जाती है। इसी सामाधान के लिए टीमों का गठन किया गया है, जिसमें श्रम कल्याण केंद्र से पूर्णिमा टाकीज तक, पूर्णिमा टाकीज से झंडा चौक होते हुए रेलवे स्टेशन तक और झुमरीतिलैया नगरपरिषद के पुराने कार्यालय से लेकर खालसा होटल तक बड़े नाले की सफाई का कार्य पूरा कर लिया गया है। वहीं नगर प्रबंधक डॉ. अरविंद मोदी ने बताया कि बारिश का मौसम शुरू होने से पहले शहर की अन्य नालियों की भी सफाई कर ली जाएगी।

जनता ने विधायक को नहीं, भावी मुख्यमंत्री को वोट दिया

नवीन मेल संवाददाता। गिरिडीह पति हेमंत सोरेन के जेल जाने के बाद चुनावी सभाओं में कल्पना सोरेन लोगों को भावनात्मक रूप से जोड़ने में सफल रहीं। अपनी सभाओं में उन्होंने बार-बार भाजपा पर षडयंत्र के तहत हेमंत सोरेन को जेल भेजने का आरोप लगाया। साथ ही लोगों के सामाजिक जीवन के साथ भी उन्होंने तालमेल बिठाया। इससे गांडेय विधानसभा क्षेत्र की जनता ने कल्पना सोरेन को महज विधायक के रूप में नहीं, बल्कि भावी मुख्यमंत्री के रूप वोट दिया। क्षेत्र के लोगों की आशा और आकांक्षा है कि कल्पना सोरेन के सीएम बनने से गांडेय का सर्वांगीण विकास होगा। वर्ष 1977 से अबतक हुए सभी चुनावों में हार-जीत में मुख्य भूमिका मुस्लिम और आदिवासियों की रही है। जिस दिन जेएमएम ने गांडेय से कल्पना सोरेन की उम्मीदवारी का ऐलान किया था उसके बाद से ही कल्पना सोरेन की जीत लगभग तय मानी जा रही थी। लोगों का मानना है कि कल्पना सोरेन का पहला टर्म महज पांच-छह महीनों के लिए ही होगा लेकिन उनसे लोगों को काफी अपेक्षा है। गौरतलब है कि हेमंत सोरेन के खिलाफ जमीन घोटाले में ईडी की कार्रवाई शुरू होने के बाद इसी साल जनवरी के पहले सप्ताह में जेएमएम ने गाण्डेय विस सीट पार्टी विधायक डॉ. सरफराज अहमद से खाली करवाई थी। बाद में झामुमो ने अहमद को राज्यसभा में भेजने का अपना वादा भी पूरा किया।

जीत का प्रमाण पत्र लेतीं कल्पना सोरेन।

33 साल के बाद सिंहभूम में झारखंड मुक्ति मोर्चा की वापसी

चाईबासा। 1991 के बाद सिंहभूम में झारखंड मुक्ति मोर्चा (झामुमो) की वापसी हुई है. 33 साल के बाद झारखंड मुक्ति मोर्चा ने सिंहभूम सीट पर जीत हासिल की। 1991 में तत्कालीन सांसद कृष्णा मार्डी ने झारखंड मुक्ति मोर्चा के टिकट पर लोकसभा का चुनाव लड़ा था और संसद पहुंचे थे। उसके बाद से झारखंड मुक्ति मोर्चा सिंहभूम में तीर धनुष का झंडा नहीं लहरा पाया था। अब 33 साल बाद सिंहभूम में झामुमो का सांसद बनने से कार्यकर्ताओं में जश्न है। मंगलवार को महिला कॉलेज चाईबासा में मतगणना कार्य संपन्न हो गया। इसमें ऐतिहासिक जीत दर्ज करते हुए झारखंड मुक्ति मोर्चा के प्रत्याशी जोबा माझी ने 520164 मत हासिल कर अपने प्रतिद्वंद्वी एनडीए के भारतीय जनता पार्टी की प्रत्याशी गीता कोड़ा को 168402 मतों से पराजित किया। जोबा मांझी ने कुल 520164 मत हासिल किया। जबकि गीता कोड़ा ने कुल 351762 मत हासिल किये। निर्दलीय प्रत्याशी दामोदर सिंह हांसदा तीसरे नंबर पर रहे।

इलाज कराने गए मरीज की गाड़ी हुई चोरी, प्रसाशन से मदद की लगाई गुहार

नवीन मेल संवाददाता। गिरिडीह

धनबाद के प्रतिष्ठित चिकित्सक डॉ कैलाश प्रसाद से भतीजे के इलाज कराने गए सरिया के संजय यादव की बोलेरों गाड़ी संख्या JH01 BB 1490 चोरी हो गई। इस बाबत संजय यादव ने बताया कि 1 दिन पूर्व मित्र का बेटा को लेकर धनबाद के प्रतिष्ठित डॉक्टर कैलाश प्रसाद के पास इलाज कराने गए थे इसी दौरान हॉस्पिटल के बाहर गाड़ी रखकर डॉक्टर से मिलने अंदर गए जंहा बच्चे का इलाज कराया जिसके कुछ देर बाद हॉस्पिटल से बाहर निकला तो गाड़ी गायब मिली जिसे आस-पास लोगों से घण्टो पूछा-ताछ किया परन्तु वाहन नही मिला । जिसकी सूचना स्थानीय थाना में दिया गया है।

इन्होंने बताया कि उक्त वाहन के चोरी हो जाने से मुझे आर्थिक क्षति पहुंची हैं। प्रसाशन से गुहार लगाते हैं कि छानबीन करते हुए मेरी गाड़ी को सकुशल वापस कराने में मदद करें।

बहरागोड़ा में कूड़े के ढेर से निकल रही दुर्गंध से राहगीर परेशान

नवीन मेल संवाददाता। बहरागोड़ा

शहर में कई जगह गंदगी का अंबार लगा हुआ है। दुकानदार एवं आम लोगों द्वारा सड़क किनारे गंदगी फेंके जाने से शहर प्रदूषित होता जा रहा है। प्रशासन ने भी अभी तक इसे रोकने की दिशा में किसी प्रकार की पहल नहीं की है। आने-जाने वाले लोगों को कूड़े-कचरे से निकलने वाले दुर्गंध के कारण मजबूरन अपनी नाक दबानी पड़ती है। स्थानीय लोगों का कहना है कि आम लोगों में जागरूकता की कमी तथा कूड़ा निपटान की उचित व्यवस्था नहीं होने के कारण यह स्थिति उत्पन्न हुई है।

बालकृष्ण भट्ट जयंती एवं काव्य कलश में वरिष्ठ साहित्यकार श्रीराम पांडेय भार्गव को दी गई श्रद्धांजलि

नवीन मेल संवाददाता। जमदेशपुर

साहित्य समिति, तुलसी भवन की ओर से संस्थान के प्रयाग कक्ष में मासिक काव्य कलश सह साहित्यकार बालकृष्ण भट्ट की जयंती मनायी गयी. कार्यक्रम की अध्यक्षता संस्थान के अध्यक्ष सुभाष चंद्र मुनका तथा संचालन समिति की सदस्य रीना सिन्हा सलोनी ने की। स्वागत वक्तव्य तुलसी भवन के मानद महासचिव डॉ प्रसेनजित तिवारी ने किया। कार्यक्रम की शुरूआत दीप प्रज्वलन एवं पुष्पार्पण के साथ हुआ। तत्पश्चात श्रीमती डॉ वीणा पांडेय भारती ने सरस्वती वंदना की। ब्रजेंद्रनाथ मिश्र न साहित्यकार बालकृष्ण भट्ट का साहित्यिक जीवन परिचय प्रस्तुत किया। कार्यक्रम के अगले सत्र काव्य कलश शहर के 28 कवियों ने स्वरचित काव्य पाठ किया। इनमें डॉ रागिनी भूषण, जयश्री शिव कुमार, वसंत जमशेदपुरी, नीता सागर चौधरी, वीणा कुमारी नंदिनी, डॉ यमुना तिवारी व्यथित, अनिता निधि,

माधुरी मिश्रा, डॉ वीणा पांडेय भारती, पूनम महानंद, रीना सिन्हा सलोनी, बलबिंदर सिंह, सुरेश चंद्र झा, भंजदेव देवेंद्र कुमार व्यथित, ब्रजेंद्र नाथ मिश्र, कैलाश नाथ शर्मा गाजीपुरी, डॉ संजय पाठक सनेही, चंदा कुमारी, शेषनाथ सिंह शरद , डॉ उदय प्रताप हयात, अनुराग अग्निहोत्री, उषा झा, शिव कुमार तथा विमल किशोर विमल शामिल थे। इस अवसर पर संस्थान के न्यासी अरुण कुमार तिवारी, उपाध्यक्ष रामनंदन प्रसाद, कार्यकारिणी के प्रसन्न वदन मेहता एवं साहित्य समिति के सचिव डॉ अजय कुमार ओझा उपस्थित थे।

जननायक शहीद राजेश मंडल के सपनों को करूंगी पूरा : रजनी कौर

नवीन मेल संवाददाता। गिरिडीह

मंगलवार को सरिया के छोटकी सरिया गावं में स्व राजेश मंडल की 9वी शहादत दिवस मनाई गई। मतगणना के कारण शहादत दिवस सादे समारोह तरीके से मनाया गया। छोटकी सरिया में आयोजित इस कार्यक्रम में स्व राजेश मंडल की पत्नी सह भाजपा नेत्री रजनी कौर ने सबसे पहले स्व राजेश की प्रतिमा पर श्रद्धांजलि के रूप में माल्यर्पण किया साथ ही फूल छिड़के इसके बाद इनके परिजनों ने भी यही कार्य किया। श्रद्धांजलि के बाद वहां उपस्थित लोगों को सम्बोधित करते हुए रजनी कौर ने राजेश मंडल द्वारा जनहित में किए गए कार्यो को बताया आगे कहा कि जो कार्य बिधायक या सांसद रहकर नही किया जा सकता वो जनहित से जुड़े समस्याओं का निदान मेरे स्व पति ने कर दिखाया था और अब तक इनके द्वारा बताए मार्ग में चलते हुए जनहित से जुड़े मुद्दों के लिए संघर्षरत हूं अगर मुझे पार्टी एक बार टिकट देती है तो संघर्ष का दायरा व समस्याओं के निदान के लिए दिन रात भूल जाऊंगी। कार्यक्रम में बरकट्ठा की जीप सदस्या कुमकुम देवी, बगोदर की जिप सदस्या रीता मंडल, मथुरा प्रसाद,त्रिभुवन मंडल, बालगोविंद मंडल, परमेश्वर मोदी,मुकेश मंडल, राजकुमार मंडल, रवि,राहुल मंडल, कविता समेत सेकड़ो लोग मौजूद रहे।

ईचागढ़ के नवाडीह व बासाहातु में नशा के खिलाफ चलाया गया जागरूकता अभियान

नवीन मेल संवाददाता। ईचागढ़

नालसा, झालसा, जिला विधिक सेवा प्राधिकार और अनुमंडलीय विधिक सेवा समिति चांडिल की ओर से मंगलवार को ईचागढ़ प्रखंड क्षेत्र में जागरूकता अभियान चलाया गया. अभियान के दौरान पारा लीगल वॉलिंटियर कार्तिक गोप और भुपेन चंद्र ने ईचागढ प्रखंड के नवाडीह व बासाहातु गांव में डोर टू डोर कार्यक्रम चलाकर लोगों को बाल श्रम, बाल मजदूरी, घरेलू हिंसा, महिला अपराध एवं नशा मुक्ति अभियान की जानकारी दी। पीएलवी ने इन अपराधों में मिलने वाली सजा की भी जानकारी लोगों

को दी। इसके साथ ही समाज में पड़ने वाले दुष्प्रभाव से लोगों को अवगत कराया गया। अभियान के दौरान ग्रामीणों से देश के भविष्य व तरक्की के लिए नशा से तौबा करने की अपील की गई।

विकास में रूकावट है नशापान

जागरूकता अभियान के दौरान पीएलवी ने कहा कि लोगों के साथ परिवार और समाज के विकास में नशा सबसे बड़ी रुकावट है। नशा एक अभिशाप है, जो दिन प्रति दिन समाज में धुएं की तरह फैलती जा रही है। नशे के कारण लोग हिंसा, शोषण, बलात्कार, दुर्घटना आदि के शिकार हो रहे है। नशा एक सामाजिक समस्या है जो दीमक की तरह परिवार, समाज और देश को विनाश की ओर ले जा रहा है।

चांडिल में तेज आंधी के साथ हुई बारिश, लोगों ने ली राहत की सांस

नवीन मेल संवाददाता। चांडिल

चांडिल अनुमंडल क्षेत्र में जहां मतगणना के बीच राजनीतिक तापमान बढ़ा हुआ है, वहीं दोपहर के बाद आई तेज आंधी के साथ हुई बारिश ने मौसम के तापमान को कम कर दिया. सुबह से खिली तेज धूप से जहां लोग परेशान थे, वहीं दोपहर के बाद मौसम ने अचानक करवट लिया और आसमान में काले बादल मंडराने लगे। देखते ही देखते मेघ गर्जन के साथ बारिश हुई और मौसम सुहावना हो गया। तेज हवा चलने के साथ ही क्षेत्र में बिजली भी गुल हो गई। मेघ गर्जन के साथ थोड़ी देर हुई बारिश ने लोगों को राहत दी। प्री-मानसून की बारिश से किसान भी खुश है। तीखी धूप के बाद बारिश होने से खेतों की उर्वरा शक्ति बढ़ता है। इससे कृषि कार्य के दौरान पैदावार बढ़ने की उम्मीद किसानों को रहता है।

दोपहर के बाद मौसम ने अचानक करवट लिया और आसमान में काले बादल मंडराने लगे

थोड़ी देर की बारिश ने दी बड़ी राहत

बारिश होने से पहले चली तेज हवा से पूरा क्षेत्र धूलकण से ढंक गया. क्षेत्र में स्थित स्पंज आयरन कंपनियों से उड़ने वाली धूलकण से लोग परेशान रहे। इससे पहले सोमवार को भी दोपहर बाद तेज आंधी के साथ बारिश हुई थी. सोमवार शाम से ही क्षेत्र के कई इलाकों में बिजली व्यवस्था बहाल भी नही हो पाई थी कि मंगलवार को आई आंधी ने फिर बिजली व्यवस्था ठप कर दी. बारिश से सूख चुके तालाब व चापाकल का जलस्तर भी बढ़ने लगा है।

तिसरी के अलग-अलग गांवों के दो घरों में चोरी, दोनों ही निहायत गरीब परिवार

नवीन मेल संवाददाता। गिरिडीह

तिसरी थाना इलाके में सोमवार की रात चोरों ने अलग - अलग गाँवों में दो घरों को निशाना बनाया। जहाँ चोरों ने कमरे का ताला तोड़कर बर्तन, जेवर, चावल समेत नकदी पर हाँथ साफ कर दिया। पहली घटना थाना क्षेत्र के चकलमुंडा - पकड़ियाटांड की है जबकि दूसरी घटना गम्हरियाटांड के हरिजन टोला की। वहीं चोरी किए गए दोनों घरों के परिवार निहायती गरीब बताए जा रहें हैं। बताया गया कि सोमवार की रात पकड़ियाटांड निवासी डोमन हांसदा के घर में अज्ञात चोरों ने ताला तोड़कर घर के अंदर बक्से में रखे जेवर और कासा के बर्तन पर हाँथ साफ कर दिया साथ ही

चोर घर में रखे चावल भी ले गए।इतना ही नहीं बक्से में रखे कपड़े व अन्य कागजात तीतर बितर कर दिया।

घटना के वक़्त उनका परिवार छत पर सोया हुआ था।

वहीं गम्हरियाटांड के हरिजन टोला स्थित स्व. सुरेश तुरी के घर में भी चोरों ने धावा बोला। जहाँ चोरों को कुछ नहीं मिला तो चोरों ने बक्से में रखे गए कपड़ों को तीतर बितर कर दिया।सुरेश तुरी के 11 वर्षीय पुत्र ने बताया कि उसके पिता का देहांत हो चूका है, उसकी माँ जैसे - तैसे कर घर चलाती है। उसकी माता रिश्तेदार के यहां गई है, अभी वह घर में अकेला ही है। जाते वक़्त माँ ने उसे घर खर्च के लिए पांच सौ रुपय दिए थे, उसे भी चुरा ले गए। भुक्तभोगी दोनों परिवार निहायती गरीब बताया जा रहा है।

चोरी का आरोप लगाकर ग्रामीणों ने एक व्यक्ति को पकड़ा

वहीं चोरी की इन घटनाओं के बाद मंगलवार की सुबह थाना क्षेत्र के ही अबरखा गांव में ग्रामीणों ने चोरी का आरोप लगाकर एक व्यक्ति को पकड़ लिया।

न्यूज बॉक्स

जेएमए स्टोर ने ग्रेवाल ओवरसीज को टाटा के 11 वाहनों की डिलीवरी की

आदित्यपुर। टाटा मोटर्स की अधिकृत और सबसे पुरानी एजेंसी जेएमए स्टोर प्राइवेट लिमिटेड आदित्यपुर स्थित यार्ड से चाईबासा की कंपनी ग्रेवाल ओवरसीज प्राइवेट लिमिटेड को टाटा मोटर्स के 11 अत्याधुनिक वाहन 5530 की डिलीवरी दी है. बता दें कि यह एजेंसी कॉमर्शियल वाहनों के साथ सभी प्रकार के वाहनों की भी डिलीवरी करती है। यह जानकारी कंपनी के जीएम संजीव कुमार श्रीवास्तव ने दी। डिलीवरी के मौके पर कंपनी के सीईओ अशोक कुमार, सेल्स मैनेजर फिरोज रजा, यार्ड इंचार्ज जयशंकर कुमार, कैलाश राय, रमण कुमार आदि मौजूद थे।

अधिवक्ता मदन सोरेन को ग्रीन मैन की उपाधि से सम्मानित करेगी समिति

जमशेदपुर। जमशेदपुर प्रखंड अंतर्गत बेको पंचायत के डालापानी गांव में वन अधिकार समिति की एक आवश्यक बैठक पूर्व मुखिया दुर्लभ बेसरा की अध्यक्षता में हुई। बैठक में आगामी 5 जून को पर्यावरण दिवस पर प्रस्तावित कार्यक्रम की तैयारी को लेकर चर्चा की गयी। साथ ही बैठक में समाजसेवी सह झारखंड हाई कोर्ट के अधिवक्ता मदन सोरेन को जल जंगल जमीन के संरक्षण में महत्वपूर्ण योगदान के लिए ग्रीन मैन की उपाधि से सम्मानित करे का निर्णय लिया गया। साथ ही सभी आमंत्रित समिति को भी सम्मानित किया जायेगा। साथ ही बताया गया कि कार्यक्रम में क्षेत्र की वन अधिकार समिति रुहीडीह, वन अधिकार समिति बेको, वन रक्षा समिति सिरका, वन रक्षा समिति पड़ासी डुंगरी, वन रक्षा समिति सुकलाड़ा, वन रक्षा समिति बनामघुटू, वन रक्षा समिति ईटामाड़ा व अन्य को आमंत्रित किया गया है। बैठक का संचालन समाजसेवी सह झारखंड हाई कोर्ट के अधिवक्ता मदन सोरेन ने किया। इस अवसर पर समाजसेवी सुखलाल हांसदा, रामराज बास्के, किंकर महतो, टीपूराम सोरेन, रमण कुमार सोरेन, बिरसा सोरेन, गुरुवारी सोरेन, सिनगो बास्के, सोनामनी सोरेन, यमुना हांसदा, डुमनी सोरेन, सुमित्रा महतो, कमला महतो, दुर्गी हांसदा, रिम्पा महतो, शिवनाथ गोराई, वीएल बास्के, मोहन हेंब्रम समेत अन्य उपस्थित थे।

जुगसलाई शनिदेव मंदिर में झारखंड शांति यज्ञ कल

चाईबासा। जुगसलाई दुःखु मार्केट के पास रेलवे लाइन किनारे सत्यनारायण मंदिर रोड़ स्थित शनिदेव मंदिर में गुरूवार 06 जून को झारखंड शनि शांति यज्ञ (हवन) का आयोजन दामोदर शनि बाबा द्वारा किया जायेगा। आमवश्या के अवसर पर प्रात 8 बजे से नवग्रह पूजा एवं हवन आरम्भ होगा। सुबह 11 से 3 बजे तक प्रसाद वितरण किया जायेगा। संध्या 5 से 6 बजे तक विशेष नागरिकों द्वारा हवन-पूजन किया जायेगा। इस संबंध में दामोदर शनि बाबा ने बताया कि संध्या 7 बजे से भजन कार्यक्रम होगा, जिसमें स्थानीय प्रेम अग्रवाल एंड पार्टी के कलाकार भजनों की प्रस्तुति देगें। पूजा के सभी कार्यक्रम पंडित अशोक शर्मा और ज्ञानी शर्मा के नेतृत्व में 11 पंडितों द्वारा किये जायेंगे। उन्होंने बताया कि झारखंड समेत पूरे भारत की उन्नति और शांति के लिए इस यज्ञ का आयोजन किया जाता है। उन्होंने श्रद्धालुओं से इस अनुष्ठान में शामिल होकर पुण्य का भागी बनने की अपील की है। इस आयोजन की तैयारी में मनोज पुरिया, नंदकिशोर ठाकुर, सौरव अग्रवाल, अरविंद मिश्रा, अरुण गोयल, धर्मेंद्र शर्मा, विष्णु सोनकर, राजू सोनकर, अंकित गर्ग, अशोक शर्मा, ज्ञानी शर्मा समेत अन्य सहयोग कर रहे हैं।

कैलाश सत्यार्थी फाउंडेशन की मदद से बाल विवाह होने से बचाया

जमशेदपुर। समाजसेवी संस्था कला मंदिर एवं कैलाश सत्यार्थी फाउंडेशन ने सोमवार को धालभूमगढ़ प्रखंड के पावड़ा नरसिंहगढ़ पंचायत के भैरवपुर गांव में बाल विवाह होने से रोक दिया। बताया जा रहा है कि 15 वर्षीय सबर लड़का ने 15 वर्षीय सबर लड़की को शादी की नीयत से पश्चिम बंगाल के बांस पहाड़ी गांव से भागाकर अपने घर भैरवपुर ले आया था। जब इसकी सूचना संस्था के प्रखंड समन्वयक लखन बेसरा को मिली तो उसके गांव जाकर आंगनबाड़ी सेविका और ग्रामीणों के साथ बैठक कर लड़का के माता-पिता एवं लड़की के माता-पिता को समझाया कि जब तक लड़के की उम्र 21 वर्ष और लड़की की उम्र 18 वर्ष नहीं होती है तब तक दोनों की शादी नहीं करवा सकते हैं और न ही पति-पत्नी के रूप में रह सकते हैं। इसके बाद लड़का पक्ष एवं लड़की पक्ष में समझौता हुआ कि जब लड़का 21 वर्ष और लड़की 18 वर्ष की होगी तभी दोनों की शादी कराएंगे। तब तक लड़की अपने माता-पिता के घर बांस पहाड़ी में रहेगी। लड़की को उसके माता-पिता के साथ घर भेज दिया गया।

हाईटेंशन बिजली तार टूटने से बाघमारा के 5 गांव अंधेरे में

धनबाद। रविवार को आंधी-पानी में हाईटेंशन बिजली तार टूट कर गिर गया। डीवीसी चंद्रपुरा थर्मल से गणेशपुर सबस्टेशन तक हाईटेंशन लाइन (33 हजार वोल्ट) पर पेड़ गिरने से तार टूट गया था। इसके कारण बाघमारा क्षेत्र 25 गांवों की बिजली गुल हो गई। पूरे क्षेत्र में ब्लैकआउट की स्थिति उत्पन्न हो गई। बिजली गुल रहने से बीसीसीएल ब्लॉक दो एबीओसीपी में उत्पादन प्रभावित हो गया है। इलेक्ट्रिक शॉवेल, ड्रील व ड्रेग लाइन मशीन का परिचालन बंद हो गया। बायोमीट्रिक मशीन बंद रहने से मजदूरों की हाजिरी भी नहीं बन पा रही थी। हो हल्ला करने पर प्रबंधन के आदेश पर मजदूरों की मैनुअल हाजिरी बनायी गयी। पीओ केके सिंह ने कहा कि बिजली के कारण मशीनों का परिचालन बंद होने से उत्पादन प्रभावित है।

तालाब में नहाने गए युवक की डूबने से मौत

धनबाद । अलकडीहा ओपी क्षेत्र के न्यू पहाड़ीगोड़ा निवासी फलारी महतो (40) की सोमवार को तालाब में नहाने के दौरान डूबने से मौत हो गई. तालाब में नहा रहे अन्य लोगों ने जब फलारी को नहीं देखा, तो उसी खोजबीन की। काफी प्रयास के बाद उसे पानी के अंदर से निकाला गया। परिजन आनन-फानन में उसे एसएनएमएमसीएच, धनबाद ले गए, जहां चिकित्सकों ने मृत्यु घोषित कर दिया। परिजनों का रो-रोकर बुरा हाल था। फलारी महतो ठेका मजदूरी करता था। घर में पत्नी के अलावा एक पुत्र और दो बेटियां हैं। वह घर का एकमात्र कमाऊ सदस्य था। इस लोमहर्षक घटना से मोहल्ले में शोक की लहर दौड़ गई।

पहली चुनौती में आयरलैंड को मात देने उतरेगा भारत

एजेंसी। न्यूयॉर्क

टी20 विश्व कप 2024 में भारत का पहला मैच आयरलैंड के खिलाफ बुधवार को न्यूयॉर्क में होगा। यह मैच भारतीय समयानुसार शाम आठ बजे शुरू होगा। यह दोनों टीमों के बीच कुल नौवां मुकाबला होगा। अब तक हुए आठ भारत-आयरलैंड मुकाबलों में भारत ने सात मुकाबले जीते हैं, जबकि एक मैच रद्द रहा है। वहीं टी20 विश्व कप में दोनों टीमें एक बार भिड़ी हैं, जिसमें भारत को ही जीत मिली है। भारतीय टीम एक बार 2007 में टी20 विश्व कप जीत चुकी है, वहीं आयरलैंड की टीम 2009 में सुपर-8 में पहुंची थी। टी20 विश्व कप 2022 में भारतीय टीम को सेमीफाइनल में हार मिली थी, जबकि आयरलैंड की टीम सुपर-12 में बाहर हो गई थी।

हालिया फॉर्म

भारतीय टीम ने इस साल की शुरूआत में आखिरी बार कोई टी20 मैच सीरीज खेली थी, जिसमें भारतीय टीम ने अफगानिस्तान को 3-0 से हराया था। हालांकि भारत के सभी खिलाड़ी दो महीने का आईपीएल खेल कर आ रहे हैं और फि लहाल टी20 की लय में हैं। भारत ने विश्व कप से पहले एकमात्र अभ्यास मैच में बांग्लादेश को 60 रन से हराया था। वहीं आयरलैंड की बात की जाए तो आयरलैंड ने मई 2024 में स्कॉटलैंड और आयरलैंड के खिलाफ एक त्रिकोणीय सीरीज खेली थी, जिसमें वह चार मैचों में अजेय होते हुए विजेता बनी थी। इसके पहले उन्होंने पाकिस्तान को भी तीन मैचों की सीरीज के दौरान एक मैच में हराया था। हालांकि यह सीरीज पाकिस्तान ने 2-1 से जीती थी।

प्रमुख खिलाड़ी

विराट कोहली टी20 विश्व कप के सबसे सफल बल्लेबाज रहे हैं। उन्होंने 25 विश्व कप पारियों में सर्वाधिक 1141 रन बनाए हैं। इस दौरान उनका औसत भी 81.5 का रहा है, जो कि टूनामेंट के इतिहास में कम से कम 400 रन बनाने वाले बल्लेबाजों में सर्वाधिक है। इसके अलावा उनके नाम 25 पारियों में 14 विश्व कप अर्धशतक हैं, जो कि फिर से विश्व में सर्वाधिक है। हालांकि यह देखना दिलचस्प होगा कि विराट कहां बल्लेबाजी करेंगे। हाल ही में संपन्न हुए आईपीएल में वह आरसीबी की तरफ से ओपनिंग करते हुए नजर आए थे, जहां पर वह टूनार्मेंट में सर्वाधिक रन बनाकर ऑरेन्ज कैप विजेता बने थे। टी20 अंतर्राष्ट्रीय मैचों की बात करें तो कोहली ने नौ टी20 अंतर्राष्ट्रीय मैचों में ओपनिंग की है, जिसमें वह 57 की औसत और 161 के स्ट्राइक रेट से रन बनाते हैं। इसमें दो अर्धशतक और एक शतक भी शामिल है। लेकिन कोहली ने टी20 में अधिकतर तीन नंबर पर बल्लेबाजी की है, जहां वह 54 की औसत से 3000 से अधिक रन बना चुके हैं। वहीं आयरलैंड की बात करें तो जॉश लिटिल की अगुवाई में उनके तेज गेंदबाज उनके प्रमुख हथियार होंगे, जहां स्पिनर्स जॉर्ज डॉकरेल और गैरेथ डेलनी उनका सहयोग करेंगे। पिछले टी20 विश्व कप के बाद से आयरलैंड की 70 फीसदी गेंदबाजी तेज गेंदबाजों ने की है। वहीं स्पिनर्स डॉकरेल और डेलेनी की खास बात है कि वे लोग गेंदबाजी के साथ-साथ गेंद के अच्छे स्ट्राइकर भी हैं। डेलेनी पिछले विश्व कप के बाद से 155 के स्ट्राइक रेट से रन बना रहे हैं, वहीं डॉकरेल मध्य ओवरों में स्पिनरों के खिलाफ 154 के स्ट्राइक रेट से रन बनाते हैं।

टी20 विश्व कप होगा द्रविड़ का टीम इंडिया के साथ अंतिम कार्यकाल

न्यूयॉर्क। भारतीय टीम के मौजूदा मुख्य कोच राहुल द्रविड़ ने यह साफ कर दिया है कि वो टी20 विश्व कप के बाद इस पद को अलविदा कह देंगे। अब सवाल ये है कि राहुल द्रविड़ को रिप्लेस कौन करेगा?, जिसका जवाब मेगा-इवेंट के बाद मिल सकता है। भारत के मुख्य कोच के रूप में राहुल द्रविड़ का कार्यकाल नवंबर में टी20 विश्व कप 2021 के बाद शुरू हुआ था और वनडे विश्व कप 2023 के साथ समाप्त हुआ था। लेकिन उनके कार्यकाल को अगले छह महीने यानी टी20 विश्व कप तक बढ़ा दिया गया। 13 मई को बीसीसीआई ने आधिकारिक तौर पर अगले भारतीय पुरुष टीम के मुख्य कोच के पद के लिए आवेदन आमंत्रित किए और 27 मई तक आवेदन की अंतिम तिथि तय की। नए भारतीय पुरुष मुख्य कोच को जुलाई 2024 से दिसंबर 2027 तक तीनों प्रारूपों के लिए नियुक्त किया जाएगा।

धोनी के अंदाज में केदार जाधव ने लिया क्रिकेट के सभी प्रारूपों से संन्यास

एजेंसी। नई दिल्ली

भारतीय क्रिकेट टीम के बल्लेबाजी ऑलराउंडर केदार जाधव ने सभी प्रारूपों से संन्यास लेने का ऐलान किया है। इसकी जानकारी उन्होंने सोशल मीडिया के जरिए दी। 39 वर्षीय केदार जाधव ने अपने फैसले की घोषणा करने के लिए सोशल मीडिया का सहारा लिया। उन्होंने एक वीडियो शेयर किया है, जिसमें किशोर कुमार का गाना 'जिंदगी के सफर में' बैकग्राउंड में सुनाई दे रहा है। इस पोस्ट में उन्होंने अपने करियर यादगार लम्हे शेयर किए। केदार ने दोपहर 3 बजे के करीब संन्यास का ऐलान किया। इस दौरान केदार जाधव ने सभी फैंस का धन्यवाद किया। केदार जाधव ने अपने इंस्टाग्राम पर लिखा, मुझे मेरे करियर में प्यार और सपोर्ट देने के लिए आप सभी को बहुत-बहुत धन्यवाद। आज 3 बजे के बाद क्रिकेट के हर फॉर्मेट से मुझे रिटायर समझा जाए। जाधव ने 16 नवंबर, 2014 को श्रीलंका के खिलाफ भारत के लिए अपना वनडे डेब्यू किया और 17 जुलाई, 2015 को जिम्बाब्वे के खिलाफ अपना पहला टी20 मैच खेला। 2019 विश्व कप का हिस्सा रहे बल्लेबाजी ऑलराउंडर ने 73 वनडे मैचों में 1389 रन बनाए और 27 विकेट लिए। उन्होंने 9 टी20 मैच खेले, जिसमें उन्होंने 122 रन बनाए और इस दौरान उनका बेस्ट स्कोर 58 रहा। केदार जाधव पिछले कुछ समय से क्रिकेट से दूर थे। न केवल टीम इंडिया बल्कि वो आईपीएल में भी नजर नहीं आए। फिटनेस और खराब फॉर्म के कारण टीम से बाहर रहे इस खिलाड़ी ने कई बार वापसी का प्रयास भी किया लेकिन वो इसमें सफल नहीं हुए। दिलचस्प बात यह है कि जाधव का सोशल मीडिया पोस्ट एमएस धोनी के इंस्टाग्राम पर रिटायरमेंट नोट से काफी मिलता-जुलता है। पूर्व भारतीय कप्तान ने अपने करियर की तस्वीरों का एक स्लाइड शो शेयर किया था, जिसमें बैकग्राउंड में मशहूर बॉलीवुड गाना 'मैं पल दो पल का शायर हूं' सुनाई दे रहा था।

फजलहक फारूकी का 'पंजा', अफगानिस्तान ने युगांडा को 125 रनों से रौंदा

जॉर्जटाउन (गुयाना)। टी20 विश्व कप 2024 का 5वां मैच युगांडा और अफगानिस्तान के बीच खेला गया। अफगानिस्तान ने टूनामेंट के पहले ही मैच में बल्ले और गेंद से दमदार खेल दिखाते हुए युगांडा को बुरी तरह हराया। टॉस जीतकर पहले गेंदबाजी करने उतरी युगांडा ने हर मोर्चे पर निराशाजनक प्रदर्शन किया। वहीं, अफगानिस्तान ने बल्ले और गेंद दोनों से दमदार प्रदर्शन करते हुए टी20 विश्व कप में जीत के साथ शुरूआत की। अफगानिस्तान ने इब्राहिम जादरान (46 गेंदों पर 70 रन) और रहमानुल्लाह गुरबाज (42 गेंदों पर 76 रन) के बीच 154 रनों की शानदार ओपनिंग साझेदारी की बदौलत 183/5 का मजबूत स्कोर बनाया। अफगानिस्तान के 184 रन के जवाब में युगांडा टीम की बल्लेबाजी पूरी तरह से फ्लॉप हो गई। हालांकि, इससे पहले शुरूआत में संघर्ष कर रहे युगांडा के गेंदबाजों ने डेथ ओवरों में वापसी की। लेकिन उनके बल्लेबाजों ने अफगानिस्तान के गेंदबाजों के आगे घुटने टेक दिए। इस चुनौतीपूर्ण टोटल का बचाव करते हुए अफगानिस्तान के लिए फजल हक फारूकी ने अपनी शानदार गेंदबाजी से जीत की नींव रखी। तेज तर्रार गेंदबाज फारूकी ने युगांडा टीम के बल्लेबाजी क्रम की कमर तोड़ दी और अपने स्पैल में मात्र 9 रन देकर पांच विकेट चटकाए। फारूकी का यह प्रदर्शन टी20 विश्व कप में अफगानिस्तान के लिए सर्वश्रेष्ठ गेंदबाजी प्रदर्शन है। साथ ही यह उनके टी20 अंतरराष्ट्रीय करियर और विश्व कप में पहला 5 विकेट है। 183 रन के जवाब में युगांडा की पूरी टीम 16 ओवर में 58 रन पर ढेर हो गई। रियाजत अली और रॉबिन्सन ओबुया के अलावा युगांडा का अन्य कोई बल्लेबाज दहाई अंक तक नहीं पहुंच सका। युगांडा के लिए रॉबिंसन ने सर्वाधिक 14 रन बनाए। फारुकी के अलावा नवीन उल हक और कप्तान राशिद खान ने दो-दो विकेट झटके। युगांडा का विश्व कप में यह पहला मौका था, जिसकी शुरूआत उनके लिए अच्छी नहीं रही।

टेबल टेनिस के पांच दिवसीय समर कैंप के तीसरे दिन खिलाड़ियों को सिखाए गए खेल के नियम

गढ़वा। गढ़वा जिला टेबल टेनिस संघ के तत्वाधान में वन विभाग के सामुदायिक भवन में पांच दिवसीय समर कैंप के तीसरे दिन 30 खिलाड़ियों ने टेबल टेनिस खेलने के तरिके को जाना।कोच कमलेश कुमार दुबे ने खिलाड़ियों को सर्व प्रथम फिजिकल फिटनेस पर ध्यान देते हुए सभी खिलाड़ियों को खेल से संबंधित व्यायाम करायो इसके बाद नये खिलाड़ियों को रैकेट पकड़ने,टेबल के पास खड़े होने,सर्विस करने, सर्विस को रिसिव करने एवं खेल में एकाग्रता ध्यान आदि के महत्व को बारिकी से समझाया साथ ही पुराने खिलाड़ियों को अपने खेल में सुधार हेतु आवश्यक टीप्स दिये` इस अवसर पर सचिव आनंद सिन्हा ने समर कैंप में शामिल खिलाड़ियों को संबोधित करते हुए कहा कि आप सभी कोच कमलेश कुमार दुबे जो झारखंड टीम का कोच भी रहे हैं , उनके अनुभव का लाभ लेकर आपलोग बेहतर खेल का प्रदर्शन करें और गढ़वा का नाम रौशन करें । गढ़वा के पूर्व खिलाड़ी और संघ के सदस्य संतोष कश्यप ने कहा कि संघ की ओर से टेबल टेनिस को बढ़ावा देने के लिए लगातार प्रतियोगिताओं का आयोजन होते रहा है होता रहा है इस बार समर कैंप लगाकर खिलाड़ियों को खेलने का मौका दिया गया है इस तरह का आयोजन से खिलाड़ियों में खेल के प्रति लगाव बढ़ता है।इस मौके पर संघ के पदाधिकारी संतोष सदस्यअभय कुमार, बालिका उच्च विद्यालय के फिजिकल शिक्षक सुशील तिवारी, रामासाहु के फिजिकल शिक्षक प्रदीप कुमार सिंह, सिनियर खिलाड़ी ऋषभ राज सहित कई अभिभावक मौजूद थे

प्राग्नानंदा ने विश्व चैंपियन डिंग लिरेन को हराकर एक और अपसेट किया

एजेंसी। स्टावेंजर (नॉर्वे)

भारत के प्रतिभाशाली खिलाड़ी आर प्राग्नानंदा ने सोमवार को नॉर्वे शतरंज टूनार्मेंट में विश्व चैंपियन डिंग लिरेन को हराकर एक और बड़ा उलटफेर किया। यह टूनार्मेंट में उच्च रैंक वाले खिलाड़ियों के खिलाफ प्राग्नानंदा की तीसरी जीत थी। इससे पहले, उन्होंने मैग्नस कार्लसन और फैबियानो कारुआना को हराया था। नॉर्वे शतरंज ने इस मौके पर सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर एक पोस्ट में लिखा, जीएम प्राग्नानंदा ने विश्व नंबर 1 मैग्नस कार्लसन और विश्व नंबर 2 फैबियानो कारूआना को उनके क्लासिकल गेम में हराया और अब उन्होंने विश्व चैंपियन डिंग लिरेन को उनके आर्मगेडन गेम में हराया। अन्य क्लासिकल बाजियों में, मैग्नस कार्लसन को हिकारू नाकामुरा के खिलाफ अपना आर्मगेडन गेम गंवाना पड़ा। दूसरी ओर, फैबियानो कारुआना और अलीरेजा फिरोजा ने अपना आर्मगेडन गेम ड्रॉ किया।

सातवें राउंड के बाद, कार्लसन 13 अंकों के साथ शीर्ष पर बने हुए हैं। वहीं नाकामुरा 12 अंकों के साथ दूसरे स्थान पर हैं, जबकि प्राग्नानंदा 11 अंकों के साथ तीसरे स्थान पर हैं। प्राग्नानंदा 8वें राउंड में लीडर कार्लसन से भिड़ेंगे। इस बीच, वैशाली को लगातार दूसरी हार का सामना करना पड़ा, क्योंकि वह हमवतन कोनेरू हम्पी से हार गईं। वैशाली 11 अंकों के साथ तीसरे स्थान पर बनी हुई हैं। अन्ना मुजिचुक 12 अंकों के साथ शीर्ष पर हैं, जबकि जू वेनजुन 11.5 अंकों के साथ दूसरे स्थान पर हैं।

फ्रेंच ओपन के क्वार्टर फाइनल में एलेक्स डी मिनौर से भिड़ेंगे एलेक्जेंडर ज्वेरेव

एजेंसी। पेरिस

वर्ल्ड नंबर-4 एलेक्जेंडर ज्वेरेव ने सोमवार को वर्ल्ड नंबर-13 होल्गर रूण की कड़ी चुनौती को चार घंटे और 11 मिनट में पार कर फ्रेंच ओपन के क्वार्टर फाइनल में प्रवेश किया।

जर्मन खिलाड़ी ने शुरूआती मुकाबले में पिछड़ने के बाद कमबैक करते हुए 21 वर्षीय डेन को रोला गैरों में लगातार तीसरे क्वार्टर फाइनल में पहुंचने से रोका और मंगलवार को स्थानीय समयानुसार सुबह 1.40 बजे (भारतीय समयानुसार सुबह 5:10 बजे) मैच में 4-6, 6-1, 5-7, 7-6(2), 6-2 से जीत दर्ज की।

ज्वेरेव ने लगातार तीन सेट जीतकर पेरिस क्वार्टर फाइनल में लगातार चौथे और पिछले सात वर्षों में छठी बार जगह बनाई।

जीत के बाद ज्वेरेव ने कहा, मुझे क्वार्टर फाइनल में पहुंचकर गर्व है। मैंने पिछले तीन दिनों में कुल साढ़े आठ घंटे खेले हैं, इसलिए मुझे एक ब्रेक की जरूरत है। मुझे क्वार्टर फाइनल मैच के लिए तैयार होने के लिए हर संभव प्रयास करना होगा, क्योंकि टूनार्मेंट अभी खत्म नहीं हुआ है और मैं इसे जारी रखना चाहता हूं। 10 मैचों की जीत की लय में अब उनका अगला मुकाबला ऑस्ट्रेलिया के नंबर 11 सीड एलेक्स डी मिनौर से होगा, जिन्होंने सोमवार को पांचवीं सीड डेनियल मेदवेदेव को 4-6, 6-2, 6-1, 6-3 से हराया था।

इससे पहले सोमवार को लगातार तीसरे साल, कैस्पर रूड ने टेलर को 7-6(6), 3-6, 6-4, 6-2 से हराकर रोलां-गैरो के क्वार्टर फाइनल में जगह बनाई।

व्यापार/लाइफ व साइंस

लोकसभा चुनाव की मतगणना के बीच शेयर बाजार में भारी गिरावट

सेंसेक्स 2,713 अंक फिसला

- **निवेशकों ने एक दिन में 30 लाख करोड़ गंवाए**
- **बाजार में चार साल की सबसे बड़ी गिरावट**

एजेंसी। मुंबई

आमतौर पर शुभ माना जाने वाला मंगलवार चार जून को शेयर बाजार के निवेशकों के लिए अशुभ साबित हुआ। इस दिन शेयर बाजार में चार साल की सबसे बड़ी गिरावट दर्ज की गई। इससे निवेशकों ने एक ही सत्र में करीब 30 लाख करोड़ रुपये गंवा दिए। बीएसई बेंचमार्क सेंसेक्स 1,544 अंक या 2.02 प्रतिशत और एनएसई निफ्टी 491 अंक या 2.11 प्रतिशत की गिरावट के साथ खुला। सुबह 9:30 बजे तक सेंसेक्स 2,713 अंक या 3.55 प्रतिशत गिरकर 73,755 अंक और निफ्टी 838 अंक या 3.65 प्रतिशत फिसलकर 22,414 अंक पर था।

निफ्टी मिडकैप 100 इंडेक्स 1,466 अंक या 2.75 प्रतिशत गिरावट के साथ 51,816 अंक और निफ्टी स्मॉलकैप 100 इंडेक्स 542 अंक या 3.18 प्रतिशत की गिरावट के साथ 16,555 अंक पर था। इंडिया विक्स में काफी तेजी देखने को मिल रही है और यह 14 प्रतिशत ऊपर बढ़कर 23.91 अंक पर है। बाजार के सभी इंडेक्स लाल निशान में कारोबार कर रहे हैं। ऑटो, आईटी, पीएसयू इंडेक्स, फिन सर्विस, फार्मा, रिल्यटी, मेटल, एनर्जी, इन्फ्रा, पीएसई और कमोडिटी इंडेक्स 7 प्रतिशत तक फिसल गए हैं। सेंसेक्स के 30 में से 29 शेयर लाल निशान में कारोबार कर रहे हैं। एनटीपीसी, एसबीआई, पावर ग्रिड, एलएंडटी, एक्सिस बैंक और एचसीएल टेक टॉप लूजर्स हैं। केवल सन फार्मा का शेयर ही हरे निशान में है।

किआ की कैरेंस ने भारत में महज 27 महीनों में 1.5 लाख कारों की बिक्री का आंकड़ा किया पार

एजेंसी। नई दिल्ली

किआ इंडिया ने भारतीय बाजार में खुद को अच्छी तरह से स्थापित कर लिया है। सेल्टॉस के साथ ही सोनेट के बाद कंपनी की पॉपुलर 7 सीटर कार कैरेन्स ने महज 27 महीनों में भारत में 1.5 लाख बिक्री का आंकड़ा पार किया है। दिलचस्प बात यह है कि किआ कैरेन्स के 50 पर्सेंट बायर्स मिड और टॉप ट्रिम्स को पसंद करते हैं, जिनमें सनरूफ, मल्टी ड्राइव मोड्स, वेंटिलेटेड सीट्स और किआ कनेक्ट समेत काफी सारे आज के जमाने के हिसाब से बेहद जरूरी फीचर्स हैं।

▸▸ कब हुई थी लॉन्च

किआ इंडिया ने फरवरी 2022 में कैरेन्स लॉन्च की थी और इसे लाने के पीछे सबसे बड़ी वजह ये थी कि भारत में 7 सीटर कारों की डिमांड तेजी से बढ़ रही थी। ग्राहकों को मारुति सुजुकी अर्टिगा से थोड़े ज्यादा दाम में ज्यादा स्पेस और फीचर्स वाली गाड़ी देने के मकसद से कैरेन्स को लाया गया था। लॉन्च के बाद से ही कैरेन्स ने खुद को मार्केट में काफी स्थापित कर लिया और आज यह आलम है कि 27 महीने में ही इसने भारतीय बाजार में 1.5 लाख यूनिट बिक्री का माइलस्टोन हालिस कर लिया। किआ कैरेन्स की मौजूदा एक्स शोरूम प्राइस 10.52 लाख रुपये से शुरू होकर 19.67 लाख रुपये तक जाती है।

▸▸ पेट्रोल मैनुअल वेरिएंट्स की सबसे ज्यादा बिक्री

किआ कैरेन्स ने अपने आकर्षक डिजाइन और मॉडर्न टेक फीचर्स के साथ फैमिली मूवर सेगमेंट में क्रांति ला दी है, जो विस्तारित परिवारों वाले नए युग के ग्राहकों के लिए पसंदीदा मोबिलिटी विकल्प बन गया है।

विभिन्न विकल्पों में से पेट्रोल पावरट्रेन टॉप चॉइस बनकर उभरा है, जिसकी कुल बिक्री में हिस्सेदारी 57 पर्सेंट है। इसके बाद डीजल पावरट्रेन 43 पर्सेंट के साथ दूसरे स्थान पर है। इसके अलावा मैनुअल ट्रांसमिशन वाले वेरिएंट्स की सबसे ज्यादा 62 पर्सेंट बिक्री होती है। बीते अप्रैल 2024 में कंपनी ने कैरेंस के 6-सीटर वेरिएंट को फिर से लॉन्च किया, जिसे अच्छी प्रतिक्रिया मिली है।

▸▸ 17000 यूनिट एक्सपोर्ट भी

किआ इंडिया के चीफ सेल्स और बिजनेस ऑफिसर म्युंग-सिक सोहन का कहना है कि कैरेन्स भारतीयों की पसंदीदा 7 सीटर कार बन गई है।

टाटा ऑल्ट्रोज रेसर की बुकिंग शुरू

एजेंसी। नई दिल्ली

टाटा ऑल्ट्रोज रेसर की 21000 रुपये टोकन अमाउंट पर भारत में बुकिंग शुरू हो गई है। ऐसे में जो लोग बीते करीब डेढ़ साल से इस देसी प्रीमियम हैचबैक का इंतजार कर रहे थे, उन्हें अब इसे जल्द ही घर लाने का मौका मिलेगा। टाटा ऑल्ट्रोज रेसर को आगामी 7 जून को लॉन्च किया जाना है और इससे पहले काफी सारी जानकारियां सामने आ गई हैं, जिनमें ये भी है कि इस प्रीमियम हैचबैक को सिर्फ मैनुअल ट्रांसमिशन के साथ पेश किया जा सकता है और इसके 3 वेरिएंट बिक्री के लिए उपलब्ध होगी। बाद बाकी इसमें क्या कुछ खूबियां लुक-डिजाइन और फीचर्स के स्तर पर हैं, आइए एक-एक करके आपको बताते हैं।

अब तक मिली जानकारी के मुताबिक टाटा मोटर्स की परफॉर्मेंस कैलिब्रेटेड इस प्रीमियम हैचबैक को R1, R2 और R3 जैसे 3 वेरिएंट में पेश किया जा सकता है। बाद बाकी इसमें 3 कलर ऑप्शन मिलेंगे, जो कि एटॉमिक ऑरेंज, अवेन्यू वाइट और प्योर ग्रे के रूप में हैं।

लुक-डिजाइन और फीचर्स

टाटा ऑल्ट्रोज रेसर का लुक अग्रेसिव और डिजाइन स्पोर्टी है और इसमें जगह-जगह रेसर बैजिंग दी गई है। इसमें आकर्षक ग्राफिक्स, नया बंपर, 17 इंच के अलॉय व्हील, ब्लैक रूफ और ओआरवीएस, स्पोर्टी इंटीरियर, ऑल-ब्लैक डैशबोर्ड, एंबिएंट लाइटिंग डुअल टोन सीट्स, 10.25 इंच का टचस्क्रीन इन्फोटेनमेंट सिस्टम, सनरूफ, डिजिटल इंस्ट्रूमेंट पैनल, वायरलेस चार्जर, ऑटोमैटिक क्लाइमेट कंट्रोल, क्रूज कंट्रोल, एयर प्यूरिफायर, वेंटिलेटेड फ्रंट सीट्स समेत और भी स्टैंडर्ड फीचर्स के साथ ही 6 एयरबैग्स, 360 डिग्री कैमरा, ब्लाइंट स्पॉट मॉनिटर्स, ईबीडी के साथ एबीएस समेत और भी सेफ्टी फीचर्स हैं। टाटा ऑल्ट्रोज रेसर को नेक्सॉन एसयूवी वाले 1.2 लीटर टर्बो-पेट्रोल इंजन के साथ लॉन्च किया जाएगा।

ड्राइविंग लाइसेंस के लिए जरूरी होता है टेस्ट

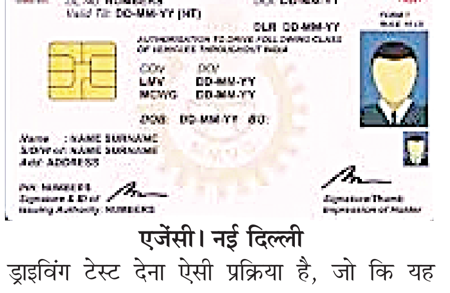

एजेंसी। नई दिल्ली

ड्राइविंग टेस्ट देना ऐसी प्रक्रिया है, जो कि यह सुनिश्चित करती है कि आप सही तरीके से सुरक्षित रूप से और कानून के अनुसार कोई भी वाहन चलाने में सक्षम हैं कि नहीं? दरअसल, जो भी लोग ड्राइविंग लाइसेंस बनवाना चाहते हैं, उनके लिए जरूरी है कि वे टेस्ट दें, जिनमें ड्राइविंग स्किल से जुड़े सवाल होंगे। अब आप जान लें कि ड्राइविंग टेस्ट आखिरकार क्यों जरूरी है और इसके क्या मायने होते हैं। इन सबसे पहले जान लें कि आखिरकार ड्राइविंग लाइसेंस के लिए टेस्ट का फॉर्मेट क्या है? यह परीक्षा आमतौर पर दो हिस्सों में होती है।

1. लिखित परीक्षा

ड्राइविंग लाइसेंस के लिए ड्राइविंग टेस्ट के पहले हिस्से में लिखित परीक्षा होती है, जिसमें सड़क के नियमों यानी ट्रैफिक रूल्स, यातायात संकेतों और सेफ ड्राइविंग बिहेवियर के बारे में बहुविकल्पीय सवाल शामिल होते हैं। इसमें आपको पास होने के लिए न्यूनतम अंक प्राप्त करने होंगे।

2. व्यावहारिक परीक्षा

ड्राइविंग टेस्ट में प्रैक्टिकल एग्जाम में एक अधिकारी के साथ ड्राइविंग टेस्ट शामिल होता है। इसमें आपको अलग-अलग ड्राइविंग स्किल्स दिखाना होगा, जिसमें सीधी रेखा में गाड़ी चलाना, मुड़ना, पार्किंग, रिवर्स ड्राइविंग, ट्रैफिक लाइट का पालन करना, संकेतों का इस्तेमाल करना, अन्य वाहनों के साथ सुरक्षित दूरी बनाए रखना जैसी बातें शामिल हैं।

ड्राइविंग टेस्ट के मायने

भारत में ड्राइविंग टेस्ट मोटर वाहन अधिनियम, 1988 के तहत आयोजित किए जाते हैं। परीक्षा के लिए आवेदन करने के लिए आपको 18 साल या उससे ज्यादा उम्र का होना चाहिए और आपके पास आधार कार्ड या मतदाता पहचान पत्र जैसा वैध पहचान प्रमाण होना चाहिए।

चंद्रमा की सुदूर सतह से पत्थर, मिट्टी के नमूने लेकर रवाना हुआ चीन का अंतरिक्षयान

एजेंसी। बीजिंग

चीन का कहना है कि चंद्रमा के सुदूर हिस्से से पत्थर और मिट्टी के नमूने लेकर एक अंतरिक्षयान चंद्र सतह से वापस पृथ्वी पर आने के लिए रवाना हो गया है। अंतरिक्षयान ने योजना के तहत यान के एसेंडर के अंदर रखे एक कंटेनर में नमूने एकत्रित किए। इस कंटेनर को एक री-एंट्री कैप्सूल में रखा जाएगा जो 25 जून के आसपास चीन के आंतरिक मंगोलिया क्षेत्र के रेगिस्तान में पृथ्वी पर उतरेगा। चीन राष्ट्रीय अंतरिक्ष प्रशासन ने कहा कि चांग ई-6 अंतरिक्षयान के एसेंडर ने बीजिंग के समयानुसार मंगलवार को सुबह उड़ान भरी और उसने चंद्रमा के पास पहले से निर्धारित कक्षा में प्रवेश किया। इस अंतरिक्षयान को पिछले महीने प्रक्षेपित किया गया था और इसका लैंडर को चंद्रमा की एक सुदूर सतह पर उतरा। शिन्हुआ समाचार एजेंसी ने अंतरिक्ष एजेंसी के हवाले से बताया कि अंतरिक्षयान ने योजना के तहत यान के एसेंडर के अंदर रखे एक कंटेनर में नमूने एकत्रित किए। इस कंटेनर को एक री-एंट्री कैप्सूल में रखा जाएगा जो 25 जून के आसपास चीन के आंतरिक मंगोलिया क्षेत्र के रेगिस्तान में पृथ्वी पर उतरेगा।

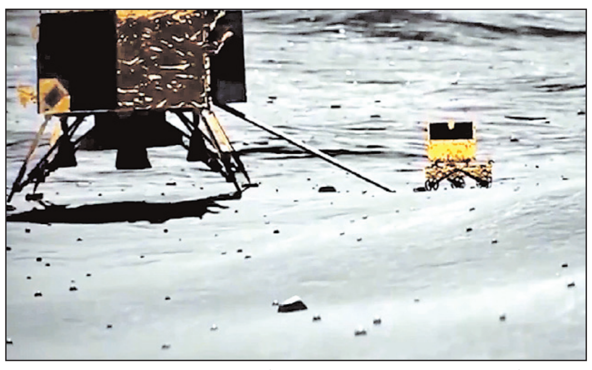

400 पार के नारे के साथ ढिंढोरा पीट रहे थे अब क्या हुआ, पवन खेड़ा का बीजेपी पर तंज

दिल्ली। लोकसभा चुनाव के मतगणना के बीच कांग्रेस के वरिष्ठ नेता पवन खेड़ा ने इंडिया गठबंधन की जीत का दावा किया है। उन्होंने कहा कि इस बार कांग्रेस भारी मतों से सभी सीटों पर जीत का परचम लहराने जा रही है। इसके अलावा, उन्होंने बीजेपी के 400 पार के नारे पर भी तंज कसा। पवन खेड़ा ने आईएएनएस से बातचीत के दौरान कहा, ह्लमैं शुरूआती रुझान के बारे में अंतिम तौर पर कुछ नहीं कह सकता हूं, लेकिन एक बात जरूर कहना चाहूंगा कि जनता को जो फैसला करना था, वो कर लिया है। कांग्रेस नेता ने आगे कहा, जो बीजेपी 400 पार के नारे को लेकर जगह-जगह ढिंढोरा पीट रही थी, शेयर मार्केट में खेल रही थी, हर जगह हवा-बाजी कर रही थी। अब उसे भी अपनी असली हकीकत के बारे में पता चल गया है कि असल में मौजूदा समय में जनता का मूड क्या है। उन्होंने कहा, अगर वाराणसी में प्रधानमंत्री दो राउंड में पिछड़ते हुए नजर आ रहे हैं, तो उससे साफ जाहिर होता है कि मौजूदा समय में देश का मूड क्या है?

न्यूज बॉक्स

पाकिस्तान में ईसाई बुजुर्ग की पिटाई से मौत

लाहौर। पाकिस्तान के पंजाब प्रांत में ईशनिंदा के आरोप में पिछले सप्ताह हिंसक भीड़ द्वारा गंभीर रूप से घायल किए एक बुजुर्ग ईसाई व्यक्ति की मौत हो गई है। पुलिस ने सोमवार को यह जानकारी दी। कट्टरपंथी इस्लामवादी तहरीक-ए-लब्बैक पाकिस्तान (टीएलपी) के कार्यकताओं के नेतृत्व में एक उग्र भीड़ ने 25 मई को लाहौर से लगभग 200 किलोमीटर दूर पंजाब के सरगोधा जिले के मुजाहिद कॉलोनी में ईसाई समुदाय के सदस्यों पर हमला किया, जिसमें दो ईसाई और 10 पुलिसकर्मी घायल हो गए। भीड़ ने ईसाइयों के घरों और संपत्तियों को जला दिया और लूटपाट की। पुलिस के अनुसार, भीड़ ने नजीर मसीह उर्फ लजार मसीह नामक बुजुर्ग ईसाई के घर और जूता फैक्ट्री को घेर लिया और उन पर कुरान के अपमान का आरोप लगाया। उग्र भीड़ ने जूता फैक्ट्री, कुछ दुकानों और कुछ घरों में आग लगा दी। एफआईआर में कहा गया है, ₹उन्होंने मसीह को भी बेरहमी से जला दिया, लेकिन समय पर भारी पुलिस बल के पहुंचने से मसीह और ईसाई समुदाय के 10 अन्य सदस्यों को बचा लिया गया। एफआईआर में कहा गया है कि जूता फैक्ट्री के बाहर कथित तौर पर पवित्र कुरान के कुछ पन्ने पाए गए, जिससे स्थानीय लोग भड़क गए। पुलिस ने बताया कि सरगोधा स्थित संयुक्त सैन्य अस्पताल (सीएमएच) में इलाज करा रहे मसीह की रविवार को मौत हो गई।

ब्रिटेन के लिए जासूसी कर रहे दो चीनी नागरिक गिरफ्तार

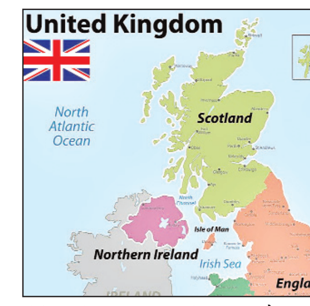

बीजिंग। चीन ने अपने दो नागरिकों को ब्रिटेन के लिए जासूसी करने पर गिरफ्तार कर लिया है। यह खुलासा चीनी खुफिया एजेंसी ने करते हुए गताया कि दोनों नागरिक ब्रिटेन की खुफिया एजेंसी एमआई-6 के लिए काम कर रहे थे। गिरफ्तार होने वाले एक दंपति को पकड़ा है। चीन की खुफिया एजेंसी और राज्य सुरक्षा मंत्रालय (एमएसएस) ने कहा है कि उन्होंने एमआई-6 से जुड़े एक महत्वपूर्ण जासूसी मामले का खुलासा किया है। सरकार के महत्वपूर्ण विभाग में कार्य करने वाले दोनों नागरिकों से ब्रिटेन की ओर से जासूसी कराया जा रहा था। यह आरोप ब्रिटिश पुलिस के उस दावे के कुछ हफ्ते बाद सामने आया है, जिसमें उन्होंने तीन लोगों को हांगकांग की खुफिया एजेंसी के लिए कार्य करने में हिरासत में लिया था। पकड़े गए दंपति का सिर्फ सरनेम जारी किया गया है। इसमें कहा गया है कि वांग और जोउ को एमआई-6 की ओर से भर्ती किया गया था। वांग 2015 में ब्रिटेन पढ़ने के लिए गया था। वहां अपनी पत्नी से मिला। वहां वांग को होटल रूम और देशभर में घूमने की सुविधा उपलब्ध कराई गई थी। साथ ही पैसे भी दिए गए थे।

मध्य गाजा पर इजराइली हमले में 11 लोगों की मौत

यरुशलम। मध्य गाजा पर रविवार-सोमवार की रात इजराइल के हमले में तीन बच्चों और एक महिला सहित कम से कम 11 लोगों की मौत हो गई। यह जानकारी फलस्तीन के स्वास्थ्य अधिकारियों ने सोमवार को यह जानकारी दी। अधिकारियों ने बताया कि रविवार देर रात बुरीज शरणार्थी शिविर में एक घर पर हुए हमले में तीन बच्चों सहित चार लोग मारे गए। सोमवार तड़के दूसरे हमले में नुसरीरात शरणार्थी शिविर में एक महिला सहित सात लोगों की मौत हो गई। इससे पहले सोमवार को इजराइली सेना ने बताया था कि गाजा सीमा के निकट एक कस्बे में एक व्यक्ति का शव मिला है। सेना के मुताबिक, आशंका है कि इस व्यक्ति को सात अक्टूबर को हमास ने अपने हमले के दौरान बंधक बना लिया होगा। अमेरिका के राष्ट्रपति जो बाइडन ने शुक्रवार को कहा कि इजराइल ने हमास को तीन चरणीय युद्धविराम और बंधक रिहाई समझौते की पेशकश की है तथा घोषणा की है कि गाजा में लड़ाई समाप्त करने का समय आ गया है, क्योंकि हमास अब इजराइल पर और बड़े पैमाने पर हमला करने में सक्षम नहीं है। वहीं, इजराइली मीडिया ने बताया कि प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू ने कहा है कि वह हमास को नष्ट करने के अपने लक्ष्य से पीछे नहीं हटे हैं और उन्होंने सत्ता में अपने सहयोगियों से कहा है कि अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडन द्वारा प्रस्तुत युद्धविराम प्रस्ताव से यह लक्ष्य पूरा हो जाएगा।

देश की जनता ने एक बार फिर हम पर विश्वास जताया है : डॉ. महेश शर्मा

नोएडा। गौतमबुद्ध लोकसभा सीट से भाजपा प्रत्याशी डॉ. महेश शर्मा ने अपनी एक लाख से ज्यादा मतों की बढ़त पर जनता को धन्यवाद दिया है। उन्होंने कहा है कि एक बार फिर जनता ने अपना विश्वास हम पर जताया है। उन्होंने कहा कि लोकतंत्र के महापर्व की आज पूर्ण आहुति है। जैसा कि देश की जनता ने विश्वास जताया है, हमारे प्रधानमंत्री के प्रति, भारतीय जनता पार्टी के प्रति, हमारे देश के प्रति, उसके लिए सबका बहुत-बहुत धन्यवाद है। उन्होंने बताया कि जो हम ग्राफ मान रहे थे, वही रहने वाला है, 340 से 350-360 के आसपास एनडीए का ग्राफ रहने वाला है। अभी कुछ राउंड में यह आंकड़े सामने आए हैं। शाम तक और भी आंकड़े सामने आएंगे। उन्होंने कहा कि मैं अपने क्षेत्र की जनता को भी बहुत-बहुत धन्यवाद देता हूं। जिन्होंने मुझे चौथे राउंड में ही एक लाख मतों के पार पहुंचा दिया। पिछली बार मैं 3,35,000 मतों से जीता था। इस बार उम्मीद है कि 4 लाख से ज्यादा मतों से जीतूंगा।

आज का राशिफल

मेष: योजना क्रियान्वयन के लिए समय अच्छा व सकारात्मक परिणाम देने वाला बन रहा है। कारोबारी काम में नवीन तालमेल और समन्वय बन जाएगा। जीवन साथी अथवा यार-दोस्तों के साथ साझे में किए जा रहे काम में लाभ मिल जाएगा। आत्मचिंतन करे। बिगड़ा कार्य बनेगा।

वृषभ: व्यवसाय में प्रतिद्वंद्वी परेशान कर सकते है। समय व्ययकारी सिद्ध होगा। ले देकर की जा रही काम की कोशिश ठीक नहीं। दिमाग में निर्मूल तर्क-कुतर्क पैदा होंगे। महत्वपूर्ण कार्य को समय पर बना लें तो अच्छा ही होगा। स्वास्थ्य मध्यम रहेगा। व्यापार में स्थिति नरम रहेगी।

मिथुन: लाभदायक कार्यों की चेष्टाएं प्रबल होंगी। मान-सम्मान बढ़ेगा। आय-व्यय की स्थिति समान रहेगी। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। व्यापार व व्यवसाय में ध्यान देने से सफलता मिलेगी। कामकाज में आ रहा अवरोध दूर होकर प्रगति का रास्ता मिल जाएगा। धार्मिक यात्रा का योग बना है।

कर्क: सैर-सपाटे में समय व्यतीत होगा। मान-सम्मान में वृद्धि होगी। अच्छे कार्य के लिए रास्ते बना लेंगे। अपने हित के काम सुबह-सवेरे ही निपटा लें। पुराने मित्र के कारण कार्य बाधा हटेगी। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आर्थिक लाभ हेतु किये गए कार्यों का तत्काल प्रतिफल मिलेगा।

सिंह: अपने हितैषी ही पीठ पीछे नुकसान पहुंचाने की कोशिश करेंगे। पठन-पाठन में स्थिति कमजोर रहेगी। किसी से वाद-विवाद अथवा कहासुनी होने का भय रहेगा। मानसिक एवं शारीरिक शिथिलता पैदा होगी। जल्दबाजी में कोई भूल संभव है। आय-व्यय की स्थिति समान्य रहेगी।

कन्या: बुरी संगति से बचे। आशानुकूल कार्य होने में संदेह है। स्वास्थ्य मध्यम रहेगा। लेन-देन में अस्पष्टता ठीक नहीं। दूसरों के कार्यों में अनावश्यक हस्तक्षेप न करें। निर्मूल शंकाओं के कारण मनस्ताप भी पैदा हो सकते हैं। भय तथा शत्रुहानि की आशंका रहेगी। यात्रा का योग बन रहा है।

तुला: कारोबार के विस्तार का मानस बनेगा। शैक्षणिक कार्य आसानी से पूरे होते रहेंगे। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। व्यापार व व्यवसाय में ध्यान देने से सफलता मिलेगी। मन प्रसन्न रहेगा। अचल संपति की खरीद अथवा कृषि उद्यम में रुचि पैदा होगी। व्यापार व व्यवसाय में स्थिति उत्तम रहेगी।

वृश्चिक: नये-नये व्यापारिक अनुबंध होंगे। मित्रों से सावधानी रखें तो ज्यादा उत्तम है। व्यसनों का त्याग करें. संतान पक्ष की समस्या समाप्त होगी। कामकाज में अवरोध दूर होकर प्रगति का रास्ता मिल जाएगा। मान-सम्मान में वृद्धि होगी। हरि करे सो खरी इसीलिए पूरे मनोयोग से कार्य करें।

धनु: धनु : कार्यक्षेत्र में खुशनुमा माहौल बनेगा। मध्याह्न पूर्व समय आपके पक्ष का रहेगा। कारोबारी काम में प्रगति बनती रहेगी। लेन-देन में आ रही बाधा दूर करने के प्रयास होंगे। परिश्रम प्रयास से काम बनाने की कोशिश लाभ देगी। पैतृक सम्पत्ति से लाभ होगा।

मकर: भावनाओं का उद्वेग बढ़ेगा। जीवनसाथी का परामर्श लाभदायक रहेगा। धार्मिक कार्य में समय और धन व्यय होगा। हित के काम में आ रही बाधा मध्याह्न पश्चात दूर हो जाएगी। अपने काम आसानी से बनते चले जाएंगे। संतान पक्ष की समस्या समाप्त होगी।

कुम्भ: जीवनसाथी अथवा यार-दोस्तों के साथ साझे में किए जा रहे काम में लाभ मिल जाएगा। एकाकी वृत्ति त्यागें। हित के काम में आ रही बाधा मध्याह्न पश्चात दूर हो जाएगी। अपने काम आसानी से बनते चले जाएंगे। साथ ही आगे के लिए रास्ता भी बन जाएगा। कार्य सफल होंगे।

मीन: मेहमानों का आगमन होगा। राजकीय कार्यों से लाभ। पैतृक सम्पत्ति से लाभ। पुरानी गलती का पश्चाताप होगा। विद्यार्थियों को लाभ। दाम्पत्य जीवन सुखद रहेगा। परिवारजनों का सहयोग व समन्वय काम को बनाना आसान करेगा। कारोबारी काम में नवीन तालमेल और समन्वय बन जाएगा।

बंगाल में मतगणना केंद्र के बाहर भिड़े तृणमूल और भाजपा के समर्थक

एजेंसी। कोलकाता

पश्चिम बंगाल के बांकुरा जिले में बिष्णुपुर (एससी) लोकसभा क्षेत्र के मतगणना केंद्र के पास मंगलवार को तृणमूल कांग्रेस और भाजपा समर्थकों के बीच झड़प के बाद तनाव उत्पन्न हो गया। भाजपा समर्थकों ने आरोप लगाया कि चौथे चरण की मतगणना के बाद जब यह पता चला कि पार्टी के मौजूदा सांसद और उम्मीदवार सौमित्र खान 10 हजार से अधिक मतों से आगे चल रहे हैं, तो तृणमूल कांग्रेस के कार्यकर्ताओं ने मतगणना केंद्र के सामने हंगामा करना शुरू कर दिया। क्षेत्र में भाजपा के कुछ शिविर कार्यालयों में तोड़फोड़ की गई। जल्द ही भाजपा समर्थक लाठी-डंडे लेकर एकत्र हो गए और जवाबी हमला किया। दोनों गुटों के बीच संघर्ष को नियंत्रित करने में वहां मौजूद पुलिस की बड़ी टुकड़ी को भी कठिनाई हुई। खान ने कहा कि उन्होंने अपने पार्टी कार्यकर्ताओं को शांत रहने और अपनी-अपनी मतगणना टेबल पर ध्यान केंद्रित करने की सलाह दी है। इस बीच, दक्षिण कोलकाता में हरीश चटर्जी स्ट्रीट स्थित मुख्यमंत्री ममता बनर्जी के आवास के सामने जश्न शुरू हो चुका है। रुझानों से पता चला है कि तृणमूल कांग्रेस 30 सीटों पर आगे चल रही है। उसके बाद भाजपा 10 और कांग्रेस दो सीटों पर आगे है। शुरूआती रुझानों से पता चला कि माकपा के राज्य सचिव और पार्टी पोलित ब्यूरो के सदस्य आगे चल रहे थे, लेकिन बाद में वह तृणमूल कांग्रेस के मौजूदा सांसद और पार्टी उम्मीदवार अबू ताहिर खान से काफी पीछे हो गए। बहरामपुर लोकसभा क्षेत्र में कड़ा मुकाबला चल रहा है, जहां मुख्य उम्मीदवार प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष और पार्टी के पांच बार के लोकसभा सदस्य अधीर रंजन चौधरी मैदान में हैं।

बिहार जदयू के अध्यक्ष उमेश कुशवाहा ने कहा, 'परिवारतंत्र पर लोकतंत्र भारी'

पटना। बिहार में लोकसभा की 40 सीटों पर मतों की गिनती जारी है। शुरूआती रुझानों में एनडीए बढ़त की ओर जाता दिख रहा है। एनडीए में शामिल जदयू के बिहार प्रदेश अध्यक्ष उमेश सिंह कुशवाहा ने कहा कि शुरूआती रुझान से साफ है कि परिवारतंत्र पर लोकतंत्र हावी है। उन्होंने कहा कि बिहार में हमलोग विकास के मुद्दे पर चुनाव में गए थे और शुरूआती रुझान से साफ है कि यहां के मतदाताओं को यह मुद्दा पसंद आया। लोगों को नीतीश कुमार और नरेंद्र मोदी की करिश्माई जोड़ी पर भरोसा है। कुशवाहा ने यह भी माना कि इतने कड़े मुकाबले की उम्मीद नहीं थी, फिर भी अभी शुरूआती रुझान हैं और हमें परिणाम का इंतजार करना चाहिए। जनता को एनडीए पर भरोसा है। उन्होंने एनडीए पर कहा कि हो सकता है कि एक-दो सीट का नुकसान उठाना पड़े। चुनाव आयोग के मुताबिक, शुरूआती रुझान में एनडीए 31 सीटों पर आगे चल रहा है और महागठबंधन 9 सीटों पर बढ़त बनाए हुए है। बिहार में एनडीए में भाजपा, जदयू, लोजपा (रामविलास), जीतनराम मांझी की पार्टी हिंदुस्तानी आवाम मोर्चा और उपेंद्र कुशवाहा की राष्ट्रीय लोक मोर्चा शामिल है। बिहार की 40 लोकसभा सीट में भाजपा ने 17, जदयू ने 16, लोजपा (रामविलास) ने 5 तथा जीतनराम मांझी और उपेंद्र कुशवाहा ने एक-एक सीट पर प्रत्याशी दिए हैं।

देश की जनता ने एक बार फिर हम पर विश्वास जताया है : डॉ. महेश शर्मा

नोएडा। गौतमबुद्ध लोकसभा सीट से भाजपा प्रत्याशी डॉ. महेश शर्मा ने अपनी एक लाख से ज्यादा मतों की बढ़त पर जनता को धन्यवाद दिया है। उन्होंने कहा है कि एक बार फिर जनता ने अपना विश्वास हम पर जताया है। उन्होंने कहा कि लोकतंत्र के महापर्व की आज पूर्ण आहुति है। जैसा कि देश की जनता ने विश्वास जताया है, हमारे प्रधानमंत्री के प्रति, भारतीय जनता पार्टी के प्रति, हमारे देश के प्रति, उसके लिए सबका बहुत-बहुत धन्यवाद है।

उन्होंने बताया कि जो हम ग्राफ मान रहे थे, वही रहने वाला है, 340 से 350-360 के आसपास एनडीए का ग्राफ रहने वाला है। अभी कुछ राउंड में यह आंकड़े सामने आए हैं। शाम तक और भी आंकड़े सामने आएंगे। उन्होंने कहा कि मैं अपने क्षेत्र की जनता को भी बहुत-बहुत धन्यवाद देता हूं। जिन्होंने मुझे चौथे राउंड में ही एक लाख मतों के पार पहुंचा दिया। पिछली बार मैं 3,35,000 मतों से जीता था। इस बार उम्मीद है कि 4 लाख से ज्यादा मतों से जीतूंगा।

चीन को अब अफ्रीका से खदेड़ने की तैयारी

तंजानिया के द्वीप पर भारत का कब्जा

अडानी इंटरनेशनल पोर्टस होल्डिंग प्राइवेट लिमिटेड ने तंजानिया बंदरगाह प्राधिकरण के साथ 30 साल के लिए एक समझौते पर हस्ताक्षर किए हैं

एजेंसी। तंजानिया

अडानी इंटरनेशनल पोर्टस होल्डिंग प्राइवेट लिमिटेड ने तंजानिया बंदरगाह प्राधिकरण के साथ 30 साल के लिए एक समझौते पर हस्ताक्षर किए हैं। इस समझौते के तहत एआईपीएच अब 30 सालों तक तंजानिया के दार एस्लाम बंदरगाह पर कंटेनर टर्मिनल 2 का परिचालन और प्रबंधन करेगा। इस डील से भारत को अब अफ्रीकी महाद्वीप में काफी मदद मिलने वाली है। तंजानिया में चीन ने किस कदर मजबूती से अपने पैर जमा लिए हैं। ये बात दुनिया जानती है। ऐसे में उसकी गहरी रणनीतिक पैठ को कमजोर करने के मकसद से भारत ने भी एक बड़ा कदम उठाया है। तंजानिया बंदरगाह पर अब भारत का राज होगा। अडानी इंटरनेशनल पोर्टस होल्डिंग प्राइवेट लिमिटेड ने तंजानिया बंदरगाह प्राधिकरण के साथ 30 साल के लिए एक समझौते पर हस्ताक्षर किए हैं। इस समझौते के तहत एआईपीएच अब 30 सालों तक तंजानिया के दार एस्लाम बंदरगाह पर कंटेनर टर्मिनल 2 का परिचालन और प्रबंधन करेगा। इस डील से भारत को अब अफ्रीकी महाद्वीप में काफी मदद मिलने वाली है। एडी पोर्ट्स ग्रुप की 30 प्रतिशत हिस्सेदारी वाले इस डील से ने 39.5 मिलियन में हचिसन पोर्ट होल्डिंग्स, हचिसन पोर्ट इन्वेस्टमेंट्स और हारबर्स इन्वेस्टमेंट से तंजानिया इंटरनेशनल कंटेनर टर्मिनल सर्विसेज का 95 प्रतिशत अधिग्रहण किया है। डील जून के अंत तक पूरी होने की उम्मीद है। टीआईसीटीएस के पास सभी पोर्ट हैंडलिंग उपकरण हैं और वह दार एस सलाम पोर्ट पर कंटेनर टर्मिनल 2 पर जनशक्ति को नियुक्त करता है, और यह टर्मिनल का संचालन करेगा। बंदरगाह के टर्मिनल 2, जिसकी वार्षिक कंटेनर क्षमता 1 मिलियन टीईयू है, ने 2023 में लगभग 0.82 मिलियन टीईयू को संभाला, जो तंजानिया के कुल कंटेनर वॉल्यूम का 83 प्रतिशत है। अदानी इंटरनेशनल पोर्ट होल्डिंग भारतीय अरबपति गौतम अदानी के अत्यधिक विविध व्यापार साम्राज्य का हिस्सा है। समूह सक्रिय रूप से नए बाजारों की तलाश कर रहा था, जिसमें अफ्रीका को एक प्रमुख नए प्रवेश बिंदु के रूप में देखा गया था। एडी पोर्ट्स ग्रुप के साथ नई डील के जरिए अडानी ने ऐसा ही किया है। इस तरह की रणनीतिक साझेदारी के माध्यम से, हमारा लक्ष्य तंजानिया में बुनियादी ढांचे को विकसित करने, इसके आर्थिक विकास का समर्थन करने और विश्व स्तर पर इसकी प्रतिस्पर्धात्मकता बढ़ाने के लिए हमारी संयुक्त जानकारी और विशेषज्ञता का लाभ उठाना है।

नोयडा के होटल में आग लगने से ग्राहक की मौत के मामले में संचालक गिरफ्तार

नोएडा। नोएडा के एक होटल में पिछले महीने लगी आग के कारण एक ग्राहक की हुयी मौत के मामले में इसके संचालक को गिरफ्तार किया गया है। अधिकारियों ने यह जानकारी दी। अधिकारियों के मुताबिक पुलिस ने नोएडा के सेक्टर 104 के पास हाजीपुर मार्केट में स्थित होटल के मालिक बिमलेंदु झा (40) को पहले ही गिरफ्तार कर लिया है। यह होटल अग्निशमन विभाग और स्थानीय प्राधिकरण की मंजूरी के बिना चल रहा था। उन्होंने बताया कि मून लाइट होटल में 19 मई की शाम पांच बजे आग लगने के कारण दम घुटने से 27 वर्षीय फिजियोथेरेपिस्ट महिला की मौत हो गई थी। इस घटना में उसके साथ मौजूद उसका दोस्त बीमार हो गया था। पुलिस प्रवक्ता ने बताया, गत रविवार को होटल संचालक आकाश शर्मा (30) को हाजीपुर बाजार के पास से गिरफ्तार किया गया।

साजिश

बंगाल में देर रात बम धमाका, 5 घायल

चुनाव आयोग ने काउंटिंग के दौरान हिंसा की आशंका जताई थी

एजेंसी। कोलकाता

लोकसभा की 542 सीटों की काउंटिंग जारी है। काउंटिंग से एक दिन पहले सोमवार (3 जून) की रात पश्चिम बंगाल के साउथ 24 परगना के भांगर में बम धमाका हुआ। इसमें 5 लोग घायल हुए हैं। मीडिया रिपोर्ट्स में बताया जा रहा है कि बम बनाने के दौरान हादसा हुआ है। सभी घायलों को कोलकाता के रस्ठट अस्पताल में भर्ती कराया गया है। इनमें एक इंडियन सेक्युलर फ्रंट का पंचायत सदस्य है। चुनाव आयोग ने कल काउंटिंग के दौरान या इसके बाद हिंसा की आशंका जताई थी। इसके चलते 7 राज्यों में सेंट्रल फोर्स की तैनाती की गई है। ये पहली बार है, जब आचार संहिता के हटने के बाद चुनाव आयोग ने 7 राज्यों में सुरक्षाबलों की तैनाती की है। दूसरी तरफ, कांग्रेस ने अपने कार्यकताओं और नौकरशाहों को लिए दो लेटर जारी किए हैं। पार्टी ने कार्यकर्ताओं से काउंटिंग में कहीं गड़बड़ी दिखने पर वीडियो बनाने को कहा है। कांग्रेस ने कार्यकर्ता और पोलिंग एजेंट्स के लिए हेल्पलाइन नंबर भी जारी किए हैं। कांग्रेस ने नौकरशाहों से किसी भी डर या पक्षपात के संविधान और अपने कर्तव्यों का पालन करने की अपील की है। दरअसल, 1 जून को आए एग्जिट पोल्स में तीसरी बार मोदी सरकार बनती दिख रही है। विपक्ष ने इन एग्जिट पोल्स को खारिज किया था। मुख्य चुनाव आयुक्त राजीव कुमार ने 3 जून को बताया कि चुनाव के बाद हिंसा किसी भी सूरत में नहीं होनी चाहिए। इसी को देखते हुए हमने आचार संहिता हटने के बाद भी एहतियातन कदम उठाए हैं। हिंसा की आशंका देखते हुए आंध्र प्रदेश, पश्चिम बंगाल, उत्तर प्रदेश और मणिपुर में सेंट्रल फोर्स तैनात की गई हैं।

एग्जिट पोल बनाने वाले खौफ में थे : एसटी हसन

मुरादाबाद। लोकसभा चुनाव को लेकर मतगणना जारी है। शुरूआती रुझानों में एनडीए आगे है, लेकिन 2019 की तुलना में कांग्रेस बेहतर स्थिति में नजर आ रही है। इसके बाद कांग्रेस के नेता उत्साहित दिख रहे हैं। वहीं, अब तक के रुझानों में एनडीए दूर-दूर तक 400 के आंकड़े के आसपास नजर नहीं आ रही है, जिस पर लगातार इंडिया गठबंधन के नेता तंज कस रहे हैं। उन्होंने कहा, हम शुरू से ही एग्जिट पोल के आंकड़े को नकारते हुए आ रहे हैं। हमने उस दिन भी एग्जिट पोल को नकारा था और आज भी नकार रहे हैं। हमने यही बात कही थी कि इस बार रिजल्ट 2004 जैसा होने जा रहा है, जब एग्जिट पोल ने दिखाया था कुछ और, हुआ था कुछ और, यह हम सभी को पता है। हमें लगता है कि एग्जिट पोल तैयार करने वालों के ऊपर भी बहुत प्रेशर था।

गाजियाबाद में स्वीमिंग पूल में डूबने से बच्ची की मौत

नई दिल्ली/गाजियाबाद। दिल्ली से सटे गाजियाबाद में एक सोसाइटी के स्विमिंग पूल में डूबने से छह साल की मासूम बच्ची की मौत हो गई. घटना सोमवार शाम का बताया जा रहा है. जानकारी के अनुसार बच्ची का शव स्विमिंग पूल के ऊपर तैरता हुआ मिला था. पुलिस का कहना है कि उन्हें रात करीब सवा आठ बजे घटना की सूचना मिली. हादसा उसे समय हुआ जब बच्ची अकेले ही स्विमिंग पूल में तैरने के लिए गई थी. सोसाइटी के सीसीटीवी को चेक करने पर पता चला की बच्ची स्विमिंग पूल की तरफ अकेली ही गई थी. फिलहाल पुलिस ने मामले की जांच शुरू कर दी है. हालांकि शुरूआती तौर पर इसे हादसा ही माना जा रहा है. मामला गाजियाबाद के राजनगर एक्सटेंशन की ब्रेव हार्ट सोसाइटी का है जहां पर 10 साल की बच्ची की स्विमिंग पूल में डूबने से मौत हो गई है.

घर वालों की डांट से बचने के लिए दिल्ली पहुंचीं तीन नाबालिग लड़कियां सकुशल बरामद

नई दिल्ली। विकासनगर से देहरादून शापिंग करने गयी थीं जहां से उन्हें लौटने में काफी देर हो गयी, घर वालों की डांट से बचने के लिए वे आईएसबीटी चली गयीं और वहां से दिल्ली की बस पकड़ ली। देहरादून जिले के विकासनगर क्षेत्र के हरबर्टपुर की रहने वाली तीन नाबालिग लड़कियां कथित तौर पर घर वालों की डांट से बचने के लिए दिल्ली चली गईं, जिन्हें पुलिस ने सकुशल बरामद कर लिया है।

पुलिस ने सोमवार को यहां बताया कि तीनों लड़कियों को दिल्ली से सकुशल बरामद किया गया और इसमें दिल्ली पुलिस की सहायता भी ली गयी। पुलिस ने बताया कि एक महिला ने शनिवार को शिकायत दर्ज कराई कि उसकी दो पुत्रियां पड़ोस में रहने वाली अपनी सहेली के साथ पूर्वाह्न 11 बजे बिना बताए कहीं चली गयीं और देर शाम तक घर नहीं लौटीं। घटना की संवेदनशीलता को देखते हुए देहरादून के वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक अजय सिंह ने एक टीम गठित कर लड़कियों की तलाश शुरू करने के निर्देश दिए। उन्होंने बताया कि टीम ने आसपास के लोगों से जानकारी एकत्र करने के बाद सीसीटीवी फुटेज का भी गहनता से निरीक्षण किया। उन्होंने बताया कि सीसीटीवी फुटेज की जांच के दौरान नाबालिग लड़कियां देहरादून अंतरराज्यीय बस टर्मिनस से दिल्ली जाती बस में सवार होती दिखाई दीं।

रांची एवं डालटनगंज (मेदिनीनगर) से एक साथ प्रकाशित | ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष 14, संवत 2081 | रांची, बुधवार, 05 जून 2024, वर्ष-25, अंक-123, पृष्ठ-12 ₹3.00 रजिस्ट्रेशन नं: BIHHIN/1999/155 | www.rastriyanaveenmail.com

ईश्वर में हमारा विश्वास

राष्ट्रीय नवीन मेल

सत्यमेव जयते

चुनाव विशेषांक के साथ

NDA की हैट्रिक

अबकी बार नैया पार, सहयोगियों के भरोसे भाजपा सरकार

400 पार का नारा औंधे मुंह गिरा भाजपा छू भी नहीं सकी 370

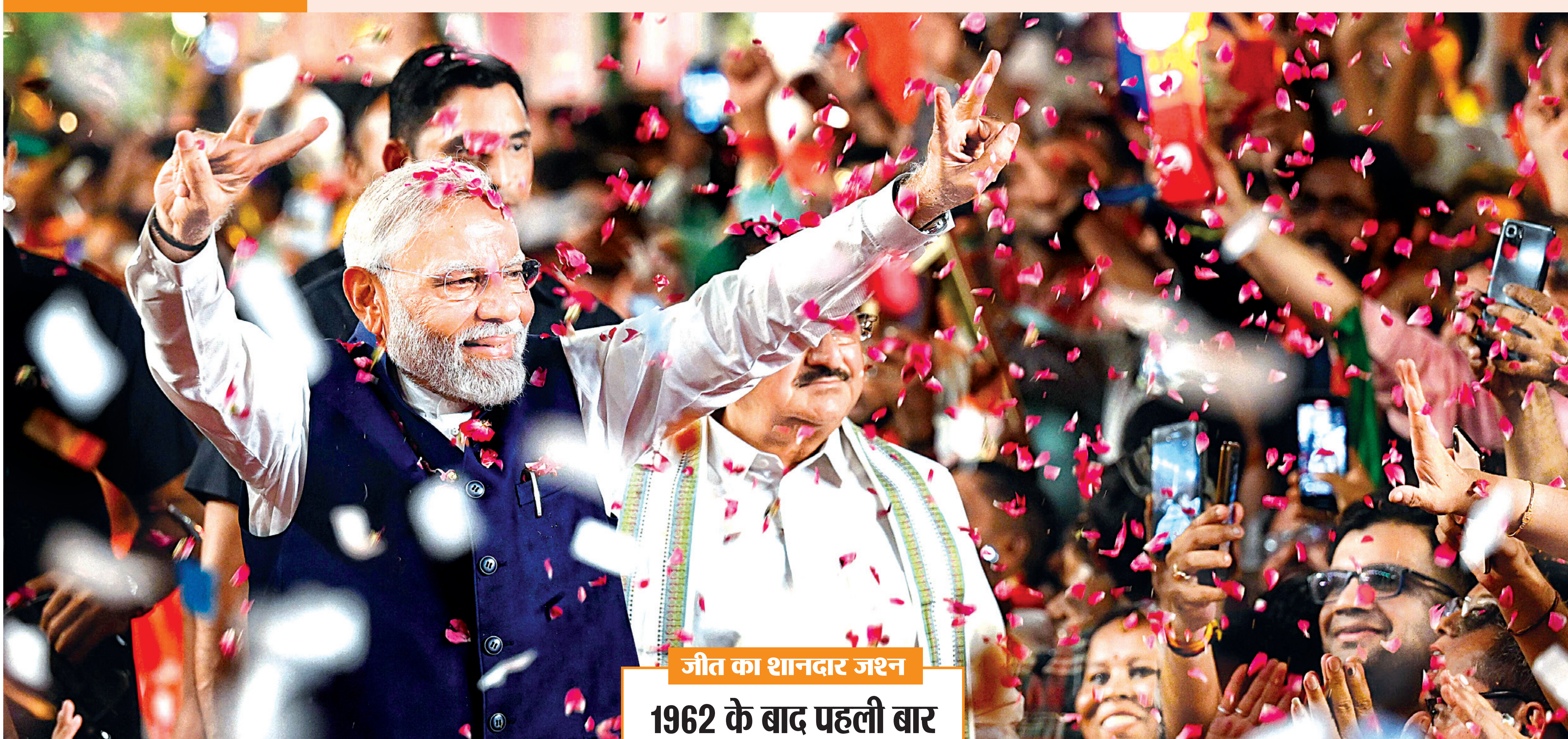

जीत का शानदार जश्न

एजेंसी

नई दिल्ली। लोकसभा चुनाव 2024 के मंगलवार को आए नतीजों में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) सबसे बड़ी पार्टी बनकर उभरी है। भाजपा बहुमत के 272 के आंकड़े को नहीं छू पाई लेकिन राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग या एनडीए) 290 सीटों पर आगे है। भाजपा 240 सीटों पर जीत के नजदीक है। इस बार भारतीय जनता पार्टी को 36.61 प्रतिशत वोट मिला है। कांग्रेस को 21.27 प्रतिशत, सपा को 4.60 प्रतिशत, तृणमूल कांग्रेस को 4.37 प्रतिशत वोट मिला है। भाजपा का 400 पार का नारा औंधे मुंह गिरा वहीं भाजपा भी 370 सीट का लक्ष्य पूरा नहीं कर पाई। लोकसभा - 2024 के नतीजों के अनुसार भारतीय जनता पार्टी - भाजपा 240, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस - कांग्रेस 99, समाजवादी पार्टी - सपा 37, अखिल भारतीय तृणमूल कांग्रेस - एआईटीसी 29, द्रविड़ मुनेत्र कड़गम - डीएमके 22, तेलुगु देशम - टीडीपी 16, जनता दल (यूनाइटेड) - जेडी(यू) 12, शिवसेना (उद्धव बालासाहेब ठाकरे) - एसएचएसयूबीटी 10, राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी - शरद चंद्र पवार - एनसीपीएसपी 07 सीटें मिली हैं।

आंध्रप्रदेश में एनडीए सरकार ओडिशा में भाजपा को सत्ता

इसके अलावा दो राज्यों में हुए विधानसभा चुनावों में भी एनडीए को जीत मिली है। आंध्र प्रदेश में 175 सीटों में तेलुगु देश पार्टी के नेतृत्व में एनडीए को 163 सीटें मिली हैं। आंध्र प्रदेश में तेलुगु देशम - टीडीपी 134, जनसेना पार्टी - जेएनपी 21, भारतीय जनता पार्टी - बीजेपी 8, युवजन श्रमिका रायथू कांग्रेस पार्टी - वाईएसआरसीपी 12 सीटें मिलीं है। वहीं ओडिशा में भारतीय जनता पार्टी बड़े बहुमत के साथ आगे है। यहां 147 सीटों में से भारतीय जनता पार्टी - (भाजपा)78, बीजू जनता दल - बीजेडी 51, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस - कांग्रेस 14, भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (मार्क्सवादी) - सीपीआई (एम) 01, स्वतंत्र 03।

जगन मोहन रेड्डी ने आंध्र प्रदेश के सीएम पद से इस्तीफा दिया

अमरावती। आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री वाई.एस. जगन मोहन रेड्डी ने विधानसभा चुनाव में अपनी हार के बाद मंगलवार को अपने पद से इस्तीफा दे दिया। वाईएसआर कांग्रेस पार्टी ने मंगलवार को बताया, जगन मोहन रेड्डी ने राज्यपाल एस. अब्दुल नजीर को अपना इस्तीफा भेज दिया है। राज्यपाल उन्हें अपने नये सीएम के शपथ लेने तक कार्यवाहक मुख्यमंत्री बने रहने को कह सकते हैं। जगन मोहन रेड्डी ने प्रेस कॉन्फ्रेंस के कुछ ही मिनट बाद अपना इस्तीफा भेज दिया। उन्होंने कहा कि नतीजे पार्टी के लिए उम्मीद के मुताबिक नहीं थे। उन्होंने हैरानी जताई कि करोड़ों लोगों को लाभ पहुंचाने वाली कई कल्याणकारी योजनाएं लागू करने के बावजूद वाईएसआर कांग्रेस को हार का सामना क्यों करना पड़ा? हार स्वीकार करते हुए जगन मोहन रेड्डी ने साहस के साथ फिर से उठ खड़े होने की शपथ ली। उन्होंने कहा कि उनकी पार्टी जनता के लिए लड़ाई जारी रखेगी।

वाराणसी से पीएम मोदी की लगातार तीसरी जीत

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने वाराणसी लोकसभा सीट से जीत की हैट्रिक लगाई है। उन्होंने कांग्रेस के प्रत्याशी अजय राय को डेढ़ लाख से अधिक वोटों से हरा दिया है। पीएम मोदी तीसरी बार वाराणसी लोकसभा सीट से चुनावी मैदान में उतरे। पीएम मोदी को 6,12,970 वोट मिले हैं, वहीं कांग्रेस के अजय राय को 4,60,457 और बसपा के अतहर जमाल लारी को 33,766 प्राप्त हुए हैं।

हारे दिग्गज केंद्रीय मंत्री

अमेठी से हारीं मंत्री स्मृति ईरानी

उत्तर प्रदेश के अमेठी लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र से कांग्रेस उम्मीदवार किशोरी लाल शर्मा चुनाव जीत गए हैं। किशोरी लाल शर्मा ने अपने निकटतम प्रतिद्वंद्वी भाजपा की स्मृति ईरानी को 1,67,196 मतों के अंतर से पराजित कर विजय प्राप्त की।

राजीव चंद्रशेखर कड़े संघर्ष में हारे

केन्द्रीय मंत्री राजीव चन्द्रशेखर को तिरुवनंतपुरम सीट से शशि थरूर ने 16,077 मतों से हरा दिया है। शशि थरूर को कुल 358155 मत मिले जबकि राजीव चन्द्रशेखर को 342078 मत मिले। इस सीट पर माकपा के प्रत्याशी पन्नियन रविन्द्रन तीसरे नंबर पर रहे।

केंद्रीय मंत्री अर्जुन मुंडा खूंटी में हारे

केंद्रीय मंत्री अर्जुन मुंडा को कांग्रेस के प्रत्याशी कालीचरण मुंडा ने ...... मतों से हरा दिया। अर्जुन मुंडा को 361972 मत मिले जबकि कालीचरण मुंडा को 511647 मत मिले। मालूम हो कि गत चुनाव में भी बेहद कड़े संघर्ष में कालीचरण महज सोलह सौ वोट से हारे थे।

1962 के बाद पहली बार कोई सरकार तीसरी बार वापसी कर रही है

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने लोकसभा चुनाव में एनडीए गठबंधन को मिली जीत को दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र की जीत बताते हुए कहा है कि ये विजय, भारत के संविधान पर अटूट निष्ठा की जीत है, ये विकसित भारत के प्रण की जीत है, ये सबका साथ-सबका विकास, इस मंत्र की जीत है, ये 140 करोड़ भारतीयों की जीत है। उन्होंने कहा कि उनके लिए यह भावुक पल है। उनकी माताजी के देहांत के बाद यह उनका पहला चुनाव था। लेकिन, देश की करोडों माताओं ने उन्हें मां की कमी नहीं खलने दी। विरोधी दल मिलकर भी उतनी सीटें नहीं जीत पाए, जितनी सीटें भाजपा अकेले जीती है। तीसरे कार्यकाल में देश नए फैसलों का एक अध्याय लिखेगा और यह मोदी की गारंटी है। भाजपा के केंद्रीय कार्यालय विस्तार में पार्टी कार्यकताओं को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि आज बड़ा मंगल है और इस पावन दिन लगातार तीसरी बार एनडीए की सरकार बननी तय है। पीएम मोदी ने 2024 के लोकसभा चुनाव में मिली जीत का महत्व बताते हुए कहा कि वर्ष 1962 के बाद पहली बार कोई सरकार अपने दो कार्यकाल पूरे करने के बाद तीसरी बार वापस आ रही है। उन्होंने जनादेश के लिए देश की जनता-जनार्दन का आभार जताते हुए कहा कि वे जनता-जनार्दन के बहुत आभारी हैं, जिन्होंने एनडीए पर लगातार तीसरी बार अपना विश्वास जताया है। भारत के इतिहास में ये एक अभूतपूर्व पल है।

2024 के लोकसभा चुनाव में पीएम मोदी ने मिली जीत का महत्व बताते हुए कहा कि वर्ष 1962 के बाद पहली बार कोई सरकार अपने दो कार्यकाल पूरे करने के बाद तीसरी बार वापस आ रही है।

वे इस स्नेह और आशीर्वाद के लिए देशवासियों को नमन करते हैं। प्रधानमंत्री मोदी ने देश में सही तरीके से चुनाव कराने के लिए चुनाव आयोग का अभिनंदन किया। उन्होंने ओडिशा में भाजपा की राज्य सरकार बनने, केरल और तमिलनाडु में जीत मिलने, चंद्रबाबू नायडू के नेतृत्व में आंध्र प्रदेश में और नीतीश कुमार के नेतृत्व में बिहार में एनडीए गठबंधन को मिली जीत सहित देश के कई राज्यों में विपक्ष का सूपड़ा साफ होने की बात कहते हुए जनता-जनार्दन को नमन किया। साथ ही कड़ी मेहनत करने के लिए भाजपा और एनडीए कार्यकताओं को धन्यवाद भी कहा। इससे पहले भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्डा ने तीसरी बार एनडीए सरकार बनाने के लिए देशवासियों और देश के करोड़ों मतदाताओं को धन्यवाद देते हुए कहा कि चाहे चुनाव की बेला हो, देश का नेतृत्व करने की बात हो और देश को समस्याओं से निकालने की बात हो, पीएम मोदी ने हमेशा देश और देश की जनता को आगे बढ़ाने का काम किया है। जबकि, विपक्ष ने हमेशा नकारात्मक राजनीति की और लगातार तीसरी बार हार के बाद विरोधी दलों को अब आत्मचिंतन करना चाहिए।

गठबंधन में लेंगे सरकार बनाने को लेकर फैसला : कांग्रेस

एजेंसी

नई दिल्ली। कांग्रेस पार्टी का कहना है कि देश में सरकार बनाने का फैसला वह अपने गठबंधन सहयोगियों के साथ मिलकर लेगी। हालांकि पार्टी अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने अच्छे विपक्ष की भूमिका निभाने की बात कही। कांग्रेस पार्टी को लोकसभा चुनाव 2024 में 100 के करीब सीटें मिलती दिखाई दे रही हैं। पिछली बार के 55 सीटों के आंकड़ों के बाद इस बार कांग्रेस लगभग दो गुना सीटों पर जीत के करीब है। पार्टी अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे, संसदीय दल की नेता सोनिया गांधी, पार्टी नेता राहुल गांधी और जयराम रमेश ने मंगलवार को पत्रकार वार्ता कर जनता को वोट देने के लिए धन्यवाद दिया। कांग्रेस अध्यक्ष ने कहा कि हम जनता के मत को विनम्रता से स्वीकार करते हैं। सत्ताधारी पार्टी एक व्यक्ति और नाम पर चुनाव लड़ रही थी, जिसे जनता ने नकार दिया है। यह प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की नैतिक और राजनैतिक हार है। जनता ने उनकी महत्वाकांक्षाओं पर अवरोध लगाया है। महंगाई, बेरोजगारी, किसान और मजदूरों के हितों के लिए जनता ने वोट किया है।

यह संविधान बचाने के लिए जनता का मत : राहुल

कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने इसे संविधान बचाने के लिए जनता का मत बताया और कहा कि हमने गठबंधन में चुनाव लड़ा है। विपक्षी पार्टियों के साथ हमें मिलकर सरकार बनाना है या नहीं, इस पर फैसला लेंगे। राहुल गांधी ने विशेष रूप से उत्तर प्रदेश की जनता को धन्यवाद दिया और कहा कि उन्होंने राजनीतिक समझ दिखाई है। मालूम हो कि उत्तर प्रदेश में इंडी गठबंधन को

चुनाव में जीते विपक्षी दिग्गज

कन्नौज से जीते अखिलेश यादव

लोकसभा चुनाव में सबसे बड़ा उलटफेर उत्तर प्रदेश में हुआ है। समाजवादी पार्टी प्रमुख अखिलेश यादव ने कन्नौज से अपने करियर की सबसे बड़ी दर्ज की है। उन्होंने भाजपा के उम्मीदवार को हरा कर बड़ी जीत दर्ज की है। उनकी पार्टी भी इस बार उत्तर प्रदेश में सबसे बड़ी पार्टी बनकर उभरी है।

रायबरेली व वायनाड से जीते राहुल गांधी

राहुल गांधी ने रायबरेली और वायनाड सीट से भारी मतों से जीत दर्ज की है। रायबरेली में 4 लाख और वायनाड से 3 लाख से ज्यादा वोटों से जीते हैं। राहुल ने एक वीडियो शेयर कर कहा कि बेशुमार मोहब्बत देने के लिए वायनाड और रायबरेली की जनता का बहुत बहुत धन्यवाद।

गाजीपुर से जीते अफजाल अंसारी

उत्तर प्रदेश के गाजीपुर लोकसभा सीट से मुख्तार अंसारी के भाई अफजाल अंसारी ने समाजवादी पार्टी के टिकट पर जीत दर्ज की है। उन्होंने बीजेपी ने यहां से पारसनाथ राय को एक लाख से ज्यादा वोटो से हराया।

भगवान बिरसा मुंडा की जन्मस्थली खूंटी लोकसभा क्षेत्र अनुसूचित जनजाति के लिए सुरक्षित है। इस सीट के अंतर्गत खूंटी, सिमडेगा और रांची और सरायकेला खरसावां के छह विधानसभा क्षेत्र आते हैं। रघुवर दास सरकार के कार्यकाल में पत्थलगड़ी के नाम पर यहां उग्र सरकार विरोधी आंदोलन चलाया गया था। खूंटी सीट के परिणाम पर पूरे देश की निगाहें लगी हैं। क्योंकि पिछली बार मामूली अंतर से जीत दर्ज करनेवाले केंद्रीय मंत्री अर्जुन मुंडा को इस बार भी कांग्रेस के कालीचरण मुंडा चुनौती दे रहे हैं।

खूंटी लोकसभा सीट का सफरनामा

खूंटी लोकसभा सीट 1967-1984

जीते	वर्ष	हारे
जयपाल सिंह मुंडा	1967	पी कच्छप (निर्दलीय)
निरल एनेम होरो (निर्दलीय)	1971	कड़िया मुंडा
कड़िया मुंडा	1977	निरेल मुंडू
निरल एनेम होरो	1980	कड़िया मुंडा
साइमन तिग्गा	1984	निरल एनेम होरो (निर्दलीय)

खूंटी लोकसभा सीट 1989-1999

जीते	वर्ष	हारे
कड़िया मुंडा	1989	निरल एनेम होरो (झारखंड दल)
कड़िया मुंडा	1991	निरल एनेम होरो
कड़िया मुंडा	1996	सुशीला केरकेट्टा
कड़िया मुंडा	1998	सुशीला केरकेट्टा
कड़िया मुंडा	1999	सुशीला केरकेट्टा

बंटवारे के बाद खूंटी लोकसभा सीट का सफरनामा

जीते	वर्ष	हारे
सुशीला केरकेट्टा	2004	कड़िया मुंडा
कड़िया मुंडा	2009	नियल तिर्की
कड़िया मुंडा	2014	एनोस एक्का
अर्जुन मुंडा	2019	कालीचरण मुंडा

1962 से 1969 : जयपाल सिंह मुंडा

जयपाल सिंह मुंडा भारतीय आदिवासियों और झारखंड आंदोलन के एक सर्वोच्च नेता थे। वे एक जाने माने राजनीतिज्ञ, पत्रकार, लेखक, संपादक, शिक्षाविद् और 1925 में ऑक्सफोर्ड ब्लू का खिताब पाने वाले हॉकी के एकमात्र अंतरराष्ट्रीय खिलाड़ी थे। उनकी कप्तानी में 1928 के ओलिंपिक में भारत ने पहला स्वर्ण पदक प्राप्त किया था। औपनिवेशिक भारत में जयपाल सिंह मुंडा सर्वोच्च सरकारी पद पर थे।

जयपाल सिंह मुंडा
कांग्रेस

1967 में अस्तित्व में आए इस लोकसभा क्षेत्र में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के विजयी जयपाल सिंह मुंडा को 24.2 फीसदी वोट मिले थे। वहीं निर्दलीय उम्मीदवार पी कच्छप को 21.4 फीसदी वोट मिले थे । भारतीय जनता पार्टी को 15.4 और स्वतंत्र पार्टी को 12.8 फीसदी मत प्राप्त हुए थे।

जीवन यात्रा : जयपाल सिंह मुंडा का जन्म 3 जनवरी 1903 को और 20 मार्च 1970 को निधन हुआ था। जयपाल सिंह छोटा नागपुर (अब झारखंड) राज्य की मुंडा जनजाति के थे। मिशनरीज की मदद से वह ऑक्सफोर्ड के सेंट जॉन्स कॉलेज में पढ़ने के लिए गए।वह असाधारण रूप से प्रतिभाशाली थे। उन्होंने पढ़ाई के अलावा खेलकूद, जिनमें हॉकी प्रमुख था, के अलावा वाद-विवाद में खूब नाम कमाया। उनका चयन भारतीय सिविल सेवा (आईसीएस) में हो गया था। आईसीएस का उनका प्रशिक्षण प्रभावित हुआ क्योंकि वह 1928 में एम्सटरडम में ओलंपिक हॉकी में पहला स्वर्णपदक जीतने वाली भारतीय टीम के कप्तान के रूप में नीदरलैंड चले गए थे। वापसी पर उनसे आईसीएस का एक वर्ष का प्रशिक्षण दोबारा पूरा करने को कहा गया, उन्होंने ऐसा करने से इनकार कर दिया। उन्होंने बिहार के शिक्षा जगत में योगदान देने के लिए तत्कालीन बिहार कांग्रेस अध्यक्ष डा. राजेन्द्र प्रसाद को इस संबंध में पत्र लिखा। परंतु उन्हें कोई सकारात्मक जवाब नहीं मिला। 1938 की आखिरी महीने में जयपाल ने पटना और रांची का दौरा किया। इसी दौरे के दौरान आदिवासियों की खराब हालत देखकर उन्होंने राजनीति में आने का फैसला किया। 1938 जनवरी में उन्होंने आदिवासी महासभा की अध्यक्षता ग्रहण की, जिसने बिहार से इतर एक अलग झारखंड राज्य की स्थापना की मांग की। इसके बाद जयपाल सिंह देश में आदिवासियों के अधिकारों की आवाज बन गए। उनके जीवन का सबसे बेहतरीन समय तब आया जब उन्होंने संविधान सभा में बेहद वाकपटुता से देश की आदिवासियों के बारे में सकारात्मक ढंग से अपनी बात रखी।

1971 से 1977 व 1980 से 1984 : निरल एनेम होरो

निरल एनम होरो (1925-2008) एक भारतीय राजनीतिज्ञ और लोकसभा के पूर्व सदस्य थे । उन्होंने चौथी और पांचवीं लोकसभा में खूंटी का प्रतिनिधित्व किया। वे झारखंड पार्टी से जुड़े थे और बिहार सरकार में मंत्री रहे थे। 1974 में वे भारत के उपराष्ट्रपति पद के लिए चुनाव लड़े, लेकिन हार गए।

निरल एनेम होरो
झारखंड पार्टी

1971 में कांग्रेस की लहर के बाद भी पार्टी को मिली हार और निर्दलीय उम्मीदवार की निरल एनेम होरो ने जीत दर्ज की थी । जिन्हें कुल 29.4 प्रतिशत वोट मिले थे।जबकि भारतीय जनसंघ के करिया मुंडा को 27.8 प्रतिशत वोट मिले थे । ऑल इंडिया झारखंड पार्टी को 16.6 फीसदी जबकि एक अन्य निर्दलीय को 15.9 फीसदी वोट मिले थे। 1980 में हुए लोकसभा चुनाव में झारखंड पार्टी से निरल एनेम होरो ने इस सीट पर जीत दर्ज की थी ।इससे पहले 1971 के चुनाव में इन्होंने निर्दलीय उम्मीदवार के तौर पर जीत दर्ज की थी । इसके बाद 1980 में झारखंड पार्टी ने अपना उम्मीदवार बनाया और इन्हें कुल 35.8 की प्रतिशत वोट मिले थे। उन्होंने अपनी शिक्षा जिला स्कूल, संत कोलंबस कॉलेज हजारीबाग से बीए और रांची के छोटानागपुर लॉ कॉलेज से बीएल की डिग्री हासिल की । उन्होंने 15 मार्च, 1951 को लिलियन एलिस होरो से शादी की। उनके पांच बेटे थे।

राजनीतिक कैरियर : होरो अपने सार्वजनिक जीवन की शुरूआत से ही झारखंड पार्टी से जुड़े रहे । वे 1968 से 1969 तक बिहार सरकार में शिक्षा, योजना और जनसंपर्क मंत्री रहे। वे 1967 से 1970 और 1977 से 1980 तक बिहार विधानसभा के सदस्य रहे। वे 1970 और 1971 से 1976 तक लोकसभा के सदस्य रहे। होरो 1971 में झारखंड पार्टी के अध्यक्ष बने।

1984 से 1989 तक साइमन तिग्गा

साइमन तिग्गा
कांग्रेस

1984 में कांग्रेस ने दर्ज की जीत 1984 के लोकसभा चुनाव में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस यहां से जीती । 39.4 फीसदी मत भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की मिले। यहां से साइमन तिग्गा ने जीत दर्ज की थी. जबकि इंडिपेंडेंस प्रत्याशी के तौर पर निरल एनेम होरो दूसरे स्थान पर रहे। इन्हें 26.1 फीसदी वोट मिले थे. जबकि भारतीय जनता पार्टी के कड़िया मुंडा को 17 फीसदी वोट मिले थे। साइमन तिग्गा भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के सदस्य के रूप में बिहार के खूंटी से भारतीय संसद के निचले सदन लोकसभा के लिए चुने गए थे । उनका जन्म 16 मार्च 1929 को हुआ था और 75 वर्ष की आयु में निधन हो गया।

1977 से 1980, 1989 से 2004 व 2009 से 2014 : कड़िया मुंडा

कड़िया मुंडा एक कुशल राजनीतिज्ञ हैं, जिन्होंने 15वीं लोकसभा के उपाध्यक्ष के रूप में कार्य किया। वे भारत सरकार में मंत्री रह चुके हैं , 1977 में जनता पार्टी और 1999 से भारतीय जनता पार्टी के नेतृत्व वाली सरकारों में सेवारत रहे हैं ।

कड़िया मुंडा
भाजपा

1989 से भारतीय जनता पार्टी की मजबूत पकड़ रही है ।जहां कड़िया मुंडा इस लोकसभा सीट से जीते और उसके बाद लगातार यह सीट बीजेपी के कब्जे में ही रही। 1989 श्री मुंडा को कुल 32.5 फीसदी वोट मिले थे जबकि झारखंड पार्टी को 31.30 वोट मिले थे। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को 27.7 फीसदी वोट मिले थे । 1989 में कड़िया मुंडा काफी मुश्किल से जीते थे वोट का अंतर बहुत कम था ।झारखंड पार्टी के निरल एनेम होरो को 31 फीसदी वोट मिले थे ।जबकि श्री मुंडा को कुल 32.8 फीसदी वोट मिले थे ।1989 में इस सीट पर जीत का अंतर सिर्फ 1.1 फीसदी का था।1977 के चुनाव में कड़िया मुंडा भारतीय लोक दल से इस लोकसभा सीट पर जीते थे ।लेकिन 1980 के लोकसभा चुनाव में उन्होंने जनता पार्टी से चुनाव लड़ा लेकिन 25.7 फीसदी वोट ही इन्हें मिल पाए । भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को 20-20 प्रतिशत वोट मिले थे. जबकि जनता पार्टी सेकुलर को 7.4 फीसदी रिपोर्ट प्राप्त हुए थे।

1991 में कड़िया मुंडा को 35.2 फीसदी मत मिले जबकि झारखंड पार्टी के निरल होरो को 22.8 फीसदी वोट मिले ।वहीं भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के सीमांत तिग्गा को 20.5 फीसदी वोट प्राप्त हुए।

1996 में करिया मुंडा ने लगाई जीत की हैट्रिक इस बार उन्हें 32.8 फीसदी वोट मिले थे जबकि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की सुशीला केरकेट्टा को 25.7 फीसदी वोट मिले थे ।जबकि झारखंड मुक्ति मोर्चा पहली बार 14.4 फीसदी वोट हासिल कर दहाई के अंक में आई थी ।वहीं झारखंड पार्टी 14.3 फीसदी वोट प्राप्त कर चौथे स्थान पर चली गई थी।1998 की लोकसभा चुनाव में कड़िया मुंडा को कुल 42.1 फीसदी वोट मिले थे ।जबकि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की सुशीला केरकेट्टा को 33.7 फीसदी वोट और झारखंड मुक्ति मोर्चा को 13.3 फीसदी वोट मिले थे। विभिन्न धर्मों और विचारधाराओं की प्रयोगशाला खूंटी इसलिए भी बना क्योंकि मुंडा जनजाति के सरल लोगों के बीच विचारों का विष और भटकाव आसान था । कड़िया मुंडा आठ बार जीते, तीन बार कांग्रेस को मिली जीत। खूंटी संसदीय सीट पर हुए 15 चुनावों में भाजपा के कड़िया मुंडा यहां से आठ बार चुनाव जीत चुके हैं, जबकि कांग्रेस को तीन बार सफलता मिली है।

शुरूआती दौर में यहां से जयपाल सिंह मुंडा ने जीत हासिल की थी लेकिन कड़िया मुंडा ने इस लोकसभा सीट को भाजपा के अभेद्य किले के रूप में बदल दिया।

कालीचरण ने दी अर्जुन को मात

खूंटी। जनजातियों के लिए सुरक्षित खूंटी संसदीय क्षेत्र में भाजपा का किला ध्वस्त हो गया। भाजपा प्रत्याशी और केंद्रीय मंत्री अर्जुन मुंडा पद्मभूषण कड़िया मुंडा की इस परपंरागत सीट को बचाने में नाकाम रहे। कांग्रेस प्रत्याशी कालीचरण मुंडा ने एकतरफा मुकाबले में अर्जुन मुंडा को लगभग 1,49,675 मतों से कड़ी शिकस्त दी। मतगणना के पहले से लेकर अंतिम 17वे राउंड तक अर्जुन मुंडा एक बार भी कांग्रेस उम्मीदवार पर बढ़त नहीं बना सके। खूंटी संसदीय क्षेत्र के सभी विधानसभा क्षेत्रों में कालीचरण मुंडा को बढ़त मिली। अर्जुन मुंडा को अपने विधानसभा क्षेत्र में भी मतदाताओं ने नकार दिया। अन्य सभी उम्मीदवारों की भूमिका सिर्फ वोटकटवा की रही। चुनाव परिणाम की घोषणा होने के बाद निवार्ची पदाधिकारी सह उपायुक्त लोकश मिश्रा ने कालीचरण मुंडा को जीत का प्रमाणपत्र सौंपा।

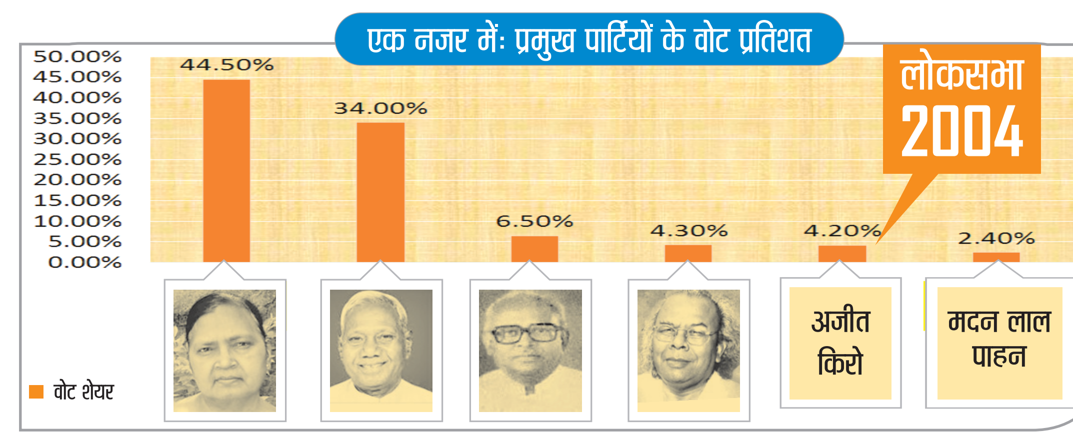

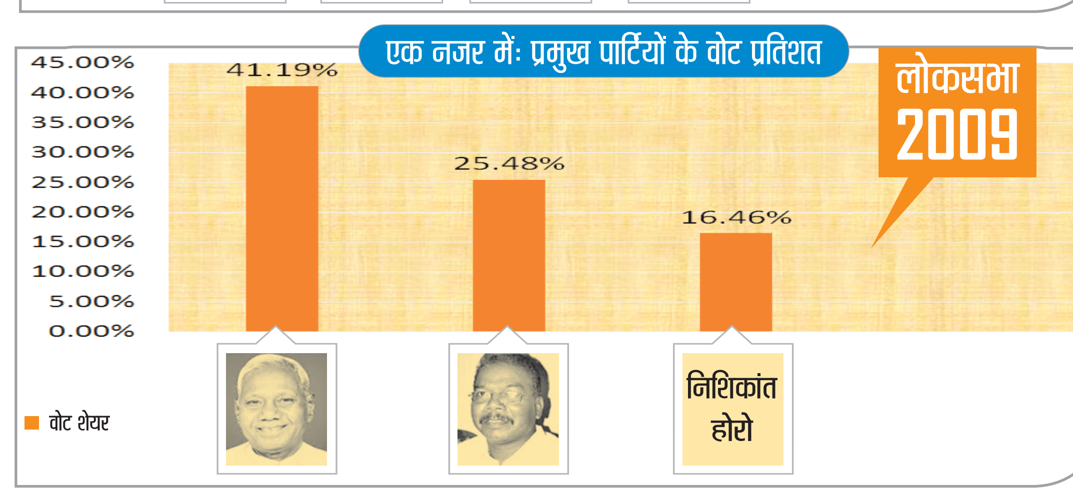

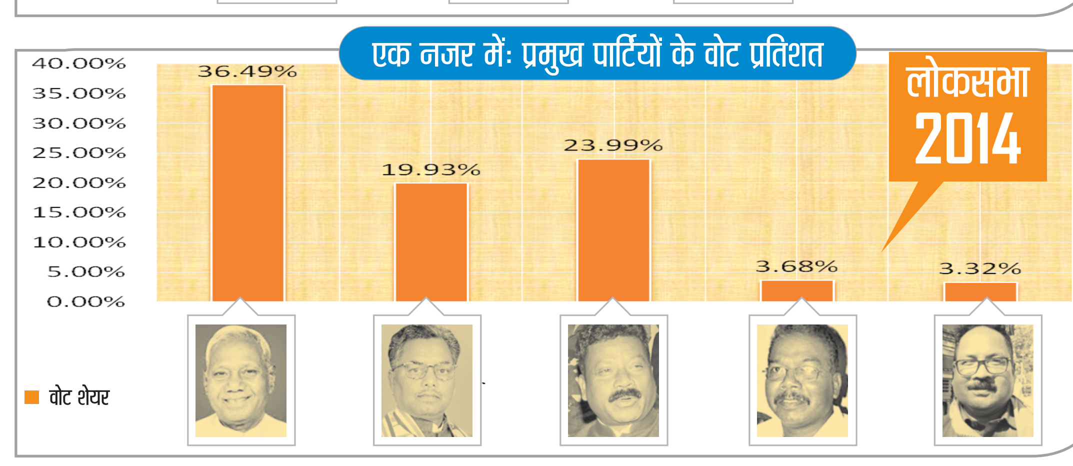

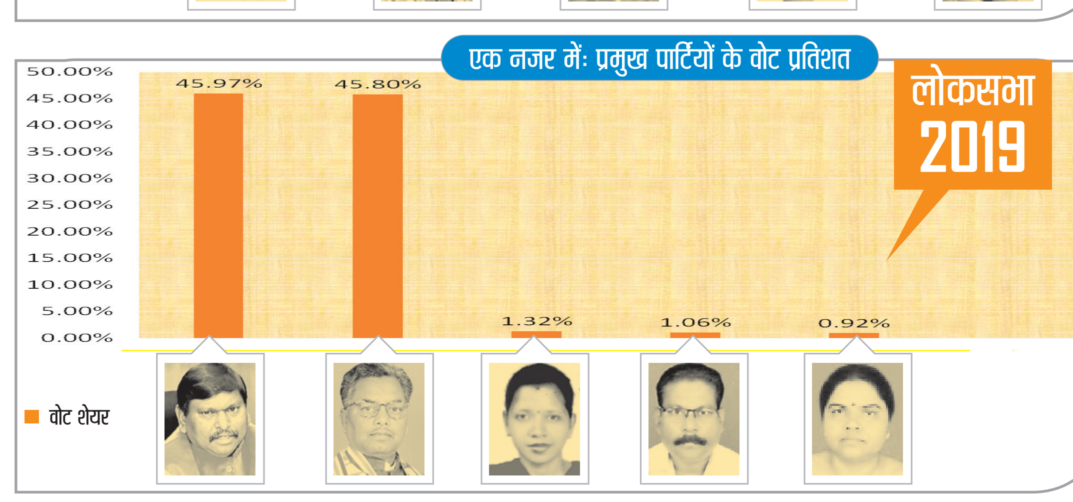

2004 से 2009 : सुशीला केरकेट्टा

सुशीला केरकट्टा 1985 से 2000 तक बिहार विधानसभा की सदस्य रहीं और खूंटी से लोकसभा सदस्य भी रहीं । उन्होंने बिहार सरकार में कई महत्वपूर्ण विभागों को संभाला। वह 1985 से 1988 तक सिंचाई राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) रहीं। उन्हें 1989 में कैबिनेट रैंक में पदोन्नत किया गया और उन्होंने खान और भूविज्ञान और खाद्य और नागरिक आपूर्ति विभागों का नेतृत्व किया। 1990-2000 बिहार विधानसभा में कांग्रेस पार्टी की उपनेता बनी। बाल एवं महिला विकास समिति के अध्यक्ष रही। 2004 में 14वीं लोक सभा के लिए निर्वाचित हुई । महिला सशक्तिकरण समिति और श्रम संबंधी समिति की सदस्य रही। वह बिरसा कॉलेज, खूंटी में लेक्चरर भी थीं और बाद में इसकी प्रिंसिपल बनीं।

प्रारंभिक जीवन और शिक्षा : सुशीला केरकेट्टा का जन्म 27 अप्रैल 1939 को रांची , बिहार में प्रभुदयाल मार्की और मैनी मार्की के घर हुआ था। उन्होंने सेंट जेवियर्स कॉलेज, रांची से शिक्षा में स्नातक और दर्शनशास्त्र में स्नातकोत्तर किया । बाद में उनकी शादी 28 दिसंबर 1970 को नोट्रोत केरकेट्टा से हुई और उनके तीन बेटे और दो बेटियाँ हुईं जिनके नाम रोशन, प्रवीण, नवीन, संध्या और आशा थे। उनका निधन 19 अक्टूबर 2009 को हुआ।

व्यक्तिगत रुचियां : केरकेट्टा एक सामाजिक कार्यकर्ता और शिक्षिका थीं, जो नियमित रूप से स्थानीय गांवों का दौरा करती थीं और स्थानीय हथकरघा जैसे उद्यमों को बढ़ावा देती थीं। उनकी खेल रुचियों में तीरंदाजी, फुटबॉल और हॉकी शामिल थे। उन्होंने झारखंड महिला हॉकी संघ , महिला हॉकी संघ, छोटानागपुर और बिहार महिला हॉकी संघ का नेतृत्व किया ।

2014 से 2019 : अर्जुन मुंडा

अर्जुन मुंडा ।का राजनीतिक सफर झारखंड मुक्ति मोर्चा से शुरू हुआ था। पहली बार 1995 में झामुमो के टिकट पर खरसावां विधानसभा सीट से चुनाव जीत कर विधायक बने थे। लेकिन 2000 में विधानसभा चुनाव से पहले झामुमो छोड़ कर भाजपा में शामिल हो गए और दूसरी बार जीत दर्ज की। झारखंड राज्य बनने के बाद बाबूलाल मरांडी के नेतृत्व में बनी झारखंड सरकार में मंत्री बने। इसी बीच साल 2003 में 36 साल की उम्र में वो झारखंड के मुख्यमंत्री बने। 2005 में अर्जुन मुंडा के नेतृत्व में एनडीए गठबंधन ने 81 में से 36 सीट जीतीं। पर उस समय शिबू सोरेन के नेतृत्व में यूपीए की सरकार बनी थी। लेकिन ये सरकार 10 दिन में ही गिर गई। इसके बाद अर्जुन मुंडा दूसरी बार झारखंड के मुख्यमंत्री बने। पर इस बार भी वो कार्यकाल पूरा नहीं कर सके। निर्दलीय मधु कोड़ा ने सिर्फ 18 महीने बाद उनसे मुख्यमंत्री की कुर्सी छीन ली। 2009 के लोकसभा चुनाव में अर्जुन मुंडा जमशेदपुर से बीजेपी के सांसद बने। पर अगस्त 2010 में तीसरी बार झारखंड का मुख्यमंत्री बनने के लिए उन्होंने संसद की सदस्यता से इस्तीफा दे दिया। सितंबर 2010 से जनवरी 2013 तक मुख्यमंत्री के रूप में उनका तीसरा कार्यकाल सबसे लंबा रहा। लेकिन हालात ऐसे बने की झारखंड में राष्ट्रपति शासन लगाना पड़ा। नवंबर 2014 में हुए विधानसभा चुनाव में एनडीए स्पष्ट बहुमत के साथ सत्ता में लौटी। लेकिन तब अर्जुन मुंडा खरसावां विधानसभा से 12 हजार वोट से चुनाव हार गए। इसके 5 साल बाद 2019 में उन्होंने खूंटी से लोकसभा चुनाव लड़ा और जीत गए। 2019 में केंद्र में जब मोदी सरकार बनी तो अर्जुन मुंडा को जनजातीय मामलों का मंत्री बनाया गया। पिछले साल के अंत में उन्हें कृषि मंत्रालय की बागडोर भी दे दी गई। इसी साल फरवरी में जब पंजाब और हरियाणा के शंभू बॉर्डर पर किसान आंदोलन शुरू हुआ तो कृषि मंत्री के रूप में उन्होंने कई किसान संगठनों से बातचीत की और उन्हें मनाने की पूरी कोशिश की। इससे उनकी राष्ट्रीय स्तर पर छवि बनी। बीजेपी का बड़ा आदिवासी चेहरा माने जाने वाले अर्जुन मुंडा के सामने अब खूंटी लोकसभा चुनाव में खुद को साबित करने की बड़ी चुनौती है।

रांची लोकसभा के सांसदों का जीवन परिचय

लोकसभा चुनाव के दृष्टिकोण से रांची झारखंड की राजधानी होने के कारण काफी महत्व रखता है। 1952 में यहां पहली बार लोकसभा चुनाव हुआ था। उस समय कांग्रेस के अब्दुल इब्राहिम अंसारी चुनाव जीतने के बाद पहली बार सांसद बने थे, जबकि 1957 में स्वतंत्र प्रत्याशी मीनू मसानी चुनाव जीते। 1962,1967 और 1971 में कांग्रेस के पीके घोष ने जीत की हैट्रिक लगाई। वहीं, 1977 में इंदिरा विरोधी लहर में जनता दल के रवींद्र वर्मा चुनाव जीतने में सफल रहे। 1980 और 1984 में कांग्रेस के शिवप्रसाद साहू लगातार दो बार रांची के सांसद रहे। 1989 में जनता दल के टिकट पर सुबोधकांत सहाय चुनाव जीते, 1991 में पहली बार भाजपा ने रांची में जीत का स्वाद चखा और रामटहल चौधरी सांसद बने। 1996,1998 और 1999 में रामटहल चौधरी ने लगातार जीत का परचम लहराया, लेकिन 2004 और 2009 में कांग्रेस के टिकट पर उतरे सुबोधकांत सहाय ने उन्हें पटकनी दे दी। 2014 में रामटहल चौधरी एकबार फिर सुबोधकांत सहाय को हराने में सफल रहे। 2019 में भाजपा नेतृत्व ने बदलाव करते हुए वरिष्ठ नेता रामटहल के स्थान पर संजय सेठ को मौका दिया। मोदी लहर में संजय सेठ भारी मतों से चुनाव जीतने में सफल रहे। कुल मिलाकर देखें तो रांची लोकसभा सीट पर कांग्रेस और भाजपा के बीच ही हर बार मुकाबला देखने को मिला है। प्रस्तुत है 1951 से 2019 तक रांची लोकसभा सीट का सफरनामा।

रांची में फिर भगवा...

पिता के बाद बेटी यशस्विनी सहाय को भी संजय सेठ ने हराया

रांची । राज्य की राजधानी रांची लोकसभा सीट पर भाजपा ने हैट्रिक जीत हासिल की है। भाजपा के संजय सेठ ने कांग्रेस की यशस्विनी सहाय को हराया है। कांग्रेस ने सुबोधकांत सहाय की बेटी यशस्विनी सहाय को मैदान में उतारा था। भाजपा के संजय सेठ को 585748 मत मिले, जबकि दूसरे नंबर पर कांग्रेस की यशस्विनी सहाय को 484093 वोट मिलें। इस तरह संजय सेठ ने पिता के बाद बेटी को हरा कर भाजपा की जीत बरकरार रखा। 2019 के लोकसभा चुनाव में संजय सेठ ने सुबोध कांत सहाय को 2 लाख 83 हजार से अधिक वोटों के अंतर से हराया था। संजय सेठ को 7,06,828 वोट और सहाय को 4,23,802 वोट मिले थे। 2014 में भाजपा के टिकट पर राम टहल चौधरी ने जीत दर्ज की थी, लेकिन 2019 उनका टिकट काटकर संजय सेठ को दिया था।

1952 में अब्दुल इब्राहिम बने पहले सांसद

कांग्रेस

रांची लोकसभा सीट पर पहली बार 1951 में चुनाव हुआ, तब कांग्रेस के अब्दुल इब्राहिम अंसारी मैदान में उतरे और जीत हासिल की। अब्दुल इब्राहिम अंसारी रांची सीट से पहले अल्पसंख्यक सांसद बने। रांची के पहले सांसद अब्दुल अंसारी का जन्म 1 जनवरी 1915 को परासटोली के डोरंडा, जिला राँची में हुआ था। इनके पिता का नाम दिलावर अली अंसारी था। उन्होंने अपनी शुरूआती शिक्षा डोरंडा एलपी स्कूल, गोस्सनर हाई स्कूल और सेंट पॉल हाई स्कूल, राँची से प्राप्त की। फिर कलकत्ता चले गए, 1934 में उन्होंने कलकत्ता विश्वविद्यालय से मैट्रिक की परीक्षा पास की। 1938 तक कलकत्ता विश्वविद्यालय में ही पढ़ाई करते में रहे। फिर 1942 तक पटना विश्विद्यालय से शिक्षा हासिल की। उन्होंने बैचलर ऑफ आर्ट्स और बैचलर ऑफ लॉ की तालीम हासिल की। 1942 में उन्होंने रांची बार ज्वाइन किया। उन्होंने बैकवर्ड मुस्लिम कम्यूनिटीज ऑफ छोटानागपुर, बिहार के लिए काम किया। फिर जमीयतुल मोमिनीन और डिस्ट्रिक्ट वीवर्स एसोसिएशन के जेनरल सेक्रेटरी बने। फिर बज्म ए अदब लाइब्रेरी के अध्यक्ष बने। डिविजनल कमेटी ऑफ बैकवर्ड मुस्लिम कम्यूनिटीज, छोटानागपुर, के सदस्य हुए। फिर ऑल इंडिया मोमिन कांफ्रेंस के सदस्य बने।

1949
में रिसेप्शन कमेटी ऑफ बिहार कांग्रेस वर्कर्स कैंप, रांची में सदस्य बने। 1952 में रांची नॉर्थ ईस्ट से सांसद चुने गए।

1953
मई में ऑल इंडिया बैकवर्ड क्लासेस कांफ्रेस, के जेनरल सेक्रेटरी बने।

1953
में रिसेप्शन कमेटी दिल्ली स्टेट वीवर्स कांफ्रेंस के चेयरमैन बने। इसी साल ऑल इंडिया बैकवर्ड क्लासेस फेडरेशन के ज्वाइंट सेक्रेटरी बने।

अब्दुल इब्राहिम अंसारी रांची के पहले सांसद बने। वे पहले मोमिन आंदोलन से जुड़े, फिर कांग्रेस पार्टी से जुड़े, वे एक राष्ट्रवादी नेता थे।

1957 से 1962 तक मीनू मसानी

निर्दलीय

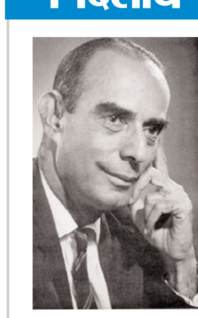

मिनोचर रुस्तम 'मीनू' मसानी रांची से 1957 में पहली बार निर्दलीय चुनाव जीत कर सांसद बने, उसके बाद मीनू मसानी गुजरात के राजकोट से तीसरे और चौथे लोकसभा का चुनाव लड़े और जीत हासिल की।

उनका जन्म 20 नवंबर 1905 हुआ और 27 मई 1998 को 92 वर्ष की आयु में ब्रीच कैंडी अस्पताल, मुंबई में निधन हो गया। वह एक भारतीय राजनीतिज्ञ थे और तत्कालीन स्वतंत्र पार्टी के प्रमुख नेता थे। पारसी परिवार से आने वाले मीनू भारतीय लिबरल ग्रुप थिंक टैंक के संस्थापकों में से थे, जिसने शास्त्रीय उदारवाद को बढ़ावा दिया। उन्होंने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का प्रतिनिधित्व करते हुए भारत की संविधान सभा के सदस्य के रूप में कार्य किया। उन्होंने 1947 में भारत के संविधान में एक समान नागरिक संहिता को शामिल करने का प्रस्ताव पेश किया, जिसे अस्वीकार कर दिया गया। उनका सार्वजनिक जीवन मुंबई नगर निगम से शुरू हुआ, जहां वे 1943 में मेयर चुने गए। वे भारतीय विधान सभा के सदस्य भी बने। अगस्त 1960 में, उन्होंने सी. राजगोपालाचारी और एनजी रंगा के साथ मिलकर स्वतंत्र पार्टी का गठन किया, जबकि अंतरराष्ट्रीय साम्यवाद अपने चरम पर था। उनका अंतिम संस्कार चंदनवाड़ी में किया गया।

राजनीतिक जीवन : उन्होंने सविनय अवज्ञा अभियान के दौरान भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में शामिल होने से पहले 1929 में बॉम्बे उच्च न्यायालय में एक वकील के रूप में अपना पेशेवर जीवन शुरू किया। आंदोलन में भाग लेने के कारण उन्हें कई बार अंग्रेजों ने गिरफ्तार किया था। वह 1932 में नासिक जेल में थे, जब जयप्रकाश नारायण उनके संपर्क में आए और उन्होंने 1934 में एक साथ कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी की शुरूआत की। उन्होंने 1942 में भारत छोड़ो आंदोलन में भाग लिया और फिर से जेल गए। अपनी जेल की अवधि समाप्त होने के बाद उन्होंने विधायी राजनीति में प्रवेश किया, वे बॉम्बे नगर निगम के मेयर चुने गए। मसानी जवाहरलाल नेहरू के करीबी दोस्त थे। लेकिन अल्पसंख्यकों के मामले में वह नेहरू सरकार से सहमत नहीं थे, इसलिए उन्हें आयोग से हटा दिया गया और मई 1948 में एक साल के लिए ब्राजील में भारतीय राजदूत नियुक्त किया गया। ब्राजील में अपने कार्यकाल के बाद, वह भारत लौट आए और टाटा समूह के अध्यक्ष जेआरडी टाटा के शेफ डे कैबिनेट बन गए। 1959 में उन्होंने सी राजगोपालाचारी के साथ स्वतंत्र पार्टी की स्थापना की। उन्होंने स्वतंत्र पार्टी के उम्मीदवार के रूप में राजकोट से उपचुनाव जीता। उन्होंने 1971 तक राजकोट का प्रतिनिधित्व किया। वे उन कुछ राजनेताओं में से एक थे जिन्होंने प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी द्वारा बैंकों के राष्ट्रीयकरण का विरोध किया था। स्वतंत्र पार्टी संसद में भारत की सबसे बड़ी विपक्षी पार्टी थी और मसानी लोकसभा में इसके नेता होने के नाते, वित्त विधेयकों पर बहस शुरू की और कांग्रेस सरकार को सख्ती से काम करने के लिए मजबूर किया।

1962 से 1977 तक प्रशांत कुमार घोष

कांग्रेस

प्रशांत कुमार घोष रांची से तीन बार सांसद चुने गये थे। उन्होंने राजनीति में कभी उसूलों से समझौता नहीं किया। प्रशांत कुमार घोष एक जमींदार परिवार से थे। उनके पिता का नाम तारा प्रसन्ना घोष था। प्रसन्ना घोष एक जमींदार और स्वतंत्रता सेनानी भी थे। प्रशांत कुमार घोष को रांची और उनके राजनीतिक मित्र पीके घोष के नाम से अधिक जानते थे। उनका पूरा परिवार बंगाल से आकर संयुक्त बिहार के जमाने में ही यहां बस गया था। पीके घोष का जन्म रांची में ही हुआ था। हिंदपीढ़ी के घोष कंपाउंड में पूरा परिवार रहता था। दूरदराज से ही लोग घोष कंपाउंड को उनके नाम से जानते थे। आज भी रांची में रहनेवाले पुराने लोग इसी नाम से उन्हें पहचानते हैं। पीके घोष कांग्रेस के टिकट पर पहली बार 1962 से 1967 तक रांची ईस्ट के सांसद रहे थे, फिर 1967 से 1971 तक दूसरी बार सांसद बने और 1971 से 1977 तक तीसरी बार सांसद बने।

पीके घोष ने हमेशा अपनी बदौलत मुकाम हासिल की। जीवन के अंतिम समय तक उन्होंने कभी भी अपने नीति सिद्धांत से समझौता नहीं किया। कभी भी अपने लोगों को लाभ दिलाने के लिए अपने राजनीतिक कद का इस्तेमाल नहीं किया। अपनी ईमानदारी के कारण समाज में उनकी एक अलग पहचान थी। उनके घरवालों को आज भी याद है कि पहले चुनाव में जब वे स्वतंत्र पार्टी से चुनाव मैदान में थे, तो उन्होंने 15,000 रुपये खर्च किया था। प्रचार के लिए रिक्शा, साइकिल और अपनी गाड़ी का इस्तेमाल करते थे। वे एक शिक्षाविद भी थे। रांची जिला स्कूल से मैट्रिक तक की पढ़ाई पूरी करने के बाद संत जेवियर्स कॉलेज से आइएससी की शिक्षा पूरी की। वह संत जेवियर्स कॉलेज के पहले बैच के विद्यार्थी थे। इसके बाद उन्होंने संत कोलंबा कॉलेज, हजारीबाग से बीएससी की पढ़ाई पूरी की. उन्हें बीएससी में डिस्टिंक्शन मिला था।

इसके बाद फूड एंड बेकिंग टेक्नोलॉजी की पढ़ाई करने के लिए ब्रिटेन चले गये थे। वहां से पढ़ाई पूरी करने के बाद वह लौटे। समाज में उनकी पहचान शिक्षाविद के साथ-साथ बेकरी मैन के रूप में भी थी। उन्होंने उस समय अत्याधुनिक सुविधायुक्त बेकरी का प्लांट रांची में खोला था। प्रशांत घोष का निधन 25 दिसंबर 2013 को हुआ। परिवार में पत्नी छवि घोष, तीन पुत्र सिद्धार्थ घोष, रूद्र प्रताप और विक्रमादित्य के अलावा अन्य सदस्य हैं। वर्तमान में बड़े पुत्र सिद्धार्थ घोष और उनकी मां रांची में रहती हैं। छोटा भाई विदेश में और एक भाई वर्धमान चले गये हैं। आज भी उनका परिवार सामाजिक कार्यों में बढ़-चढ़ कर हिस्सा लेता है। उनकी मां भी इसमें बढ़-चढ़ कर सहयोग करती हैं। प्रशांत कुमार ने रांची में कई शैक्षणिक संस्थानों को खोलने में सहयोग किया था। वहीं आई बैंक की स्थापना से लेकर अन्य सामाजिक कार्यों में भी बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया, जिस कारण से समाज के सभी धर्मों के लोगों के बीच उनकी एक अलग पहचान थी।

1977 से 1980 तक रवींद्र वर्मा

जनता पार्टी

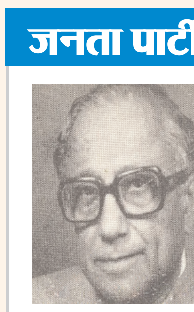

रवींद्र वर्मा 1977 में रांची से जनता पार्टी के उम्मीदवार के रूप में चुने गए। उन्होंने 1980 से 1984 तक 7वीं लोकसभा में मुंबई उत्तर का प्रतिनिधित्व किया। इसके पहले वे 1962 में कांग्रेस के टिकट पर केरल के तिरुवल्ला से लोकसभा के लिए चुने गए थे । 1969 में जब कांग्रेस का विभाजन हुआ, तो वे कांग्रेस (संगठन) के महासचिव बने रहे और मोरारजी देसाई, निजलिंगप्पा और कामराज के साथ मिलकर संगठन की स्थापना की। 1977 से 1979 तक भारत में मोरारजी देसाई मंत्रालय में श्रम और संसदीय मामलों के मंत्री के रूप में कार्य किया।

राजनीति : उन्होंने 1942 में सक्रिय राजनीति में प्रवेश किया। चेन्नई के क्रिश्चियन कॉलेज में अध्ययन करते समय वे स्वतंत्रता संग्राम में कूद पड़े। वे भारतीय छात्र कांग्रेस और विश्व युवा सभा के संस्थापक अध्यक्ष थे। वे आपातकाल (1975-77) का विरोध करने में राजनीतिक रूप से सक्रिय थे और भूमिगत कोशिकाओं का आयोजन किया।

वह 1989 में इसके संस्थापक-अध्यक्ष दिवाकर की मृत्यु के बाद से गांधी शांति प्रतिष्ठान के अध्यक्ष रहे थे। वह वर्धा में गांधी विचार परिषद के संस्थापक-अध्यक्ष थे। वे गुजरात विद्यापीठ के कुलाधिपति भी थे ।

व्यक्तिगत जीवन : रविंद्र वर्मा केरल के मावेलिक्कारा के शाही परिवार से संबंधित थे। सक्रिय राजनीतिक जीवन के बाद 2006 में 81 वर्ष की आयु में उनका निधन हो गया।

1980 से 1989 तक शिव प्रसाद साहू

कांग्रेस

शिव प्रसाद साहू रांची लोकसभा सीट से 1980 और 1984 में दो बार सांसद चुने गए। उनका जन्म 7 जनवरी 1934 और 23 जनवरी 2001 को निधन हुआ। वे एक भारतीय व्यापारी और राजनीतिज्ञ थे। वे छोटानागपुर बॉक्साइट वर्कर्स यूनियन, रांची जिला बॉक्साइट और चाइना क्ले माइंस कर्मचारी संघ के महासचिव थे। वे कई कॉलेजों, स्कूलों के अध्यक्ष और लोहरदगा नगर पालिका के अध्यक्ष थे। शिव प्रसाद साहू का परविार न सिर्फ संयुक्त बिहार में व्यापार के क्षेत्र अग्रणी था। स्वतंत्रता आंदोलन में भी इस परिवार ने बढ़चढ़कर भाग लिया और कई आंदोलनों में भी शामिल हुए। सांसद बनने के बाद लोहरदगा में बड़ी रेल लाइन लाने में भी शिव प्रसाद साहू की भूमिका अहम रही। उनके मौत के बाद भी उनके परिवार के सदस्य कांग्रेस की राजनीति में सक्रिय हैं।

1989 से 1991 व 2004 से 2014 तक सुबोधकांत

कांग्रेस

सुबोध कांत सहाय रांची से तीन बार सांसद बनने में कामयाब रहे। पहली बार जनता दल के टिकट पर 1989 में रांची लोकसभा से सांसद चुने गए। इसके बाद 2004 और 2009 में कांग्रेस के टिकट पर जीतनो में सफल रहे। पहली बार केंद्र में बीपी सिंह और चंद्रशेखर सरकार में गृह मंत्री भी रहे। फिर मनमोहन की सरकार में भी मंत्री पद की जिम्मेवारी संभाली। सुबोधकांत सहाय सोनिया गांधी के सबसे करीबी लोगों में से एक माना जाता है कुख्यात कोयला घोटाले में कोयला खदान ब्लॉकों के आवंटन में अपने भाई का पक्ष लेने के आलोक में सहाय को मनमोहन सिंह द्वारा 2012 में उनके मंत्री पद से इस्तीफा देने के लिए कहा गया था।

उनका जन्म 11 जून 1951 को : लातेहार जिला में एक धार्मिक चित्रगुप्तवंशी कायस्थ परिवार में बृजदेव सहाय और इंद्राणी देवी के घर हुआ था। उन्होंने एएन कॉलेज , पटना और रांची विश्वविद्यालय से बीएससी और एलएलबी किया। वे छात्र जीवन से ही सामाजिक और कल्याणकारी गतिविधियों में शामिल रहे हैं और युवाओं को संगठित करने, दलित, वंचित और अल्पसंख्यक समुदायों के उत्थान के लिए काम करने के लिए कई राष्ट्रीय और राज्य स्तरीय कार्यक्रम आयोजित किए हैं।

राजनीतिक कैरियर : सुबोध कांत सहाय 70 के दशक के जय प्रकाश आंदोलन में भाग लिया और चंद्रशेखर सिंह, सत्येंद्र नारायण सिन्हा और ठाकुर प्रसाद जैसे जनता पार्टी के दिग्गजों के संरक्षण में तैयार हुए । बिहार जनता पार्टी के अध्यक्ष सिन्हा के कहने पर, उन्हें हटिया से उम्मीदवार बनाया गया, जहाँ से उन्होंने जीत हासिल की और विधानसभा में अपनी चुनावी शुरूआत की। उन्होंने अपना राजनीतिक जीवन हटिया, रांची से शुरू किया। मई 2009 में हुए चुनावों में वे फिर से रांची से सांसद चुने गए थे। कांग्रेस रांची से 14 सीटों में से केवल एक सीट और बिहार से 40 सीटों में से केवल 3 सीटें जीतने में सफल रही थी। सहाय ने 2004 से 2009 तक प्रथम मनमोहन सिंह मंत्रिमंडल में खाद्य प्रसंस्करण उद्योग के लिए राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) के रूप में कार्य किया । 2009 के चुनावों में कांग्रेस की दूसरी जीत के बाद, जिसमें मनमोहन सिंह प्रधानमंत्री के रूप में बने रहे , सहाय को उसी खाद्य प्रसंस्करण उद्योग विभाग के साथ कैबिनेट रैंक में पदोन्नत किया गया। जनवरी 2011 में मंत्रालय फेरबदल के दौरान उन्हें पर्यटन मंत्रालय (भारत) का कैबिनेट मंत्री बनाया गया।

1991 से पांच बार सांसद चुने गए राम टहल चौधरी

भाजपा

राम टहल चौधरी रांची लोकसभा सीट से पांच बार सांसद रहे । 1991 से 2004 तक लगातार चार बार और उसके बाद 2014 से 2019 तक एक बार सांसद रहे। लेकिन 2019 के लोकसभा चुनावों में उन्हें टिकट नहीं मिलने पर उन्होंने पार्टी से इस्तीफा दे दिया। उन्होंने 2019 में रांची से निर्दलीय के तौर पर चुनाव लड़ा, लेकिन उन्हें 2.5% से भी कम वोट मिले। राम टहल चौधरी स्वर्गीय दशरथ चौधरी के पुत्र हैं। उनका जन्म रांची जिले के ओरमांझी ब्लॉक के कुच्चू गांव में हुआ था। उनके पिता का नाम दशरथ चौधरी और मां का नाम जानकी देवी था। उन्होंने सावित्री देवी से विवाह किया और उनके दो बेटे और दो बेटियां हैं। वे धर्म से हिंदू और जाति से कुर्मी हैं।

मुखिया से सांसद तक सफर : रामटहल चौधरी ओरमांझी के कुच्चू गांव में ग्राम पंचायत के मुखिया थे। फिर वे 1969 से 71 और 1972 से 1977 तक बिहार विधानसभा के लिए चुने गए। फिर वे 1977 से 1996 तक ओरमांझी के ग्राम पंचायत के मुखिया रहे। फिर वे 1988 में रांची में भारतीय जनता पार्टी के अध्यक्ष बने । 1991 और 1996 में वे दो बार लोकसभा के सांसद बने। फिर वे 1988 और फिर 1999 में फिर से लोकसभा के लिए चुने गए। 2014 में वे फिर से लोकसभा के लिए चुने गए।

राम टहल चौधरी एक प्रसिद्ध समाजसेवी हैं। उन्होंने रांची में कई शैक्षणिक संस्थान स्थापित किए हैं। उन्होंने 1978 में बूटी रांची में राम टहल चौधरी द्वारा राम टहल चौधरी हाई स्कूल की स्थापना की। यह स्कूल सीबीएसई, दिल्ली से संबद्ध है और सीबीएसई, पटना क्षेत्र के अंतर्गत आता है। उन्होंने 2008 में राम टहल चौधरी इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी की स्थापना की और यह रांची विश्वविद्यालय से संबद्ध है और अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद द्वारा अनुमोदित है । उन्होंने राम टहल चौधरी बीएड कॉलेज की भी स्थापना की और यह रांची विश्वविद्यालय से संबद्ध है।

हजारीबाग

हजारीबाग लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र झारखंड राज्य के 14 संसदीय निर्वाचन क्षेत्रों में से एक है। यह निर्वाचन क्षेत्र पूरे रामगढ़ जिले और हजारीबाग जिले के कुछ हिस्से को कवर करता है। लोकसभा चुनाव 2024 के लिए झारखंड में हजारीबाग सीट काफी हॉट मानी जा रही है। यहां पर मुख्य रूप से भाजपा और कांग्रेस आमने-सामने हैं। हजारीबाग लोकसभा सीट के लिए चुनाव में सांसद जयंत सिन्हा का टिकट काट कर सदर विधायक मनीष जायसवाल को एनडीए ने उम्मीदवार बनाया है। वहीं, जय प्रकाश भाई पटेल इंडी गठबंधन के उम्मीदवार हैं। वे मांडू विधायक हैं, उन्होंने भाजपा के टिकट पर चुनाव जीता था। अब भाजपा से नाता तोड़कर कांग्रेस का दामन थामा है।

हजारीबाग लोकसभा सीट का सफरनामा

हजारीबाग लोकसभा सीट 1952-1980

जीते	वर्ष	हारे
राम नारायण सिंह (छोटा नागपुर संथाल परगना जनता पार्टी)	1952	झानी राम
ललिता राज लक्ष्मी (छोटा नागपुर संथाल परगना जनता पार्टी)	1957	बदरूज्जमां खान
निर्दलीय बसंत नारायण सिंह	1967	दामोदर पांडे
दामोदर पांडे	1971	ललिता राज लक्ष्मी
बसंत नारायण सिंह	1977	दामोदर पांडे
बसंत नारायण सिंह	1980	अजीमा हुसैन

हजारीबाग लोकसभा सीट 1984-1999

जीते	वर्ष	हारे
दामोदर पांडे	1984	भुवनेश्वर मेहता
यदुनाथ पांडे	1989	भुवनेश्वर मेहता
भुवनेश्वर मेहता	1991	यदुनाथ पांडे
एमएल विश्वकर्मा	1996	भुवनेश्वर मेहता
यशवंत सिन्हा	1998	भुवनेश्वर मेहता
यशवंत सिन्हा	1999	अकलू राम महतो

बंटवारे के बाद हजारीबाग लोकसभा सीट

जीते	वर्ष	हारे
भुवनेश्वर मेहता	2004	यशवंत सिन्हा
यशवंत सिन्हा	2009	सौरभ नारायण सिंह
जयंत सिन्हा	2014	सौरभ नारायण सिंह
जयंत सिन्हा	2019	गोपाल प्रसाद साहू

1952 में हुए पहले लोकसभा चुनाव में रामनारायण सिंह जीते

रामनारायण सिंह
नागपुर संथाल परगना जनता पार्टी

हजारीबाग की लोकसभा सीट कभी कांग्रेस के दबदबे की सीट रही ही नहीं। 1952 में हुए पहले लोकसभा चुनाव में इस लोकसभा सीट का नाम हजारीबाग वेस्ट था। यहां से रामनारायण सिंह छोटा नागपुर संथाल परगना जनता पार्टी से जीत हासिल की थी। 1952 के लोकसभा चुनाव में रामनारायण सिंह को कुल 57 फीसदी वोट मिले थे। जबकि दूसरे नंबर पर झानी राम थे, जो भारतीय कांग्रेस से चुनाव लड़े थे। इन्हें कुल 35.5 फीसदी वोट मिले थे। सोशलिस्ट पार्टी के शिव मंगल प्रसाद को 7.5 फीसदी वोट मिले थे।

1952 में दोबारा हुए चुनाव

जीतन खरवार
कांग्रेस

1952 में ही यहां दोबारा लोकसभा चुनाव हुए। 1952 में हुए इस चुनाव में इस लोकसभा सीट का नाम पलामू कम हजारीबाग कम रांची लोकसभा सीट रखा गया। इस बार यहां से कांग्रेस पार्टी ने जीत दर्ज की। यहां से जीतन खरवार ने जीत दर्ज की। कांग्रेस को कुल 38 फीसदी वोट मिले। जबकि जनता पार्टी को 15.2, झारखंड पार्टी को 15 फीसदी और छोटा नागपुर संथाल परगना जनता पार्टी को 11 फीसदी वोट मिले।

1957 में जीतीं ललिता राज लक्ष्मी

ललिता राज लक्ष्मी
छोटा नागपुर संथाल परगना जनता पार्टी

1957 के लोकसभा चुनाव में हजारीबाग सीट से एक बार फिर छोटा नागपुर संथाल परगना जनता पार्टी की ललिता रजिया लक्ष्मी ने जीत दर्ज की। 1957 के चुनाव में छोटानागपुर संथाल परगना जनता पार्टी को 78 हजार वोट के साथ लगभग 67.7 फीसदी, जबकि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को 24.01 फीसदी और झारखंड पार्टी को 8.2 फीसदी वोट मिले।

1967 में जीता निर्दलीय प्रत्याशी

बसंत नारायण सिंह
निर्दलीय

1967 के लोकसभा चुनाव में यहां से इंडिपेंडेंस प्रत्याशी बी सिंह ने दिए दर्ज की। इन्हें कुल 41.6 फीसदी वोट मिले। जबकि इंडियन नेशनल कांग्रेस के डी पांडे को 31.8 फीसदी वोट मिले। भारतीय जनसंघ के खाते में 13.1 फीसदी वोट आए थे, जबकि कांग्रेस पार्टी ऑफ इंडिया को 6.6 फीसदी वोट मिले।

1971 में कांग्रेस को मिली जीत

दामोदर पांडे
कांग्रेस

1971 के चुनाव में हजारीबाग से भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के दामोदर पांडे विजयी हुए। इन्हें कुल 31.9 फीसदी वोट मिले। जबकि जनता पार्टी यहां दूसरे स्थान पर रही। इन्हें 25.7 फीसदी वोट मिले। भारतीय जनसंघ 17.3 फीसदी वोट के साथ तीसरे स्थान पर थी।

1977 में जनता पार्टी ने दर्ज की जीत

बसंत नारायण सिंह
जनता पार्टी

1977 के लोकसभा चुनाव में यह सीट जनता पार्टी के खाते में चली गई। जहां पर कुमार बसंत नारायण सिंह ने इस सीट पर जीत दर्ज की थी। इन्हें कुल 63 फीसदी वोट मिले थे। जबकि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के दामोदर पांडे को महज 15.02 फीसदी और कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ इंडिया को 12.1 फीसदी वोट मिले थे।

1980 में फिर जीती जनता पार्टी

1980 के लोकसभा चुनाव में यह सीट फिर जनता पार्टी के हिस्से चली गई। कुंवर बसंत नारायण सिंह जनता पार्टी से चुनाव लड़े थे। इन्हें कुल 34.2 फीसदी वोट मिले, जबकि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के खाते में 23.7 फीसदी वोट मिले थे। कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ इंडिया को 18.5 फीसदी वोट मिले। जबकि जनता पार्टी को कुल 10 फीसदी वोट मिले थे।

1984 में कांग्रेस ने दर्ज की जीत

दामोदर पांडे
कांग्रेस

1984 के लोकसभा चुनाव में यह सीट कांग्रेस के खाते में चली गई। यहां से दामोदर पांडे विजय हुए। इन्हें कुल 46.4 फीसदी वोट मिले। जबकि दूसरे नंबर पर कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ इंडिया रही, जिसे कुल 30.6 फीसदी वोट मिले। इस चुनाव में भारतीय जनता पार्टी ने भी अपना उम्मीदवार उतारा था, लेकिन उन्हें सिर्फ 6.9 फीसदी वोट भारतीय जनता पार्टी को मिले थे, जबकि 4।8 फीसदी बोर्ड झारखंड मुक्ति मोर्चा को मिले थे।

1989 में भाजपा ने दर्ज की जीत

यदुनाथ पांडे
भाजपा

1989 के लोकसभा चुनाव में हजारीबाग सीट से भारतीय जनता पार्टी ने जीत दर्ज की। भारतीय जनता पार्टी को कुल 42.8 फीसदी वोट मिले। जबकि कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ इंडिया को 34.8 फीसदी और इंडियन नेशनल कांग्रेस को 11.3 फीसदी वोट मिले।

1991 में सीपीआई के खाते में गई हजारीबाग सीट

भुवनेश्वर मेहता
सीपीआई

1991 के लोकसभा चुनाव में एक बार फिर यह सीट कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ इंडिया के खाते में चली गई। कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ इंडिया को यहां 33.7 फीसदी वोट मिले। जबकि भारतीय जनता पार्टी 28.5 की वोट पाकर दूसरे स्थान पर रही। इसके अलावा 12.7 फीसदी वोट हासिल कर निर्दलीय प्रत्याशी टेकलाल महतो तीसरे स्थान पर थे। जबकि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस चौथे स्थान पर चली गई।

1991 के उपचुनाव में सीपीआई ने फिर दर्ज की जीत

1991 के लोकसभा उप चुनाव में हजारीबाग की सीट फिर कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ इंडिया के खाते में चली गई। 33.7 फीसदी वोट लेकर के इस सीट को कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ इंडिया ने जीता था, जबकि भारतीय जनता पार्टी को 28.8 फीसदी वोट मिले थे।

1996 में फिर जीती भारतीय जनता पार्टी

महावीर लाल विश्वकर्मा
भाजपा

1996 की लोकसभा चुनाव में हजारीबाग की सीट भारतीय जनता पार्टी के महावीर लाल विश्वकर्मा ने जीते। इन्हें 27.7 फीसदी वोट मिले। जबकि कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ इंडिया के भुवनेश्वर प्रसाद मेहता को 26.4 फीसदी वोट और झारखंड मुक्ति मोर्चा को 15.6 फीसदी वोट मिले। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस चौथे स्थान पर चली गई। उसे सिर्फ 8.9 फीसदी वोट मिले।

संसदीय राजनीति में मनीष जयसवाल का हुआ आगाज

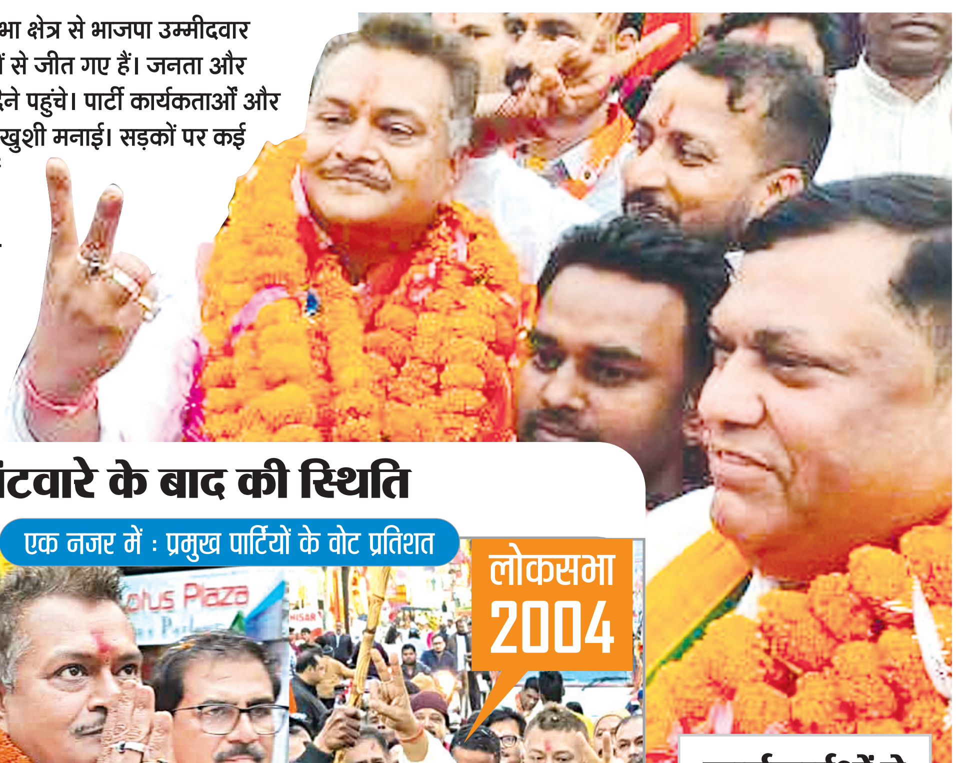

रामगढ़। हजारीबाग लोकसभा क्षेत्र से भाजपा उम्मीदवार मनीष जायसवाल भारी मतों से जीत गए हैं। जनता और पार्टी कार्यकर्ता उन्हें बधाई देने पहुंचे। पार्टी कार्यकताओं और जनता ने आतिशबाजी कर खुशी मनाई। सड़कों पर कई जगह पटाखे फोड़े गए। कई जगहों पर कार्यकताओं ने अबीर-गुलाल लगाकर एक-दूसरे को जीत की बधाई दी। मनीष जायसवाल भी सभी कार्यकर्ता और आम जनता के प्रति आभार प्रकट किया।

बंटवारे के बाद की स्थिति

एक नजर में : प्रमुख पार्टियों के वोट प्रतिशत

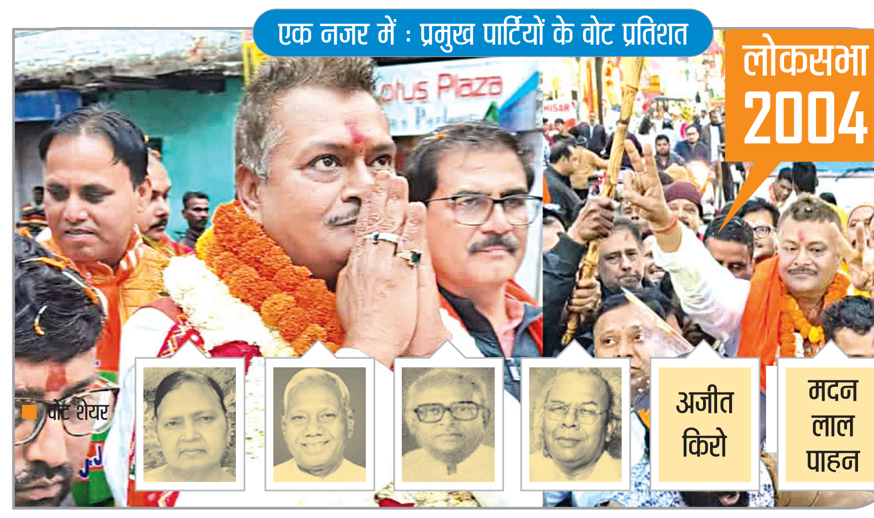

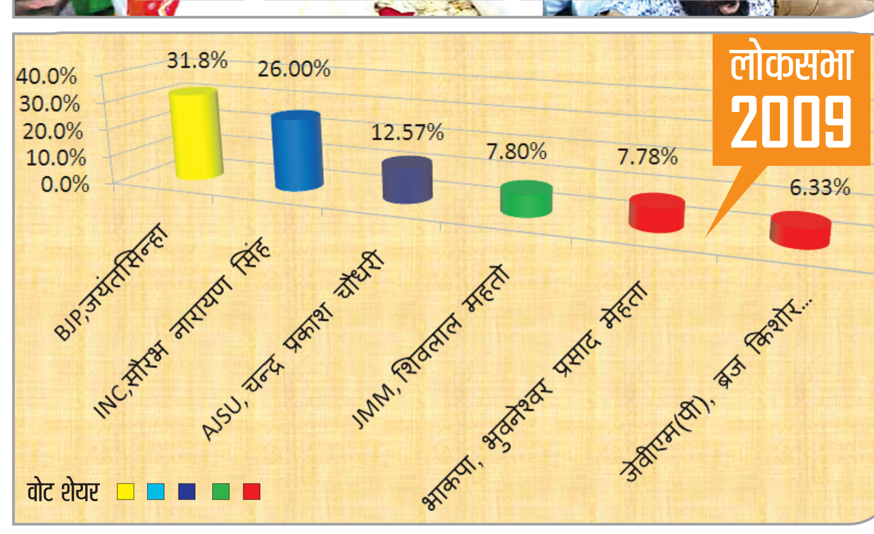

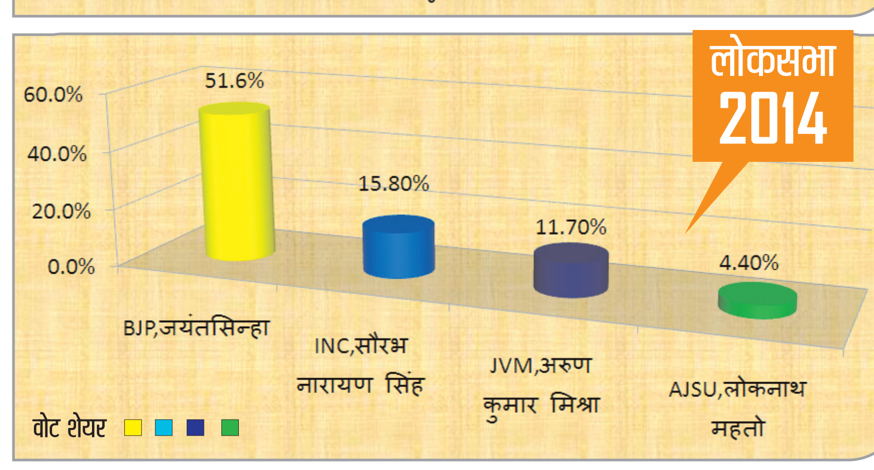

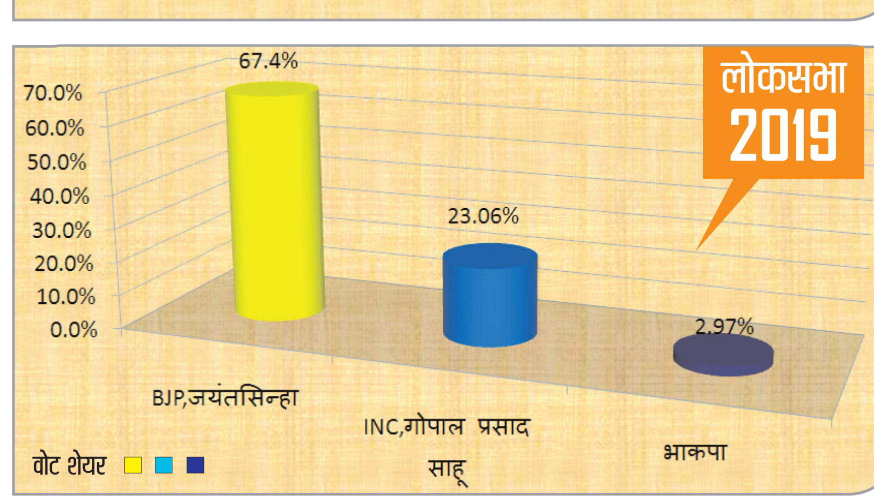

कार्यकर्ताओं ने बांटी मिठाई

रामगढ़। भारतीय जनता पार्टी रामगढ़ कैंट मण्डल के अध्यक्ष सूर्यवंश श्रीवास्तव के नेतृत्व में हजारीबाग लोकसभा क्षेत्र से भारतीय जनता पार्टी के प्रत्याशी मनीष जायसवाल की बम्पर जीत की खुशी में मंगलवार को सुभाष चौक पर पार्टी कार्यकर्ताओं ने खुशी मनाई। लड्डू से एक दूसरे का मुंह मीठा कराकर एवं पटाखे छोड़कर और एक दूसरे कोअबीर गुलाल लगाकर खुशी का इजहार किया। मौके पर सूर्यवंश श्रीवास्तव ने कहा कि हम सभी मनीष जायसवाल को उनकी जीत पर बधाई देते हैं । मौके पर मुख्य रूप से भारतीय जनता पार्टी के जिला मीडिया प्रभाती राजीव पामदत्त, पूर्व जिला अध्यक्ष (ओबीसी मोर्चा) मनोज जायसवाल,शहदेव ठाकुर,न मिंद्र चंचल, वरुण सिंह, भगवान प्रसाद,मुन्ना सोनकर, मिथलेश मण्डल, शीतल सिंह, शशिकांत सिंह, सुरेंद्र शर्मा, सुशांत पांडेय, अजित गुप्ता,महेश ठाकुर, सत्यजीत सिंह, विजय पाठक, अरविंद सिंह,संजय श्रीवास्तव, मंटु त्रिपाठी, सागर श्रीवास्तव, दीपू श्रीवास्तव, धीरज साहू, मणिशंकर ठाकुर, अरुण राय गनोउरी, सुबोध सिंह, महेश चौधरी,रवि सिन्हा,छोटू श्रीवास्तव, विनय कुमार, अंशु पाठक,शिव कुमार गुप्ता, सैयद किरमानी, अशोक लाल उपस्थित थे।

1998 में बीजेपी से यशवंत सिन्हा ने दर्ज की जीत

यशवंत सिन्हा
भाजपा

1998 में हुए लोकसभा चुनाव में यहां से फिर भारतीय जनता पार्टी ने जीत दर्ज की। भारतीय जनता पार्टी के यशवंत सिन्हा ने इस इस सीट पर जीत दर्ज की थी। जबकि कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ इंडिया दूसरे स्थान पर रही। इन्हें कुल 22.7 फीसदी वोट मिले थे। झारखंड मुक्ति मोर्चा मरांडी ग्रुप को 19.5 फीसदी वोट मिले। जबकि कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ इंडिया और झारखंड मुक्ति मोर्चा इकाई के प्रतिशत में आ गए।

1999 में यशवंत सिन्हा ने फिर से दर्ज की जीत

1999 में हुए फिर लोकसभा चुनाव में भारतीय जनता पार्टी के यशवंत सिन्हा ने फिर से इस सीट पर जीत दर्ज की। यशवंत सिंह को कुल 47.3 फीसदी वोट मिले थे। जबकि राष्ट्रीय जनता दल 16.2 फीसदी वोट मिले थे। झारखंड मुक्ति मोर्चा 11.9 फीसदी वोट के साथ तीसरे स्थान पर रही। जबकि कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ इंडिया 9.3 फीसदी मत प्राप्त कर सकी।

2009 में फिर जीती भाजपा

2009 हजारीबाग लोकसभा चुनाव झारखंड बंटवारे के बाद का दूसरा लोकसभा चुनाव था। इस बार यहां से भारतीय जनता पार्टी के यशवंत सिन्हा विजय हुए। भारतीय जनता पार्टी को कुल 31.8 फीसदी जबकि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को 26 फीसदी वोट मिले थे। आजसू को 12।6 फीसदी और झारखंड मुक्ति मोर्चा 7.8 फीसदी वोट प्राप्त हुए।

2014 में दिखा मोदी का मैजिक

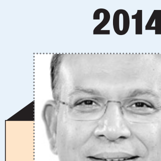

जयंत सिन्हा
भाजपा

2014 का लोकसभा चुनाव मोदी लहर के असर पर लड़ा गया था और इस बार हजारीबाग लोकसभा सीट से 2009 के सांसद रहे। यशवंत सिन्हा के बेटे जयंत सिन्हा चुनाव लड़े। जयंत सिंह को 2014 लोकसभा सीट में कुल 42.5 फीसदी वोट मिले थे, जबकि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस यहां दूसरे स्थान पर थी। 25.6 फीसदी वोट कांग्रेस को मिले थे। तीसरे स्थान पर 16.01 फीसदी वोट लेकर के आजसू पार्टी थी।

2019 में यशवंत के बेटे जयंत सिन्हा ने दर्ज की जीत

बात 2019 लोकसभा की करें तो इस लोकसभा चुनाव में भारतीय जनता पार्टी के उम्मीदवार जयंत सिन्हा ने जीत दर्ज की थी। जिन्हें 67.4 फीसदी वोट मिले थे। जबकि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस यहां दूसरे स्थान पर थी, कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ इंडिया तीसरे स्थान पर थी।

2004 में झारखंड बंटवारे के बाद सीपीआई के खाते में आई सीट

भुवनेश्वर मेहता
सीपीआई

2004 में हुआ लोकसभा चुनाव झारखंड बंटवारे के बाद हजारीबाग सीट का पहला चुनाव था। जिसमें हजारीबाग झारखंड राज्य का लोकसभा सीट बन गया था। 2004 में हुए लोकसभा चुनाव में कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ इंडिया ने यहां जीत दर्ज की। कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ इंडिया को 50.5 फीसदी वोट मिले थे, जबकि भारतीय जनता पार्टी के यशवंत सिन्हा को 35.5 फीसदी वोट मिले थे।

कोडरमा लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र पूरे कोडरमा जिला तथा हजारीबाग एवं गिरिडीह जिलों के कुछ हिस्सों को कवर करता है। कोडरमा को अभ्रक के लिए जाना जाता है। बिहार के बॉर्डर पर होने के कारण इसे झारखंड का प्रवेश द्वार भी कहा जाता है। कोडरमा लोकसभा सीट आम तौर पर भाजपा की पारंपरिक सीट रही है। यहां पर भाजपा ने सभी पार्टियों से अधिक बार जीत दर्ज की है। 1952 से 1971 आम चुनाव तक कोडरमा लोकसभा क्षेत्र अस्तित्व में नहीं था। यह 1977 में अस्तित्व में आया और इसी वर्ष पहला लोकसभा चुनाव हुआ। कोडरमा लोकसभा क्षेत्र में छह विधानसभा क्षेत्र शामिल हैं। ये हैं कोडरमा, बरकट्ठा, धनवार, बगोदर, जमुआ (एससी रिजर्व) व गांडेय।

कोडरमा लोकसभा सीट का सफरनामा

कोडरमा लोकसभा सीट 1977-1989

जीते	वर्ष	हारे
रीतलाल प्रसाद वर्मा	1977	चपलेंदु भट्टाचार्य
रीतलाल प्रसाद वर्मा	1980	जावेद वारसी
तिलकधारी सिंह	1984	रीतलाल प्रसाद वर्मा
रीतलाल प्रसाद वर्मा	1989	तिलकधारी सिंह

कोडरमा लोकसभा सीट 1991-1999

जीते	वर्ष	हारे
मुमताज अंसारी	1991	रीतलाल प्रसाद वर्मा
रीतलाल प्रसाद वर्मा	1996	रमेश प्रसाद यादव
रीतलाल प्रसाद वर्मा	1998	आबिद हुसैन
तिलकधारी सिंह	1999	रीतलाल प्रसाद वर्मा

1977 में हुआ पहला लोकसभा चुनाव

रीतलाल प्रसाद वर्मा
जनता पार्टी

1977 में हुए पहले लोकसभा चुनाव में जनता पार्टी के रीतलाल प्रसाद वर्मा कोडरमा लोकसभा सीट से जीते थे और उन्हें कुल 64.8 प्रतिशत वोट मिले थे। जबकि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के चपलेंदु भट्टाचार्य को 20.4 फीसदी वोट मिले। 1980 के लोकसभा चुनाव में जनता पार्टी के रीतलाल प्रसाद वर्मा जीते और उन्हें 39.5 प्रतिशत वोट मिले, जबकि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के जावेद वारसी को 31.3 प्रतिशत वोट मिले।

1984 में कांग्रेस ने जीती सीट

तिलकधारी सिंह
कांग्रेस

1984 के लोकसभा चुनाव में तिलकधारी सिंह ने इस सीट से जीत हासिल की थी। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के तिलकधारी सिंह को 57 प्रतिशत वोट मिले जबकि भारतीय जनता पार्टी से चुनाव लड़े रीतलाल प्रसाद वर्मा को 26.6 प्रतिशत वोट मिले।

1989 में भाजपा ने फिर हासिल की जीत

रीतलाल प्रसाद वर्मा
भाजपा

1989 के लोकसभा चुनाव में भारतीय जनता पार्टी के रीतलाल प्रसाद वर्मा फिर से इस सीट से जीते, उन्हें कुल 44.5 प्रतिशत वोट मिले, जबकि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को 25.8 प्रतिशत वोट और झारखंड मुक्ति मोर्चा को 20.3 प्रतिशत वोट मिले।

1991 में जनता दल से मुमताज अंसारी हुए विजयी

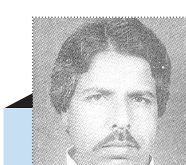
मुमताज अंसारी
जनता दल

1991 के लोकसभा चुनाव में जनता दल ने यहां से जीत हासिल की और उनके उम्मीदवार मुमताज अंसारी को 32.6 फीसदी वोट मिले. जबकि भारतीय जनता पार्टी के रीतलाल प्रसाद वर्मा को 29.7 फीसदी वोट मिले. जबकि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के तिलकधारी प्रसाद सिंह को 25.7 फीसदी वोट मिले।

1996 में फिर जीते रीतलाल प्रसाद वर्मा

रीतलाल प्रसाद वर्मा
भाजपा

1996 के लोकसभा चुनाव में भारतीय जनता पार्टी के रीतलाल प्रसाद वर्मा एक बार फिर यहां से जीते। उन्हें 38.7 प्रतिशत वोट मिले जबकि जनता दल के रमेश प्रसाद यादव को 31.2 प्रतिशत, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के उमेश चंद्र अग्रवाल को 11 प्रतिशत और झारखंड मुक्ति मोर्चा के सालखन सोरेन को 7.5 प्रतिशत वोट मिले। 1998 के लोकसभा चुनाव में यह सीट एक बार फिर भारतीय जनता पार्टी के खाते में गई और रीतलाल प्रसाद वर्मा 41.2 फीसदी वोट के साथ विजयी रहे। दूसरे स्थान पर रहे राष्ट्रीय जनता दल के आबिद हुसैन को 26.8 फीसदी वोट मिले जबकि इंडियन नेशनल कांग्रेस के तिलकधारी प्रसाद सिंह को 18 फीसदी वोट मिले।

1999 में जीती कांग्रेस

तिलकधारी प्रसाद सिंह
कांग्रेस

1999 के लोकसभा चुनाव में यह सीट भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने जीती थी। इसमें तिलकधारी प्रसाद सिंह को 45.4 फीसदी वोट मिले थे, जबकि भारतीय जनता पार्टी के रीतलाल प्रसाद वर्मा को 43.8 फीसदी वोट मिले थे।

बंटवारे के बाद कोडरमा लोकसभा सीट

जीते	वर्ष	हारे
बाबूलाल मरांडी	2004	चंपा वर्मा
बाबूलाल मरांडी	2009	राजकुमार यादव
रवींद्र कुमार राय	2014	राजकुमार यादव
अन्नपूर्ण देवी	2019	बाबूलाल मरांडी

2004 में जीते बाबूलाल मरांडी

बाबूलाल मरांडी
भाजपा

झारखंड विभाजन के बाद 2004 में हुए पहले लोकसभा चुनाव में यहां से भारतीय जनता पार्टी के उम्मीदवार बाबूलाल मरांडी ने जीत हासिल की। 2004 में कोडरमा लोकसभा सीट ही एकमात्र ऐसी सीट थी जहां भारतीय जनता पार्टी विजयी रही थी। दूसरे स्थान पर झारखंड मुक्ति मोर्चा की चंपा वर्मा रही थीं। 2009 के लोकसभा चुनाव में भारतीय जनता पार्टी से अलग होकर अपनी पार्टी बनाने वाले बाबूलाल मरांडी एक बार फिर कोडरमा लोकसभा सीट से विजयी हुए। झारखंड विकास मोर्चा प्रजातांत्रिक पार्टी के अध्यक्ष बाबूलाल मरांडी को 25.6 फीसदी वोट मिले, जबकि भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी मार्क्सवादी लिबरेशन को 19.3 फीसदी वोट, भारतीय जनता पार्टी को 14.8 फीसदी वोट और राष्ट्रीय जनता दल को 14.2 फीसदी वोट मिले।

2014 लोस चुनाव में रवींद्र राय जीते

रवींद्र कुमार राय
भाजपा

2014 के लोकसभा चुनाव में मोदी लहर थी और जिसका फायदा भाजपा को मिला। भाजपा उम्मीदवार रवींद्र कुमार राय ने कोडरमा लोकसभा सीट से जीत हासिल की। उन्हें कुल 35.7 फीसदी वोट मिले. जबकि भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी मार्क्सवादी लिबरेशन दूसरे स्थान पर थी, वहीं झारखंड मुक्ति मोर्चा प्रजातांत्रिक तीसरे स्थान पर थी।

2019 में अन्नपूर्णा के माथे सजा ताज

अन्नपूर्णा देवी
भाजपा

2019 के लोकसभा चुनाव में भारतीय जनता पार्टी ने अपना उम्मीदवार बदल दिया और कभी राष्ट्रीय जनता दल की कद्दावर नेता रहीं अन्नपूर्णा देवी को भारतीय जनता पार्टी ने अपने टिकट पर मैदान में उतारा। यह फैसला बीजेपी के लिए सही साबित हुए. भारतीय जनता पार्टी की अन्नपूर्णा देवी 62.3 फीसदी वोट के साथ विजयी रहीं। जबकि 2004 में भारतीय जनता पार्टी को पहली जीत दिलाने वाले और झारखंड के पहले मुख्यमंत्री बाबूलाल मरांडी, जिन्होंने अपनी पार्टी झारखंड विकास मोर्चा प्रजातांत्रिक से चुनाव लड़ा था, उन्हें सिर्फ 24.6 फीसदी वोट मिले।

2001 में गायब हो गए थे पूर्व सांसद मुमताज, आज तक नहीं चला पता

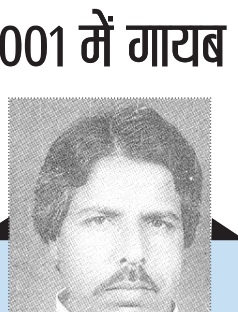
मुमताज अंसारी
जनता दल

वर्ष 1991 में मंडल की लहर में जनता दल के टिकट पर सांसद बने प्रोफेसर मुमताज अंसारी के गायब होने के रहस्य पर से आज तक पर्दा नहीं उठ पाया है। एक समय लालू प्रसाद यादव के करीबी रहे बिहार शरीफ के निवासी मुमताज अंसारी को लालू प्रसाद ने 1991 में कोडरमा से उम्मीदवार बनाकर विजयश्री दिलाई थी। इसके बाद 1996 में उन्हें लालू प्रसाद ने बेटिकट कर स्व. रमेश प्रसाद यादव को कोडरमा से चुनाव लड़ाया था, लेकिन यह चुनाव वे हार गए थे। इसके बाद 1999 में मुमताज अंसारी पुनः एनसीपी के टिकट पर कोडरमा से चुनाव लड़े, लेकिन ज्यादा वोट नहीं ला सके थे। वर्ष 2001 में अचानक उनके रहस्यमय ढंग से गायब होने का मामला सामने आया। उनकी पत्नी ने हजारीबाग पुलिस को एक शिकायत पत्र देकर कहा था कि मुमताज अंसारी दिल्ली से गया जंक्शन में उतरने के बाद सड़क मार्ग से हजारीबाग गए थे। यहां से वे रांची के लिए निकले थे, जिसके बाद से उनका पता नहीं चल पाया। उनकी पत्नी ने मुमताज अंसारी के सहयोगी पर साजिश के तहत हत्या का आरोप लगाया था। लेकिन एक पूर्व सांसद के इस तरह गायब होने की तह तक पुलिस आजतक नहीं पहुंच पाई। न तो पूर्व सांसद के शव का पता चल पाया और ना ही उनके इस तरह गायब होने के रहस्य पर से पर्दा उठ सका।

अन्नपूर्णा देवी ने लगातार दूसरी बार बड़े अंतर से जीत हासिल की

नवीन मेल संवाददाता

कोडरमा। कोडरमा संसदीय सीट से एनडीए की भाजपा प्रत्याशी अन्नपूर्णा देवी लगातार दूसरी बार सांसद चुनी गई हैं। उन्होंने महागठबंधन के माले प्रत्याशी विनोद सिंह को बड़े अंतर से हराया है।

अन्नपूर्णा देवी वर्ष 2019 में भाजपा में शामिल हुई थीं। उस समय कोडरमा से तत्कालीन सांसद रवींद्र राय का टिकट काटकर भाजपा ने अन्नपूर्णा देवी पर भरोसा जताया था और उन्हें यहां से उम्मीदवार बनाया था। कोडरमा से चार बार विधायक रह चुकीं अन्नपूर्णा देवी के पति रमेश प्रसाद यादव बिहार सरकार में मंत्री रह चुके हैं। पति के असामयिक निधन के बाद अन्नपूर्णा देवी ने राजनीति में कदम रखा।

वर्ष 1998 के विधानसभा उपचुनाव और 2000, 2005 और 2009 के विधानसभा चुनाव में अन्नपूर्णा देवी ने बतौर राजद प्रत्याशी लगातार जीत हासिल की। झारखंड में साल 2013 में बनी हेमंत सोरेन की सरकार में अन्नपूर्णा देवी को मंत्री बनाया गया था। वर्ष 2014 में उन्हें कोडरमा विधानसभा सीट से हार का सामना करना पड़ा था। अन्नपूर्णा देवी को तब भाजपा की नीरा यादव ने हराया था।

वर्ष 2019 में कोडरमा लोकसभा सीट पर बतौर भाजपा प्रत्याशी अन्नपूर्णा देवी ने झाविमो प्रत्याशी बाबूलाल मरांडी को 4 लाख 55 हजार 600 मतों के अंतर से पराजित किया था। हालांकि, इस बार जीत का अंतर घट गया, लेकिन जैसा आकलन किया जा रहा था, उससे कहीं अधिक अंतर से अन्नपूर्णा देवी ने जीत हासिल की है। भाजपा को यहां कुल 56 फीसदी वोट हासिल हुए हैं, जबकि भाकपा माले को 32 फीसदी वोट प्राप्त हुआ है।

सोशल मीडिया पर अन्नपूर्णा देवी को जीत पर बधाइयों का तांता

कोडरमा लोकसभा से भाजपा प्रत्याशी अन्नपूर्णा देवी की जीत पर पार्टी नेताओं, कार्यकर्ताओं और चाहने वालों का सोशल साइट पर मंगलवार को बधाई देने वालों का तांता लगा रहा। उनकी जीत पर विभिन्न इलाकों के कार्यकर्ता झूम उठे। व्हाट्सऐप, फेसबुक समेत अन्य सोशल साइट पर लोगों ने अन्नपूर्णा देवी को बधाई दी। इधर पार्टी के वरीय नेता रमेश सिंह, जिलाध्यक्ष अनूप जोशी, पूर्व जिलाध्यक्ष अशोक आर्या, विष्णु बर्णवाल, सांसद प्रतिनिधि पंकज बर्णवाल, सुभाष मोदी, संजय शर्मा, नितेश चंद्रवंशी, गोपाल कुमार गुतूल, आजसू नेता अजीत बर्णवाल आदि ने बधाई दी है। टीवी व मोबाइल पर रिजल्ट जानने चिपके रहे लोग : इधर लोकसभा चुनाव की मतगणना का रिजल्ट जानने लोग मोबाइल और टीवी से चिपके रहे और पल-पल की खबर लेते रहे।

ये सेवा, समर्पण व गरीब कल्याण की नीतियों की जीत है

कोडरमा। केंद्रीय शिक्षा राज्य मंत्री और कोडरमा की सांसद अन्नपूर्णा देवी ने मंगलवार को अपनी जीत के लिए कोडरमा संसदीय क्षेत्र के मतदाताओं, भाजपा, आजसू के सभी कार्यकर्ताओं और भाजपा संगठन से जुड़े सभी नेताओं के प्रति आभार जताया है। उन्होंने कहा कि कोडरमा में सेवा, समर्पण और गरीब कल्याण की जीत हुई है। नारी सम्मान की जीत हुई है। कोडरमा लोकसभा क्षेत्र के जन-जन और कण-कण से उनके आत्मीय, भावनात्मक रिश्ते की जीत हुई है। उन्होंने कहा कि कोडरमा लोकसभा क्षेत्र से भाजपा की यह विजय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी के विकसित भारत के संकल्प को समर्पित है। गृह मंत्री अमित शाह के सशक्त भारत को समर्पित है। उन्होंने कहा कि यह जीत भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा के सेवा-समर्पण-संगठन के सूत्र को समर्पित है। विजयी होने के बाद मीडिया से मुखातिब होते हुए अन्नपूर्णा देवी ने कहा कि मैं हमेशा कहती हूं कि मैं बहू बनकर कोडरमा आई और यहां के एक-एक आंगन ने मुझे बेटी की तरह अपनाया। राजनीति के क्षेत्र में ऐसा स्नेह, इतनी आत्मीयता किस्मत वालों को नसीब होता है। मैं खुद को भाग्यशाली मानती हूं और यह आत्मीयता ही मुझे अनवरत सेवा की प्रेरणा देती है। मेरे परिवारजनों ने एक बार फिर भरोसा जताते हुए मुझे सेवा का मौका दिया है। मैं आजीवन अनवरत और अथक सेवा के माध्यम से अपने परिवारजनों के स्नेह का ऋण सूद सहित चुकाने की कोशिश करूंगी। चुनाव परिणाम से स्पष्ट है कि देश की जनता प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी के दूरदर्शी नेतृत्व, मोदी सरकार के 10 साल के जनहितकारी कार्यों और भाजपा की नीतियों को पसंद करती है। देश में एक बार फिर नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में एनडीए की सशक्त सरकार बनेगी।

शानदार जीत के बाद
अन्नपूर्णा ने जनता का जताया आभार

जमशेदपुर

पूर्वी सिंहभूम जिले के मुख्यालय जमशेदपुर की झारखंड में अलग पहचान है। इसे लौहनगरी के रूप में जाना जाता है। इस शहर को स्टील सिटी, ग्रीन सिटी, क्लीन सिटी सहित कई नामों से जानते हैं। जमशेदपुर टाटानगर के नाम से भी जाना जाता है। यहां के रेलवे स्टेशन का नाम टाटानगर ही है। जमशेदपुर की स्थापना को पारसी व्यवसायी जमशेदजी नौशरवान जी टाटा के नाम से जोड़ा जाता है। 1907 में टाटा आयरन एंड स्टील कंपनी (टिस्को) की स्थापना से इस शहर की बुनियाद पड़ी। जमशेदपुर का सबसे बड़ा उद्योग टाटा स्टील का है। जमशेदपुर निर्वाचन क्षेत्र झारखंड के दक्षिणी हिस्से में स्थित पूरे पूर्वी सिंहभूम जिले को कवर करता है।

जमशेदपुर लोकसभा सीट का सफरनामा

जमशेदपुर लोकसभा सीट 1957-1980

जीते	वर्ष	हारे
मोहिंद्र कुमार घोष	1957	एरिक डिकोस्टा
उदयकर मिश्र	1962	एनसी मुखर्जी
एससी प्रसाद	1967	उदयकर मिश्र
सरदार स्वर्ण सिंह सोखी	1971	केदार दास
रुद्र प्रताप सारंगी	1977	वीजी गोपाल
रुद्र प्रताप सारंगी	1980	वीजी गोपाल

सिख समुदाय के स्वर्ण सिंह ने मारी बाजी

सरदार स्वर्ण सिंह
कांग्रेस

1971 के लोकसभा चुनाव में कांग्रेस पार्टी ने अपने उम्मीदवार में फिर बदलाव किया और सरदार स्वर्ण सिंह को टिकट दिया। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को इस बार 26.6 फीसदी वोट मिले। जबकि कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ इंडिया के केदारनाथ को 26.5 फीसदी वोट मिले। 1971 का यह चुनाव काफी दिलचस्प, था क्योंकि जीत हार का अंतर हजार वोटों से भी कम का था। ऑल इंडिया झारखंड पार्टी को 16.6 फीसदी जबकि भारतीय जनसंघ को 12.3 फीसदी वोट प्राप्त हुए थे।

जमशेदपुर लोकसभा सीट 1984-1999

जीते	वर्ष	हारे
गोपेश्वर	1984	टीकाराम मांझी
शैलेंद्र महतो	1989	चंदन बागची
शैलेंद्र महतो	1991	अमरेंद्र प्रताप सिंह
नितीश भारद्वाज	1996	इंदर सिंह नामधारी
आभा महतो	1998	रुसी मोदी (निर्दलीय)
आभा महतो	1999	घनश्याम महतो

कांग्रेस की सीट पर झामुमो का कब्जा

शैलेंद्र महतो
झारखंड मुक्ति मोर्चा

1989 के लोकसभा चुनाव में जमशेदपुर सीट पर फिर परिवर्तन हुआ और इस बार झारखंड मुक्ति मोर्चा ने जमशेदपुर लोकसभा सीट पर कब्जा किया। झारखंड मुक्ति मोर्चा के शैलेंद्र महतो ने 26.3 फीसदी वोट के साथ इस सीट पर कब्जा किया था, जबकि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के चंदन बागची को 24.7 फीसदी वोट मिले थे। इस बार फिर कांग्रेस पार्टी ने यहां अपना उम्मीदवार बदला था। दूसरी तरफ रुद्र प्रताप सारंगी भारतीय जनता पार्टी के उम्मीदवार थे, जिन्हें 22.3 फीसदी वोट मिले थे, जबकि कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ इंडिया को 21.4 फीसदी रिपोर्ट प्राप्त हुए थे।

बंटवारे के बाद जमशेदपुर लोकसभा सीट

जीते	वर्ष	हारे
सुनील महतो	2004	आभा महतो
अर्जुन मुंडा	2009	सुमन महतो
विद्युत वरण महतो	2014	अजय कुमार
विद्युत वरण महतो	2019	चंपाई सोरेन

पहले चुनाव में कांग्रेस को मिली जीत

एमके घोष
कांग्रेस

1957 में पहली बार जमशेदपुर को लोकसभा क्षेत्र का दर्जा मिला। पहले लोकसभा चुनाव में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने यहां से जीत दर्ज की थी। एमके घोष जमशेदपुर के पहले सांसद बने थे। इस चुनाव में कांग्रेस पार्टी को 35.5 फीसदी वोट मिले, जबकि झारखंड पार्टी को 29.5 फीसदी मत प्राप्त हुए। जबकि निर्दलीय उम्मीदवार को 19 फीसदी वोट मिले।

पहली बार कम्युनिस्ट नेता बने सांसद

उदयकर मिश्रा
सीपीआई

1962 के लोकसभा चुनाव में सीपीआई ने जमशेदपुर में कब्जा जमाया । कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ इंडिया के खाते में चली गई। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने अपने उम्मीदवार को यहां बदला था और एनसी मुखर्जी को अपना उम्मीदवार बनाया था, लेकिन फिर कांग्रेस के हाथ से ये सीट निकल गई। 1962 के चुनाव में कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ इंडिया के उदयकर मिश्रा ने जमशेदपुर से जीत दर्ज की थी। उन्हें 41.3 फीसदी प्राप्त हुए थे, जबकि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को 30.4 फीसदी और झारखंड पार्टी को 16.3 फीसदी मत प्राप्त हुए थे।

कांग्रेस ने दोबारा कब्जा जमाया

सुरेंद्र चंद्र प्रसाद
कांग्रेस

1967 के लोकसभा चुनाव में फिर से यहां पर भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने जीत दर्ज की। इस बार फिर कांग्रेस ने अपने उम्मीदवार को बदला था और सुरेंद्र चंद्र प्रसाद को अपना उम्मीदवार बनाया था। कांग्रेस को 35.5 फीसदी मत प्राप्त हुए थे, जबकि कम्युनिस्ट पार्टी को 16.5 फीसदी और भारतीय जनसंघ को 12.6 फीसदी मत प्राप्त हुए थे।

जनता पार्टी को मिली जीत

रुद्र प्रताप सारंगी
जनता पार्टी

1977 के लोकसभा चुनाव में भारतीय लोक दल ने जमशेदपुर सीट पर जीत दर्ज की थी। रुद्र प्रताप सारंगी को जनता पार्टी ने टिकट दिया था। उन्हें कुल 48.7 फीसदी वोट मिले थे। जबकि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को 25.5 फीसदी वोट मिले थे। इस बार फिर कांग्रेस पार्टी ने अपना उम्मीदवार बदल दिया था और वीजी गोपाल को अपना उम्मीदवार बनाया था।

जनता पार्टी को फिर मिली जीत

1980 के लोकसभा चुनाव में रुद्र प्रताप सारंगी जनता पार्टी के टिकट पर चुनाव लड़े और जीत दर्ज की। रुद्र प्रताप सारंगी को 28.5 वोट मिले थे, जबकि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को 25.3 और कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ इंडिया को 23.8 फीसदी वोट प्राप्त हुए थे।

इंदिरा सहानुभूति लहर में मजदूर नेता की जीत

गोपेश्वर कुमार
कांग्रेस

1984 के लोकसभा चुनाव में फिर से कांग्रेस पार्टी ने सीट पर कब्जा किया। हालांकि इस बार फिर कांग्रेस पार्टी ने अपना उम्मीदवार बदलते हुए गोपेश्वर कुमार को टिकट दिया था। उन्हें 44.4 फीसदी वोट मिले थे, कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ इंडिया को 29.5 फीसदी वोट मिले। इस बार कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ इंडिया ने टीकाराम मांझी को यहां से अपना उम्मीदवार बनाया। भारतीय जनता पार्टी को 10.2 फीसदी वोट प्राप्त हुए थे, जबकि झारखंड मुक्ति मोर्चा को 5.1 फीसदी वोट मिले थे।

शैलेंद्र महतो दूसरी बार जीते

शैलेंद्र महतो
झारखंड मुक्ति मोर्चा

1991 के लोकसभा चुनाव में एक बार फिर से झारखंड मुक्ति मोर्चा ने इस सीट पर कब्जा किया। झारखंड मुक्ति मोर्चा के शैलेंद्र महतो को 39.3 फीसदी वोट मिले थे, जबकि भारतीय जनता पार्टी को 28.5 और भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को 16.8 फीसदी वोट मिले।

महाभारत के कृष्ण की जीत

नीतीश भारद्वाज
भाजपा

1996 में इस सीट पर भारतीय जनता पार्टी ने कब्जा किया। भाजपा ने महाभारत टीवी सीरियल कृष्ण का रोल निभाने वाले नीतीश भारद्वाज को जमशेदपुर सीट से मैदान में उतारा था। भारतीय जनता पार्टी को 32.9 फीसदी वोट मिले थे। हालांकि इस बार जनता दल से इस सीट पर झारखंड के बड़े कद्दावर नेता इंदर सिंह नामधारी चुनाव लड़े थे, लेकिन उन्हें 24.7 फीसदी वोट ही मिले। वही झारखंड मुक्ति मोर्चा के शैलेंद्र महतो को 19.5 फीसदी वोट मिले थे।

शैलेंद्र महतो की पत्नी आभा महतो जीतीं

शैलेंद्र महतो
भाजपा

1998 के लोकसभा चुनाव में भारतीय जनता पार्टी ने अपना उम्मीदवार बदला । पूर्व सांसद शैलेंद्र महतो की पत्नी आभा महतो को टिकट दिया। इसका फायदा पार्टी को मिली और भारतीय जनता पार्टी को 1998 के चुनाव में कुल 41 फीसदी वोट हासिल कर जीत दर्ज की। वहीं, स्वतंत्र उम्मीदवार को 27.5 फीसदी वोट मिले।

दूसरी बार आभा महतो ने दर्ज की जीत

1999 की लोकसभा चुनाव में एक बार फिर आभा महतो ने भारतीय जनता पार्टी की सीट से जीत दर्ज की। उन्हें 44.9 फीसदी वोट प्राप्त हुए. जबकि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के घनश्याम महतो को 25.8 फीसदी वोट मिले। इसके अलावा झारखंड मुक्ति मोर्चा के सुनील कुमार महतो को 12.7 फीसदी वोट प्राप्त हुए।

विद्युत वरण ने रचा इतिहास लगाई जीत की हैट्रिक

नवीन मेल संवाददाता। रांची

जमशेदपुर संसदीय सीट पर जीत की हैट्रिक लगा कर भाजपा प्रत्याशी विद्युत वरण महतो ने इतिहास रच दिया है। महतो ने अपने निकटम प्रत्याशी झामुमो के समीर कुमार मोहंती को 2 लाख 59 हजार 782 मतों से हराया। विद्युत महतो को 7 लाख 26 हजार 174 मत मिले, जबकि समीर मोहंती को 4 लाख 66 हजार 392 मतों से ही संतोष करना पड़ा।

जमशेदपुर संसदीय सीट पर विद्युत वरण महतो ने अपने निकटतम प्रत्याशी समीर मोहंती के खिलाफ शुरू से ही बढ़त बनाए रखा था। विद्युत महतो को 56.84 प्रतिशत और समीर कुमार मोहंती को 36.5 प्रतिशत मिले हैं। मतगणना के दौरान पहले ही राउंड से समीर कुमार मोहंती के मुकाबले विद्युत महतो आगे निकल गए और प्रत्येक राउंड की गणना में उनके मतों की संख्या बढ़ती ही गई। ज्यों-ज्यों मतों का अंतर बढ़ता गया, भाजपाइयों में उत्साह बढ़ता गया। दूसरी ओर, दिन चढ़ने के साथ ही झामुमो खेमे में मायूसी छा गई।

जमशेदपुर संसदीय सीट का यह इतिहास रहा है कि यहां कोई भी लगातार तीन बार सांसद नहीं रहे हैं। दो बार जीत दर्ज कराने वाले कुछ सांसद रहे हैं।

वे तीसरी बार भी सांसद बने हैं, लेकिन अब तक किसी ने लगातार तीसरी बार यानी जीत की हैट्रक नहीं लगाई थी। यह काम विद्युत वरण महतो ने किया।

1957 में इंडियन नेशलल कांग्रेस के मोहिंद्र कुमार घोष, 1962 में कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ इंडिया के उदयकर मिश्रा, 1967 में इंडियन नेशनल कांग्रेस के एससी प्रसाद व 1971 में सरदार स्वर्ण सिंह सोखी, 1977 व 1980 में जनता पार्टी के रुद्र प्रताप षाड़ंगी, 1984 में इंडियन नेशनल कांग्रेस के गोपेश्वर, 1989 व 1991 में झामुमो के शैलेंद्र महतो, 1996 में भाजपा के नीतीश कुमार, 1998 व 1999 में भाजपा की आभा महतो, 2004 में झामुमो के सुनील महतो, 2007 उप चुनाव में सुमन महतो, 2009 में भाजपा के अर्जुन मुंडा, 2011 उप चुनाव में झाविमो के डॉ अजय कुमार, 2014 व 2019 में भाजपा के विद्युत वरण महतो। इसके बाद इस बार 2024 के लोकसभा चुनाव में पुनः व लगातार भाजपा के विद्युत वरण महतो।

झारखंड आंदोलन की उपज हैं विद्युत महतो

जमशेदपुर लोकसभा सीट से लगातार तीसरी बार सांसद बने विद्युत वरण महतो झारखंड आंदोलन की उपज हैं। कॉलेज के दिनों में ही विद्युत वरण महतो का झुकाव सियासत की ओर हुआ। उन दिनों अलग झारखंड राज्य के लिए आंदोलन चरम पर था। उसी दौरान विद्युत वरण झामुमो के कद्दावर नेता निर्मल महतो के संपर्क में आये और झारखंड आंदोलन से जुड़ गये. 15 फरवरी 1962 को सरायकेला-खरसावां जिले के आदित्यपुर स्थित कृष्णापुर गांव में जन्मे विद्युत वरण महतो ने 12वीं कक्षा तक की शिक्षा टाटा कॉलेज चाईबासा से प्राप्त की। उसके बाद उन्होंने बीएससी में दाखिला लिया, लेकिन परीक्षा नहीं दी और झारखंड आंदोलन में कूद पड़े। 15 नवंबर 2000 को अगल राज्य बनने के बाद विद्युत वरण महतो ने चुनावी राजनीति का रुख किया। उन्होंने वर्ष 2000 में पहला विधानसभा चुनाव झामुमो के टिकट पर बहरागोड़ा विधानसभा सीट से लड़ी। लेकिन बीजेपी के दिनेश षाड़ंगी से हार गए। वर्ष 2005 में दोबारा झामुमो के टिकट पर फिर बहरागोड़ा विधानसभा सीट पर पुनः भाजपा के दिनेश षाड़ंगी से हार मिली। उसके बाद वर्ष 2009 में दिनेश षाड़ंगी को हराकर वह पहली बार बहरागोड़ा से विधायक बने। इसके बाद वर्ष लोकसभा चुनाव-2014 से ठीक पहले विद्युत महतो झामुमो छोड़कर भाजपा में शामिल हो गए। विधायकी से इस्तीफा देकर भाजपा के टिकट पर जमशेदपुर सीट से पहली बार लोकसभा चुनाव उन्होंने लड़ा। इस बार उन्होंने झाविमो प्रत्याशी डॉ अजय कुमार को पराजित कर जीत हासिल की। उसके बाद लोकसभा चुनाव 2019 में झामुमो प्रत्याशी चंपाई सोरेन को रिकॉर्ड मतों से परास्त कर पुनः जीत दर्ज की। इस बार फिर जमशेदपुर सीट पर जीत की हैट्रिक लगा कर उन्होंने लगातार तीसरी बार सांसद बनने का इतिहास रच दिया है, जो अब तक नहीं हुआ था।

झामुमो ने भाजपा से छीनी सीट

सुनील कुमार महतो
झामुमो

2004 में जमशेदपुर सीट पर झामुमो ने कब्जा जमाया । झारखंड अलग राज्य बनने के बाद 2004 में हुए पहले लोकसभा चुनाव में जमशेदपुर की सीट पर झारखंड मुक्ति मोर्चा का कब्जा हुआ। यहां सुनील कुमार महतो ने जीत दर्ज की। इस बार झारखंड मुक्ति मोर्चा को इस सीट पर कुल 51 फीसदी वोट प्राप्त हुए। जबकि भारतीय जनता पार्टी को 37.4 फीसदी वोट मिले।

सामान्य सीट से अर्जुन मुंडा जीते

अर्जुन मुंडा
भाजपा

2009 के लोकसभा चुनाव में एक बार फिर यहां परिवर्तन हुआ और जमशेदपुर सीट से बीजेपी उम्मीदवार अर्जुन मुंडा ने जीत दर्ज की। अर्जुन मुंडा को 45.3 फीसदी वोट को मिले थे। इस चुनाव में झारखंड मुक्ति मोर्चा को 28.3 और झारखंड विकास मोर्चा को 11.2 फीसदी वोट प्राप्त हुए थे।अर्जुन मुंडा झारखंड आंदोलन की उपज हैं। वे राज्य के तीन बार मुख्यमंत्री बने।

मोदी लहर में विद्युत वरण को मिली जीत

विद्युत वरण महतो
भाजपा

2014 के लोकसभा चुनाव में भारतीय जनता पार्टी ने जमशेदपुर से अपने उम्मीदवार को बदला और विद्युत वरण महतो को चुनावी मैदान में उतारा। इस बार भारतीय जनता पार्टी को कुल 44.30 वोट प्राप्त हुए थे, जबकि झारखंड विकास मोर्चा को 34.7 फीसदी और झारखंड मुक्ति मोर्चा को 13.30 वोट प्राप्त हुए। विद्युतवरण महतो जमशेदपुर लोकसभा सीट से तीसरी बार जीत के लिए मैदान में डटे हैं।

विद्युत वरण महतो दूसरी बार जीते : 2019 के लोकसभा चुनाव में एक बार फिर यह सीट बीजेपी के खाते में गई और विद्युत वरण महतो दूसरी बार भारतीय जनता पार्टी के जमशेदपुर से सांसद बने। 2019 के लोकसभा चुनाव में जमशेदपुर से भारतीय जनता पार्टी को कुल 59.4 फीसदी वोट मिले। जबकि झारखंड मुक्ति मोर्चा के चंपई सोरेन को 33 फीसदी बोर्ड मिले थे। 2000 में पहला विधानसभा चुनाव जेएमएम के टिकट पर बहरागोड़ा से लड़े।

गोड्डा लोकसभा सीट पर कभी कांग्रेस का दबदबा था, लेकिन आज यह क्षेत्र भाजपा का गढ़ माना जाता है। भाजपा और कांग्रेस ने अब तक गोड्डा से क्रमशः आठ-आठ बार जीत दर्ज की है। यहां क्षेत्रीय पार्टियों का दबदबा काफी कम रहा है। मुकाबला हमेशा से भाजपा और कांग्रेस के बीच ही रहा है। गोड्डा लोकसभा सीट पर पिछड़ी जातियों और मुस्लिमों का दबदबा है। इस लोकसभा क्षेत्र में अनुसूचित जाति की आबादी करीब 11 फीसदी और अनुसूचित जनजाति की आबादी करीब 12 फीसदी है। पिछड़ी जातियों की गोलबंदी के कारण भाजपा यहां अच्छा प्रदर्शन करती है। इस सीट पर मतदाताओं की संख्या 15.90 लाख है, इसमें 8.25 लाख पुरुष और 7.64 लाख महिला मतदाता शामिल हैं।

गोड्डा लोकसभा सीट का सफरनामा

गोड्डा लोकसभा सीट 1962-1984

जीते		हारे
प्रभु दयाल हिम्मतसिंगका	1962	मोहन सिंह ओबरॉय
प्रभु दयाल हिम्मतसिंगका	1967	एस तुलसीयान
जगदंबी प्रसाद यादव	1977	जगदीश मंडल
मौलाना समीनुद्दीन	1980	जगदम्बी प्रसाद यादव
मौलाना सलाउद्दीन	1984	फाल्गुनी प्रसाद यादव

गोड्डा लोकसभा सीट 1989-1999

जीते		हारे
जनार्दन यादव	1989	सूरज मंडल
सूरज मंडल	1991	जनार्दन यादव
जगदंबी प्रसाद यादव	1996	सलाउद्दीन अंसारी
जगदंबी प्रसाद यादव	1998	सूरज मंडल
जगदंबी प्रसाद यादव	1999	सूरज मंडल

बंटवारे के बाद गोड्डा लोकसभा सीट

जीते		हारे
फुरकान अंसारी	2004	प्रदीप यादव
निशिकांत दुबे	2009	फुरकान अंसारी
निशिकांत दुबे	2014	फुरकान अंसारी
निशिकांत दुबे	2019	प्रदीप यादव

पहले चुनाव में कांग्रेस ने दर्ज की जीत

प्रभुदयाल हिम्मत सिंगका
कांग्रेस

1962 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की जीत हुई। 1962 में गोड्डा से प्रभुदयाल हिम्मत सिंगका विजयी हुए। इन्हें कुल 40.6 फीसदी वोट मिले थे। वहीं, जनता पार्टी दूसरे स्थान पर थी, जिसमें मोहन सिंह ओबेरॉय को 30.5 प्रतिशत वोट मिले थे।

1967 का लोकसभा चुनाव : 1967 के लोकसभा चुनाव में भी गोड्डा लोकसभा सीट से भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के प्रभु दयाल हिम्मत सिंगका ही विजय हुए। 1967 में इन्होंने 36.8 फीसदी वोट हासिल किए। जबकि भाजस को 24.4 फीसदी वोट मिले थे।

1967 में फिर से प्रभुदयाल हिम्मत सिंगका : 1962 के चुनाव में कांग्रेस के प्रभुदयाल हिम्मत सिंगका ने पहली जीत दर्ज की थी। 1967 के चुनाव में कांग्रेस के प्रभुदयाल हिम्मत सिंगका लगातार दो बार सांसद बने।

1971 लोकसभा चुनाव : वहीं 1971 में इंदिरा गांधी की मौत के बाद सहानुभूति की लहर में एक बार फिर से कांग्रेस ने जीत दर्ज की। यहां से जगदीश मंडल कांग्रेस के उम्मीदवार थे।

प्रभु दयाल हिम्मतसिंगका एक भारतीय राजनीतिज्ञ थे। वे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के सदस्य के रूप में गोड्डा, बिहार से भारतीय संसद के निचले सदन लोक सभा के लिए चुने गए थे। प्रभु दयाल हिम्मतसिंगका का जन्म दुमका जिला में 16 अगस्त, 1889 को हुआ था। दुमका जिला स्कूल, टीएनजे कॉलेज, भागलपुर, स्कॉटिश चर्च कॉलेज और यूनिवर्सिटी लॉ कॉलेज, कलकत्ता में पढ़ाई की।

1977 के चुनाव में जनता पार्टी जीती

जगदंबी प्रसाद यादव
जनता पार्टी

जगदंबी प्रसाद यादव भाजपा के कद्दावर नेता थे और 1977 से 1979 तक स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण राज्य मंत्री और फिर मोरारजी देसाई सरकार में वाणिज्य एवं उद्योग राज्य मंत्री रहे। वे झारखंड के गोड्डा से लोकसभा के लिए चुने गए थे। 2002 में अपनी मृत्यु के समय वे आधिकारिक भाषाओं पर संसदीय समिति के संयोजक थे। वे 1981 से 1984 तक बिहार में भारतीय जनसंघ के अध्यक्ष और बिहार भारतीय जनता पार्टी के अध्यक्ष रहे।

1996 में भाजपा ने हासिल की जीत : 1996 की लोकसभा चुनाव में भाजपा फिर से यहां पर जीत दर्ज की। यहां से जगदंबी प्रसाद यादव 35.3 फीसदी वोट हासिल कर शानदार जीत दर्ज की। जनता दल दूसरे स्थान पर रही, जिसे 26.4 फीसदी वोट मिले। जबकि झारखंड मुक्ति मोर्चा को 19.6 फीस रिपोर्ट मिले और वह तीसरे स्थान पर रही। 1996 में कांग्रेस की हालत काफी खराब रही और यहां उन्हें सिर्फ 9.2 फीसदी वोट मिले। गोड्डा में भारतीय जनता पार्टी इस लोकसभा सीट पर कब्जा की थी।

1998 में फिर जीती बीजेपी : 2 साल बाद 1998 फिर हुए लोकसभा उप चुनाव में बीजेपी ने यहां से बाजी मारी। भारतीय जनता पार्टी को कुल 46.5 फीसदी वोट मिले। और जगदंबी प्रसाद यादव फिर से भारतीय जनता पार्टी के सांसद बने। जबकि झारखंड मुक्ति मोर्चा के सूरज मंडल को 35.9 फीसदी वोट मिले। जनता दल 11 फीसदी वोट यहां पास सकी थी।

1999 में बीजेपी ने लगाई जीत की हैट्रिक : 1999 में हुए लोकसभा के चुनाव के लिए भारतीय जनता पार्टी ने फिर सीट पर कब्जा जमाया। जगदंबी प्रसाद यादव 34.5 फीसदी वोट हासिल कर भारतीय जनता पार्टी के खाते में गोड्डा सीट को डाला। वहीं झारखंड मुक्ति मोर्चा को 22 फीसदी वोट मिले। झामुमो की तरफ से सूरज मंडल ने ताल ठोका था, लेकिन वह जीत हासिल नही कर सके। 1999 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को गोड्डा सीट पर सिर्फ 17 फीसदी वोट मिले। जबकि कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ इंडिया को 13.5 फीसदी वोट हासिल हुआ।

1980 में कांग्रेस की हुई जीत

मौलाना समीनुद्दीन
कांग्रेस

1980 में हुए लोकसभा चुनाव में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने एक बार फिर अपनी सीट को हासिल किया। यहां से समीनउद्दीन ने जीत हासिल की। जबकि दूसरे स्थान पर जनता पार्टी के जगदंबी प्रसाद यादव रहे थे। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को 1980 के चुनाव में कुल 35.7 फीसदी वोट मिले थे। जबकि जनता पार्टी को 27.30 वोट मिले। 1980 में हुए लोकसभा चुनाव में जगदंबी प्रसाद यादव भारतीय लोक दल से जीते थे। लेकिन जनता पार्टी में जाने के कारण यह सीट उनके हाथ से निकल गई।

1984 में कांग्रेस फिर जीती

मौलाना सलाउद्दीन
कांग्रेस

1984 के लोकसभा चुनाव में भी भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने एक बार फिर से गोड्डा सीट पर कब्जा किया। यहां से सलाउद्दीन सांसद चुने गए। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को कुल 44.8 फीसदी वोट मिले। जबकि भारतीय जनता पार्टी को 16.5 फीसदी वोट मिले। वहीं झारखंड मुक्ति मोर्चा को यहां कुल 15.8 फीसदी वोट और कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ इंडिया को 14.2 फीसदी वोट मिले।

1989 में भाजपा पहली बार जीती

जनार्दन यादव
भाजपा

1989 में हुए लोकसभा चुनाव में पहली बार भारतीय जनता पार्टी ने इस सीट पर जीत दर्ज की। जनार्दन यादव भारतीय जनता पार्टी से इस लोकसभा क्षेत्र से विजयी हुए। इन्हें कुल 53.01 फीसदी वोट मिले थे। वहीं दूसरे स्थान पर झारखंड मुक्ति मोर्चा के सूरज मंडल रहे। इन्हें 21.8 फीसदी वोट मिले थे। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को 208 फीसदी वोट मिले थे।

1991 में झामुमो ने मारी बाजी

सूरज मंडल
झामुमो

1991 में हुए लोकसभा चुनाव में झारखंड मुक्ति मोर्चा ने गोड्डा सीट पर झामुमो के सूरज मंडल ने बाजी मारी। झारखंड मुक्ति मोर्चा को लोकसभा में कुल 48.5 फीसदी वोट मिले, जबकि भारतीय जनता पार्टी के जनार्दन यादव को कुल 29 फीसदी वोट मिले। वहीं भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को 16.02 फीसदी वोट प्राप्त हुए।

झारखंड बनने के बाद हुए पहले चुनाव में जीते फुरकान अंसारी

फुरकान अंसारी
कांग्रेस

गोड्डा संयुक्त बिहार में जितने लोकसभा चुनाव हुए उसमें भारतीय जनता पार्टी काफी मजबूत दिखी। बंटवारे के बाद 2004 में हुए पहले लोकसभा चुनाव जो झारखंड राज्य के तहत हुआ था उसमें भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के फुरकान अंसारी ने इस सीट पर कब्जा जमाया। कांग्रेस को 44. 9 फीसदी वोट मिले। जबकि भारतीय जनता पार्टी के उम्मीदवार प्रदीप यादव को 41.7 फीसदी वोट मिले। हालांकि लगातार तीन बार भारतीय जनता पार्टी यहां जीती थी, लेकिन झारखंड बंटवारे के बाद यह सीट भाजपा के हाथ से निकल गई।

निशिकांत ने लगातार चौथी बार लहराया जीत का परचम

गोड्डा। गोड्डा संसदीय सीट पर भाजपा प्रत्याशी निशिकांत दुबे ने लगातार चौथी बार जीत का परचम लहरा दिया। उन्होंने इंडी गठबंधन के कांग्रेस प्रत्याशी प्रदीप यादव को 1,57,000 मतों से पराजित किया। निशिकांत दुबे को कुल 6,79,349 वोट मिले हैं। वहीं, कांग्रेस के प्रदीप यादव को 5,73,782 मत प्राप्त हुए। वर्ष 2019 के संसदीय चुनाव में निशिकांत ने अपने प्रतिद्वंदी को 1,80,000 मतों के अंतर से हराया था। अपनी जीत सुनिश्चित होने के बाद निशिकांत दुबे शाम में पत्नी और समर्थकों के साथ मतगणना स्थिल पहुंचे। पत्रकारों से बातचीत में उन्होंने कहा कि जीत तो जीत ही होती है। मैंने पहले ही कह दिया था कि प्रदीप यादव मुझसे कभी नहीं जीत सकते हैं। चुनाव से पहले किए अपने वादे के मुताबिक अब प्रदीप यादव को राजनीति से संन्यास लेने की घोषणा करनी चाहिए।

गोड्डा लोकसभा सीट के प्रत्याशियों को मिले कुल मत

- निशिकांत दुबे (भाजपा) - 679349
- प्रदीप यादव (कांग्रेस) - 573782
- बजरंगी महथा (बहुजन समाज पार्टी) - 8012
- अनूप कुमार, (प्राउटिस्ट ब्लॉक इंडिया) - 1968
- अरुण कुमार, (न्याय धर्म सभा) - 2842
- कालीपद मुर्मू - 1899
- कुमारी डिलेश्वरी (आंबेडकराइट पार्टी ऑफ इंडिया) - 6441
- केतन कुमार (राइट टू रिकॉल पार्टी) - 1851
- ज्ञानेश्वर झा (जागरूक जनता पार्टी) - 1615
- टिपलाल साह (लोकहित अधिकार पार्टी) - 1732
- ब्रजकिशोर पंडित - 2058
- रामेश्वर मंडल - 3252
- सूरज कुमार अमन - 3014
- अभिषेक आनंद झा (निर्दलीय) - 9501
- अरुण मरीक (निर्दलीय) - 17074
- उदय शंकर खवाड़े (निर्दलीय) - 26425
- निलेश कुमार गुप्ता (निर्दलीय) - 10298
- मुकेश कुमार झा (निर्दलीय) - 7161
- डॉ के. रंगय्या (निर्दलीय) - 2161

कार्यकर्ताओं ने मनाया जश्न

2009 में भाजपा ने फिर हासिल की अपनी सीट

निशिकांत दुबे
भाजपा

2009 में हुए लोकसभा चुनाव में भारतीय जनता पार्टी के उम्मीदवार डॉ निशिकांत दुबे ने गोड्डा सीट पर जीत हासिल की। इसके साथ ही गोड्डा एक बार फिर से कांग्रेस पार्टी से भारतीय जनता पार्टी के खाते में चला गया। 2009 में कांग्रेस के फुरकान अंसारी को 23 फीसदी वोट मिले। जबकि झारखंड विकास मोर्चा प्रजातांत्रिक को 22.02 फीसदी वोट मिले थे। झारखंड मुक्ति मोर्चा के दुर्गा सोरेन यहां से चुनाव लड़े थे। जिन्हें 9.2 फीसदी को मिले थे।

2014 में मोदी लहर का दिखा असर : 2009 में गोड्डा सीट भाजपा के कब्जे में आ चुकी थी। 2014 में हुए लोकसभा चुनाव में एक बार फिर से भारतीय जनता पार्टी ने इस सीट पर जीत दर्ज की। डॉ निशिकांत दुबे भाजपा की उम्मीदवार थे और इन्हें 36.3 फीसदी वोट मिले। 2014 में सभी लोकसभा सीटों पर मोदी के लहर का असर था। हालांकि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के फुरकान अंसारी को 30.5 फीसदी वोट मिले थे। जबकि झारखंड विकास मोर्चा प्रजातांत्रिक को 18.4 फीसदी वोट मिले।

2019 में निशिकांत दुबे ने लगाई जीत की हैट्रिक : 2019 की लोकसभा चुनाव में गोड्डा लोकसभा सीट फिर भाजपा के कब्जे में रही। यहां से 2009 और 2014 के सांसद रहे निशिकांत दुबे ने तीसरी बार जीत दर्ज की। 2019 में गोड्डा से भारतीय जनता पार्टी को कुल 53.4 फीसदी वोट मिले थे। जबकि झारखंड विकास मोर्चा प्रजातांत्रिक के प्रदीप यादव को 38.8 फीसदी वोट मिले।

गोड्डा सीट का जिस तरीके का राजनीतिक सफर रहा है उससे एक बात तो साफ है कि इस सीट पर भारतीय जनता पार्टी का दबदबा रहा है। हालांकि 1962 में जब यह सीट बनी थी और झारखंड बंटवारे के बाद जब चुनाव हुए थे तो इस सीट पर कांग्रेस का दबदबा था। लेकिन उसके बाद कांग्रेस इस पर अपना कोई मजबूत पकड़ नहीं बना सकी। ना ही झारखंड मुक्ति मोर्चा इस पर मजबूत पकड़ के साथ दावेदारी दे सका।

नई सरकार के सामने होंगी चुनौतियां

भारत ने कोविड-19 महामारी के बाद अर्थव्यवस्था को पटरी पर लाने में महत्वपूर्ण प्रगति की है, लेकिन भू-राजनीतिक कारणों से अब भी झटके लगने की आशंका एवं अनिश्चितताएं बनी हुई हैं। एक मुक्त अर्थव्यवस्था होने के नाते भारत इससे अछूता नहीं है। हालांकि मूडीज और एस एंड पी जैसी प्रतिष्ठित क्रेडिट रेटिंग एजेंसियों के अलावा, विश्व बैंक व अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष तक ने भारत की विकास दर की तारीफ की है। फिर भी चुनौतियां बाकी हैं। इसलिए नई सरकार का व्यापक एजेंडा घरेलू और बाहरी क्षेत्र (अंतरराष्ट्रीय) के लिए उचित नीतियों के माध्यम से भारत की क्षमता को बेहतर बनाने में मददगार होना चाहिए। घरेलू क्षेत्र की नीतियों के तहत सरकार का ध्यान निजी निवेश बढ़ाने और सार्वजनिक कर्ज घटाने पर केंद्रित होना चाहिए। बाहरी क्षेत्र की नीतियों को उन रणनीतियों पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए, जो व्यापार के खुलेपन पर प्रतिबंध लगाए बिना भारत के लिए वैश्विक झटकों के जोखिम को कम करे। अब हम कुछ ऐसे क्षेत्रों की चर्चा कर रहे हैं, जिन पर नई सरकार अपना ध्यान केंद्रित करना चाहेगी।भारत की राष्ट्रीय समृद्धि अलग-अलग राज्यों की समृद्धि से जुड़ी हुई है। आर्थिक समृद्धि के लिए केंद्र सरकार का काम नीति एवं विश्वास का एक सक्षम ढांचा तैयार करना है। आर्थिक सुधार के 25 वर्ष बाद यह स्पष्ट है कि केंद्र एवं राज्यों की आर्थिक नीति संबंधी कार्रवाइयां लोगों की आर्थिक नियति को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। देश के आर्थिक विकास और प्रगति के लिए आने वाली सरकार को विकास एवं समृद्धि का लाभ उठाने की खातिर केंद्र-राज्य संबंधों को और मजबूत बनाना होगा।वर्ष 1991 के आर्थिक सुधारों ने आर्थिक विकास में राज्यों की भूमिका को व्यापक तरीके से बढ़ाया। यह प्रक्रिया आज भी जारी है। उसके बाद आने वाली सभी सरकारों ने इस प्रक्रिया को और मजबूत ही बनाया है। केंद्र एवं राज्यों के बीच बेहद सामंजस्यपूर्ण रिश्ते देश के लोगों की आर्थिक समृद्धि के लिए महत्वपूर्ण होंगे। हालांकि हाल के महीनों में विभिन्न मुद्दों पर हमने केंद्र और राज्यों के रिश्तों में तनाव देखा है। बेशक, इनमें से कुछ मुद्दे चुनावी मौसम होने के कारण हो सकते हैं, लेकिन राष्ट्रीय संसाधनों पर राज्यों के अधिकार, वित्तीय स्वायत्तता तथा केंद्र एवं राज्यों की विषम शक्तियां ऐसी चुनौतियां हैं, जिनका समाधान एक संघीय देश को हमेशा करने की आवश्यकता होती है। यह एक सतत प्रक्रिया है और इसमें कुछ भी असामान्य नहीं है। यदि इनका समाधान न किया जाए, तो ये जरूर असामान्य हो सकते हैं। केंद्र एवं राज्यों के बीच चर्चा, बहस और बातचीत के लिए इस तरह से एक संस्थागत ढांचा तैयार किया जाना चाहिए कि वह केंद्र-राज्य संबंधों के सभी मुद्दों का भरोसे के आधार पर समाधान सुझाए। हमारे देश का तेजी से शहरीकरण हो रहा है। वर्ष 2030 तक शहरी आबादी के मामले में भारत सबसे ज्यादा शहरीकृत देशों में से एक होगा। चूंकि तेज शहरीकरण के साथ-साथ विस्थापन भी तेजी से बढ़ेगा, इसलिए तेज शहरीकरण के लिए जरूरी संसाधनों के वित्तपोषण की खातिर उचित तरीके के बारे में सोचने की जरूरत है। अर्थव्यवस्था और समाज में दूरगामी बदलावों के लिए वित्तीय संसाधनों का प्रावधान महत्वपूर्ण है और इसे रणनीतिक जरूरत ही माना जाना चाहिए। शहरीकरण का लाभ उठाने और चुनौतियों से निपटने के लिए सार्वजनिक निवेश संबंधी समर्थन महत्वपूर्ण होगा। नई सरकार को नए शहरी विकास के एजेंडे पर ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता है।साझा बाजार के विकास, उच्च आर्थिक विकास और राजस्व के मामले में जीएसटी का व्यापक लाभ उठाने के लिए जीएसटी संरचना के ढांचे को और ज्यादा सरल बनाने की जरूरत है। दो-दर वाली जीएसटी संरचना तैयार करने के लिए जीएसटी ढांचे में और सुधार की खातिर परामर्श प्रक्रिया शुरू की जानी चाहिए। असल में, जीएसटी ढांचे में परिवर्तन केवल जीएसटी परिषद में ही किया जा सकता है। इसलिए इस दिशा में कदम उठाना जीएसटी ढांचे को सरल बनाने के दीर्घकालीन समाधान के लिए फायदेमंद होगा। नया जीएसटी ढांचा इस तरह तैयार किया जाना चाहिए, जिसका आधार व्यापक हो, लेकिन कर की दर कम हो। यह आसान काम नहीं है। राजस्व और अर्थव्यवस्था के मुद्दे पर ऐसे बदलावों के निहितार्थ को समझने के लिए प्रमुख नीति विश्लेषण एवं आम सहमति बनाने की जरूरत होगी।

ग्लोबल वॉर्मिंग

पर्यावरण के बड़े खतरों के लिये कोशिशें भी बड़ी हो

ललित गर्ग

विश्व पर्यावरण दिवस हर साल 5 जून को मनाया जाता है। इंसानों को प्रकृति, पृथ्वी एवं पर्यावरण के प्रति सचेत करने के लिए यह खास दिवस मनाया जाता है और देश एवं दुनिया में पर्यावरण संरक्षण की याद दिलाई जाती है। यह सर्वविदित है कि इंसान व प्रकृति के बीच गहरा संबंध है। इंसान के लोभ, सुविधावाद एवं तथाकथित विकास की अवधारणा ने पर्यावरण का भारी नुकसान पहुंचाया है, जिसके कारण न केवल नदियां, वन, रेगिस्तान, जलस्रोत सिकुड़ रहे हैं बल्कि ग्लेशियर भी पिघल रहे हैं, तापमान का 50 डिग्री पार करना जो विनाश का संकेत तो है ही, जिनसे मानव जीवन भी असुरक्षित होता जा रहा है। इस वर्ष बढ़ी हुई गर्मी एवं तापमान ने न केवल जीवन को जटिल बनाया बल्कि अनेक लोगों की जान भी गयी। वर्तमान समय में पर्यावरण के समक्ष तरह-तरह की चुनौतियां गंभीर चिन्ता का विषय बनी हुई हैं। ग्लोबल वॉर्मिंग की वजह से ग्लेशियर तेजी से पिघल कर समुद्र का जलस्तर तीव्रगति से बढ़ा रहे हैं। जिससे समुद्र किनारे बसे अनेक नगरों एवं महानगरों के डूबने का खतरा मंडराने लगा है। इस बार पर्यावरण दिवस ऐसे समय में आया है, जबकि अनेक देश युद्ध की विभीषिका के कहर से जूझ रही है और दुनिया ग्लोबल वार्मिंग, बढ़ता तापमान, असंतुलित पर्यावरण जैसी चिंताओं से रू-ब-रू है। पर्यावरण को समर्पित यह खास दिन हमें प्रकृति के साथ तालमेल बिठाने एवं उसके प्रति संवेदनशील होने के लिए प्रेरित करता है। विश्व पर्यावरण दिवस 1974 से ही मनाया जाता है, जब संयुक्त राष्ट्र ने पहली बार इसकी घोषणा की थी। सऊदी अरब 2024 में विश्व पर्यावरण दिवस समारोह की मेजबानी करेगा,

जिसका थीम होगी 'हमारी भूमि, हमारा भविष्य।' यह थीम भूमि और इकोसिस्टम को बहाल करने, जैव विविधता की रक्षा करने और जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए आवश्यक सामूहिक प्रयास पर जोर देती है। इस वर्ष के विश्व पर्यावरण दिवस का विषय है 'भूमि पुनर्स्थापन, मरुस्थलीकरण और सूखे से निपटने की क्षमता।' मानवता भूमि पर निर्भर है। फिर भी, पूरी दुनिया में प्रदूषण, जलवायु अराजकता और जैव विविधता विनाश का एक जहरीला मिश्रण स्वस्थ भूमि को रेगिस्तान में बदल रहा है और संपन्न पारिस्थितिकी तंत्र मृत क्षेत्रों में बदल रहा है। इस वर्ष का विषय का फोकस 'हमारी भूमि' नारे के तहत भूमि बहाली, मरुस्थलीकरण और सूखे पर केंद्रित है। ग्लोबल वार्मिंग का खतरनाक प्रभाव अब साफतौर पर दिखने लगा है। देखा जा सकता है कि गर्मियां आग उगलने लगी हैं और सर्दियों में गर्मी का अहसास होने लगा है। असंतुलित पर्यावरण विनाश का कारण बन रहा है। आजकल जब उत्तर भारत समेत देश के कई हिस्से रिकॉर्ड गर्मी से तप रहे हैं तब पश्चिम बंगाल और केरल में भयानक बारिश हो रही है। इस तरह एक साथ इतनी तेज बारिश से नुकसान होता है। बढ़ते शहरीकरण विकास योजनाओं और जिंदगी से जुड़े हर क्षेत्र में पानी की जरूरतें बढ़ रही है। दूसरी तरफ पानी के कुदरती स्रोत कम होते जा रहे हैं। हमें पानी के इस्तेमाल के तौर-तरीकों में तुरंत बदलाव करते हुए संयम बरतने की जरूरत है। खेती में पानी के इस्तेमाल, पानी को इकट्ठा करने और उन्हें भूगर्भीय स्रोतों तक पहुंचाने के तौर-तरीकों और पानी के आम इस्तेमाल को बदलना होगा। नई सरकार को इस पर ज्यादा ध्यान देना होगा क्योंकि पानी की उपलब्धता के सारे समीकरण बदल गए हैं। तापमान का 50 डिग्री पार करना जटिल एवं गंभीर पर्यावरणीय घटना है। फ्रिज, एसी, कूलर और कारों की बिक्री बढ़ने से बिजली की खपत बढेगी।. यह स्थिति कोयले, पेट्रोल, डीजल के इस्तेमाल को बढ़ायेगी। ऐसे में लगातार ग्लोबल वार्मिंग से जूझ रही धरती और गर्म हो जाएगी। देश-दुनिया में गर्मी के नए रेकार्ड बनेंगे। इन दिनों कई शहरों का तापमान रिकॉर्ड तोड़ चुका है। इससे दिहाड़ी मजदूर, किसान और मेहनतकश लोगों को जूझना पड़ रहा है। वहीं ज्यादा बारिश वाले क्षेत्रों में पानी की कमी हो रही है तो सूखी जगहों पर बेतहाशा बारिश। इन घटनाओं की वजह को समझना होगा, उसे गंभीरता से लेना होगा। नई बनने वाली सरकार को पर्यावरण से जुड़े मुद्दों पर विशेष ध्यान देना होगा। जलवायु परिवर्तन के अलावा कई समस्याएं मानव निर्मित भी है। माना कि बादल फटने, जंगलों में आग जैसी घटनाएं बढ़ रही हैं, लेकिन अपेक्षाकृत नए माने जाने वाले हिमालय एवं पहाड़ी क्षेत्रों में नए बांध और सड़क बनाए जाने से होने वाले नुकसान ज्यादा सामने आ रहे हैं। जलवायु परिवर्तन ऐसा मसला है जिसमें पर्यावरण से होने वाला खतरा किसी देश की सीमा या उसकी हैसियत नहीं देखता। सबको बराबर नुकसान होता है। इसलिए विश्व के सभी देशों एवं विशेषतः विकसित एवं शक्तिसम्पन्न देशों को उदार एवं दूरगामी नजरिया अपनाना होगा। अपने-अपने स्वार्थों को नजरअंदाज करते हुए विश्व मानवता को केन्द्र में रखना जरूरी है। कई बिंदुओं पर दुनिया पीछे जा रही हैं। दुनियाभर में जो युद्ध चल रहे हैं, उनकी वजह से भी सारे समीकरण बदल गये हैं। पहले कोविड ने नुकसान पहुंचाया, उसके बाद रूस-युक्रेन युद्ध और इस्राइल-गाजा का मामला चल रहा है। युद्धों का पर्यावरण पर सबसे घातक असर पड़ता है और यही जलवायु परिवर्तन का बड़ा कारण भी बनते हैं। पर्यावरण का अर्थ संपूर्ण प्राकृतिक परिवेश से है जिसमें हम रहते हैं। इसमें हमारे चारों ओर के सभी जीवित और निर्जीव तत्व शामिल होते हैं, जैसे कि हवा, पानी, मिट्टी, पेड़-पौधे, जानवर और अन्य जीव-जंतु। पर्यावरण के घटक परस्पर एक-दूसरे के साथ जुड़कर एक समग्र पारिस्थितिकी तंत्र का निर्माण करते हैं। हालांकि प्राकृतिक संसाधनों के दोहन और मानव जीवनशैली के लिए इनके गलत उपयोग से पर्यावरण प्रदूषित हो रहा है। दूषित पर्यावरण उन घटकों को प्रभावित करता है, जो जीवन जीने के लिए आवश्यक हैं। ऐसे में पर्यावरण के प्रति लोगों को जागरूक करने, प्रकृति और पर्यावरण का महत्व समझाने की आज बड़ी आवश्यकता है, इस दृष्टि से विश्व पर्यावरण दिवस मनाना केवल आयोजनात्मक न होकर प्रयोजनात्मक बने, यह अपेक्षित है।

(ये लेखक के निजी विचार हैं।)

आपकी बात

थोड़ी देर में आपकी नयी सरकार

राकेश दुबे

प्रतिदिन आपके हाथों में हैं, नई सरकार बनने की कवायद चल रही है। अधिकांश लोगों अनुमान है प्रधानमंत्री मोदी लगातार तीसरी बार इस पद पर आसीन हो सकते हैं। इस चुनाव, 2024 में भाजपा-एनडीए जीत की और अग्रसर है। इस तरह प्रधानमंत्री मोदी का चुनावी मंत्र भी सार्थक और साकार हो सकता है। दक्षिण भारत के केरल, तमिलनाडु, आंध्रप्रदेश में 'भगवा गठबंधन' का खाता खुल सकता है। कर्नाटक की चुनावी उपलब्धि यथावत रहेगी, जबकि दक्षिण के ही तेलंगाना राज्य में भाजपा सबसे बड़ी पार्टी के तौर पर उभर सकती है। जो जनादेश अभूतपूर्व और आश्चर्यजनक हो सकते हैं, वे पश्चिम बंगाल और ओडिशा के हो सकते हैं। दोनों राज्यों में भाजपा ममता बनर्जी की तृणमूल कांग्रेस और नवीन पटनायक के बीजू जनता दल को पराजित करती लग रही है। दोनों नेता अपने-अपने राज्य के मुख्यमंत्री भी हैं। यह ऐतिहासिक उपलब्धियां होंगी। यदि प्रधानमंत्री मोदी लगातार तीसरी बार पदासीन होते हैं, तो वह देश के प्रथम प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू के कीर्तिमान की बराबरी कर लेंगे। भाजपा को भी 2014, 2019 के बाद लगातार तीसरी बार, अपने ही बूते, लोकसभा में बहुमत हासिल हो सकता है। बहरहाल अधिकृत जनादेश शाम घोषित किया जाना है, लेकिन ये विभिन्न सर्वे एजेंसियों के एग्जिट पोल के चुनावी निष्कर्ष हैं। एग्जिट पोल सर्वे की वैज्ञानिक प्रक्रिया है, जिसका पश्चिमी और यूरोपीय देशों में सामान्य चलन और महत्वपूर्ण प्रभाव है। अलबत्ता भारत में एग्जिट पोल की प्रक्रिया अपेक्षाकृत नई और सवालिया है। कई एग्जिट पोल हमने नाकाम और गलत होते देखे हैं, लेकिन ऐसे बहुत से चुनावी सर्वेक्षण सटीक और सफल भी रहे हैं। 18वीं लोकसभा के लिए सात चरणों में जो मतदान कराए गए, ये चुनावी अनुमान और आकलन 'भावी जनादेश' के संकेत भर हैं। अधिकांश एग्जिट पोल का रुझान या जनादेश की सोच एक ही दिशा की ओर संकेत कर रहे हैं कि भाजपा को 320-330 सीटें हासिल हो सकती हैं। तीन-चार पोल में भाजपा-एनडीए की सीटें 400 पार जाती लग रही हैं। सबसे गौरतलब यह हो सकता है कि केरल, तमिलनाडु में उन्हें 22-27 प्रतिशत वोट मिल सकते हैं, नतीजतन दोनों राज्यों में 2-4 सीट प्रति के परिणाम मिल सकते हैं। आंध्रप्रदेश में भी खाता खुलना लगभग तय लग रहा है। यदि ऐसा हुआ, तो भाजपा दक्षिण में अभिशप्त और शून्य पार्टी नहीं रहेगी, बल्कि उसकी स्वीकार्यता 'राष्ट्रीय' होगी। तेलंगाना में 4 सीट से 10-12 सीट तक का सफर तय करना भाजपा-एनडीए की एक दुर्लभ उपलब्धि होगी। वहां कांग्रेस सत्तारूढ़ है, लेकिन संसदीय जनादेश मोदी-भाजपा के पक्ष में लग रहा है। दक्षिण से भी महत्वपूर्ण जीत बंगाल और ओडिशा की साबित हो सकती है। बंगाल में 45 प्रतिशत से ज्यादा वोट भाजपा को मिल सकते हैं, जबकि तृणमूल को 40 प्रतिशत वोट से ही संतोष करना पड़ेगा। यह समीकरण 2019 के चुनाव से बिल्कुल उल्टा हो गया है। बिहार, उप्र, राजस्थान, हरियाणा सरीखे राज्यों में भाजपा-एनडीए की सीटें कम होने के अनुमान हैं, लेकिन गठबंधन विजेता ही रहेगा। गुजरात, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, उत्तराखंड, दिल्ली आदि राज्यों में भाजपा का हासिल 2019 की तरह शत-प्रतिशत रह सकता है। महाराष्ट्र के बारे में उपमुख्यमंत्री अजित पवार ने कहा था कि ब्रह्मा भी नहीं बता सकते कि महाराष्ट्र का जनादेश क्या रहेगा? यदि उसे ही आधार माना जाए, तो भाजपा-एनडीए की बीते कार्यकाल से लगभग 10 सीटें कम हो सकती हैं। **(भोपाल)**

इन दिनों

टोल नाकों पर पांच प्रतिशत टैक्स बढ़ोतरी : आखिर जरूरत क्या थी ?

डॉ. मयंक चतुर्वेदी

केंद्र सरकार को वैसे भी इस वित्त वर्ष में अपने निर्धारित लक्ष्य से अधिक टोल टैक्स मिलना था, फिर भी पांच प्रतिशत की बढ़ोतरी बहुत आश्चर्य में डालनेवाली है। देश का आम नागरिक जिसने चार पहिए का वाहन खरीद लिया है और कई बार मजबूरी में एक या दो लोगों को लेकर सफर करने के लिए विवश है, उसकी जेब टोल टैक्स के नाम पर खाली करवाना कहां तक उचित कहलाएगा? अब यदि 400 किलोमीटर की यात्रा तय करने के लिए 700 रुपये से भी अधिक देना पड़े, जिसमें कि नई व्यवस्था में 5 प्रतिशत बढ़ाते हुए अतिरिक्त रुपये और देना होंगे, तब जरूर विचार करें कि केंद्र सरकार की इस बढ़ोतरी पर प्रश्न क्यों नहीं खड़े किए जाएं? वास्तव में भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण (एनएचएआई) ने 04 जून से देशभर में टोल दरों में औसतन 5 फीसदी बढ़ोतरी की घोषणा कर

> **भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण को लगता होगा कि यदि फिर भी भाजपा सत्ता में आ गई तो उनकी बुरी गत कर देगी। इसलिए अभी रुपये न बढ़ाकर चुनाव बाद इसे लागू करेंगे।**

सभी को चौकाया है। जिसमें कि कहा जा रहा है कि संशोधित दरें पहले 01 अप्रैल से प्रभावी होने वाली थीं, किंतु लोकसभा चुनाव के कारण इन्हें टाल दिया गया। अब प्रश्न भी है कि क्यों टाला गया? क्या इसलिए टाला गया क्योंकि सातवें और अंतिम फेज में उत्तर प्रदेश की हाई प्रोफाइल सीट वाराणसी पर भी वोटिंग होना थी, जहां से प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने तीसरी बार चुनाव लड़ा है? या फिर इसलिए क्योंकि देश के 8 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेश की 57 सीटों पर एक जून को मतदान होना था, यदि यह टोल टैक्स पहले से घोषित कर देते तो प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के संगठन भाजपा को हो सकता है चुनाव मतदान में बड़ा नुकसान उठाना पड़ता! क्योंकि चुनाव यहां किसी एक राज्य में नहीं हो रहे थे, बल्कि उत्तर प्रदेश की 13, पंजाब की सभी 13, बिहार की 8, हिमाचल प्रदेश की 4, झारखंड की 3, पश्चिम बंगाल की 9 और ओडिशा की 6 सीटों पर वोट डाले जाने थे। भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण को लगता होगा कि यदि फिर भी भाजपा सत्ता में आ गई तो उनकी बुरी गत कर देगी। इसलिए अभी रुपये न बढ़ाकर चुनाव बाद इसे लागू करेंगे। अधिकारियों को यह क्यों नहीं लगा कि हर कोई एक बड़ी रकम टोल की चुकाने में सक्षम नहीं होता है। वैसे भी अनेक प्रकार के टैक्स सरकार ने पहले ही लगा रखे हैं। जीएसटी के कारण पूर्व से ही सरकार की झोली लगातार रिकॉर्ड धनराशि के साथ बढ़ रही है। **(ये लेखक निजी विचार हैं।)**

बोधि वृक्ष

शिरडी साईं बाबा का इतिहास

वे बहुत कम बातचीत करते थे क्योंकि बाबा अपना अधिकांश समय ध्यान में बिताते थे। धीरे-धीरे बाबा ने अपना निवास स्थान पास की एक मस्जिद में स्थानांतरित कर लिया। बहुत से हिंदू और मुसलमान बाबा के दर्शन करने आते थे। मस्जिद में बाबा ने पवित्र अग्नि जलाई जिसे धूनी कहा जाता था। बाबा सभी आगंतुकों को पवित्र राख देते थे। लोगों का मानना है कि राख सभी स्वास्थ्य समस्याओं के इलाज के लिए सबसे अच्छी दवा है। बाबा सभी के लिए भगवान थे और सभी धार्मिक उत्सवों में भाग लेते थे। बाबा को खाना पकाने की आदत थी और वे सभी भक्तों के बीच उनके आने पर प्रसाद के रूप में इसे वितरित करते थे। बाबा का सबसे अच्छा समय गायन (धार्मिक) और नृत्य में व्यतीत होता था। कई लोग मानते थे कि बाबा एक संत थे और भगवान भी थे। जैसे-जैसे समय बीतता गया शिरडी आने वाले आगंतुकों की संख्या धीरे-धीरे बढ़ती गई।

(समाप्त)

फेसबुक वॉल से

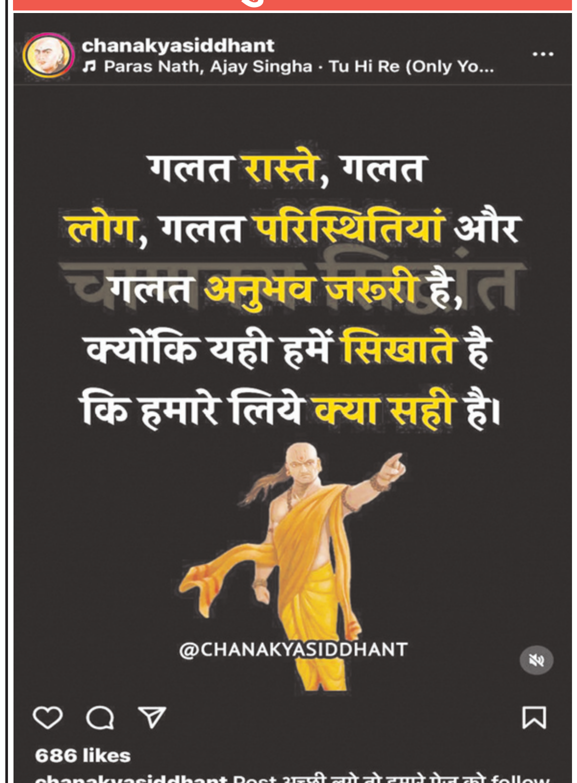

X - से

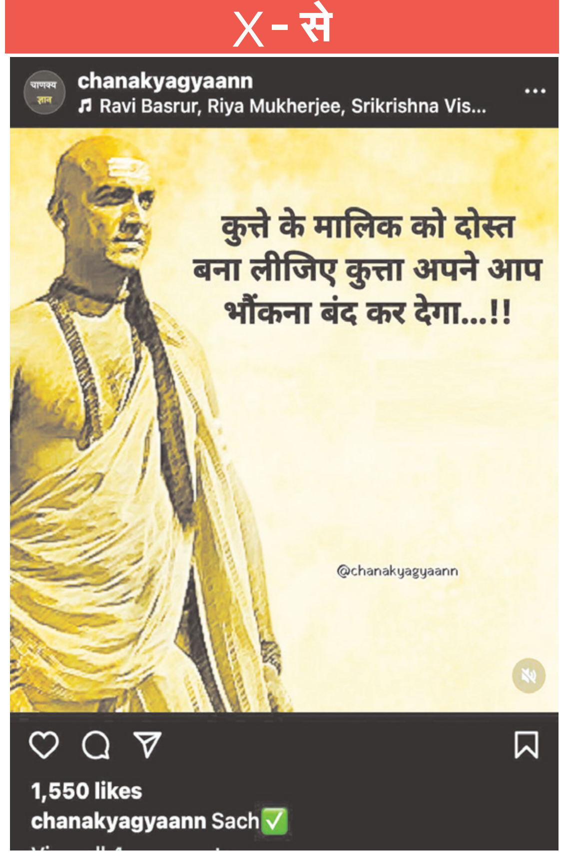

अपने पत्र हमें इमेल कर सकते हैं-article.rnmail@gmail.com

जन अभियान बने पर्यावरण संरक्षण

रमेश सर्राफ धमोरा

पर्यावरण शब्द संस्कृत भाषा के 'परि' उपसर्ग (चारों ओर) और 'आवरण' से मिलकर बना है, जिसका अर्थ है ऐसी चीजों का समुच्चय जो किसी व्यक्ति या जीवधारी को चारों ओर से आवृत्त किये हुए हैं। यह शब्द फ्रांसीसी शब्द एनवायरनर से लिया गया है, जिसका अर्थ है घेरना। पर्यावरण को उस परिवेश या परिस्थितियों के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जिसमें पौधे, जानवर और मनुष्य जैसे जीवित जीव रहते हैं। पर्यावरण की एक सरल परिभाषा में कहा जा सकता है कि मानव जीवन को प्रभावित करने वाले सभी जैविक और अजैविक तत्वों को शामिल करने वाली एक प्रणाली है। जैविक या जीवित घटकों में सभी वनस्पति और जीव शामिल हैं, और अजैविक घटकों में पानी, सूरज की रोशनी, हवा, जलवायु आदि शामिल हैं। हमारी धरती, जनजीवन को सुरक्षित रखने के लिए पर्यावरण का सुरक्षित रहना बहुत जरूरी है। पूरी दुनिया आधुनिकता की ओर बढ़ रही हैं। दुनियाभर में हर दिन ऐसी चीजों का इस्तेमाल बढ़ रहा है जिससे पर्यावरण खतरे में हैं। इंसान और पर्यावरण के बीच गहरा संबंध है। प्रकृति के बिना जीवन संभव नहीं। ऐसे में प्रकृति के साथ इंसानों को तालमेल बिठाना होता है। लेकिन लगातार वातावरण दूषित हो रहा है। जिससे कई तरह की समस्याएं बढ़ रही हैं। जो हमारे जनजीवन को तो प्रभावित कर ही रही हैं। साथ ही कई तरह की प्राकृतिक आपदाओं की भी वजह बन रही हैं। सुखी स्वस्थ जीवन के लिए पर्यावरण का संरक्षण जरूरी है। इसी उद्देश्य से हर साल 5 जून को विश्व पर्यावरण दिवस मनाया जाता है। संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा 1972 में पहली बार विश्व पर्यावरण दिवस मनाया गया था। लेकिन विश्व स्तर पर इसके मनाने की शुरूआत 05 जून 1974 को स्वीडन की राजधानी स्टॉकहोम में हुई थी। जहां 119 देशों की मौजूदगी में पर्यावरण सम्मेलन का आयोजन किया गया था। साथ ही प्रति वर्ष 5 जून को विश्व पर्यावरण दिवस मनाने का निर्णय लिया गया था। इस सम्मेलन में संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम का गठन भी हुआ था। भारत में पर्यावरण संरक्षण अधिनियम भारत की संसद द्वारा 1986 में पारित किया गया था। इसे संविधान के अनुच्छेद 253 के तहत पारित किया गया था। यह 19 नवंबर 1986 को लागू हुआ था। देश में तेजी से हो रहे शहरीकरण के कारण बड़ी मात्रा में कृषि भूमि आबादी की भेंट चढ़ती गई। जिस कारण वहां के पेड़ पौधे काट दिये गये व नदी नालों को बंद कर बड़े-बड़े भवन बना दिए गए। जिससे वहां रहने वाले पशु, पक्षी अन्यत्र चले गए। लेकिन लॉकडाउन ने लोगों को उनके पुराने दिनों की याद दिला दी है। पुराने समय में पर्यावरण को सुरक्षित रखने के लिये पड़ों को देवताओं के समान दर्जा दिया जाता था। ताकि उन्हें कटने से बचाया जा सके। बड़-पीपल जैसे घने छायादार पेड़ों को काटने से रोकने के लिये उनकी देवताओं के रूप में पूजा की जाती रही है। इसी कारण गावों में आज भी लोग बड़ व पीपल का पेड़ नहीं काटते हैं। मनुष्य प्रकृति द्वारा बनाया गया सबसे बुद्धिमान प्राणी माना जाता है। **(ये लेखक के निजी विचार हैं।)**

टेक वर्ल्ड

अब Google Play Store पर मिलेगा यह खास फीचर

गूगल प्ले स्टोर पर आया नया अपडेट यूजर्स को बेहतरीन सुविधा देगा।

न्यू फीचर को कैसे करें इस्तेमाल

-अपने एंड्रॉयड डिवाइस में गूगल प्ले स्टोर ओपन करें। इसके बाद पेज के दाईं तरफ प्रोफाइल आइकन पर क्लिक करें।

- इसके बाद ड्रॉपडाउन मेन्यू में जाकर मैनेज एप्स एंड डिवाइस को चुनें।

- **फिर मैनेज टैब को चुनकर एप्स को देखें।**

- डिवाइस में ऊपर की ओर दाई तरफ दिस डिवाइस के बॉक्स पर चेक करें। डिवाइस को सेलेक्ट करें और जिस एप को हटाना चाहते हैं, उसे चुनें।

- एप को चुनने के बाद ट्रेश आइकन के जरिए जिस एप को रिमूव करना चाहते है, उसे डिवाइस से रिमोटली हटा दें।

जल्द मिलेगा यह फीचर : बता दें कि, गूगल प्ले स्टोर का रिमोटल अनइंस्टाल फीचर अभी तक सभी डिवाइस में उपलब्ध नहीं हुआ है। ऐसे में आने वाले कुछ समय में इस फीचर का फायदा मिल सकता है।

(समाप्त)

स्वामी, परिजात माइनिंग इण्डस्ट्रीज (इण्डिया) प्रा. लि. के लिए प्रकाशक एंव मुद्रक हर्षवर्द्धन बजाज द्वारा इसके पब्लिकेशन डिवीजन, रेड़मा मेदिनीनगर (डालटनगंज), से प्रकाशित एवं एस एच प्रिंटर्स प्राइवेट लिमिटेड (पूर्व में शिवासाईं पब्लिकेशन प्राइवेट लिमिटेड), नियर टेंडर बागीचा पेट्रोल पम्प, रातू, रांची-835222, झारखंड द्वारा मुद्रित. रजिस्ट्रेशन नं. RNI. 61316/94 पोस्टल रजिस्ट्रेशन नं.-13 । प्रधान संपादक : सुरेश बजाज, संपादक : हर्षवर्द्धन बजाज, कार्यकारी संपादक : सुनील सिंह 'बादल', स्थानीय संपादक : राणा अरुण सिंह*, प्रेस कार्यालय : रांची रोड, रेड़मा, मेदिनीनगर, (डालटनगंज) पलामू-822102, फोन नम्बर : 06562-796018, रांची कार्यालय : 502बी, पांचवी मंजिल मंगलमूर्ति हाईट्स, रानी बगान, हरमू रोड, रांची-83001, फोन नं.- 0651-3553943, गढ़वा कार्यालय : मेन रोड, गढ़वा-822114, फोन : 9430164580, लोहरदगा कार्यालय : सरस्वती निवास, तेली धर्मशाला के सामने, कृषि मार्केट, लोहरदगा। - फोन : 7903891779, ई-मेल : news.rnmail@gmail.com, article.rnmail@gmail.com
(*पीआरबी अधिनियम के तहत खबरों के चयन के लिए जिम्मेवार।)

सिंहभूम

सिंहभूम झारखंड के सबसे पुराने जिलों में से एक है। इसमें सरायकेला, चाईबासा, मझगांव, जगन्नाथपुर, मनोहरपुर और चक्रधरपुर विधानसभा सीटें शामिल हैं। यह सीट अनुसूचित जनजाति के लिए आरक्षित है। यह संसदीय क्षेत्र कभी झारखंड पार्टी का गढ़ हुआ करता था। सिंहभूम लोकसभा सीट के लिए पहली बार 1957 में चुनाव हुए थे। 1952 में देश के पहले लोकसभा चुनाव में सिंहभूम लोकसभा सीट शामिल नहीं थी। 1957 में हुए चुनाव में यहां से झारखंड पार्टी ने जीत दर्ज की। शंभू चरण ने 51.80 प्रतिशत मत प्राप्त किया था, जबकि निर्दलीय प्रत्याशी के तौर पर सीढ़ियां हेंब्रम ने 15.7 फीसदी मत प्राप्त किया था।

सिंहभूम लोकसभा सीट का सफरनामा

सिंहभूम लोकसभा सीट 1957-1980

जीते		हारे
शंभू चरण गोडसोरा	1957	सिदिया हेम्ब्रम (निर्दलीय)
हरिचरण सोय	1962	लाखो बोदरा
के बिरजू (निर्दलीय)	1967	एमएल सोय
मोरन सिंह पूर्ति	1971	देवेंद्र नाथ चंपई (निर्दलीय)
बागुन सुंबुई	1977	मोरन सिंह पूर्ति
बागुन सुंबुई	1980	थिओडोर बोदरा

सिंहभूम लोकसभा सीट 1984-1999

जीते		हारे
बागुन सुंबुई	1984	देवेंद्र मांझी (निर्दलीय)
बागुन सुंबुई	1989	मंगल सिंह लमय
कृष्णा मार्डी	1991	विजय सिंह सोय
चित्रसेन सिंकु	1996	विजय सिंह सोय (निर्दलीय)
विजय सिंह सोय	1998	चित्रसेन सिंकु
लक्ष्मण गिलुवा	1999	विजय सिंह सोय

बंटवारे के बाद सिंहभूम लोकसभा सीट

जीते		हारे
बागुन सुंबुई	2004	लक्ष्मण गिलुवा
मधु कोड़ा (निर्दलीय)	2009	बागुन सुंबुई
लक्ष्मण गिलुवा	2014	गीता कोड़ा (निर्दलीय)
गीता कोड़ा	2019	लक्ष्मण गिलुवा

1957 के पहले चुनाव में गोडसोरा जीते

शंभू चरण गोडसोरा
झारखंड पार्टी

1957 के पहले चुनाव में झारखंड पार्टी शंभू चरण गोडसोरा ने जीत दर्ज की। उन्हें 51.80 मत प्राप्त किया था। जून, 1953 में कृषक सचिव, अखिल भारतीय आदिवासी श्रमिक सामाजिक एवं कल्याण संघ, आदिवासी सभा के प्रथम सचिव, सरायकेला राज्य, 1945, 2 वर्षों के लिए सदस्य, सरायकेला राज्य सलाहकार परिषद। सामाजिक गतिविधियां: जमशेदपुर में आदिवासी श्रमिकों के बीच शिक्षा और कल्याण कार्य।

1962 में झारखंड पार्टी ने दर्ज की थी जीत

झारखंड पार्टी
हरिचरण सोय
झारखंड पार्टी

1962 में हुए लोकसभा चुनाव में झारखंड पार्टी ने ही जीत दर्ज की थी, लेकिन इस बार झारखंड पार्टी ने अपने उम्मीदवार को बदल दिया था। इस बार यहां से हरिचरण सोय ने इस सीट पर जीत दर्ज की। उन्हें कुल 29.6 फीसदी मत मिले थे जबकि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के लाखों बोथरा को 26.5 फीसदी मत प्राप्त हुए थे।

1967 में निर्दलीय प्रत्याशी की जीत

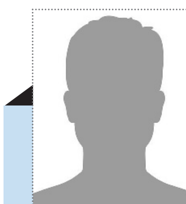

बिरजू
निर्दलीय प्रत्याशी

1967 के लोकसभा चुनाव में यहां से निर्दलीय प्रत्याशी के. बिरजू ने जीत दर्ज की थी। जिन्हें कुल 21.8 फीसदी मत मिले थे, जबकि भारतीय जनसंघ को 19.3, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को 16.7 और संयुक्त सोशलिस्ट पार्टी को 16.5 फीसदी वोट प्राप्त हुए थे।

1971 में फिर जीती झारखंड पार्टी

मोरन सिंह पूर्ति
झारखंड पार्टी

1971 की हुए लोकसभा चुनाव में ऑल इंडिया झारखंड पार्टी ने इस सीट पर जीत दर्ज की थी। इन्हें कुल 38.9 फीसदी वोट प्राप्त हुए थे। यहां से मोरन सिंह पूर्ति ने जीत दर्ज की थी। जबकि निर्दलीय प्रत्याशी के तौर पर देवेंद्र नाथ चैंपियन को 24.3 फीसदी मत प्राप्त हुए थे।

1977 में बागुन सुंबुई जीते

बागुन सुंबुई
झारखंड पार्टी

1977 की लोकसभा चुनाव में यहां से ऑल इंडिया झारखंड पार्टी ने जीत दर्ज की। हालांकि इस बार ऑल इंडिया झारखंड पार्टी ने अपनी उम्मीदवार का बदलाव किया था। बागुन सुंब्रुई को 70 फीसदी मत प्राप्त हुए थे, जबकि इंडियन नेशनल कांग्रेस पार्टी से चुनाव लड़े मोहन सिंह पूर्ति को 13.5 फीसदी मत प्राप्त हुए थे।

1980 में जनता पार्टी ने दर्ज की जीत : 1980 के लोकसभा चुनाव में सिंहभूम से जनता पार्टी की जीत हुई। यहां से बागुन सुंब्रुई ने 31.20 मत प्राप्त कर सीट पर जीत दर्ज की। जबकि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस आई के खाते में 21.4 फीसदी मत मिले थे।

1984 में पहली बार जीती कांग्रेस : 1984 में पहली बार भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने सीट पर जीत दर्ज की। जब उन्होंने बागुन सुंब्रुई को भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस से टिकट दिया। इस बार कांग्रेस को 426 फीसदी मत यहां प्राप्त हुए। जबकि निर्दलीय के तौर पर देवेंद्र मांझी को 17.7 फीसदी, झारखंड मुक्ति मोर्चा को 8.6 फीसदी और भारतीय जनता पार्टी को 8.3 फीसदी मत प्राप्त हुए।

1989 में कांग्रेस ने फिर दर्ज की जीत : 1989 की लोकसभा चुनाव में भी भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने ही यहां से जीत दर्ज की। बागुन सुंब्रुई को 29.3 फीसदी मत प्राप्त हुए थे, जबकि जनता दल को 22.4 झारखंड मुक्ति मोर्चा को 22 फीसदी मत प्राप्त हुए थे।

बंटवारे के बाद कांग्रेस को मिली सिंहभूम सीट : झारखंड बंटवारे के बाद 2004 में हुए पहले लोकसभा चुनाव में सिंहभूम की सीट फिर भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के खाते में चली गई। यहां से बागुन सुंग्रई ने जीत दर्ज की। यहां भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को 42.6 फीसदी वोट मिले। जबकि भारतीय जनता पार्टी के लक्ष्मण गिलुओ को 31.20 मत ही प्राप्त हुए। जबकि आजसू पार्टी को 2004 के लोकसभा चुनाव में कुल 14 फीसदी वोट प्राप्त हुए।

1991 में झामुमो पहली बार जीता

कृष्णा मार्डी
झामुमो

1991 के हुए लोकसभा चुनाव में इस सीट पर झारखंड मुक्ति मोर्चा ने जीत दर्ज की थी। इस सीट से कृष्णा मार्डी ने 35.30 प्रतिशत मत हासिल कर इस सीट पर कब्जा किया था। जबकि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के विजय सिंह सोए कोई 21.8 फीसदी और भारतीय जनता पार्टी को 20 फीसदी मत मिले थे।

1996 में पहली बार जीती भाजपा

चित्रसेन सिंकु
भाजपा

1996 की हुए लोकसभा चुनाव में सिंहभूम सीट से भारतीय जनता पार्टी ने जीत दर्ज की। इस सीट पर चित्रसेन सिंकु ने जीत दर्ज किया। इन्हें कुल 20.1 फीसदी वोट मिले थे। जबकि झामुमो को 12.5 और कांग्रेस को 11.2 फीसदी रिपोर्ट प्राप्त हुए थे।

1998 में कांग्रेस ने किया कब्जा

विजय सिंह सोय
कांग्रेस

1998 की लोकसभा चुनाव में एक बार फिर सिंहभूम सीट पर भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने कब्जा किया। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के विजय सिंह सोय को 35.4 फीसदी वोट मिले। जबकि भारतीय जनता पार्टी को 33.4 फीसदी वोट मिले। झारखंड मुक्ति मोर्चा 23.7 फीसद मत हासिल किए।

1999 में जीते भाजपा के लक्ष्मण गिलुआ

लक्ष्मण गिलुआ
भाजपा

1999 की हुए लोकसभा चुनाव में भारतीय जनता पार्टी ही इस सीट पर जीती। हालांकि इस बार भारतीय जनता पार्टी ने अपने उम्मीदवार को बदला था और लक्ष्मण गिलुआ को इस सीट से मैदान में उतारा था। भारतीय जनता पार्टी को 1999 के चुनाव में कुल 45.9 फीसदी वोट मिले थे, जबकि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को 30.9 और झारखंड मुक्ति मोर्चा को 14.8 फीसदी मत प्राप्त हुए थे।

2014 में लक्ष्मण गिलुआ ने दर्ज की जीत : 2014 में मोदी के लहर का असर सिंहभूम सीट पर भी दिखा और एक बार फिर भारतीय जनता पार्टी ने लक्ष्मण गिलुआ ने जीत हासिल की। इस बार भारतीय जनता पार्टी ने यहां से 38.8 फीसदी मत प्राप्त किया। जबकि जय भारत समता पार्टी की गीता कोड़ा ने 27.1 प्रतिशत मत प्राप्त किया था। हालांकि इससे पहले निर्दलीय उम्मीदवार के तौर पर गीता कोड़ा के पति मधु कोड़ा ने 2009 के लोकसभा चुनाव में सिंहभूम सीट से निर्दलीय उम्मीदवार के तौर पर जीत दर्ज किया था।

पांच बार विधायक रहीं जोबा पहली बार बनीं सिंहभूम से सांसद

रांची । खूंटी के बाद जिस सीट पर बीजेपी को सबसे बड़ा झटका लगा है वह है सिंहभूम सीट। यहां से बीजेपी की प्रत्याशी गीता कोड़ा को हार का सामना करना पड़ा है। उन्हें जेएमएम की प्रत्याशी जोबा मांझी ने मात दी है। जोबा मांझी ने 1,66,983 वोट से जीत दर्ज की है। जोबा को 5,15,989 वोट मिले हैं, जबकि गीता कोड़ा को 3,49,006 लोगों ने अपना वोट दिया है। 14 अक्टूबर 1994 को गोइलकेरा हाट में जब चक्रधरपुर और मनोहरपुर के विधायक रह चुके जल, जंगल व जमीन आंदोलन के प्रणेता देवेंद्र माझी की हत्या हुई थी तो किसी ने नहीं सोचा था कि उनकी पत्नी जोबा माझी न केवल अपने पति के सपनों को साकार करने में सफल होगी, बल्कि राजनीति में स्वयं को स्थापित करते हुए सिंहभूम की आयरन लेडी बन जाएगी। मनोहरपुर विधानसभा क्षेत्र से पांच बार विधायक और छह बार कैबिनेट मंत्री का पद संभालने के बाद अब जोबा माझी सिंहभूम की दूसरी महिला सांसद भी बन गई हैं।

सिंहभूम में पहली बार दो आदिवासी महिलाओं के बीच सीधा मुकाबला था। जिसमें जोबा मांझी ने बाजी मार ली। गीता कोड़ा के कांग्रेस में शामिल होने के बाद कांग्रेस-झामुमो ने काफी मंथन के बाद जोबा मांझी को इंडी गठबंधन का संयुक्त प्रत्याशी घोषित किया था। तब यह माना जा रहा था कि हो आदिवासी बहुल क्षेत्र में संथाली होने का कारण जोबा मांझी को बहुत अधिक समर्थन नहीं मिलेगा, लेकिन जोबा मांझी ने सभी राजनीतिक में विश्लेषकों को गलत साबित कर दिया।

2009 में जीते मधु कोड़ा

मधु कोड़ा
निर्दलीय

2009 के हुए लोकसभा चुनाव में इस सीट से निर्दलीय उम्मीदवार मधु कोड़ा विजयी हुए। जबकि भाजपा ने अपने उम्मीदवार को बदलकर बरकुरवार गागराई को मैदान में उतारा। भाजपा को कुल 28.8 फीसदी मत प्राप्त हुए थे, जबकि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को 16.5 फीसदी वोट मिले थे। मधु कोडा भारत के किसी भी प्रांत में निर्दलीय के रूप में सीएम बनने वाले पहले सीएम हैं। झारखंड के पांचवें सीएम के रूप में 18 सितंबर 2006 को उन्हें दिलाई गयी थी और 27 अगस्त 2008 को इस्तीफा देने तक पद पर बने रहे।

मोदी लहर के बाद भी कांग्रेस की गीता कोड़ा ने दर्ज की जीत

गीता कोड़ा
कांग्रेस

2019 के लोकसभा चुनाव में इस सीट पर भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की गीता कोड़ा ने जीत दर्ज की। गीता कोड़ा को कुल 49.8 फीसदी वोट मिले, जबकि भारतीय जनता पार्टी को 40.9 फीसदी मत प्राप्त हुए। 2024 की तैयारी में एक बार फिर सिंहभूम में राजनीतिक सरगम तेज हुई है। अब देखना है कि जिस तरीके से सिंहभूम में मोदी के लहर मोदी के आसार और उसके बाद भी जनता ने बदलाव का जो जन्म दिया है उसका क्या रंग 2024 में देखने को मिलता है। गीता कोड़ा राज्य के पूर्व सीएम मधू कोड़ा की पत्नी हैं और मधू कोड़ा के जेल जाने के बाद 2009 में राजनीति में कदम रखा और उसी साल अपने चुनाव में निर्दलीय प्रत्याशी के तौर जगन्नाथपुर विधान सभा से चुनाव लड़ी और जीत हासिल की।

सिंहभूम की नवनिर्वाचित सांसद जोबा मांझी जिला निर्वाची पदाधिकारी कुलदीप चौधरी से प्रमाण पत्र लेती हुईं।

राजमहल

राजमहल झारखंड का महत्वपूर्ण लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र है। इस संसदीय क्षेत्र को साहिबगंज और पाकुड़ जिले के कुछ इलाकों को मिलाकर गठित किया गया है। इस लोकसभा क्षेत्र में 6 विधानसभा क्षेत्रों को शामिल किया गया है। यह क्षेत्र राजमहल की पहाड़ियों और गंगा नदी से घिरा हुआ है। भाजपा के लिए राजमहल सीट एक बड़ी चुनौती है, 2014 और 2019 में मोदी लहर भी इस सीट पर पार्टी को जीत नहीं दिला पाई। इस बार यहां से ताला मरांडी उम्मीदवार हैं। देखते हैं 1957 में अब तक किस पार्टी ने यहां से जीत दर्ज की और किस पार्टी का यहां दबदबा रहा है।

राजमहल लोकसभा सीट का सफरनामा

राजमहल लोकसभा सीट 1957-1980

जीते		हारे
पाइका मुर्मू	1957	रॉबर्ट सैम्युल बेसरा
ईश्वर मरांडी	1962	पाइका मुर्मू
ईश्वर मरांडी	1967	रॉबर्ट सैम्युल बेसरा निर्दलीय
ईश्वर मरांडी	1971	जस्टिन रिचर्ड बीपीएचजे
एंथोनी मुर्मू	1977	जोसेफ चंद्र मुर्मू
सेठ हेम्ब्रम	1980	पालू हांसदा

राजमहल लोकसभा सीट 1984-1999

जीते		हारे
सेठ हेम्ब्रम	1984	साइमन मरांडी
साइमन मरांडी	1989	जयकुमार टुडू निर्दलीय
साइमन मरांडी	1991	थामस हांसदा
थामस हांसदा	1996	साइमन मरांडी
सोम मरांडी	1998	थामस हांसदा
थामस हांसदा	1999	सोम मरांडी

बंटवारे के बाद राजमहल लोकसभा सीट

जीते		हारे
हेमलाल मुर्मू	2004	थामस हांसदा
देवीधन बेसरा	2009	हेमलाल मुर्मू
विजय हांसदा	2014	हेमलाल मुर्मू
विजय हांसदा	2019	हेमलाल मुर्मू

1957 में यहां से भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने जीत दर्ज की

पाइका मुर्मू
कांग्रेस

संयुक्त बिहार झारखंड की राजमहल सीट भारतीय लोकतंत्र में लोकसभा के लिए हुए दूसरे लोकसभा चुनाव में अस्तित्व में आई। 1957 में हुए दूसरे लोकसभा चुनाव में इस सीट पर मतदान हुआ और यहां से भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने जीत दर्ज की। 1957 में इस सीट पर हुए पहले लोकसभा चुनाव में पाइका मुर्मू ने जीत हासिल की। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को कुल 47.01 फीसदी मत मिले थे। जबकि झारखंड पार्टी के रॉबर्ट सैम्युल बेसरा को 45.8 फीसदी वोट मिले थे।

1962 में झापा के ईश्वर जीते

ईश्वर मरांडी
झारखंड पार्टी

1962 में हुए दूसरे लोकसभा चुनाव में राजमहल सीट कांग्रेस के हाथ से निकल गई। यहां से झारखंड पार्टी के ईश्वर मरांडी ने जीत दर्ज की। उन्हें कुल 50 फीसदी मत मिले थे। जबकि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को 37.5 फीसदी वोट मत मिले।

1967 लोकसभा चुनावः 1967 के हुए लोकसभा चुनाव में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने 1962 के झारखंड पार्टी के विजेता ईश्वर मरांडी को अपनी पार्टी में लाया और टिकट दिया। जिसके कारण राजमहल सीट से कांग्रेस उम्मीदवार ईश्वर मरांडी ने जीत दर्ज की। ईश्वर मरांडी को कुल 26.6 फीसदी वोट मिले। जबकि स्वतंत्र पार्टी से चुनाव लड़े रामस्वरूप बेसरा को 22.5 फीसदी वोट मिले।

1971 के चुनाव नतीजे : 1971 के लोकसभा चुनाव में फिर से ये सीट भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के पास ही रही। यहां से एक बार फिर ईश्वर मरांडी ने ही जीत दर्ज की। उन्हें 44.4 फीसदी वोट मिले। जबकि बिहार प्रांत हुल झारखंड पार्टी को 28.5 और भारतीय जनसंघ को 15.7 फीसदी मत प्राप्त हुए थे।

1977 में एंथोनी मुर्मू के हाथ लगी बाजी

एंथोनी मुर्मू
भारतीय लोक दल

1977 के हुए लोकसभा चुनाव में कांग्रेस पार्टी ने अपना उम्मीदवार बदला और यह सीट कांग्रेस के हाथ से निकल गई। यहां से कांग्रेस ने योगेश चन्द्र मुर्मू को अपना उम्मीदवार बनाया था। जिन्हें 1977 के लोकसभा चुनाव में हार का सामना करना पड़ा। यहां से भारतीय लोकदल ने अपनी जीत दर्ज की। राजमहल सीट पर 1977 में हुए लोकसभा चुनाव में भारतीय लोकदल के अंथोनी मुर्मू ने जीत दर्ज की। उन्हें कुल 66.3 फीसदी वोट मिले थे। जबकि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को 25.8 फीसदी मत ही प्राप्त हुए थे।

1980 में कांग्रेस के सेठ हेंब्रम जीते

सेठ हेंब्रम
कांग्रेस

1980 के हुए लोकसभा चुनाव में एक बार फिर कांग्रेस पार्टी ने अपने उम्मीदवार को बदला और यहां से जीत हासिल की। इस बार भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने यहां से सेठ हेंब्रम को टिकट दिया। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के को कुल 39.4 फीसदी मत मिले थे। जबकि जनता पार्टी के पालू हांसदा को 21.8 फीसदी वोट मिले थे।

1984 में सेठ हेंब्रम ने दर्ज की जीत : 1984 की हुई लोकसभा चुनाव में इस सीट से एक बार फिर कांग्रेस के सेठ हेंब्रम की ही जीत हुई। उन्हें कुल 48.6 फीसदी वोट मिले। जबकि झारखंड मुक्ति मोर्चा के साइमन मरांडी को 23.8 फीसदी वोट मिले थे।

1989 में झामुमो के साइमन जीते

साइमन मरांडी
झामुमो

1989 को हुए लोकसभा चुनाव में राजमहल सीट पर परिवर्तन हुआ और यहां पर झारखंड मुक्ति मोर्चा के साइमन मरांडी ने जीत दर्ज की। साइमन मरांडी को कुल 56.6 फीसदी मत मिले। जबकि इससे पहले लगातार दो बार सीट पर कब्जा जमाए सेठ हेंब्रम 16.7 फीसदी मत ही प्राप्त कर सके।

1991 में झामुमो ने जीता राजमहल : 1991 में हुए लोकसभा चुनाव में एक बार फिर झारखंड मुक्ति मोर्चा के साइमन मरांडी ने इस सीट पर जीत दर्ज की। साइमन मरांडी को कुल 37.5 फीसदी वोट मिले। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने अपना उम्मीदवार यहां पर बदला था और थॉमस हांसदा को उम्मीदवार बनाया था। हालांकि वे जीत दर्ज नहीं कर सकें, उन्हें सिर्फ 30.6 फीसदी वोट ही प्राप्त हो सके। जबकि भारतीय जनता पार्टी के संतलाल मरांडी को 26.9 फीसदी मत प्राप्त हुए।

1996 में कांग्रेस के थामस जीते

थॉमस हांसदा
कांग्रेस

1996 में हुए लोकसभा चुनाव में फिर से भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने राजमहल सीट पर अपना कब्जा जमाया। यहां से थॉमस हांसदा ने जीत दर्ज की। जबकि झारखंड मुक्ति मोर्चा के साइमन मरांडी को 19.8 फीसदी वोट मिले। वहीं, भारतीय जनता पार्टी को 16.3 फीसदी वोट प्राप्त हुए। यहां जनता दल से लोबिन हेंब्रम भी खड़े थे जिन्हें 15.4 फीसदी वोट प्राप्त हुए।

1998 में भाजपा ने पहली बार जीता राजमहल

सोम मरांडी
भाजपा

1998 की हुई लोकसभा चुनाव में पहली बार भारतीय जनता पार्टी के उम्मीदवार सोम मरांडी ने इस सीट पर जीत दर्ज की। भारतीय जनता पार्टी को कुल 33.4 फीसदी वोट मिले। जबकि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को 33.4 और झारखंड मुक्ति मोर्चा को 25.2 फीसदी मत प्राप्त हुए।

1999 में फिर जीते थामस हांसदा

थामस हांसदा
कांग्रेस

1999 के लोकसभा चुनाव में एक बार फिर राजमहल की सीट पर भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने कब्जा जमाया। यहां थामस हांसदा को कुल 44.4 फीसदी वोट मिले। जबकि भारतीय जनता पार्टी के सोम मरांडी को 33.01 फीसदी मत प्राप्त हुए। वहीं झारखंड मुक्ति मोर्चा के साइमन मरांडी को 20.1 फीसदी मत प्राप्त हुए।

झारखंड बनने के बाद जीते हेमलाल

हेमलाल मुर्मू
झामुमो

झारखंड बंटवारे के बाद 2004 में हुए पहले लोकसभा चुनाव में यह सीट झारखंड मुक्ति मोर्चा के खाते में चली गई। यहां से हेमलाल मुर्मू ने जीत दर्ज की। झारखंड मुक्ति मोर्चा को 32.8 फीसदी जबकि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के थॉमस हांसदा को 32.3 फीसदी वोट प्राप्त हुए थे। जीत का अंतर बहुत कम रहा था। वहीं भारतीय जनता पार्टी के उम्मीदवार सोम मरांडी को 27.8 फीसदी मत प्राप्त हुए थे।

विजय हांसदा ने लगाई जीत की हैट्रिक, जनता को दिया श्रेय

नवीन मेल संवाददाता। पाकुड़। झामुमो ने राजमहल संसदीय सीट पर लगातार तीसरी बार कब्जा किया है। पार्टी प्रत्याशी विजय हांसदा ने राजमहल सीट पर तीसरी बार भारी मतों से जीत दर्ज करते हुए शानदार हैट्रिक लगाई है। उन्होंने अपने प्रतिद्वंद्वी भाजपा के ताला मरांडी को हराया है। पाकुड़ में पत्रकारों से बात करते हुए विजय हांसदा ने कहा कि तीसरी बार राजमहल सीट पर जीत का श्रेय जनता को जाता है। विजय हांसदा को 6 लाख 13 हजार 371 वोट मिले हैं। भाजपा प्रत्याशी ताला मरांडी को 4 लाख 35 हजार 107 मत प्राप्त हुए हैं। झामुमो प्रत्याशी ने 1 लाख 78 हजार 264 मतों से शानदार जीत प्राप्त की है।

अधूरे कार्य को पूरा करूंगा

झामुमो प्रत्याशी सह सांसद विजय हांसदा ने कहा कि इस बार जो भी कार्य अधूरे हैं, वे उसे पूरा करेंगे। सांसद ने कहा कि इसके पूर्व स्वास्थ्य, शिक्षा सहित कई क्षेत्रों में कार्य किए गए और रेल सुविधा बढ़ाने को लेकर संसद में कई बार आवाज उठाई गई। सांसद ने कहा कि आने वाले दिनों में क्षेत्र के विकास का कार्य जो भी अधूरा रह गया है, उसे तत्परता के साथ पूरा किया जाएगा। उन्होंने कल्पना सोरेन को भी जीत पर बधाई दी। बागी विधायक लोबिन हेंब्रम द्वारा लगातार विरोध करने और निर्दलीय चुनाव लड़ने को लेकर सांसद विजय हांसदा ने कहा कि इस खुशी के मौके पर निगेटिव बातें नहीं सोचनी है। इंडी गठबंधन समर्थित झामुमो प्रत्याशी विजय हांसदा मतों की गणना के दौरान सभी राउंड में भारी मतों से आगे रहे। राजमहल संसदीय क्षेत्र के पाकुड़, महेशपुर, लिट्टीपाड़ा, बोरियो, बरहेट और राजमहल विधानसभा क्षेत्र से भी उन्हें लगातार बढ़त मिलती रही। विजय हांसदा की जीत पर मतगणना केंद्र के बाहर झामुमो कार्यकर्ता झूमते और जश्न मनाते नजर आए। दूसरी ओर, भाजपा प्रत्याशी ताला मरांडी की भारी मतों से हार के बाद पार्टी कार्यकताओं में मायूसी देखी गई। भाजपा के टेंट में इस दौरान लगातार सन्नाटा पसरा रहा।

झामुमो प्रत्याशी ने 1 लाख 78 हजार 264 मतों से प्राप्त की शानदार जीत

2009 में भाजपा के देवीधन बेसरा जीते

देवीधन बेसरा
भाजपा

2009 के लोकसभा चुनाव में राजमहल सीट एक बार फिर भाजपा के हाथ में आई। यहां से देवीधन बेसरा ने जीत दर्ज की थी। उन्हें कुल 26.5 फीसदी वोट मिले थे। जबकि झारखंड मुक्ति मोर्चा के हेमलाल मुर्मू को 24.7 और राष्ट्रीय जनता दल के थॉमस हांसदा को 20.2 फीसदी वोट मिले थे।

2014 व 2019 में जीते विजय हांसदा

विजय कु. हांसदा
झामुमो

2014 का लोकसभा चुनाव को मोदी के लहर वाला चुनाव माना जाता है। लेकिन इसके बाद भी राजमहल सीट ने चौंकाने वाले परिणाम दिए। 2009 में राजमहल सीट भारतीय जनता पार्टी के खाते में गई थी, लेकिन 2014 में यह सीट झारखंड मुक्ति मोर्चा के खाते में चली गई, 2014 में राजमहल लोकसभा सीट से विजय कुमार हांसदा चुनाव जीते। झारखंड मुक्ति मोर्चा को इस सीट पर 29.9 फीसदी मत प्राप्त हुए थे।

2019 में भी नहीं हुआ मोदी लहर का असर : झारखंड की राजमहल सीट एक ऐसी सीट है, जिस पर ना तो 2014 में और ना ही 2019 में मोदी के लहर का असर काम आया। 2014 में भी यहां से झारखंड मुक्ति मोर्चा ने जीत दर्ज की थी और 2019 के लोकसभा चुनाव में भी यहां से झारखंड मुक्ति मोर्चा के विजय कुमार हांसदा ने ही जीत दर्ज। 2019 के लोकसभा चुनाव झारखंड मुक्ति मोर्चा के विजय कुमार हांसदा को 48.5 फीसदी जबकि भारतीय जनता पार्टी के हेमलाल मुर्मू को 39 फीसदी मत प्राप्त हुए थे।

गिरिडीह, बोकारो और धनबाद जिले के कुछ हिस्सों को मिला कर गिरिडीह लोकसभा क्षेत्र बनाया गया है। खनिज संपदा से संपन्न यह लोकसभा क्षेत्र काफी खास है। इस सीट पर भाजपा का दबदबा रहा है। यहां से रवींद्र पांडे 5 बार सांसद रहे हैं। हालांकि, पिछली बार गठबंधन के कारण यह सीट आजसू को मिली थी, जहां से चंद्रप्रकाश चौधरी ने जीत हासिल की थी। झारखंड राज्य के गिरिडीह लोकसभा सीट का गठन संयुक्त बिहार में 1957 में हुआ था। यहां दूसरी लोकसभा के लिए देश में हुए चुनाव के दौरान पहली बार लोकसभा चुनाव हुए थे।

गिरिडीह लोकसभा सीट का सफरनामा

गिरिडीह लोकसभा सीट 1957-1980

जीते		हारे	
काजी एसए मतीन (छोटा नागपुर संथाल परगना जनता पार्टी)	1957	नागेश्वर सिन्हा	
बटेश्वर सिंह	1962	चपलेंदु भट्टाचार्य	
इम्तियाज अहमद	1967	एमएस ओबराय	निर्दलीय
चपलेंदु भट्टाचार्य	1971	कृष्ण बल्लभ सहाय	कांग्रेस (ओ)
रामदास सिंह	1977	इम्तियाज अहमद	
बिंदेश्वरी दुबे	1980	रामदास सिंह	

1971 में कांग्रेस ने दर्ज की जीत

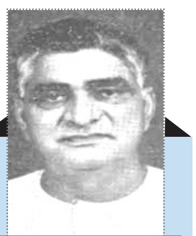
चपलेंदु भट्टाचार्य
कांग्रेस

1971 के लोकसभा चुनाव में एक बार फिर से भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने चपलेंदु भट्टाचार्य को अपना उम्मीदवार बनाया और इस बार भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को 37.8 फीसदी वोट प्राप्त हुए। जबकि इंडियन नेशनल कांग्रेस (ओ) के कृष्ण बल्लभ सहाय को 34.8 फीसदी बोर्ड प्राप्त हुए. वहीं, कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ इंडिया को 17.8 फीसदी मत प्राप्त हुए।

गिरिडीह लोकसभा सीट 1984-1999

जीते		हारे	
सरफराज अहमद	1984	बिनोद बिहारी महतो	निर्दलीय
रामदास सिंह	1989	बिनोद बिहारी महतो	निर्दलीय
बिनोद बिहारी महतो	1991	रामदास सिंह	
रवींद्र कुमार पांडे	1996	सबा अहमद	
रवींद्र कुमार पांडे	1998	राजेंद्र प्रसाद सिंह	

1989 में भाजपा ने पहली बार दर्ज की जीत

रामदास सिंह
भाजपा

1989 के लोकसभा चुनाव में गिरिडीह लोकसभा क्षेत्र से भारतीय जनता पार्टी ने जीत दर्ज की थी। भारतीय जनता पार्टी के रामदास सिंह को 35.2 फीसदी मत प्राप्त हुए थे. वहीं निर्दलीय के तौर पर विनोद बिहारी महतो ने 31.5 फीसदी वोट प्राप्त किए. जबकि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के सरफराज अहमद को 26.9 फीसदी मत प्राप्त हुए।

बंटवारे के बाद गिरिडीह लोकसभा सीट

जीते		हारे
रवींद्र कुमार पांडे	1999	राजेंद्र प्रसाद सिंह
टेक लाल महतो	2004	रवींद्र कुमार पांडे
रवींद्र कुमार पांडे	2009	टेक लाल महतो
रवींद्र कुमार पांडे	2014	जगरनाथ महतो
चंद्र प्रकाश चौधरी	2019	जगरनाथ महतो

1957 में हुआ पहला लोकसभा चुनाव

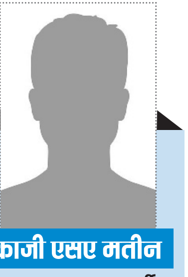
काजी एसए मतीन
परगना जनता पार्टी

1957 में हुए पहले लोकसभा चुनाव में गिरिडीह लोकसभा सीट से छोटा नागपुर संथाल परगना जनता पार्टी काजी एसए मतीन विजय हुए थे। छोटा नागपुर संथाल परगना जनता पार्टी को कुल 51.3 फीसदी वोट मिले थे, जबकि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के नागेश्वर प्रसाद सिंह को 30.9 फीसदी वोट मिले थे। वहीं, कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ इंडिया को 11.4 फीसदी मत प्राप्त हुए थे।

1962 में ठाकुर बटेश्वर सिंह ने दर्ज की जीत

बटेश्वर सिंह
स्वतंत्र पार्टी

1962 में हुए लोकसभा चुनाव में गिरिडीह से स्वतंत्र पार्टी के ठाकुर बटेश्वर सिंह विजयी हुए थे। इन्हें कुल 39.8 फीसदी वोट मिले थे। जबकि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के चपलेंदु भट्टाचार्य को 36.4 फीसदी वोट प्राप्त हुए थे।

1967 में जीते इम्तियाज अहमद

इम्तियाज अहमद
कांग्रेस

1967 के लोकसभा चुनाव में कांग्रेस पार्टी ने अपने उम्मीदवार को बदला और अब्दुल इम्तियाज अहमद को अपना उम्मीदवार बनाया। लोकसभा चुनाव में उन्हें कुल 33 फीसदी मत प्राप्त हुआ और वह सांसद चुने गए। जबकि निर्दलीय प्रत्याशी एम एस ओबराय को 31.02 और भारतीय जन संघ को 17.8 प्रतिशत मत प्राप्त हुए।

1977 में जनता पार्टी के रामदास जीते

रामदास सिंह
जनता पार्टी

1977 के लोकसभा चुनाव में गिरिडीह सीट से जनता पार्टी ने जीत दर्ज की थी। जनता पार्टी के रामदास सिंह को 56.4 फीसदी वोट प्राप्त हुए थे। जबकि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को 29.5 फीसदी वोट प्राप्त हुए।

1980 में कांग्रेस के बिंदेश्वरी दुबे जीते

बिंदेश्वरी दुबे
कांग्रेस

1980 के लोकसभा चुनाव में कांग्रेस पार्टी के कद्दावर नेता और भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के झारखंड बिहार संयुक्त के प्रदेश प्रभारी रहे बिंदेश्वरी प्रसाद दुबे की जीत हुई थी. इन्हें 34.4 फीसदी वोट मिले थे। जबकि जनता पार्टी के रामदास सिंह को 35.9 फीसदी और निर्दलीय के तौर पर चुनाव लड़े विनोद बिहारी महतो को 18.4 फीसदी मत प्राप्त हुए थे।

1984 में सरफराज ने लहराया कांग्रेस का झंडा

सरफराज अहमद
कांग्रेस

1984 में इंदिरा गांधी की हत्या के बाद हुए लोकसभा चुनाव में पूरे देश में सहानुभूति की लहर थी, जिसमें एक बार फिर भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने यहां से जीत दर्ज की, लेकिन इस बार भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने अपनी उम्मीदवार को बदल दिया। बिंदेश्वरी प्रसाद दुबे की जगह यहां से सरफराज अहमद को पार्टी ने टिकट दिया। सरफराज को यहां कुल 51.8 फीसदी मत प्राप्त हुए थे. जबकि निर्दलीय उम्मीदवार विनोद बिहारी महतो को 18.8 और भारतीय जनता पार्टी के रामदास सिंह को 17.4 फीसदी मत प्राप्त हुए।

1991 में बिनोद बिहारी महतो जीते

बिनोद बिहारी महतो
झामुमो

1991 के लोकसभा चुनाव में बिनोद बिहारी महतो झारखंड मुक्ति मोर्चा से चुनाव लड़े। इससे पहले विनोद बिहारी महतो लगातार इस सीट पर निर्दलीय उम्मीदवार के तौर पर चुनाव लड़ रहे थे और दूसरे स्थान पर रहते थे। 1991 में झामुमो ने विनोद बिहारी महतो को अपना उम्मीदवार बनाया और उन्हें कुल 47.2 फीसदी वोट मिले और वे विजयी रहे। वहीं उनके प्रतिद्वंदी भारतीय जनता पार्टी के रामदास सिंह को 31.02 फीसदी मत प्राप्त हुए। वहीं भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के सरफराज अहमद को 15.9 फीसदी वोट प्राप्त हुए।

गिरिडीह से चंद्रप्रकाश चौधरी लगातार दूसरी बार जीते

रांची/रामगढ़। गिरिडीह लोकसभा सीट पर चंद्रप्रकाश चौधरी ने लगातार दूसरी बार जीत हासिल की है। एनडीए के घटक दल आजसू के उम्मीदवार चंद्रप्रकाश झामुमो के मुथुरा महतो को काफी मतों से हराया है। जयराम महतो तीसरे स्थान पर रहे। इधर, रामगढ़ शहर में आजसू नेताओं ने गठबंधन और चंद्र प्रकाश चौधरी की जीत का जश्न एक साथ मनाया। पार्टी कार्यालय के बाहर आजसू नेताओं का जमघट लगा रहा। यहां एक-दूसरे को मिठाई खिलाकर जीत की बधाई दी, फिर आतिशबाजी कर जश्न में शामिल हुए। मौके पर नगर सचिव नीरज मंडल ने कहा कि हजारीबाग लोकसभा में गठबंधन के प्रत्याशी मनीष जायसवाल भारी बहुमत से जीते हैं। गिरीडीह की देव तुल्य जनता ने भी अपना वादा पूरा किया है। चंद्रप्रकाश चौधरी को दूसरी बार लोकसभा से जीता कर सदन में भेजने का काम किया है। नरेंद्र मोदी को पुनः तीसरी बार प्रधानमंत्री बनाने के लिए एनडीए गठबंधन के उम्मीदवार को अपने आशीर्वाद देकर दिल्ली भेजने का कार्य किया है। मौके पर कार्यकारी अध्यक्ष कुलदीप वर्मा, सुरेंद्र दांगी, अजय पांडेय, सतीष कुशवाहा, संकर पासवान, अमर कुमार, संतोष कुशवाहा, सहित कई लोग मौजूद थे।

1996 के बाद पांच बार सांसद बने भाजपा से रवींद्र पांडे

रवींद्र कुमार पांडे
भाजपा

1996 की लोकसभा चुनाव में एक बार फिर भारतीय जनता पार्टी ने जीत दर्ज की। इस बार भारतीय जनता पार्टी ने रवींद्र कुमार पांडे को अपना उम्मीदवार बनाया था. भारतीय जनता पार्टी को 1996 के लोकसभा चुनाव में गिरिडीह लोकसभा सीट से 29.8 प्रतिशत मत प्राप्त हुए थे। जबकि जनता दल को 20.7 फीसदी, झारखंड मुक्ति मोर्चा (एम) को 16.3 और भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को 13.7 फीसदी मत प्राप्त हुए थे।

1998 में रवींद्र पांडे ने दूसरी बार दर्ज की जीत : 1998 के लोकसभा चुनाव में गिरिडीह लोकसभा क्षेत्र से रवींद्र पांडे ने दूसरी बार इस लोकसभा सीट से जीत दर्ज की. भारतीय जनता पार्टी को 1998 में 44.7 फीसदी वोट प्राप्त हुए थे। जबकि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के राजेंद्र प्रसाद सिंह को 34 फीसदी मत प्राप्त हुए थे।

1999 में बीजेपी ने फिर हासिल की जीत : 1999 में भी लोकसभा उप चुनाव में फिर से भारतीय जनता पार्टी ने इस सीट पर जीत दर्ज किया था भारतीय जनता पार्टी को 1999 में कुल 46 फीसदी मत प्राप्त हुए. जबकि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को 42.3 फीसदी मत प्राप्त हुए।

2009 में बीजेपी ने फिर हासिल की जीत: 2009 में हुए लोकसभा चुनाव में एक बार फिर भारतीय जनता पार्टी ने गिरिडीह सीट पर अपना कब्जा किया और रवींद्र कुमार पांडे भारतीय जनता पार्टी के एक बार फिर इस सीट से विजयी हुए। रवींद्र कुमार पांडे को 37.7 फीसदी मत प्राप्त हुए, जबकि झारखंड मुक्ति मोर्चा को 24 फीसदी और झारखंड विकास मोर्चा प्रजातांत्रिक को 20.5 फीसदी वोट प्राप्त हुए।

2014 में मोदी लहर का असर : 2014 के लोकसभा चुनाव में इस सीट पर फिर रवींद्र कुमार पांडे भारतीय जनता पार्टी से विजयी हुए। इस बार रविंद्र कुमार पांडे को कुल 40.4 फीसदी वोट प्राप्त हुए थे। जबकि झारखंड मुक्ति मोर्चा के जगन्नाथ महतो को 36.02 फीसदी वोट प्राप्त हुए थे। झारखंड विकास मोर्चा प्रजातांत्रिक के सभा अहमद को 5.9 फीसदी वोट प्राप्त हुए थे. जबकि आजू पार्टी के उमेश चंद्र मेहता को 5.7 फीसदी वोट प्राप्त हुए। 2017 के लोकसभा चुनाव के समय गठबंधन की मजबूरी को देखते हुए भाजपा ने यह सीट आजसू पार्टी को दे दिया। आजसू के टिकट पर यहां से चंद्र प्रकाश चौधरी ने जीत हासिल की।

अलग राज्य बनने के बाद 2004 में जीते झामुमो के टेकलाल महतो

टेकलाल महतो
झामुमो

झारखंड अलग राज्य बनने के बाद झामुमो का इस सीट पर कब्जा : झारखंड बंटवारे के बाद पहली बार 2004 के लोकसभा चुनाव में गिरिडीह की लोकसभा सीट भारतीय जनता पार्टी के हाथ से निकल गई। इससे पहले लगातार तीन बार इस लोकसभा सीट पर भाजपा ने कब्जा जमाया था, लेकिन 2004 के लोकसभा चुनाव में इस सीट से झारखंड मुक्ति मोर्चा के टेकलाल महतो ने जीत दर्ज की। इन्हें कुल 49 फीसदी मत प्राप्त हुए। जबकि भारतीय जनता पार्टी के रविंद्र कुमार पांडे को 28.5 फीसदी और जनता दल यूनाइटेड के इंद्रदेव महतो को 11.4 फीसदी मत प्राप्त हुए थे।

2019 में आजसू ने दर्ज की जीत

चंद्र प्रकाश चौधरी
आजसू

2019 की हुए लोकसभा चुनाव में गिरिडीह सीट पर भारतीय जनता पार्टी और जो झारखंड स्टूडेंट यूनियन के बीच सीटों का समझौता हुआ था. जिसके तहत यह सीट आरजू के पास चली गई. आजसू पार्टी के चंद्र प्रकाश चौधरी ने गिरिडीह सीट से 2019 में जीत हासिल की. इन्हें कुल 58.6 फीसदी मत प्राप्त हुए. जबकि झारखंड मुक्ति मोर्चा के जगन्नाथ महतो को 36.01 फीसदी वोट प्राप्त हुए थे।

दुमका

दुमका लोकसभा क्षेत्र हमेशा से राजनीति का गढ़ रहा है। 1957 से 2024 तक यहां 17 बार चुनाव हुए हैं। यह संताल परगना में राजनीति का केंद्र है। झामुमो का पारंपरिक सीट माना जाता है दुमका लोकसभा क्षेत्र। यहां से शिबू सोरेन ने आठ बार जीत हासिल की है। वैसे, वर्ष 2019 के आम चुनाव में उन्हें भाजपा उम्मीदवार सुनील सोरेन से पराजय का सामना करना पड़ा था। दुमका आदिवासी बहुल इलाका है। करीब 40 फीसदी आबादी आदिवासियों की है। यहां करीब 93 फीसदी लोग गांवों में रहते हैं। इस क्षेत्र में करीब 12 प्रतिशत मुस्लिम आबादी भी है। दुमका लोकसभा क्षेत्र में शिकारीपाड़ा, दुमका, जामताड़ा, जामा, नाला और सारठ विधानसभा क्षेत्र आते हैं।

दुमका लोकसभा सीट का सफरनामा

दुमका लोकसभा सीट 1957-1980

जीते		हारे
सुरेश चंद्र चौधरी	1957	भागवत झा आजाद
सत्य चंद्र बेसरा	1962	देवी सोरेन
सत्य चंद्र बेसरा	1967	बी मरांडी
सत्य चंद्र बेसरा	1971	शत्रुघ्न बेसरा
बटेश्वर हेम्ब्रम	1977	पृथ्वीचंद किस्कू
शिबू सोरेन	1980	पृथ्वीचंद किस्कू

दुमका लोकसभा सीट 1984-1999

जीते		हारे
पृथ्वी चंद किस्कू	1984	शिबू सोरेन
शिबू सोरेन	1989	पृथ्वी चंद किस्कू
शिबू सोरेन	1991	बाबूलाल मरांडी
शिबू सोरेन	1996	बाबूलाल मरांडी
बाबूलाल मरांडी	1998	शिबू सोरेन
बाबूलाल मरांडी	1999	रूपी सोरेन किस्कू

बंटवारे के बाद दुमका लोकसभा सीट

जीते		हारे
शिबू सोरेन	2004	सोने लाल हेंब्रम
शिबू सोरेन	2009	सुनील सोरेन
शिबू सोरेन	2014	सुनील सोरेन
सुनील सोरेन	2019	शिबू सोरेन

लोस सीट पर 1957 के चुनाव का हाल

सुरेश चंद्र चौधरी
झारखंड पार्टी

1957 के चुनाव में दुमका पहली बार संसदीय सीट बना। दुमका संसदीय सीट से जेनरल कैटेगरी से पहले सांसद सुरेश चंद्र चौधरी (झारखंड पार्टी) बने। एसटी से देवी सोरेन (झारखंड पार्टी) ने चुनाव जीता। वर्ष 1957 में दुमका में एक जेनरल और एक एसटी के सांसद की सीट बनी हुई थी। बाद में दुमका एसटी के लिए रिजर्व लोकसभा क्षेत्र बना। दुमका के पहले चुनाव में जेएचपी या झारखंड पार्टी से सुरेशचंद्र चौधरी ने कांग्रेस के भागवत झा आजाद को 52,116 वोटों से हराया और सांसद बने। वहीं, एसटी सांसद के रूप में जेएचपी या झारखंड की देवी सोरेन ने कांग्रेस के लाल हेंब्रम को 45,715 वोटों से पराजित किया था।

1962 से 1977 तक सत्य चंद्र बेसरा

सत्य चंद्र बेसरा
कांग्रेस

सत्य चंद्र बेसरा ने 1962 से 1977 तक लोकसभा में दुमका प्रतिनिधित्व किया। वे लगातार तीन बार भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के टिकट पर लोकसभा के लिए चुने गए। उनका जन्म 7 अप्रैल 1923 को संताल परगना के काशीतरन में हुआ था। उनकी पत्नी का नाम चुमु टुडू था। वे जामताड़ा के कासीतार में रहते थे। बेसरा की मृत्यु 1982 में हुई थी।

1977 से 1980 तक बटेश्वर हेम्ब्रम

बटेश्वर हेम्ब्रम
जनता पार्टी

बटेश्वर हेम्ब्रम 1977 से 1980 तक लोकसभा के सदस्य रहे। उन्होंने जनता पार्टी के सदस्य के रूप में भारत की संसद के निचले सदन लोकसभा में दुमका का प्रतिनिधित्व किया। उनका जन्म 30 अप्रैल 1931 को हुआ था। 13 अक्टूबर 2018 को उनका निधन हो गया।

1980-84, 1989-98 और 2002-19 तक शिबू

शिबू सोरेन
झारखंड मुक्ति मोर्चा

दिशोम गुरु शिबू सोरेन 1980 से 1984, 1989 से 1998 और 2002 से 2019 तक लोकसभा के सदस्य रहे। दुमका लोकसभा क्षेत्र से शिबू सोरेन 11 बार चुनाव लड़ चुके हैं, जिसमें उन्हें सिर्फ तीन बार हार का सामना करना पड़ा है। वे झारखंड मुक्ति मोर्चा (जेएमएम) के नेता है। वे वर्तमान में झारखंड से राज्यसभा के सदस्य हैं। वे झारखंड के तीसरे मुख्यमंत्री रह चुके हैं। पहली बार 2005 में 10 दिनों के लिए (2 मार्च से 12 मार्च तक), फिर 2008 से 2009 तक और फिर 2009 से 2010 तक झारखंड के मुख्यमंत्री रहे हैं। वे केंद्रीय मंत्रिमंडल में कोयला मंत्री भी रहे हैं। शिबू सोरेन का जन्म रामगढ़ जिले के नेमरा गांव में 11 जनवरी 1944 को हुआ था, जो उस समय भारत के बिहार राज्य में था। वे संथाल जनजाति से हैं। शिबू ने अपनी स्कूली शिक्षा उसी जिले में पूरी की। स्कूली शिक्षा के दौरान ही उनके पिता की हत्या साहूकारों द्वारा नियुक्त गुंडों ने कर दी थी। 18 वर्ष की आयु में उन्होंने संथाल नवयुवक संघ का गठन किया। 1972 में बंगाली मैक्सिस्ट ट्रेड यूनियन नेता एके रॉय, कुर्मी-महतो नेता बिनोद बिहारी महतो और संथाल नेता शिबू सोरेन ने झारखंड मुक्ति मोर्चा का गठन किया। सोरेन झामुमो के महासचिव बने। झामुमो ने अलग-थलग कर दी गई आदिवासी जमीन को पुनः प्राप्त करने के लिए आंदोलन किया। वे 1977 में अपना पहला लोकसभा चुनाव हार गए थे। वे पहली बार 1980 में दुमका से लोकसभा के लिए चुने गए थे। इसके बाद वे 1989, 1991 और 1996 में भी लोकसभा के लिए चुने गए। 2002 में वे राज्यसभा के लिए चुने गए। उन्होंने उसी साल दुमका लोकसभा सीट पर हुए उपचुनाव में जीत हासिल की और अपनी राज्यसभा सीट से इस्तीफा दे दिया। वे 2004 में फिर से चुने गए। वे मनमोहन सिंह सरकार में केंद्रीय कोयला मंत्री बने, लेकिन तीस साल पुराने चिरुडीह मामले में उनके नाम पर गिरफ्तारी वारंट के बाद उन्हें इस्तीफा देने के लिए कहा गया। वह 69 आरोपियों में से एक मुख्य आरोपी थे, जिन पर 23 जनवरी 1975 को आदिवासियों और मुसलमानों के बीच झड़प में 10 लोगों (9 मुसलमानों सहित) की हत्या का आरोप था। वारंट जारी होने के बाद, वह शुरू में भूमिगत हो गया। उन्होंने 24 जुलाई 2004 को इस्तीफा दे दिया। 8 सितंबर को जमानत पर रिहा होने के बाद, उन्हें केंद्रीय मंत्रिमंडल में फिर से शामिल किया गया और 27 नवंबर 2004 को कोयला मंत्रालय वापस दे दिया गया। 2 मार्च 2005 को, उन्हें राज्यपाल द्वारा झारखंड में सरकार बनाने के लिए आमंत्रित किया गया। विधानसभा में विश्वास मत प्राप्त करने में विफल रहने के बाद, उन्होंने नौ दिन बाद, 11 मार्च को मुख्यमंत्री पद से इस्तीफा दे दिया। 2019 के लोकसभा चुनावों में वे दुमका निर्वाचन क्षेत्र से भाजपा के सुनील सोरेन से हार गए।

1984 से 1989 तक पृथ्वी चंद किस्कू

पृथ्वी चंद किस्कू
कांग्रेस

पृथ्वी चंद किस्कू 1984 से 1989 तक लोकसभा के सदस्य रहे। वे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के सदस्य के रूप में लोकसभा में दुमका का प्रतिनिधित्व करने वाले संसद सदस्य थे। उनका जन्म 27 फरवरी 1927 को गोड्डा जिला के अमरपुर गांव में हुआ था। उनकी मृत्यु 18 मई 2011 को गोड्डा में पैतृक गांव में हुई थी।

झामुमो प्रत्याशी नलिन सोरेन ने सीता सोरेन को हराया

दुमका। दुमका लोकसभा सीट से झामुमो प्रत्याशी नलिन सोरेन ने जीत दर्ज की है। उन्होंने अपने निकटत प्रतिद्वंद्वी भारतीय जनता पार्टी की प्रत्याशी सीता सोरेन को 20 हजार से अधिक मतों से हरा दिया। जीत दर्ज करने के बाद नलिन सोरेन ने खुशी जताते हुए कहा कि यह दुमका लोकसभा क्षेत्र की जनता और कार्यकताओं की जीत है। जीत के बाद नलिन सोरेन ने कहा कि वे जनता के सुख-दुख में हमेशा उनके साथ रहेंगे। कहा, मैं जनता के सुख-दुख में हमेशा से साथ रहा हूं, और आगे भी उनके साथ ही रहूंगा। ज्ञात हो कि नलिन सोरेन दुमका जिले के शिकारीपाड़ा विधानसभा क्षेत्र से लगातार सात बार के विधायक हैं। इस बार पार्टी ने उन्हें एमपी का टिकट दिया और उन्होंने जीत हासिल कर साबित किया कि फैसला सही था। नलिन सोरेन ने दुमका लोकसभा सीट से चुनाव में जीत दर्ज करने के बाद कहा कि युवाओं को रोजगार उपलब्ध कराना और किसानों के लिए सिंचाई की बेहतर व्यवस्था करना उनकी प्राथमिकता होगी। उन्होंने कहा, मैं शिकारीपाड़ा से लगातार सात बार विधायक रहा हूं। जनता हमेशा मेरे साथ रही और मैं जनता के साथ रहा। यह सिलसिला आगे भी जारी रहेगा।

खुशी से झूमने लगे कार्यकर्ता

इंडी गठबंधन से झामुमो प्रत्याशी नलिन सोरेन की जीत के बाद गठबंधन और झामुमो कार्यकताओं में खुशी की लहर दौड़ गई। मतगणना केंद्र पर जीत की घोषणा होते ही जेएमएम कार्यकर्ता खुशी से झूमने लगे। उन्होंने एक-दूसरे को अबीर-गुलाल लगाकर और मिठाई खिलाकर खुशी का इजहार किया। साथ ही, जीत के अवसर पर आतिशबाजी भी की गई।

दुमका लोकसभा क्षेत्र से दो बार सांसद चुने गए बाबूलाल मरांडी

बाबूलाल मरांडी
भारतीय जनता पार्टी

1991 के लोकसभा चुनाव में विनोद बिहारी महतो झारखंड मुक्ति मोर्चा से चुनाव लड़े. इससे पहले विनोद बिहारी महतो लगातार इस सीट पर निर्दलीय उम्मीदवार के तौर पर चुनाव लड़ रहे थे और दूसरे स्थान पर रहते थे. इस बार झारखंड मुक्ति मोर्चा ने 1991 में विनोद बिहारी महतो को अपना उम्मीदवार बनाया और उन्हें कुल 47.2 फीसदी वोट मिले. जबकि उनके प्रतिद्वंदी भारतीय जनता पार्टी के रामदास सिंह को 31.02 फीसदी मत प्राप्त हुए. वहीं भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के सरफराज अहमद को 15.9 फीसदी वोट प्राप्त हुए। बाबूलाल मरांडी 1998 से 2002 तक दुमका लोकसभा क्षेत्र से सांसद रहे। वे 2004 से 2014 तक कोडरमा लोकसभा क्षेत्र से सांसद चुने गए। मरांडी 1998 से 2000 तक भाजपा के नेतृत्व वाली केंद्र की राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन सरकार में पर्यावरण एवं वन राज्य मंत्री थे। बाबूलाल मरांडी झारखंड के पहले मुख्यमंत्री बने। वे वर्तमान में झारखंड विधानसभा के सदस्य हैं। वह झारखंड विकास मोर्चा (प्रजातांत्रिक) के संस्थापक और राष्ट्रीय अध्यक्ष थे। बाबूलाल मरांडी का जन्म 11 जनवरी 1958 को गिरिडीह जिले के कोदाईबांक गांव में हुआ था। इनके पिता का नाम छोटे लाल मरांडी तथा माता का नाम मीना मुर्मू है। बाबूलाल ने रांची विश्वविद्यालय से भूगोल में स्नातकोत्तर किया। कॉलेज में पढ़ाई के दौरान मरांडी राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से जुड़ गए। संघ से पूरी तरह जुड़ने से पहले मरांडी ने गांव के स्कूल में कुछ सालों तक कार्य किया। इसके बाद वे संघ परिवार से जुड़ गए। उन्हें झारखंड क्षेत्र के विश्व हिंदू परिषद का संगठन सचिव बनाया गया। 1989 में इनकी शादी शान्ति देवी से हुई। एक बेटा भी हुआ अनूप मरांडी, जिसकी 27 अक्टूबर 2007 को झारखंड के गिरिडीह क्षेत्र में हुए नक्सली हमले में मौत हो गई। 1991 में मरांडी भाजपा के टिकट पर दुमका लोकसभा सीट से चुनाव लड़े, लेकिन हार गए। 1996 में वे फिर शिबू सोरेन से पराजित हो गए। इसके बाद भाजपा ने 1998 में उन्हें विधानसभा चुनाव के दौरान झारखंड भाजपा का अध्यक्ष बनाया। पार्टी ने उनके नेतृत्व में झारखण्ड क्षेत्र की 14 लोकसभा सीटों में से 12 पर कब्जा किया।1998 के चुनाव में उन्होंने शिबू शोरेन को संताल से हराकर चुनाव जीता था, जिसके बाद एनडीए की सरकार में बिहार के 4 सांसदों को कैबिनेट में जगह दी गई। इनमें से एक बाबूलाल मरांडी थे। बाबूलाल ने झारखंड में एनडीए को विस्तार दिया। वर्ष 2004 के लोकसभा चुनाव में उन्होंने कोडरमा सीट से चुनाव जीता, जबकि भाजपा के अन्य उम्मीदवार हार गए थे। मरांडी ने वर्ष 2006 में कोडरमा सीट सहित भाजपा की सदस्यता से भी इस्तीफा देकर 'झारखंड विकास मोर्चा' नाम से नई पार्टी बनाई। भाजपा के पांच विधायक भी पार्टी छोड़कर बाबूलाल के साथ चले गए। वर्ष 2009 के लोकसभा चुनाव में उन्होंने अपनी पार्टी की ओर से कोडरमा सीट से चुनाव लड़कर बड़ी जीत हासिल की। वर्ष 2019 में धनवार विधानसभा क्षेत्र से झारखंड विकास मोर्चा (जेवीएम) से चुनाव लड़ा और बड़ी जीत हासिल की। इसके बाद बाबूलाल मरांडी ने अपनी जेवीएम पार्टी को भारतीय जनता पार्टी में विलय कर भाजपा में घर वापसी कर ली।

2019 से 2024 तक सुनील सोरेन

सुनील सोरेन
भाजपा

सुनील सोरेन वर्ष 2019 से लोकसभा सदस्य हैं। उन्होंने भारतीय जनता पार्टी के टिकट पर चुनाव लड़ा था। वर्ष 2019 में उन्होंने दुमका लोकसभा क्षेत्र से झामुमो प्रमुख शिबू सोरेन को हराया था। सोरेन दुमका जिले के जामा विधानसभा क्षेत्र से वर्ष 2005 से 2009 तक झारखंड विधानसभा के सदस्य भी रहे हैं। सुनील सोरेन का जन्म जामा प्रखंड के तरबंधा गाव में 6 अप्रैल 1972 को हुआ था। उनका जन्म अत्यंत साधारण परिवार में हुआ था। उनके पिता स्व. सुफल सोरेन स्वास्थ्य विभाग में काम करते थे। इनकी मां का नाम पाकू मरांडी है।

देश की कोयला राजधानी और काले हीरे का गढ़ धनबाद हमेशा से राजनीति का केंद्र रहा है। आर्थिक रूप से समृद्ध और राजनीतिक विवादों को काफी हद तक जगह देने वाला धनबाद अपने अनोखे काले सोने के रंग के लिए जाना जाता है। जानिए इस सीट पर 1957 से अब तक कौन जीता कौन हारा। देश में पहला आम चुनाव 1952 में हुआ था। लेकिन तब धनबाद लोकसभा सीट अस्तित्व में नहीं था। धनबाद लोकसभा सीट का गठन 1957 में हुआ था। धनबाद की राजनीति काफी हद तक दो राजनीतिक दलों तक ही सीमित रही है। यहां 16 बार लोकसभा चुनाव हुए, जिनमें अब तक 10 सांसद चुने जा चुके हैं। धनबाद की जनता ने कई बार अपने सांसद पर भरोसा जताया है।

धनबाद लोकसभा सीट का सफरनामा

धनबाद लोकसभा सीट 1957-1980

जीते	वर्ष	हारे
डीसी मलिक	1957	कनाई लाल पाल
पीआर चक्रवर्ती	1962	सच्चिदानंद त्रिगुणाईत (निर्दलीय)
ललिता राज लक्ष्मी (निर्दलीय)	1967	एपी शर्मा
आरएन शर्मा	1971	विनोद बिहारी महतो
एके रॉय (निर्दलीय)	1977	आरएन शर्मा
एके रॉय (निर्दलीय)	1980	योगेश्वर प्रसाद

धनबाद लोकसभा सीट 1984-1999

जीते	वर्ष	हारे
शंकर दयाल सिंह	1984	ए के रॉय (निर्दलीय)
ए के रॉय	1989	समरेश सिंह
रीता वर्मा	1991	ए के रॉय
रीता वर्मा	1996	समरेश सिंह
रीता वर्मा	1998	ए के रॉय
रीता वर्मा	1999	ए के रॉय

बंटवारे के बाद धनबाद लोकसभा सीट

जीते	वर्ष	हारे
चंद्रशेखर दुबे	2004	रीता वर्मा
पशुपति नाथ सिंह	2009	चंद्रशेखर दुबे
पशुपति नाथ सिंह	2014	अजय कुमार दुबे
पशुपति नाथ सिंह	2019	कीर्ति आजाद

1957 में हुआ था पहली बार चुनाव

प्रभात चंद्र बोस
कांग्रेस

1957 में धनबाद सीट पर हुए पहले लोकसभा चुनाव में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के उम्मीदवार प्रभात चंद्र बोस ने इस सीट से जीत हासिल की थी। उन्हें कुल 48.5 फीसदी वोट मिले, जबकि भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी को 20.4 फीसदी वोट, प्रजा सोशलिस्ट पार्टी को 19.4 फीसदी जबकि झारखंड पार्टी को 12.2 फीसदी वोट मिले।

1962 में भी कांग्रेस को जीत मिली

पीआर चक्रवर्ती
कांग्रेस

1962 के चुनाव की बात करें तो 1962 में भी भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने यहां जीत हासिल की, लेकिन इस बार इस सीट पर कांग्रेस ने अपना उम्मीदवार बदल दिया और पीआर चक्रवर्ती को टिकट दिया, जिन्होंने 36.3 प्रतिशत वोटों के साथ जीत हासिल की।

1967 में जन क्रांति दल जीता

ललिता राज लक्ष्मी
जन क्रांति दल

1967 के चुनाव में जन क्रांति दल ने यहां से चुनाव जीता था और उसके उम्मीदवार एलआर लक्ष्मी कुल 34.1 फीसदी वोट पाकर धनबाद के सांसद बने, जबकि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को 24.5 फीसदी वोट मिले थे। हालांकि, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने भी यहां से अपना उम्मीदवार बदला था और आनंद प्रकाश शर्मा को यहां से मैदान में उतारा गया था।

1971 में कांग्रेस पार्टी जीती

रामनारायण शर्मा
कांग्रेस

1971 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने फिर से इस सीट पर जीत हासिल की। रामनारायण शर्मा भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के उम्मीदवार थे और उन्होंने 45 प्रतिशत वोट पाकर इस सीट पर कब्जा जमाया था। जबकि मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी के विनोद बिहारी महतो को 15.3 फीसदी वोट मिले थे।

1977 में निर्दलीय प्रत्याशी जीते

एके रॉय
निर्दलीय

1977 के चुनाव में यहां से निर्दलीय उम्मीदवार एके रॉय ने जीत हासिल की, उन्हें 67 फीसदी वोट मिले। जबकि इंडियन नेशनल कांग्रेस के राम नारायण शर्मा को 20.8 फीसदी वोट मिले। भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी को 5.8 फीसदी वोट मिले थे।

1980 में फिर निर्दलीय उम्मीदवार की जीत : 1980 के चुनाव में एक बार फिर यहां से निर्दलीय उम्मीदवार एके रॉय ने जीत हासिल की। इस बार उन्हें 35.6 फीसदी वोट मिले। हालांकि, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने एक बार फिर यहां अपना उम्मीदवार बदला और योगेश्वर प्रसाद योगेश को अपना उम्मीदवार बनाया। उन्हें 29.8 फीसदी वोट मिले। जबकि जनता पार्टी को 19.3 फीसदी वोट मिले थे।

1989 में सीपीआई की जीत : 1989 के लोकसभा चुनाव में मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी की ओर से एके रॉय को उम्मीदवार बनाया गया और उन्होंने 38 फीसदी वोट पाकर जीत हासिल की। इस बार भारतीय जनता पार्टी दूसरे स्थान पर रही। इस बार समरेश सिंह को भारतीय जनता पार्टी ने टिकट दिया था। जिन्हें 35.9 फीसदी वोट मिले। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को 18.3 फीसदी वोट मिले थे।

1984 में कांग्रेस जीती

शंकर दयाल सिंह
कांग्रेस

1984 के चुनाव में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने एक बार फिर इस सीट पर वापस जीत हासिल की। उसके उम्मीदवार शंकर दयाल सिंह ने इस सीट पर जीत हासिल की। इस बार भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को 40.5 फीसदी वोट मिले। जबकि निर्दलीय उम्मीदवार एके रॉय को 28.5 वोट मिले थे। भारतीय जनता पार्टी को 14 फीसदी वोट मिले थे।

1991 में पहली बार जीती बीजेपी

रीता वर्मा
भाजपा

1991 में हुए चुनाव में यहां से भारतीय जनता पार्टी की रीता वर्मा ने जीत हासिल की थी। रीता वर्मा को 43.4 फीसदी वोट मिले जबकि मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी के एके रॉय को 29 फीसदी वोट मिले। झारखंड मुक्ति मोर्चा को 10.3 फीसदी वोट मिले थे।

1996 में बीजेपी ने फिर हासिल की जीत : 1996 के चुनाव में भी भारतीय जनता पार्टी की रीता वर्मा ने यहां से जीत हासिल की थी जबकि समरेश सिंह ने जनता दल से चुनाव लड़ा था। उन्हें 30.2 फीसदी वोट मिले थे।

1998 में तीसरी बार जीती बीजेपी : 1998 के चुनाव में भारतीय जनता पार्टी ने फिर से इस सीट पर जीत हासिल की। भारतीय जनता पार्टी की रीता वर्मा को कुल 49.9 फीसदी वोट मिले थे। वहीं मोस्ट कोऑर्डिनेशन से एके रॉय चुनाव लड़े थे, जिन्हें कुल 29.8 फीसदी वोट मिले थे। राष्ट्रीय जनता दल को 16.6 फीसदी वोट मिले।

1999 में बीजेपी ने लगाया जीत का चौका : 1999 के लोकसभा चुनाव की बात करें तो भारतीय जनता पार्टी की रीता वर्मा ने फिर से जीत हासिल की। उन्हें 47.5 फीसदी वोट मिले। मिस्ट कोऑर्डिनेशन के एके रॉय को 45.6 फीसदी वोट मिले, जबकि झारखंड मुक्ति मोर्चा को सिर्फ 2.4 फीसदी वोट मिले।

बंटवारे के बाद हारी भाजपा

चन्द्रशेखर दुबे
कांग्रेस

झारखंड विभाजन के बाद 2004 में हुए पहले चुनाव में लगातार तीन बार से जीतती आ रही बीजेपी को अपनी सीट गंवानी पड़ी और यहां से भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के टिकट पर चन्द्रशेखर दुबे ने जीत हासिल की। कांग्रेस को 37.8 फीसदी वोट मिले जबकि भारतीय जनता पार्टी की रीता वर्मा को 25.5 फीसदी वोट मिले।

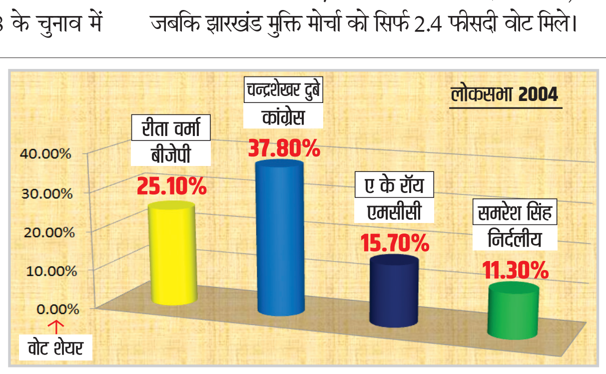

तमाम विरोधों के बाद भी ढुल्लू ने दर्ज की शानदार जीत

धनबाद लोकसभा सीट से भाजपा प्रत्याशी ढुल्लू महतो ने 313501 मतों से जीत हासिल की। भाजपा प्रत्याशी ने कांग्रेस प्रत्याशी अनुपमा सिंह को 3,13,501 मतों के अंतर से हराया। जीत के बाद ढुल्लू महतो को निवार्ची पदाधिकारी सह उपायुक्त माधवी मिश्रा ने प्रमाण पत्र सौंपा। ढुल्लू महतो पहली बार सांसद निर्वाचित घोषित किए गए हैं। वे अभी बाघमारा विधानसभा से भाजपा के विधायक हैं। भाजपा ने धनबाद के सीटिंग सांसद पीएन सिंह का टिकट काट कर उन्हें मैदान में उतारा था। जबकि कांग्रेस ने बेरमो विधायक अनूप सिंह की पत्नी अनुपमा सिंह को टिकट दिया था। ढुल्लू महतो पर दर्जनों अपराधिक मुकदमें होने के कारण टिकट दिए जाने को लेकर काफी विवाद भी बढ़ा था। जमशेदपुर पूर्वी के विधायक सरयू राय ने ढुल्लू महतो के खिलाफ जम कर मोर्चा खोला, लेकिन सभी विरोधों के बावजूद ढुल्लू महतो तीन लाख से भी अधिक मतों से जीत दर्ज कर विरोधियों को आइना दिखाया।

2009 में पीएन सिंह ने दर्ज की थी जीत

पशुपतिनाथ सिंह
भाजपा

2009 के चुनाव में भारतीय जनता पार्टी ने अपना उम्मीदवार बदला और यहां से पशुपतिनाथ सिंह को टिकट दिया। भारतीय जनता पार्टी को यहां कुल 32 प्रतिशत वोट मिले और उसके उम्मीदवार विजयी हुए। जबकि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के चन्द्रशेखर दुबे को 24.9 फीसदी वोट मिले थे, 16.3 फीसदी वोट पाकर बहुजन समाज पार्टी यहां मजबूती से उभरी थी।

2014 में फिर जीती बीजेपी : 2014 के लोकसभा चुनाव में भी भारतीय जनता पार्टी ने इस सीट पर जीत हासिल की। भारतीय जनता पार्टी के पशुपतिनाथ सिंह ने फिर से सीट जीत ली। भारतीय जनता पार्टी को कुल 47.5 फीसदी वोट मिले। जबकि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अजय कुमार दुबे को 21.9 प्रतिशत वोट मिले थे।

2019 में बीजेपी से पीएन सिंह ने लगाई जीत की हैट्रिक : 2019 के लोकसभा चुनाव में पशुपतिनाथ सिंह यहां से तीसरी बार चुनाव जीते और उन्हें कुल 66 फीसदी वोट मिले, जबकि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के कीर्ति आजाद को 27.2 फीसदी वोट मिले। कीर्ति आजाद बीजेपी में थे, जिन्हें भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने अपनी पार्टी में शामिल कर उन्हें अपने टिकट पर धनबाद से मैदान में उतारा था। एक बार फिर 2024 के लिए चुनावी समर की तैयारी हो रही है। अब देखना यह है कि क्या मोदी के काम, मोदी की लहर, मोदी के असर का प्रभाव धनबाद में दिखता है या फिर धनबाद की जनता चुनाव को कुछ बदलाव का रंग देती है।

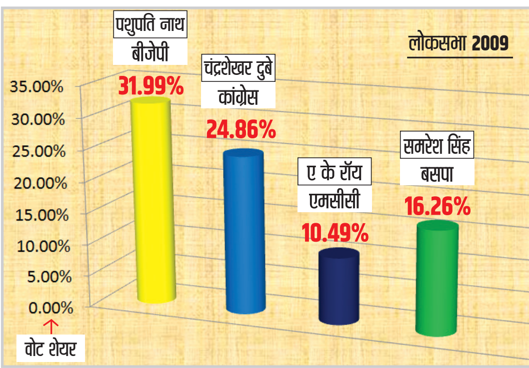

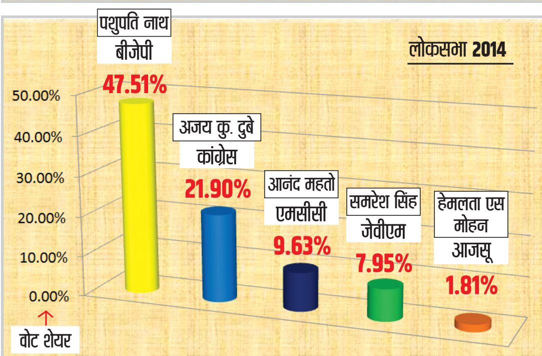

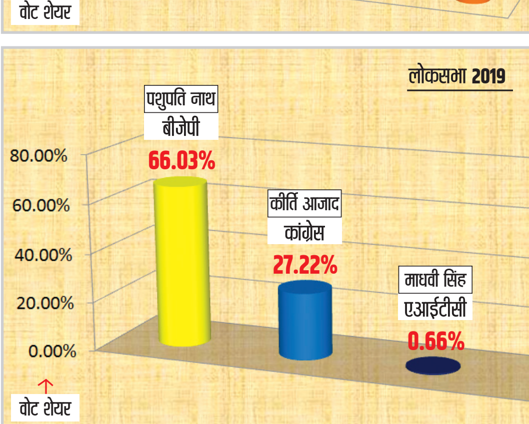

देश में 1952 में हुए पहले लोकसभा चुनाव में चतरा लोकसभा सीट अस्तित्व में नहीं थी। चतरा 1957 में लोकसभा क्षेत्र बना। 1977 तक गया, हजारीबाग और पालमू जिलों के कुछ हिस्सों के साथ चतरा एक विशाल संसदीय क्षेत्र था। फिलहाल इस संसदीय क्षेत्र में चतरा, पलामू और लातेहार जिले के विधानसभा सम्मिलित हैं। इसमें सभी विधानसभा क्षेत्र अर्थात चतरा, सिमरिया, लातेहार और मणिका आरक्षित सीटें हैं, जबकि चतरा अनारक्षित संसदीय निर्वाचन क्षेत्र है। इस लोकसभा क्षेत्र की सबसे खास बात यह है कि यह जब से अस्तित्व में आया, तब से अब तक यहां से कोई भी स्थानीय नेता संसद नहीं पहुंच पाया है। चतरा लोकसभा सीट पर हमेशा बाहरी नेता ही सांसद चुने गए हैं।

चतरा लोकसभा सीट का सफरनामा

चतरा लोकसभा सीट 1957-1980

जीते		हारे
सीएसपीजेपी विजया राजे	1957	चपलेंदु भट्टाचार्य
विजया राजे	1962	त्रिभुवननाथ
निर्दलीय विजया राजे	1967	एसपी भदानी
शंकर दयाल सिंह	1971	विजया राजे
सुखदेव प्रसाद वर्मा	1977	शंकर दयाल सिंह
रंजीत सिंह	1980	सुखदेव प्रसाद वर्मा

चतरा लोकसभा सीट 1984-1999

जीते		हारे
युगेश्वर प्रसाद युगेश	1984	सुखदेव प्रसाद वर्मा
उपेंद्रनाथ वर्मा	1989	युगेश्वर प्रसाद युगेश
उपेंद्रनाथ वर्मा	1991	धीरेंद्र अग्रवाल
धीरेंद्र अग्रवाल	1996	कृष्णानंदन प्रसाद
धीरेंद्र अग्रवाल	1998	नागमणी
नागमणी	1999	धीरेंद्र अग्रवाल

बंटवारे के बाद चतरा लोकसभा सीट

जीते		हारे
धीरेंद्र अग्रवाल	2004	इंदर सिंह नामधारी
इंदर सिंह नामधारी निर्दलीय	2009	धीरज प्रसाद साहू
सुनील कुमार सिंह	2014	धीरज प्रसाद साहू
सुनील कुमार सिंह	2019	मनोज कुमार यादव

1957 में बना चतरा लोकसभा क्षेत्र

विजया राजे
स्वतंत्र उम्मीदवार

चतरा जिला संयुक्त बिहार में 1957 में पहली बार लोकसभा क्षेत्र बना। 1957 में चतरा लोकसभा क्षेत्र से छोटा नागपुर संथाल परगना जनता पार्टी की उम्मीदवार विजया राजे विजयी हुई थे। इन्हें कुल 66 फीसदी वोट मिले थे, जबकि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के चपलेन्दु भट्टाचार्य को 34 फीसदी वोट प्राप्त हुए। 1962 में हुए चुनाव में चतरा जिले में दो लोकसभा क्षेत्र थे। पहला छतरपुर लोकसभा सीट जो उड़ीसा के हिस्से को भी जोड़ती थी। यहां से शर्मा अनंत त्रिपाठी भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के विजयी हुए थे। जिन्हें कुल 58 फीसदी को प्राप्त हुए थे।

1967 के चुनाव : 1967 के चुनाव में भी चतरा लोकसभा और छतरपुर लोकसभा के लिए चुनाव हुए थे, चतरा लोकसभा चुनाव में स्वतंत्र उम्मीदवार विजया राजे विजयी हुए थे, जिन्हें 32.9 फीसदी वोट मिले थे। जबकि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के एसपी भवानी को 22 फीसदी वोट मिले थे। वहीं 1962 में छतरपुर चतरा के लिए हुए लोकसभा चुनाव में जेआर रचाकोन्सा ने जीत दर्ज की थी वे कांग्रेस पार्टी के उम्मीदवार थे, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को कुल 50.5 फीसदी थी।

1971 में कांग्रेस ने जीती सीट

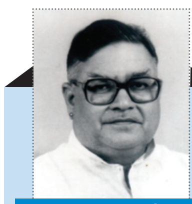
शंकर दयाल सिंह
कांग्रेस

1971 की लोकसभा चुनाव में चतरा लोकसभा सीट पर भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने जीत दर्ज की जिस पर शंकर दयाल सिंह को 42.5 फीसदी वोट मिले थे, जबकि जनता पार्टी के विजय राजे को 35.8 फीसदी रिपोर्ट प्राप्त हुए थे। वहीं 1971 में छतरपुर के लिए हुए लोकसभा चुनाव में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की ही विजयी हुई थी। इसमें जगन्नाथ राव को 58 फीसदी वोट मिले थे जबकि उत्कल को 24.8 फीसदी मत प्राप्त हुए थे।

1977 के चुनाव में जीती जनता पार्टी

सुखदेव प्रसाद वर्मा
जनता पार्टी

1977 में चतरा लोकसभा अकेली की सीट बन गई और यहां से 1977 के लोकसभा चुनाव में जनता पार्टी ने जीत दर्ज की। सुखदेव प्रसाद वर्मा को 73.2 फीसदी वोट मिले थे जबकि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के शंकर दयाल सिंह को 21.7 फीसदी रिपोर्ट प्राप्त हुए थे।

1980 में फिर जीती कांग्रेस

रंजीत सिंह
कांग्रेस

1980 के लोकसभा चुनाव में यहां से फिर कांग्रेस पार्टी ने जीत दर्ज की। हालांकि इस बार कांग्रेस पार्टी ने अपने उम्मीदवार को बदला और रंजीत सिंह को टिकट दिया था। कांग्रेस पार्टी को 1980 के लोकसभा चुनाव में कुल 38.2 फीसदी वोट मिले थे, जबकि जनता पार्टी के सुखदेव प्रसाद वर्मा को 22.8 और जनता पार्टी सेकुलर को 16.9 फीसदी रिपोर्ट प्राप्त हुए थे।

1984 में कांग्रेस ने बचाई सीट

योगेश्वर प्रसाद योगेश
कांग्रेस

1984 के लोकसभा चुनाव में यहां से फिर भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस जीती। लेकिन भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने इस बार भी अपने उम्मीदवार का बदलाव करते हुए योगेश्वर प्रसाद योगेश को अपना उम्मीदवार बनाया था। इन्हें 55.02 फीसदी रिपोर्ट मिले थे। इस बार इंडियन कांग्रेस से सुखदेव प्रसाद वर्मा ने चुनाव लड़ा था और उन्हें 14.2 फीसदी वोट मिले थे। इंदर सिंह नामधारी भाजपा के टिकट पर यहां से चुनाव लड़े थे उन्हें 14.1 फीसदी वोट प्राप्त हुए थे।

1989 में जनता दल का हुआ कब्जा

उपेंद्र नाथ वर्मा
जनता दल

1989 की लोकसभा चुनाव में चतरा लोकसभा सीट पर जनता दल का कब्जा हुआ। जनता दल के उम्मीदवार उपेंद्र नाथ वर्मा को 48.6 फिसदी वोट मिले। जबकि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की योगेश प्रसाद योगेश को 31.9 फीसदी वोट प्राप्त हुए।

1991 में जनता दल ने फिर हासिल की जीत : 1991 की लोकसभा चुनाव में भी यहां जनता दल ने जीत हासिल की। उनके उम्मीदवार उपेंद्र नाथ वर्मा को 34.7 फीसदी वोट मिले। हालांकि भारतीय जनता पार्टी ने अपने उम्मीदवार का बदलाव किया था और धीरेंद्र अग्रवाल को अपना उम्मीदवार बनाया था। भारतीय जनता पार्टी को 25.3 फीसदी वोट मिले थे।

1996 में पहली बार जीती भाजपा

धीरेंद्र अग्रवाल
भाजपा

1996 के लोकसभा चुनाव में भारतीय जनता पार्टी ने चतरा लोकसभा सीट पर पहली बार जीत दर्ज की। यहां से धीरेंद्र अग्रवाल विजयी हुए। भारतीय जनता पार्टी को कुल 42 फीसदी मत प्राप्त हुए थे, जबकि जनता दल को 31.5 फीसदी वोट मिले थे।

1998 में फिर जीती बीजेपी : 1998 की लोकसभा चुनाव में भी भारतीय जनता पार्टी फिर से जीत दर्ज की। यहां से धीरेंद्र अग्रवाल को 43.9 फीसदी जबकि राष्ट्रीय जनता दल के नागमणि को 37.4 फीसदी वोट मिले।

झारखंड बंटवारे के बाद हुआ बदलाव : झारखंड बंटवारे के बाद 2004 में बड़ा राजनीतिक बदलाव हुआ। धीरेंद्र अग्रवाल ने भारतीय जनता पार्टी छोड़कर के राष्ट्रीय जनता दल का दामन थाम लिया, तो वहीं राष्ट्रीय जनता दल छोड़कर कर नागमणि भारतीय जनता पार्टी में शामिल हो गए।

2004 में राजद ने जीती सीट : 2004 के हुए लोकसभा चुनाव में राष्ट्रीय जनता दल चतरा सीट पर कब्जा किया और धीरेंद्र अग्रवाल यहां से विजयी हुए। धीरेंद्र अग्रवाल को कुल 27.9 फीसदी वोट मिले थे जबकि जनता दल यूनाइटेड के इंदर सिंह नामधारी को 23.6 फीसदी बोर्ड प्राप्त हुए थे। वहीं भारतीय जनता पार्टी के नागमणि को 22.9 फीसदी रिपोर्ट 2004 के लोकसभा चुनाव में मिले थे।

1999 में राजद ने मारी बाजी

नागमणि
राजद

1999 के लिए हुए लोकसभा चुनाव में यहां से राष्ट्रीय जनता दल ने बाजी मारी और उनके उम्मीदवार नागमणि ने चतरा लोकसभा सीट पर जीत दर्ज की। राष्ट्रीय जनता दल को कुली 51.6 फीसदी वोट मिले थे, जबकि भारतीय जनता पार्टी को 38.6 फीसदी वोट प्राप्त हुए थे।

2009 में इंदर सिंह नामधारी हुए विजयी

इंदर सिंह नामधारी
निर्दलीय

2009 के लोकसभा चुनाव में निर्दलीय उम्मीदवार के तौर पर चुनाव लड़े इंदर सिंह नामधारी यहां से विजयी हुए। इंदर सिंह नामधारी को कुल 22.9 फीसदी वोट प्राप्त हुए थे। जबकि धीरज प्रसाद साहू जिन्होंने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस से चुनाव लड़ा था इन्हें कुल 19.4 फीसदी वोट मिले। नागमणि ने फिर एक बार पार्टी बदलते हुए राष्ट्रीय जनता दल के टिकट पर चुनाव लड़ा, लेकिन उन्हें कुल 14.5 फीसदी वोट ही मिले।

2014 में मोदी लहर का दिखा असर

सुनील कुमार सिंह
भाजपा

2014 के लोकसभा चुनाव में चतरा लोकसभा सीट पर भारतीय जनता पार्टी के सुनील कुमार सिंह ने जीत दर्ज की। 2014 में भारतीय जनता पार्टी को कुल 41.5 फीसदी वोट मिले थे, जबकि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को 16.5 फीसदी वोट प्राप्त हुए। झारखंड विकास मोर्चा प्रजातांत्रिक को 14.6 फीसदी मत प्राप्त हुए थे।

2019 में फिर दिखा मोदी मैजिक : 2019 के लोकसभा चुनाव में फिर से भारतीय जनता पार्टी ने इस सीट पर जीत दर्ज की। भाजपा के सुनील कुमार सिंह ने 57 फीसदी मत हासिल किए। वहीं भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के मनोज कुमार यादव को 16.02 फीसदी वोट मिले। राजद के सुभाष प्रसाद यादव को 9 फीसदी वोट मिले।

तीसरी बार बीजेपी ने चतरा लोस में जीत दर्ज की, प्रत्याशी रहे नए

दो लाख से अधिक मतों से बीजेपी प्रत्याशी कालीचरण सिंह ने चतरा से जीत दर्ज की

नवीन मेल संवाददाता

चतरा। लोकसभा चुनाव 2024 में चतरा लोकसभा सीट से मतगणना के दौरान भाजपा के निर्णायक बढ़त के बाद कार्यकर्ताओं द्वारा जश्न मनाने का दौर जारी है। वहीं इंडिया गठबंधन से कांग्रेस प्रत्याशी केएन त्रिपाठी मतगणना केंद्र में पत्रकरों से बात करते हुए ईवीएम के सील खुले होने आदि का आरोप लगाते हुए कहा कि अभी मतगणना जारी है, जीत जाएं उसके बाद नियम पूर्वक जश्न मनाएं, लेकिन बीजेपी की बढ़त पर ही पार्टी कार्यकर्ता जश्न मनाने के साथ फायरिंग की है। जो अच्छा संकेत नही है आने वाले समय के लिए। श्री त्रिपाठी ने कहा की इस मामले की शिकायत उपायुक्त से की गयी है।

सिंह ने जीत का श्रेय जनता एवं कार्यकर्ताओं को दिया

मंगलवार को चतरा लोकसभा से भाजपा त्याशी कालीचरण सिंह ने दो लाख से अधिक मतों से जीत दर्ज की। चतरा लोकसभा के सांसद बनने के बाद श्री सिंह ने अपने हाथों से भाजपा कार्यकर्ताओं के बीच जीत के लड्डू का वितरण किया। इस दौरान सिंह नें पत्रकारों से कहा कि यह जीत चतरा लोकसभा के जनता व पार्टी कार्यकर्ताओं की है, मैं तो केवल निमित्त मात्र हूं। उन्होंने मतदाताओं के प्रति आभार जताया। कालीचरण सिंह ने दो लाख 25 हजार 494 वोटों से इंडिया गठबंधन के कांग्रेस प्रत्याशी केएन त्रिपाठी को करारी शिकस्त दी। बीजेपी प्रत्याशी को 05 लाख 66 हजार 658 मत व कांग्रेस प्रत्याशी को 03 लाख 41 हजार 164 वोट मिले।

कालीचरण सिंह के जीत पर खूब उड़े गुलाल, जमकर हुई आतिशबाजी

बरवाडीह। देश में तीसरी बार नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भाजपा के निर्णायक बढ़त और चतरा संसदीय क्षेत्र से भाजपा के कालीचरण सिंह का लगातार निर्णायक बढ़त मिलने और जीत की और अग्रसर होने की खबर आने की साथ ही प्रखंड भाजपा मंडल के मंडल अध्यक्ष हर्षवर्धन सिंह के नेतृत्व में प्रखंड भाजपा सदस्यों द्वारा जमकर आतिशबाजी छोड़ी गई और एक दूसरे को मिठाई खिलाकर, अबीर गुलाल लगाते एक दूसरे को बधाई दी गई। भाजपा मंडल अध्यक्ष हर्षवर्धन सिंह द्वारा इस अवसर पर बस स्टैंड में सभी दुकानदारों को मिठाई खिला कर जीत की अग्रिम बधाई दिया। इसके साथी भाजपा कार्यकर्ताओं द्वारा जमकर आतिशबाजी छोड़ी गई। मौके पर मनोज यादव, मनोज प्रसाद, ईश्वरी सिंह, हेमंत कश्यप, दिलीप यादव, नंददेव सिंह, रवि गुप्ता, अमृत ब्रजेश सिंह, दीपक तिवारी, कन्हाई प्रसाद, पारस जवासवाल, विनय चंदेल, उपेंद्र प्रसाद समेत काफी संख्या में भाजपा कार्यकर्ता साथ थे।

भाजपा में जश्न

रांची से अलग होकर 1957 में लोहरदगा संसदीय क्षेत्र सामने आया। इस लोकसभा सीट को अनुसूचित जनजाति के लिए आरक्षित किया गया। इस सीट पर 90 के दौर से ही कांग्रेस और भाजपा में कांटे की टक्कर रही है। इसलिए यह सीट काफी दिलचस्प है। लोहरदगा सीट से जीतकर स्व. कार्तिक उरांव, सुदर्शन भगत और रामेश्वर उरांव केंद्र सरकार में मंत्री भी बने, जबकि ललित उरांव जैसे महत्वपूर्ण आदिवासी नेता ने भी से जीत हासिल की। जानते हैं 1957 से 2019 तक इस सीट पर हार-जीत की कहानी।

लोहरदगा लोकसभा सीट का सफरनामा

लोहरदगा लोकसभा सीट 1957-1980

जीते		हारे
इग्नेस बेक	1957	जतम खेरवार
डेविड मुंजनी (निर्दलीय)	1962	कार्तिक उरांव
कार्तिक उरांव	1967	एस बड़ाईक
कार्तिक उरांव	1971	रोपना उरांव
लालू उरांव	1977	कार्तिक उरांव
कार्तिक उरांव	1980	कर्मा उरांव

लोहरदगा लोकसभा सीट 1984-1999

जीते		हारे
सुमति उरांव	1984	ललित उरांव
सुमति उरांव	1989	ललित उरांव
ललित उरांव	1991	सुमति उरांव
ललित उरांव	1996	बंदी उरांव
इंद्रनाथ भगत	1998	ललित उरांव
दुखा भगत	1999	इंद्रनाथ भगत

बंटवारे के बाद लोहरदगा लोकसभा सीट

जीते		हारे
रामेश्वर उरांव	2004	दुखा भगत
सुदर्शन भगत	2009	चमरा लिंडा (निर्दलीय)
सुदर्शन भगत	2014	रामेश्वर उरांव
सुदर्शन भगत	2019	सुखदेव भगत

1957 में पहली बार लोकसभा चुनाव हुए, इग्नेस बेक ने जीत दर्ज की

इग्नेस बेक
झारखंड पार्टी

झारखंड की लोहरदगा लोकसभा सीट दूसरे लोकसभा आम चुनाव के समय बनी थी। यहां 1957 में पहली बार लोकसभा चुनाव हुए। पहले चुनाव में यहां से झारखंड पार्टी के इग्नेस बेक ने जीत दर्ज की। झारखंड पार्टी को कुल 43.5 प्रतिशत वोट मिले थे। वहीं भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को 30.30 फीसदी मत मिले थे। जतम खरवार को भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने अपना उम्मीदवार बनाया था।

1962 में जीते डेविड मुंजनी

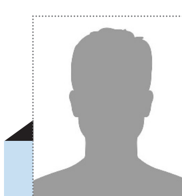
डेविड मुंजनी
निर्दलीय

1962 के चुनाव में यहां से स्वतंत्र पार्टी के उम्मीदवार डेविड मुंजनी ने जीत दर्ज की थी। इन्हें कुल 41.6 फीसदी वोट मिले। हालांकि 1962 में हुए लोकसभा चुनाव में कांग्रेस पार्टी ने अपने उम्मीदवार को बदल दिया। यहां से इग्नी बेक की जगह कांग्रेस पार्टी ने कार्तिक उरांव को टिकट दिया। कार्तिक उरांव को कल 29.9 फीसदी वोट मिले। वहीं झारखंड पार्टी को 22.7 फीसदी वोट मिले थे।

1967 में कांग्रेस ने हासिल की जीत

कार्तिक उरांव
कांग्रेस

1967 में हुए लोकसभा चुनाव में कांग्रेस पार्टी ने फिर नए उम्मीदवार पर अपना दांव खेला। इस बार उन्होंने के कार्तिक उरांव को टिकट दिया। 1967 के चुनाव में कांग्रेस ने लोहरदगा सीट पर जीत दर्ज की और कुल 37 फीसदी मत प्राप्त किए। वहीं भारतीय जनसंघ को 17.1 फीसदी वोट मिले।

1971 में फिर जीती कांग्रेस

1971 के चुनाव में कांग्रेस पार्टी ने फिर 1962 के अपने उम्मीदवार कार्तिक उरांव को टिकट दिया। 1971 में इस सीट पर फिर से कार्तिक उरांव ने जीत दर्ज की भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को कुल 51.5 फीसदी मत मिले। जबकि भारतीय जनसंघ की रूपना उरांव को 18 प्रतिशत वोट मिले।

1977 में लालू उरांव ने परचम लहराया

लालू उरांव
भारतीय लोकदल

1977 के लोकसभा चुनाव में भारतीय लोकदल लोहरदगा सीट पर कब्जा किया। भारतीय लोक दल के लालू उरांव को 54.9 फीसदी वोट मिले। जबकि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के कार्तिक उरांव को सिर्फ 29.99 प्रतिशत वोट मिल पाए।

1980 में फिर से कार्तिक उरांव जीते

कार्तिक उरांव
कांग्रेस

1980 के लोकसभा चुनाव में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने एक बार फिर लोहरदगा सीट पर जीत दर्ज किया। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के कार्तिक उरांव ने इस बार 49.5% मत प्राप्त किए। वहीं जनता पार्टी की करमा उरांव ने 22.99 फीसदी और भारतीय लोक दल से चुनाव लड़े लालू उरांव ने जनता पार्टी सेकुलर के साथ चुनाव लड़ा कर 9.6 फीसदी वोट हासिल किए।

1984 में भी जीती कांग्रेस

सुमति उरांव
कांग्रेस

1984 के लोकसभा चुनाव में लोहरदगा सीट पर फिर से भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने कब्जा किया। हालांकि कांग्रेस ने एक बार फिर अपना उम्मीदवार बदला और सुमति उरांव को अपना उम्मीदवार बनाया। इन्हें कुल 57.5 फीस दी वोट मिले थे। भारतीय जनता पार्टी के ललित उरांव ने 20.02 प्रतिशत मत हासिल किए। जबकि जनता पार्टी 7.5 फीसदी मत हासिल कर पाई।

1989 में भी कांग्रेस की सुमति उरांव जीती

1989 में भी यह सीट भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के पास रही। यहां से सुमति उरांव ने जीत दर्ज की। सुमति को कुल 38.6 फीसदी मत मिले। जबकि भारतीय जनता पार्टी के ललित उरांव को कुल 28.4 फीसदी मत प्राप्त हुए। वहीं जनता दल इस बार 18 फीसदी मत लेने में कामयाब रही थी।

1991 में पहली बार भाजपा ने दर्ज की जीत

ललित उरांव
भाजपा

1991 में हुए लोकसभा चुनाव में यहां पर एक बड़ा परिवर्तन हुआ। जब भारतीय जनता पार्टी की जीत हुई। भारतीय जनता पार्टी के ललित उरांव कुल 36.4 फीसदी वोट हासिल कर इस सीट पर कब्जा किया। जबकि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को इस बार 22.2 फीसदी वोट मिले। जनता दल को 16.4 फीसदी वोट को मिले थे।

1996 में भाजपा ने दोहराई कामयाबी

1996 में हुए लोकसभा चुनाव में यह सीट भारतीय जनता पार्टी के कब्जे में रही। यहां से ललित उरांव ने जीत हासिल किया। इस बार भारतीय जनता पार्टी को कुल 33 फीसदी मत मिले। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने यहां पर अपने उम्मीदवार को बदल दिया था। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने इस बार फिर से बंदी उरांव को अपना उम्मीदवार बनाया था और इस बार भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को कुल 24.6 फीसदी वोट मिले। जबकि जनता दल को 17.7 फीसदी और झारखंड मुक्ति मोर्चा को 14.8 प्रतिशत मत प्राप्त हुए।

1998 में जीती कांग्रेस

इंद्रनाथ भगत
कांग्रेस

1998 में हुए लोकसभा चुनाव में कांग्रेस ने फिर अपना उम्मीदवार बदलता और इंद्रनाथ भगत को उम्मीदवार बनाया। इंद्रनाथ भगत को कुल 44.5 फीसदी मत मिले। जबकि भारतीय जनता पार्टी के ललित उरांव को 40.8 फीसदी मत प्राप्त हुए। एक बार फिर कांग्रेस ने यहां जीत हासिल की।

1999 में भाजपा ने हासिल की जीत

दुखा भगत
भाजपा

1999 की हुई लोकसभा चुनाव में भारतीय जनता पार्टी ने अपना उम्मीदवार बदल दिया और जीत हासलि की। इस बार भारतीय जनता पार्टी ने दुखा भगत को अपना उम्मीदवार बनाया। वहीं, भारतीय जनता पार्टी को कुल 44.2 फीसदी वोट यहां मिले। हालांकि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के इंद्रनाथ भगत भी कांटे की टक्कर देकर मैदान में थे। उन्हें 43.2 फीसदी वोट मिले थे।

बंटवारे के बाद कांग्रेस को मिली जीत

रामेश्वर उरांव
कांग्रेस

बिहार झारखंड बंटवारे के बाद झारखंड में 2004 हुए पहले लोकसभा चुनाव में लोहरदगा सीट कांग्रेस के खाते में गई। हालांकि कांग्रेस ने इस बार के लोकसभा चुनाव में फिर उम्मीदवार को बदलते हुए रामेश्वर उरांव को अपना उम्मीदवार बनाया था। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को इस बार 47.2 फीसदी मत प्राप्त हुए थे। जबकि भारतीय जनता पार्टी ने अपने उम्मीदवार दुखा भगत पर ही दम लगाया था और इन्हें कुल 28.6 फीसदी मत प्राप्त हुए थे।

15 साल बाद कांग्रेस ने लहराया जीत का परचम

कांग्रेस के सुखदेव ने अपने निकटतम प्रतिद्वंद्वी समीर उरांव को एक लाख से अधिक मतों से किया पराजित

नवीन मेल संवाददाता

गुमला। 15 साल से जीत के लिए तरस रही कांग्रेस ने इस बार लोहरदगा संसदीय निर्वाचन क्षेत्र में शानदार जीत हासिल की। कांग्रेस के सुखदेव भगत ने भाजपा प्रत्याशी समीर उरांव को एक लाख से अधिक वोटों से पराजित किया। इस चुनाव में झामुमो से बगावत कर चुनाव लड़ने वाले चर्चित निर्दलीय उम्मीदवार चमरा लिंडा का प्रदर्शन कमजोर रहा। यद्यपि वे तीसरे नंबर रहे। चुनावी परिणाम की घोषणा देर रात तक होने की संभावना है। मतदाताओं ने अन्य 12 प्रत्याशियों यथा गिरजानंदन उरांव, बिहारी भगत, मनी मुंडा, महेंद्र उरांव, रामचंद्र भगत, अर्जुन टोप्पो, अर्पण देव भगत, पवन तिग्गा, मरियानुस तिग्गा, रंजीत भगत व सनिया उरांव को यथासंभव अपना आशीर्वाद दिया है। कांग्रेस प्रत्याशी सुखदेव भगत की जीत सुनिश्चित देख कांग्रेसी खुशी से झूम उठे। कार्यकर्ताओं ने एक दूसरे का मुंह मीठा करा कर व आतिशबाजी कर अपनी खुशी का इजहार किया। मतगणना परिणाम जानने के लिए भाजपा और कांग्रेस कार्यकर्ता बड़ी संख्या में अपने अपने पंडाल में उपस्थित थे। जैसे जैसे तस्वीर साफ होती गई, कांग्रेस खेमें में भीड़ बढ़ती गई। वहीं, भाजपा समर्थक में काफी मायूसी देखी गई। वे निराश होकर निकलते चले गए।

जनता बनाम मोदी सरकार के बीच थी लड़ाई : सुखदेव भगत

कांग्रेस प्रत्याशी सुखदेव भगत अपनी जीत देख अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा कि इस चुनाव में आदिवासी अस्मिता, जल, जंगल और जमीन का मुद्दा था। यहां लड़ाई जनता बनाम मोदी सरकार के बीच थी। लोकतंत्र में जनता ही सर्वोपरि है। इसलिए परिणाम भी सुखद निकला।

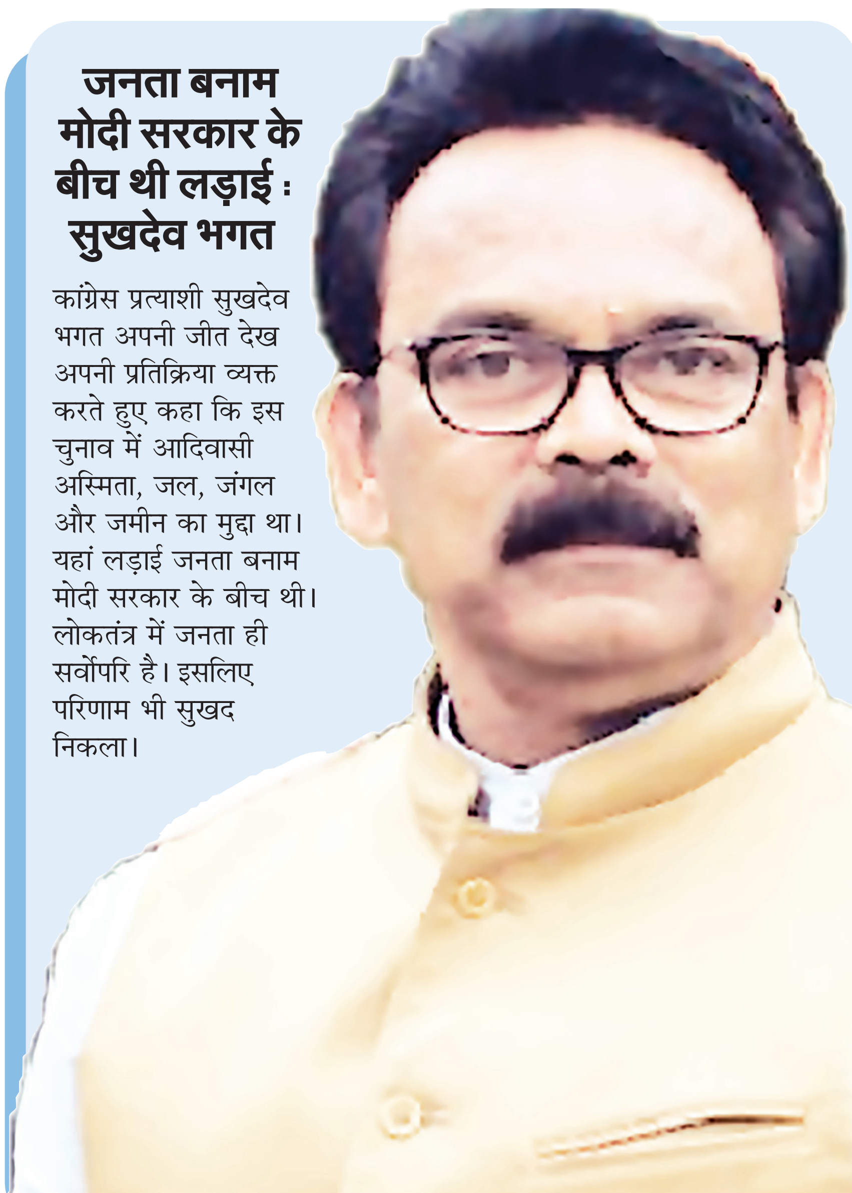

गुमला जिला प्रशासन ने की थी व्यापक तैयारी

निष्पक्ष मतगणना के लिए गुमला जिला प्रशासन की ओर से व्यापक तैयारी की गई थी। लोहरदगा संसदीय सीट पर भारतीय जनता पार्टी, कांग्रेस पार्टी और निर्दलीय प्रत्याशी चमरा लिंडा समेत कुल 15 प्रत्याशियों के भाग्य का फैसला होने वाला था। इस सीट पर शुरू से ही भारतीय जनता पार्टी और कांग्रेस के बीच कड़ी टक्कर की उम्मीद की जा रही थी। इन सबके बीच निर्दलीय प्रत्याशी के तौर पर चमरा लिंडा के मैदान में उतरने से स्थिति त्रिकोणीय हो गई थी। लेकिन, कांग्रेस प्रत्याशी सुखदेव भगत ने बाजी मार ली।

लोहरदगा में भी भाजपा को लगा झटका

भाजपा को तीसरा बड़ा झटका लोहरदगा सीट पर लगा है। पार्टी ने सीटिंग सांसद सुदर्शन भगत का टिकट काटकर समीर उरांव को प्रत्याशी बनाया था। इस चुनाव से पहले वह राज्यसभा सांसद भी थे। यही नहीं वह वर्तमान में भाजपा अनुसूचित जनजाति मोर्चा के राष्ट्रीय अध्यक्ष भी हैं। इसके बावजूद उन्हें इंडिया गठबंधन के कांग्रेस प्रत्याशी सुखदेव भगत से मात खानी पड़ी जबकि इस सीट को लेकर झामुमो और कांग्रेस में काफी तनातनी हुई थी। बिशुनपुर से झामुमो विधायक चमरा लिंडा के चुनाव में उतरने से झामुमो असहज महसूस कर रही थी। चमरा के नहीं मानने पर पार्टी ने उनके खिलाफ अनुशासनात्मक कार्रवाई भी की थी। लेकिन ऐसी चर्चा हो रही थी कि चमरा के मैदान में होने से भाजपा को फायदा होगा, लेकिन ऐसा कुछ नहीं हुआ।

2009 से 2019 तक सुदर्शन भगत भाजपा से रहे सासंद

बिहार झारखंड बंटवारे के बाद झारखंड में 2009 में दूसरी बार लोकसभा चुनाव हुआ। इसमें भारतीय जनता पार्टी ने अपने उम्मीदवार को बदला। इस बार भारतीय जनता पार्टी ने सुदर्शन भगत को अपना उम्मीदवार बनाया। सुदर्शन भगत ने इस सीट पर कुल 27.7 फीसदी वोट हासिल करते हुए जीत हासिल की। यहां निर्दलीय उम्मीदवार चमरा लिंडा ने 26.11 फीसदी वोट प्राप्त किए। वहीं भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के रामेश्वर उरांव को 24.8 की प्रतिशत मत प्राप्त हुए। 2009 का लोकसभा चुनाव इस सीट के लिए काफी महत्वपूर्ण रहा।

सुदर्शन भगत
भाजपा

2014 में मोदी लहर का दिखा असर : मोदी के लहर में 2014 में हुए इस लोकसभा सीट पर भारतीय जनता पार्टी ने जीत दर्ज की। भारतीय जनता पार्टी के सुदर्शन भगत को कुल 34.830 प्रतिशत मत प्राप्त हुए। जबकि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के रामेश्वर उरांव को 33.8 की प्रतिशत मत प्राप्त हुए। हालांकि चमरा लिंडा इस बार ऑल इंडिया तृणमूल कांग्रेस पार्टी से चुनाव लड़े थे और उन्हें कुल 18.3 प्रतिशत वोट प्राप्त हुए थे। 2014 में भी यह सीट काफी कांटे की टक्कर में भारतीय जनता पार्टी ने जीती।

2019 में भी दिखा मोदी मैजिक : 2014 में मोदी का लहर और 2019 में मोदी के काम के आसार पर चुनाव तो हुआ हालांकि इस सीट पर भाजपा के सुदर्शन भगत ने जीत को दर्ज की। लेकिन जीत का अंतर बहुत ज्यादा नहीं रहा। भारतीय जनता पार्टी को 2019 के लोकसभा चुनाव में 45.5 फीसदी मत इस लोकसभा क्षेत्र में मिले थे। जबकि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने अपनी उम्मीदवार का बदलाव करते हुए सुखदेव भगत को अपना उम्मीदवार बनाया था। जिन्हें 44.20 रिपोर्ट यहां प्राप्त हुए थे। काफी कांटे की टक्कर में 2019 की सीट बीजेपी के कब्जे में आई थी।

पलामू लोकसभा सीट पर अभी बीजेपी का कब्जा है। लेकिन इस सीट पर 6 बार से ज्यादा कांग्रेस जीत दर्ज कर चुकी है। जानिए इस सीट पर 1952 से अब तक किसका कब्जा रहा है। झारखंड की पलामू लोकसभा सीट का इतिहास काफी पुराना है। आजाद भारत के पहले आम चुनाव के बाद से ही पलामू राजनीति के केंद्र में रहा है। पलामू सीट पर पहले कांग्रेस का कब्जा रहा, फिर राजद और अब यह सीट बीजेपी के पाले में है। 1952 से अब तक हुए चुनावों में यहां सबसे ज्यादा छह बार कांग्रेस पार्टी ने चुनाव जीते हैं। वहीं भाजपा ने पांच बार इस सीट पर कब्जा किया है।

पलामू लोकसभा सीट का सफरनामा

पलामू लोकसभा सीट 1952-1977

जीते	वर्ष	हारे
जेठन सिंह खरवार	1952	एलिस कुजुर
गजेन्द्र प्रसाद सिन्हा	1952	झावन सिंह
गजेन्द्र प्रसाद सिन्हा	1957	रामावतार शर्मा (छोटानागपुर संथाल परगना, जनता पार्टी)
शशांक मंजरी	1962	गजेन्द्र प्रसाद सिन्हा
कमला कुमारी	1967	जे. राम
कमला कुमारी	1971	रामदेव राम
रामदेनी राम	1977	कमला कुमारी

पलामू लोकसभा सीट 1980-1999

जीते	वर्ष	हारे
कमला कुमारी	1980	रामदेनी राम
कमला कुमारी	1984	रामसुंदर दास
जोरावर राम	1989	रामदेव राम
रामदेव राम	1991	जोरावर राम
ब्रजमोहन राम	1996	उदय नारायण चौधरी
ब्रजमोहन राम	1998	उदय नारायण चौधरी
ब्रजमोहन राम	1999	जोरावर राम

झारखंड बनने के बाद पलामू लोकसभा सीट

जीते	वर्ष	हारे
मनोज कुमार भुईयां	2004	ब्रजमोहन राम
घूरन राम	2007	कामेश्वर बैठा
कामेश्वर बैठा	2009	घूरन राम
विष्णु दयाल राम	2014	मनोज कुमार
विष्णु दयाल राम	2019	घूरन राम

1957 चुनाव में जीते गजेंद्र प्रसाद

गजेंद्र प्रसाद सिंह
कांग्रेस

1952 के बाद 1957 में फिर से चुनाव हुए। इस लोकसभा चुनाव में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के गजेंद्र प्रसाद सिंह फिर से यहां से विजयी हुए। इस चुनाव में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को कुल 40.8 प्रतिशत वोट मिले। छोटा नागपुर संथाल परगना जनता पार्टी के उम्मीदवार राम अवतार शर्मा को 24.8 फीसदी वोट मिले, जबकि झारखंड पार्टी को 151 फीसदी वोट मिले।

1962 लोकसभा चुनाव

शशांक मंजरी
स्वतंत्र पार्टी

1962 के चुनाव में स्वतंत्र पार्टी के उम्मीदवार शशांक मंजरी पलामू के सांसद बने। उन्हें कुल 56.1 फीसदी वोट मिले। जबकि पहली और दूसरी लोकसभा चुनाव में विजयी रहे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के सांसद गजेंद्र प्रसाद सिंह को हार का सामना करना पड़ा, उन्हें कुल 25.6 फीसदी वोट मिले।

1967 से चार बार जीतीं कमला कुमारी

कमला कुमारी
कांग्रेस

1967 के लोकसभा चुनाव में पलामू सीट पर फिर से भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने कब्जा जमाया। हालांकि इस बार कांग्रेस ने अपना उम्मीदवार बदल दिया था और कमला कुमारी को मैदान में उतारा था। कांग्रेस उम्मीदवार को कुल 41.2 फीसदी वोट मिले, जबकि संयुक्त सोशलिस्ट पार्टी को 22.6 फीसदी वोट मिले।

1971 लोकसभा चुनाव : 1971 के लोकसभा चुनाव में यहां एक बार फिर से कांग्रेस की जीत हुई और उसकी उम्मीदवार कमला कुमारी को पूरे 50 फीसदी वोट मिले। दूसरे स्थान पर भारतीय जनसंघ रहा, जिसके उम्मीदवार रामदेव राम को 30 फीसदी वोट मिले।

1980 लोकसभा चुनाव : 1980 के चुनाव में कांग्रेस ने एक बार फिर अपनी खोई हुई सीट पर कब्जा कर लिया। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (आईएनसी) की कमला कुमारी को 47 प्रतिशत वोट मिले, जबकि रामधनी राम को 30.5 फीसदी वोट मिले। उन्होंने पार्टी बदल ली थी और जनता पार्टी से चुनाव लड़ा था।

1984 लोकसभा चुनाव : 1984 के चुनाव में कांग्रेस दोबारा जीतकर आई। कांग्रेस की कमला कुमारी को 71.2 फीसदी वोट मिले। जबकि जनता पार्टी के रामसुंदर दास यहां से चुनाव मैदान में थे और उन्हें 19.5 फीसदी वोट मिले।

1977 में रामदेनी राम जीते

रामदेनी राम
भारतीय लोक दल

1977 के लोकसभा चुनाव में पलामू में बदलाव हुआ और भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की लगातार दो बार विजयी रहीं कमला कुमारी को इस बार हार का सामना करना पड़ा। पलामू सीट पर भारतीय लोकदल के उम्मीदवार रामदेनी राम ने जीत हासिल की। उन्हें कुल 76.01 फीसदी वोट मिले। जबकि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की कमला कुमारी को सिर्फ 14.7 फीसदी वोट मिले।

1989 में जीते जोरावर राम

जोरावर राम
जनता दल

1989 के लोकसभा चुनाव में पलामू में एक बार फिर परिवर्तन हुआ और यह सीट जनता दल के खाते में चली गयी। जनता दल के जोरावर राम ने सीट पर कब्जा जमाया। जिन्हें कुल 36.5 फीसदी वोट मिले। जबकि भाजपा के रामदेव राम को 27.9 फीसदी वोट मिले। जबकि कांग्रेस आई की कमला कुमारी को 22.8 फीसदी वोट मिले।

1991 में रामदेव राम ने कमल खिलाया

रामदेव राम
भाजपा

90 के दशक में पलामू सीट पर एक बार फिर परिवर्तन हुआ और 1991 के लोकसभा चुनाव में यह सीट भाजपा के खाते में गयी। भाजपा के रामदेव राम को कुल 37.3 फीसदी वोट मिले। दूसरे स्थान पर जनता दल के जोरावर राम रहे, जिन्हें कुल 31.6 फीसदी वोट मिले। जबकि इंडियन नेशनल कांग्रेस की कमला कुमारी को 13.4 फीसदी वोट मिले।

1996 में जीते बृजमोहन राम

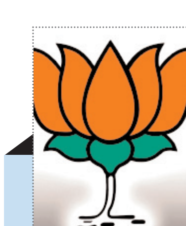
बृजमोहन राम
भाजपा

इस चुनाव में भाजपा ने 42.4 फीसदी वोट पाकर इस सीट पर फिर कब्जा कर लिया, हालांकि भाजपा ने यहां से अपना उम्मीदवार बदल दिया था। 1991 में भाजपा के सांसद रामदेव राम की जगह बृजमोहन राम को टिकट दिया गया। जबकि दूसरे स्थान पर जनता दल से उदय नारायण चौधरी चुनाव लड़े थे और उन्हें कुल 31.20 वोट मिले थे। जबकि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के राधा कृष्ण किशोर को केवल 10.5% वोट ही मिल सके।

1998 लोकसभा चुनाव : 98 के चुनाव में भाजपा ने पलामू सीट पर जीत हासिल की। भाजपा के बृजमोहन राम को कुल 52.6 फीसदी वोट मिले। जबकि राजद के उदय नारायण चौधरी को कुल 39.20 वोट मिले थे।

1999 लोकसभा चुनाव : 99 के चुनाव में पलामू सीट भाजपा के कब्जे में ही रही। यहां से भाजपा के बृजमोहन राम को 52.6 फीसदी वोट मिले। वहीं इस बार राजद ने अपना उम्मीदवार बदल कर जवाहर राम को टिकट दिया था, जवाहर राम को यहां कुल 36.01 फीसदी वोट मिले।

झारखंड बनने के बाद जीते मनोज

मनोज कुमार भुइयां
राजद

झारखंड विभाजन से पहले भाजपा पलामू सीट पर लगातार चार लोकसभा चुनावों में विजयी रही थी। 1991, 1996, 1998 और 1999 में हुए लोकसभा चुनाव में पलामू सीट भाजपा के पास रही। लेकिन बिहार-झारखंड के बंटवारे के बाद 2004 में हुए पहले लोकसभा चुनाव में पलामू सीट राजद के खाते में चली गयी। 2004 के लोकसभा चुनाव में राजद के मनोज कुमार भुइयां ने 32.2 फीसदी वोट पाकर पलामू सीट से जीत हासिल की थी।

वीडी राम की हैट्रिक, ममता को 288807 मतों से हराया

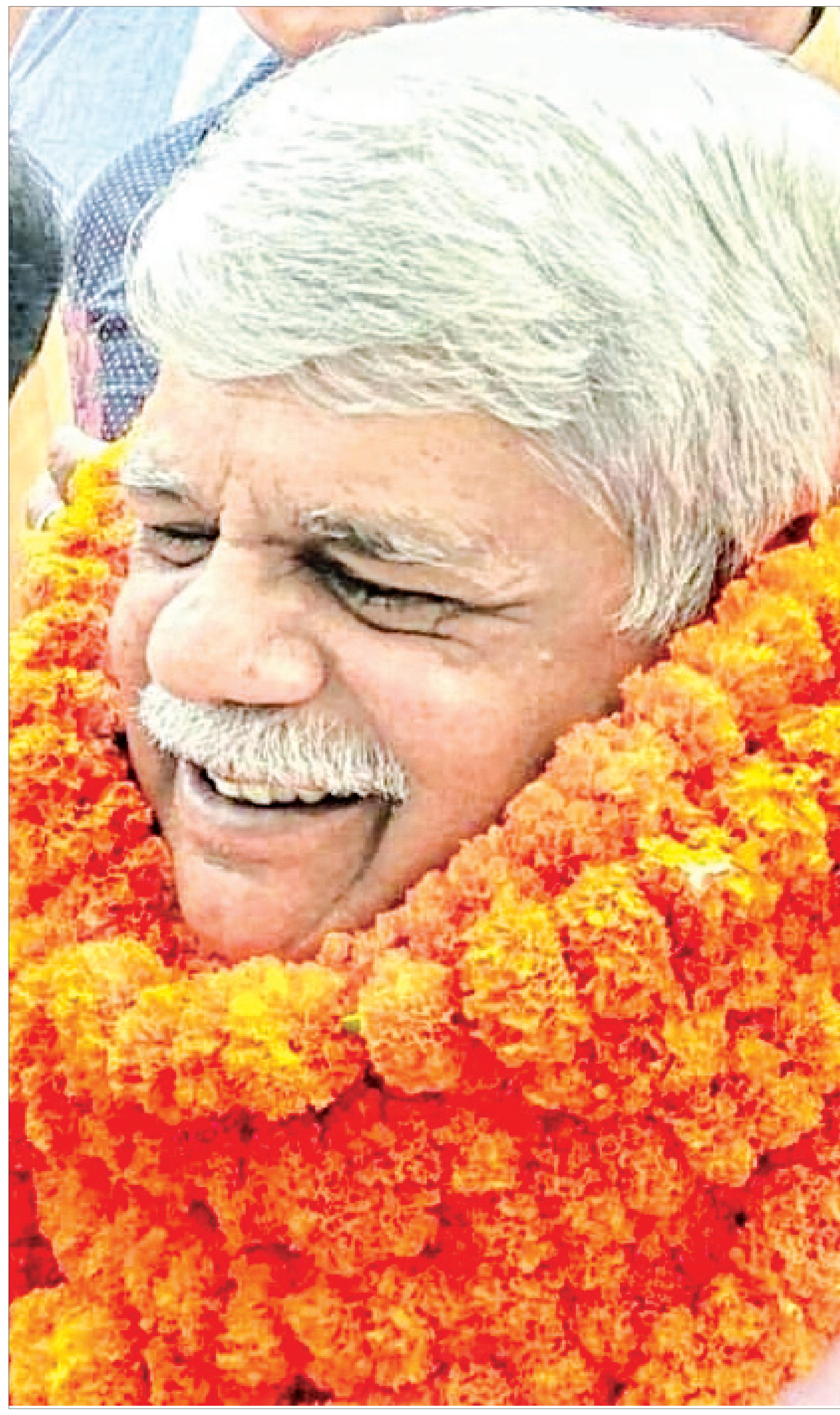

नवीन मेल संवाददाता। पलामू

पलामू (अनुसूचित जाति) लोकसभा निर्वाचन को लेकर जीएलए कॉलेज में मतों की गिनती हुई। मतगणना के पश्चात जो रिजल्ट आए, उसकी उम्मीद धंधुली सी पहले से ही थी, लेकिन मतों की गितनी के बाद पूरी तरह साफ हो गयी। वीडी राम हैट्रिक जमा गए। 288807 मतों से चुनाव जीते। विष्णुदयाल राम को 770362 मत मिले, जबकि राजद की ममता भुइयां को 481555 वोट प्राप्त हुए। इस प्रकार वीडी राम को 288807 मतों से जीत हासिल हुई। पहली बार चुनाव लड़ रही राजद उम्मीदवार ममता भुइयां का प्रयास बेहतर रहा। 2019 के लोकसभा चुनाव में राजद से चुनाव लड़े घुरन राम के मुकाबले काफी अधिक मत लाकर ममता ने लोगों को चौका दिया। हार से निराश नहीं होकर कमियों को ठीक करने में ममता जुट गयी है। वीडी राम 2014 के बाद 2019 में इन्होंने इस सीट से जीत हासिल की थी। संभावना था कि 2019 में आए वोट के रिकार्ड को इस बार के चुनाव में तोड़ देंगे। लेकिन ऐसा नहीं हुआ। वे अपने रिकार्ड को तोड़ने से चूक गए। बता दें कि 2019 के चुनाव में वीडी राम ने रिकार्ड 4 लाख 77 हजार से अधिक मत से चुनाव जीते थे। सुबह में मतों की गिनती शुरू होने के साथ ही वीडी राम ने बढत बना ली थी। यह सिलसिला अंतिम यानि 22वें राउंड तक चली। पहले राउंड में वीडी राम 5848 वोट से आगे थे। ममता भुइयां को 2675, जबकि वीडी राम को 8523 मत मिले थे। इस सिलसिले को वीडी राम अंत तक बरकरार रखें और राउंडवार बढ़त बनाये रखें। मतों की गिनती शुरू होने के बाद से ही भाजपा उम्मीदवार वीडी राम बढत बनाए हुए हैं। यह सिलसिला लगातार चल रहा है।

नौ उम्मीदवार चुनाव मैदान में थे : पलामू लोकसभा सीट के लिए नौ उम्मीदवार चुनाव मैदान में थे। मुख्य मुकाबला भाजपा के उम्मीदवार वीडी राम एवं राजद कैंडिडेट ममता भुइयां के बीच ही था। नक्सली कमांडर रहे पूर्व सांसद एवं बसपा उम्मीदवार कामेश्वर बैठा चुनाव मैदान में थे, हालांकि प्रतिष्ठा के अनुसार उन्हें वोट नसीब नहीं मिला। 34093 वोट से संतोष करना पड़ा। पलामू लोकसभा के सामान्य प्रेक्षक रेम्या मोहन, जिला निर्वाचन पदाधिकारी सह उपायुक्त शशि रंजन की देखरेख में मतगणना हुई। एसपी रीष्मा रमेशन खुद सुरक्षा व्यवस्था संभाल रखी थी। एक एक करके स्ट्रांग रूम से ईवीएम काउंटिंग हॉल में लाए जा रहे थे। गिनती पूरी होने के बाद उसे दूसरी जगह शिफ्ट किये जा रहे थे।

पलामू लोकसभा में कुल छह विधानसभा सीटें : ज्ञातव्य है कि पलामू लोकसभा अंतर्गत कुल छह विधानसभा क्षेत्र डालटनगंज, विश्रामपुर, हुसैनाबाद, छतरपुर, गढवा एवं भवनाथपुर आते हैं। मतों की गणना हेतु 124 टेबल बनाये गये थे। वहीं पोस्टल बैलट के माध्यम से प्राप्त मतों की गणना 28 टेबल पर किए गए।

2009 में जीते कामेश्वर बैठा

कामेश्वर बैठा
झारखंड मुक्ति मोर्चा

2009 के लोकसभा चुनाव में राजद पलामू से हार गई। यहां राजद ने अपना उम्मीदवार बदल दिया था, राजद ने घूरन राम को अपना उम्मीदवार बनाया था। इस चुनाव में पलामू लोकसभा सीट से झारखंड मुक्ति मोर्चा के कामेश्वर बैठा ने जीत हासिल की, जिन्हें कुल 25.8 फीसदी वोट मिले, जबकि राजद को 22.02 फीसदी, झारखंड विकास मोर्चा को 13.99 फीसदी और जनता दल यूनाइटेड को 10 फीसदी वोट मिले।

2014 से पलामू सीट पर काबिज हैं वीडी राम

विष्णु दयाल राम
भाजपा

भारतीय राजनीति में मोदी लहर का चुनाव माना जाता है। इसका असर पलामू में भी देखा गया। पलामू से भाजपा के विष्णु दयाल राम, जो भारतीय पुलिस सेवा के अधिकारी भी थे। उन्होंने पलामू सीट से जीत हासिल की। उन्हें कुल 48.8 फीसदी वोट मिले। जबकि राष्ट्रीय जनता दल के मनोज कुमार को 21.8 फीसदी और झारखंड विकास मोर्चा के घूरन राम को 16 फीसदी वोट मिले।

2019 लोकसभा चुनाव : 2019 के चुनाव में भी पलामू सीट भाजपा के खाते में गई थी। 2014 चुनाव के विजयी उम्मीदवार विष्णु दयाल राम को भारतीय जनता पार्टी ने फिर अपना उम्मीदवार बनाया और भाजपा को कुल 62.5 वोट प्राप्त हुआ। दूसरे स्थान पर राजद के घूरन राम रहे, जिन्हें 23 फीसदी वोट मिले।

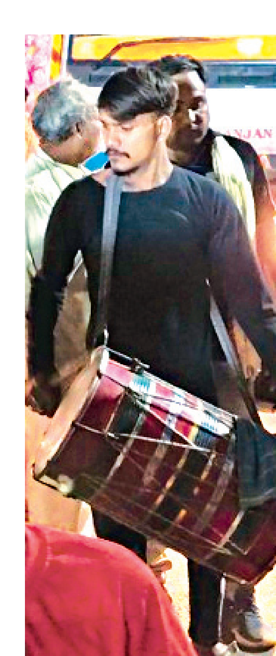
कार्यकर्ताओं ने मनाया जश्न